

॥ ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः



श्रावकनुं कर्तव्य

तथा

विविध स्तवनादि समुच्चय ग्रंथ.

छपावी प्रसिद्ध करनार

श्रावकनुं कर्तव्य माणिक.

विविध स्तवनादि समुच्चय ग्रंथ. करनार.

द्वितीयार्थे

३-०-०

वीर संवत् २४५०

विन्म सवत् १९८०

सने १९०६

धी न्यु लक्ष्मी प्रेस, शाकगल्ली, माडवी, मुवइ. ३.

Printed by MANAKJI BHADJI DHARAMSEY
at The New Laxmi Printing Press
18-20 Kazi Sayed Street, Bombay
and Published by HEERJI GHELLABHAI PADAMSI
for Shrivak Bhimsi Manek, 107, Dhadji Street, BOMBAY. 3.

अग्र वचन.

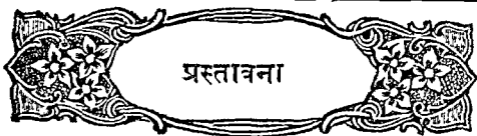


आ पुस्तकनी अदर अनेक उपयोगी हकीकतोनो संग्रह करवा आवेल छे, तेमज अनेक ग्रथोनी सहाय लेवामा आवो छे आ स्तक शास्त्री तथा गुजराती अक्षरमा पहार पाडवामा आवेल छे. पुस्तक पहार पाडवानो उद्देश देरासरोमा दर्शन निमित्ते तथा पृ निमित्ते थतो अनेक आशातनाओ टाळवानो छे अने तेथी करी प्र प्रस्तावनारूपे ते सबधी क्रेटलीएक वावतो चर्चवामा आग्री छे ते ग्रथनी अदर पण लखवामा आवेल छे. आ ग्रथनी अदर तिर् तीर्थो विगेरेना स्तवनो, सज्जायो, लावणीओ, चैत्यवदनो, थोर नाटकना रागना गायनो, नयस्मरण, गौतम स्वामीनो मोटो रा वृद्ध चैत्यवंदन (केवळनाणी) तथा महा पुरुषोना शलोका विगेरे संग्रह करवामा आवेल छे अने तेना माटे जे जे ग्रथानी तथा विद्व जनोनी मदद लेवामा आवी छे तेना माटे ते ते ग्रथकारोनो त विद्वान् जनोनो उपकार मानीए छीए विशेष आग्रथमा नजरदोष अगर प्रमादथी जे काइ भूलचुक रहेल हो ते वाचकवर्ग सुधार वाचसे अने क्षमावृत्ति राखी क्षमा आपसे तेमज उपकारवृत्तिथी ल जणावसे तो अमो त्रीजी आवृत्तिमा सुधारना प्रयत्न करीशुं

ली० प्रकाशक.

चावीश तीर्थकरोनां तथा तेमनां माता, पिता अने लंछनना नामनो कोठो.

नंवर.	तीर्थकरोनां नाम.	मातानां नाम.	पितानां नाम.	लंछन.
१	ऋषभदेव	मरुदेवी माता	नाभि राजा	वृषभ
२	अजितनाथ	विजया माता	जितशत्रु राजा	हाथी
३	सभवनथ	सेना माता	जितारि राजा	घोडा
४	अभिनदन	सिद्धार्था माता	संवर राजा	वादरो
५	सुमतिनाथ	सुमंगला माता	मेघ राजा	क्रौंच पक्षी
६	पद्मप्रभ	सुसीमा माता	श्रीधर राजा	रानु कमल
७	सुपार्श्वनाथ	पृथ्वी माता	प्रतिष्ठ राजा	साथीयो
८	चंद्रप्रभ	लक्ष्मणा माता	महसेन राजा	चंद्रमा
९	सुविधिनाथ	रामा माता	सुग्रीव राजा	मगरमच्छ
१०	शीतळनाथ	नंदा माता	दृढरथ राजा	श्रीवत्स
११	श्रेयांसनाथ	विष्णु माता	विष्णु राजा	खडगी
१२	वासुपूज्य	जया माता	वसुपूज्य राजा	पाडो
१३	विमळनाथ	श्यामा माता	कृतवर्मा राजा	सुभर
१४	अनतनाथ	सुयशा माता	सिंहसेन राक्षा	सिंचाणो
१५	धर्मनाथ	सुव्रता माता	भानु राजा	वज्र
१६	शातिनाथ	अचिरा माता	विश्वसेन राजा	हरण
१७	कुथुनाथ	श्री माता	सुर राजा	बोकडो
१८	अरनाथ	देवी माता	सुदर्शन राजा	नदावर्त
१९	मल्लिनाथ	प्रभावती माता	कुंभ राजा	कळश
२०	मुनिसुव्रत	पद्मा माता	सुमित्र राजा	काचवो
२१	नमिनाथ	विप्रा माता	विजय राजा	नील कमळ
२२	नेमिनाथ	दिवादेवी माता	समुद्रविजय राजा	शस्त्र
२३	पार्श्वनाथ	वामा माता	अश्वसेन राजा	सर्प
२४	महावीरस्वामी	त्रिशला माता	सिद्धार्थ राजा	सिंह



प्रस्तावना

ॐ देवदर्शननो महिमा ॐ

स्वामी दरिशन समो निमित्त लही निर्मलो,

जो उपादान ए शुचि न थागे ॥

दोष को वस्तुनो ? अहवा उद्यम तणो,

स्वामी सेवा सही निकट लाशे ॥ तार हो तार प्रभु

श्रीदेवचन्द्रजी महाराज उक्त पक्तिओगा देवदर्शननो उद्देश किं स्पष्ट करता कहे त्ते के जो प्रभुना दर्शनथी तमारो आत्मा शुचि-प न थाय तो पत्ती ए दोष बीजा कोइनो नहीं, पण तमारो पोता छे. बीजा शब्दोमा कहीए तो तभारा पुरपार्यनी स्वामीज त प्रभु पासे पहोचाडी शकती नहीं दर्शननो उद्देश तथा पुरुषा आवश्यकता समजाव्या पछी तेओश्रो पोतेज देवदर्शननु माहा दर्शावता सुमधुर स्वरोमा उपदेशे छे के—

स्वामी गुण ओळखी स्वामीने जे गजे,

दरिशन शुद्धता तेह पामे ॥

ज्ञान चारित्र तप वीर्य उल्लासथी,

कर्म जीपी वसे मुक्ति धामे ॥ तार हो तार प्रभु०

स्वामी—प्रभु—सदेवना गुणोनो परिचय प्राप्त करी जे भव्यात्म तेमनी अतःकरणना उल्लासथी पूजा-भक्ति करे, तेओ दर्शननी ता पाम्या वगर रहे नहीं एटलुज नहीं, पण सम्यग्ज्ञान प्राप्त चारित्र तप अने वीर्यना स्फुरण द्वारा सपूर्ण कार्योंने परास्त मुक्तिधाम हस्तगत कर्या वगर पण रहे नहीं.

तपस्वीभोनी आ जन्म तपस्यानुं अन्तिम फल मुक्ति, मृनिभोना
 विच्छिन्न संयमनुं अद्वितीय लक्ष मुक्ति, योगीभोनी जन्मजन्मान्तरनी
 धनानुं दृष्टिविन्दु मुक्ति, जो एक मात्र देवदर्शनधीज प्राप्त थइ
 हुं होय, किंवा श्री वीतराग देवनां दर्शन मात्र बने, जो सदेजे गु-
 णपुरीनुं राज्य हस्तगत थइ जनुं होय, तो पत्नी एवो कयो दौणभार्गी
 इ शक्रे के तेनी देवदर्शनमां प्रवृत्ति न थाय? आपणे नो कोट
 आशक्ति देवदर्शन अर्थे उद्यम मेवीए लीए एनी कोटधी ना कहो
 जय तेम नथी, परंतु श्रीदेवचंद्रजी महाराजे कहां तेम पुरुपार्थनी
 मीने लीधे, प्रभुदर्शननुं पवित्र निमित्त मळवा छतां, आत्मशुद्धिफल
 ल थइ शकतुं नथी. त्यारे हवे मुख्य प्रश्न ए उदभवे ले के आप-
 णां एवी ते कइ पुरुपार्थमां स्वामी ले के जेने लीधे आपणने दर्श-
 नसपूर्ण अने सुंदर फल प्राप्त थइ शकतुं नथी? थुं आपणे स्तोत्रां
 कारवामां कंजुसाइ वापरीए लीए? थुं आपणे मन्तक नमाववामां
 आद सेवीए लीए? केशुं पूजानां द्रव्यांनो संचय करवामां चंद्र-
 ती राखीए लीए? आवा आवा अनेक प्रश्नांना जवावनी मीमां-
 णां उतरवा करतां मात्र एटलुंज कहेंयुं वस थइ पडेश के पूर्वाचार्योए
 कर्णानी दृष्टिए जे दर्शनविधि अथवा पूजानी पद्धतिओ दर्शावी
 ते नहीं समजी शकवाने लीधे किंवा तेनो आदर नहीं करवाने
 थइ, पूजानुं अन्तिम फल आपणने प्राप्त थइ शकतुं नथी. विधिपुरःसर
 वर्त्तहुं, तेमज प्रभुपूजानुं यथार्थ स्वरूप न समजहुं ए पण पुरुषा-
 स्वामीज छे.

अर्पो अने सैकाओ थयां आपणा पूज्यापाद परमोपकारी पूर्वाचा-
 र्य गुणो आपणने ओळखाववाने तथा ए गुणो तरफ आपणो
 ल दृष्टि आकर्षवाने प्रयत्न करता आव्या छे. एक मात्र सद्देव,

सद्धर्म अने सहस्रुनी पीठान-जोळराण धाय, पटला माटे भडारोना भंड
 रो भराय तेडला ग्रयो आपणा माटे मकता गया छे, प्रभुना प्रत्ये अ
 दरवुद्धि उत्पन्न थाय अने ते द्वारा आत्माना गुणो प्रकाशित थाय,
 अर्थे भात्र अने रसथा परिपूर्ण एवा सेंकडो अने सहस्रो स्तवनो
 बळ मात्र जनहितार्थे रचता गया छे प्रभुना दर्शन पामी दर्शक :
 न्मा विशुद्ध थाय ते हेतुथी गभीर रहस्यवाळी विधिओ पण ते
 दर्शावता गया छे आदलु आदलु कुर्या उता इजी आपणने प्र
 खरी पीठान यड नथी तेनुं शु कारण ? आपणा अनेक जैन बन्वु
 हृदयना साचा भावथी नित्य देरासरमा जाय छे. त्या यथाश
 विधि प्रमाणे पूजा तथा भावपूजा करे छे, स्तवनो तथा स्तुति
 पण मजुर कठे जालापे छे, स्वस्तिक विगेरेनी क्रिया करी भवभय
 मुक्त यथानी भावना भावे छे, उता तेनो धारेला प्रमाणमा तेमने ल
 नथी मळतो तेनुं शु कारण ? एज के आपणी खरी क्रियाओने
 थवा विधिओने आपणे यथार्थ भावे समजवानो प्रयत्न करता न
 अर्थात् प्रत्येक धर्मक्रियामा जे गभीर हेतु तथा रहस्य रहेलु होय
 ते समजवानो प्रयत्न थतो नथी अने तेथी जे विधि क्रमे क्रमे म
 थाममा लड जवाने समर्थ होय छे, त मात्र अमुक सीमा पर्यंतज
 प्रगटायी वेसी रहें छे पूजाचार्योना रसिक स्तवनोनो संग्रह करी
 स्तुत पुस्तक प्रकट करवाने अमे तैयार थया तेज क्षणे अमने
 जाग्यु के जो आ स्तवनावलीना संग्रह साये दर्शनना हेतु विगे
 पण प्रसंगोपान स्फोटन विस्तार पूर्वक अपाय तो उहु उपग
 थाय. जावा उद्देश्यी अमे आ म्यळे भूमिकारूपे वे चोळ ल
 योग्य थायां छे

देव दर्शननी शुद्धि, तेनी आवश्यकता अने तेनी विधी.

वाह्य शुद्धि अने निसिहिनो हेतु.

देवदर्शने जती वखते सौथी प्रथम वाह्य शुद्धिनी आवश्यकता कारवामां आवी छे' वाह्य शुद्धि घणी वार आंतर शुद्धिना निमित्त थती होवाथी प्रातःकालमां स्नान आदिथी शुद्ध थवानुं न वने ण छेवटे मलिन अगोपांगोने स्वच्छ कर्पा पछी, प्रभुनां दर्शने जती व्यवस्था करवी. स्नान समये तथा अगशुद्धि करती वखते कोइ जतुने उपद्रव न थाय एटला माटे केटलीक सावधानता श्रावण राखवानी दूरदर्शी आचार्योण भळामण करी छे. ते पण लक्षणां राखवा योग्य छे. अत्यारना प्रवृत्तिना धमालवाळा जमानामां जो जावती यतना (जयगा) रडेची बहु अशक्य छे एम केटलीक वार पांमां आवे छे, पण ते मात्र एक प्रकारना वचावज छे एम कर्पा तो खाटुं नथो. जेम वने तेम शांत रीते, उतावळ कर्पा विना-हेटे ते शुद्ध स्थाने अगशुद्धि करी, शुद्ध वस्त्रांनुं परिधान करी जिनमंदि-राखवुं दरेक श्रावके लक्षमां राखवुं जोइए. जिनमंदिर तरफ दर्शनहेतुथी एक एक डगळुं भरनार विशुद्धात्मा अनेक कर्मोने प्रेतो जाय छे, ते कथन तयारेज सार्थक थाय के ज्यारे आपणे वचन, कायाना पापमय व्यापारोनी निरोध करी बहुज निर्मळ भां आरूढ थइ जिनमंदिर तरफ गति करीए. दर्शन करवा जना-वा शरीरे स्नाननी आवश्यकता जिनपूजा प्रसंगे वताववामां आवी छे

रा भाविक श्रावकोए शास्त्रकारो जेने "नैपेधिकी" कह छे, ते रा
 म्मरणमा राखमा योग्य छे. आ त्रिकुनो सक्षिप्त सार एटलोज छे
 (१) परना अथवा मसारना प्रपचमय व्यापारोथी निवर्त्तमानो देर
 सरना अग्र द्वारमा प्रवेश करती वखतेज सकल्प करवो अने ते मा
 त्रण वार निसिद्धि भणवी, (२) गभारामा पेसता देरासरना व्याप
 रथी अर्थात् देरामर मंत्रयी व्यवस्थाथी निवर्त्तमा पुन त्रण वार नि
 सिद्धि कहेवी अने (३) द्रव्यपूजाना व्यापारथी परत्रार्या पत्नी भा
 पूजा अर्थे त्रीजी वार त्रण वार निसिद्धि कहेवी आ विधि जो यथा
 भावे पालवामा आवे तो जिनदेवना दर्शननो हेतु फळीभूत थ
 वगर नहीं. परमाथी देवदर्शन निमित्ते नीकळ्या पत्नी आपणामा
 केटला चन्धुओ मसारनी गडमथलमा मायु न मारता होय ! तेम उ
 देरासरना ओटला मृधी पहोचमा छता पण आपणने आपणा नित्
 ना राग-द्वेषवाळा वाणी व्यापारमाथी छटा यमानु मृजतु नथी
 आपणी मोटी शिथिलता छे केटलीक वार तो देरामरमा पण मा
 अने पूजा निमित्ते क्लेशो यता जोयामा आवे छे. आ दृश्य ओ
 खेदकारक नथी देरामरमा पहोन्या पत्नी भाविक श्रावकोए देराम
 रनी व्यवस्था पाउळ पोतानु लव दौरतु जोडण, एटले के मदिरा
 स्याड अशुद्ध जेतु के अव्यवस्था जेतु जणातु होय तो स्वार्थ रधि
 बुद्धिग सुगारवानो प्रयत्न करमा. या कराववो, अने ए रीते दर्शन
 भिलापथी भागळ बधुं, पत्नी अनेक उन्नम उच्चम द्रव्योवढे द्रव्य
 पूजा करी द्रव्यपूजाथी मुक्त थड जात भावे स्नवन आदिनो पा
 करी प्रभुना गृणोमा नटीन यमानो अभ्यास करवो ना प्रकारन

वदना यद् शक्ये छे, अने त्रीजा उत्कृष्ट अग्रहमा साठ हाथ दर रने
 ने पण वदना यद् शक्ये छे वदनना पण त्रण प्रकार वर्णवचामा आव
 छे. (१) नवकार तथा श्लोक आदि बोली जे प्रभुवदना कराय
 जयन्य वदना कहेवाय छे, (२) चैत्यवदन करो नमुव्युणनो प
 भण्या पत्री उभा यद् अरिहृतचेडयाण कही काउस्सग्ग करी-पा
 स्तुति कहेवी ते मध्यम वदना कहेवाय छे, अने (३) जेमा प
 दडको अने चार स्तुति कथा पत्री जायति चेडआड जायत केयि स
 अने स्तयन कही जय त्रीयराय पर्यंत विधिपूर्वक कहेवामा आवे ते
 उत्कृष्ट वदना कहेवामा आवे छे.

सद्देवनो परिचय

देवदर्शने जता देव शब्दनो अर्थ वरावर समजी लेवो जोडए, कार
 के देवतु स्वरूप यथार्थ स्वरूपे समजायु न होय तो पछो आप
 कोनु अने शामाटे दर्शन करीए त्रीए ते तो समजायज क्याथी
 देव शब्द मूळ सस्कृत दिव गतु उपरथी उत्पन्न ययो छे दिव
 अर्थ प्रकाश करनार अथवा क्रीडा करनार एयो वाय छे अथ
 जेजो ज्ञाननो प्रकाश करे किंवा आत्मस्वरूपमा क्रीडा करे ते दे
 सदेव कहेवाय जेजो गोपीओनी साथे क्रीडा करे किंवा शृग
 आदिनो प्रकाश करे तेने सर्वज्ञप्रणीत जैनशास्त्र देव तरीके ओज
 वानी भार दडने मना करे छे, ए गत लक्षमा रहेवो जोडए. आप
 देरासरमा ज्यारे दर्शन करया जडए त्यारे सम्यग्ज्ञान आदिनो
 काश करनार तथा पोताना आत्मस्वरूपमा निरतर रमनार सदेव
 दर्शन करवानो अने ते दर्शन द्वारा तद्रूप बनवानो आपणो उदे
 होयो जोडए. “ स्वामीगुण ” ओजखीने जो देवदर्शन करयामा अ

ते अरि-दुश्मन कोने रुहेगाय अने तेने केवी रीत हणी सका समजीज केवी रीते शके ? प्रस्तुतः कम, क्रोधादि आपणा अरिपुत्रो छे, अने तेने हणवाने उग्रमगील थवु एमाज अरिहत वानने नमस्कार करवानी सार्थकता समायेली छे, एवो भाव “ अरिहंताण ’ पदो उच्चार थताज मनमा स्फुरवो जोडए, पण ए ज्ञानपूर्वक दर्शन-क्रिया थाय तोज सभवी शके

देरासरमां शांतिरक्षा

देरासर किंवा दरमदिर ए वस्तुन ध्यान करवानु, आत्मविष्णु करवानु तथा प्रभुस्वरूप चित्तवानु एरु पवित्र स्थान छे, ए आपणे घणी वार भूली जटए छीए, अने तेवा पवित्र-शांति स्थळमा कर्म संपादनाने बदले उलटा कर्म प्राप्तिने आवीए उ एम न थाय ए पण दर्शनपिपासुओए खास लक्षमा राखतु उचित देरासरमा जेम वने तेम शांतिनो भग न थाय अने सौ कोड पोतानी शक्ति प्रमाणे पूजा, स्तवनादि करी शके तेवी व्यग्रस्वा खचामा आपणे सहायक थवु जोडए. केटलाएको पातपोतानी उदताने लडने अनर्थक प्रलापो करे छे, केटलाएको पोताना अन्यनु ध्यान आकर्षणानी अणठाजती कोशेपो कर छे, अने केट एको पोतानु सनापरिपणु दर्शाववाना अभिमानथी अन्य भवि-नोने ध्यानभग करवानो अयोग्य प्रयत्न सेवे छे ए उचित क नथी आम करवाथी आत्मानु मूळ स्वरूप प्राप्त थतु नथी एट नही, पण अन्यने विघ्नभूत थवाथी नवा कर्मप्रथन थाय छे, ए माटे देरासरमा शांति मचवाय, सर्व कोड चन्द्र यथाशक्तिमति ।

छे, बीजाओ दर्शन करता होय तेमने आटे आववाधी दर्शनमोहः
 कर्म वधाय छे, दुःस्वर काढीने आनद मानवाधी मोहनीय कर्म
 धाय छे, अने अन्यने दर्शन, स्तपनादिमा अतराय पाडवाधी :
 राय कर्म वधाय छे ए प्री वातोनु देरासरमा जता पहेला स्
 रहेवु जोडए

मनःशुद्धि.

देवदर्शने जता जो कोट वस्तु सर्पधी अत्रिक अगत्यनी होय
 ते एकज छे अने ते प्रीजी कोइज नथी, पण मनःशुद्धि छे. मन
 कर्मजनमा तथा कर्मव्ययमा कारणभूत छे एटला माटे पापमय :
 पारोमाधी मनने रोक्री पत्रि चितनमा अथवा कल्याणकर व्या
 तेने जोडनु ए अत्यावश्य ह छे पत्रि मन द्वारा थयेली प्रा
 किंवा भावना फळ आप्पा वगर रहेतीज नथी भले, कदाच न
 पत्रि मनथी देवमदिरमा न जयाय, कारण के मनने दृढपणे व
 भूत राखनु ए सहज बात नथी तोपण प्रभुना दर्शन आपणा त
 उपर पत्रिनानी असर करे, आपणा मनने थोडा क्षणो पर्यंत शु
 तामय पनावे, एप्रो रीतनी मानसिक तत्परता तो अवश्य हो
 जोडए शुद्ध थयेलु मन प्रभुना ध्यानमा सहेलाइयी तल्लीन थड
 छे ध्यान एप्रो वस्तु छे के जो तमे हृदयना उडा-साचा भा
 प्रभुनु ध्यान करता हो तो काळक्रमे प्रभुरूप बन्या वगर रहो न
 दागवला तरीके एळने भ्रमरी ज्यारे प्रथम इस मारे छे त्यारे
 (इलिका) पोतानु मान भूली जइ भ्रमरीना ध्यानमा एची त
 पनी जाय छे के अते पोते भ्रमरीरूप बन्या वगर रहेती न
 एप्रो रीते जे मनुष्यो जे यस्नुनु अतःकरणपूर्वक ध्यान क

छे, बीजाजो दर्शन करता होय तेमने जाडे आववायी दर्शनमोह
 कर्म वधाय छे, दुःस्वर काढीने आनद मानवायी मोहनीय कर्म
 धाय छे, अने अन्यने दर्शन, स्तवनादिमा अतराय पाडवायी
 राय कर्म वधाय छे ए वयी वातोनु देरासरमा जता पहेला रू
 रहुंजु जोडण्

मनःशुद्धि.

देवदर्शने जता जो कोट वस्तु सर्वयी अधिक अगत्यनी होय
 ते एकज छे अने ते बीजी कोटज नथी, पण मनःशुद्धि छे. मन
 कर्मप्रणमा तथा कर्मव्ययमा कारणभूत छे एटला माटे पापमय
 पारोमायी मनने रोक्री पवित्र चिंतनमा अथवा कल्याणकर व्य
 तेने जोडण् ए अत्यावश्य ह छे पवित्र मन द्वारा थयेली प्रा
 किवा भावना फल आया वगर रहेतीज नथी भले, रुदाच र
 पवित्र मनथी देवमंदिरमा न जयाय, कारण के मनने दृष्टपणे
 भूत राखणु ए सहज जात नथी तोपण प्रभुना दर्शन आपणा
 उपर पवित्रतानी असर कर, आपणा मनने थोडा क्षणो पर्यंत
 तामय पनाये, एयो रीतनी मानसिक तत्परता तो अवश्य हो
 जोडण् शुद्ध थयेलु मन प्रभुना ध्यानमा सहेलाडयी तल्लीन थट
 छे ध्यान एयो वस्तु छे के जो तमे हृदयना उंढा-साचा भा
 प्रभुनु ध्यान करता हो तो कालक्रमे प्रभुरूप बन्या वगर रहो
 दाखला तरीके एलने भ्रमरी ज्यारे प्रथम इस मारे छे तयारे
 (इलिका) पोतानु मान भली जट भ्रमरीना ध्यानमा एवी त
 घनी जाय उ के अते पांते भ्रमरीरूप बन्या वगर रहेती न
 एवीज रीते जे मनुष्यो जे वस्तुनु अतःकरणपर्यंत ध्यान क

ननों लहावो ले, एवा प्रकारनुं आचरण आपणे राखुं जोइण.
 सारनी प्रवृत्ति अने द्रव्य जोतां स्वरेस्वर आपणने खेद उपजे छे
 रणके देवदर्शन करवां जहुं ए गमे तेवा कपडा पहरो कोटपण
 तनो विनय विवेक जाळव्या मित्राय प्रतिमा सन्मुख दाथ जाडी
 गद स्तुतिके स्तवन पुरुंके अधुं कही कपाळे निळक करी जाणे
 न वीधी पुरीथइ होय तेम चालता थइ जहुं आजेटलुं खेदकारकाक
 तेटलुंज जैन नाम धरायनारने नीचे उतारो पाडनाकं छे. दाखव्या
 के एज टाइमे जो कोइने त्यां लग्न प्रसंगे के एवा कोइ मेळावडा
 रेमां जहुं होय तो तेना माटे आपणाथी वनति मुद्धि करीए छीण.
 रा साफ कपडा जाळवीने पहरीए छीए सुगंधीनां उपयोग करी-
 छीए बगेरे परंतु जे देव के जेओ सर्वथी सर्वना पुजनीय छे अने
 ना पासे जहुं ता तेमना पासे केटला फिवेक, विनय अने शान्तिथी
 ए एक राजानी सन्मुख जहु पडे त्यारे आपणने केटलो विनय
 वेक अने शान्ति जाळववी पडे छे तेना उपरथी आप विचार करशो
 ले आपोआप समजाइ जशे केजे स्थळे एक टांचणी जेवो वस्तु
 तां तेनो अवाज पण समजाय छे तेटलीज के तेथी वधारे शान्ति
 मंदिरमां जाळववी अहींआ कोइ एवो प्रश्न करशे के थुं त्यारे
 थारे देरासरमां गया पछी स्तुति के नवकारमंत्रनो उच्चार सरखो
 न करवो? अमे एम करवानुं कहेता नथी तेम कही पण शका-
 नहीं, तोपण जो कोइ विद्वान् नर सुस्वरथी प्रधुनां स्तोत्रोनुं गान
 तो होय तो कल्याणनी इच्छावाळा दरेक मनुष्ये ते सुस्वरमय
 तनो लाभ लेवो अने शान्तिरक्षा करवामां मददगार थवुं. ज्ञानी
 पोना स्तवनमां विघ्न उपजाववाथी ज्ञानावरणीय कर्मनो बंध थाय

छे, बीजाओ दर्शन करता होय तेमने आटे पाववाथी दर्शनमोह
 कर्म वधाय छे, दुःस्वर काढीने आनद मानवाथी मोहनीय कां
 धाय छे, अने अन्यने दर्शन, स्तवनादिमा अतराय पाडवाथी
 राय कर्म वधाय छे ए ययी वातोनु देरासरमा जता पहेला रु
 रहेतु जोडए

मनःशुद्धि.

देवदर्शने जता जो कोट वस्तु सर्वथी अधिक अगत्यनी हो
 ते एकज छे अने ते बीजी कोडज नथी, पण मनःशुद्धि छे. मन
 कर्मग्रनमा तथा कर्मलयमा कारणभृत छे एटला माटे पापमय
 पारोमाथी मनने रोक्री पवित्र चित्तनमा अथवा कल्याणकर य
 तेने जोडतु ए अत्यावश्य ह छे पवित्र. मन द्वारा थयेली भा
 किवा भावना फल आप्या वगर रहेतीज नथी भले, रुदाच न
 पवित्र मनथी देवमंदिरमा न जग्याय, कारण के मनने दृढपणे
 भृत राग्रनु ए सहज वात नथी तोपण प्रभुना दर्शन आपणा
 उपर पवित्रतानी असर करे, आपणा मनने थोडा क्षणो पर्यंत
 तामय बनाये, एयो रीतनी मानसिक तत्परता तो अवश्य हो
 जोडए शुद्ध थयेलु मन प्रभुना ध्यानमा सहेलाडथी तल्लीन बड
 छे ध्यान एयो वस्तु छे के जो तमे हृदयना उंढा-साचा भा
 प्रभुनु ध्यान करता हो तो कालक्रमे प्रभुरूप बन्या वगर रहो
 दाखला तरीके एलने भ्रमरी जगारे प्रथम इस मारे छे तयारे
 (इलिका) पोतानु भान भूली जट भ्रमरीना ध्यानमा एवी त
 यनी जाय छे के अते पोते भ्रमरीरूप बन्या वगर रहेती न
 एवीज रीते जे मनुष्यो जे वन्दुनु जन'करणप्रयुक्त यान क

ते वरनुरूप वन्द्या मित्राय रहेता नथी. देवमंदिरमां आपणें प्र-
स्वरूपतुं यथार्थ चिंतन किंवा ध्यान करी शक्रीण. नेटला मांटे
शुद्धिनी सर्वेथी प्रथम आवडकता छे. मनने शुद्ध करवाना
मांगो छे. पण. विस्तारना भयथी तं अत्र दर्शय्या नथी. ना-
शुक्ति उपर संयम राखवाथी, साधु-मुनिओना समागमथी अने
वक आहार-विहारथो मनःशुद्धि थइ शक्ये छे एम प्रसंगोपात्त
देवुं जोडण खेडाया वगरनी भूमिमां बीज बराबर उगी नोक-
नथी, अस्वच्छ दर्पणमां जेवुं जोडण तेधुं प्रतिबिंब पडतुं नथी,
ज रीते देवदर्शने जतां पहेलां मनःक्षेत्र बराबर केळवानु जोडण,
मनरूपी अरोगो योग्य प्रकारे स्वच्छ करवां जोडण.

स्वस्तिक तथा प्रदक्षिणानो हेतु.

देशासरमां साधारण रीते आपणा जैन वन्धुओ तथा भगिनीओ
बानो साथीओ पूरे छे अने मंदिरना दक्षिण भागथी शुरु करी
अने त्रण वार प्रदक्षिणा आपे छे. साथीओ करवानो हेतु जो कं
ज पुस्तकमां एक स्थळे स्पष्ट कर्यो छे, तांपण आ स्थळे कंडक
तारथो स्पष्टीकरण करवानी इच्छा राखी छे राग, द्वेष आदि
रंग वैरीओनी प्रपंचजाळमां फसाइ जवाथी आ जीव नरक, ति-
मनुष्य अने देव आ चार गतिओमांथी छुटो थइ शकतो नथी.
री रीते भवभ्रमण करतां जीवने केटलो बखत नोकळी गयो तेनी
कल्पना थइ शकती नथी. हवे आ साथीयानी चार पांखडीरूपी
गति लक्षमां लड ए गतिमां फरीथी न जवाय अने साथीया
करवामां आवती ज्ञान दर्शन-चारित्ररूपी त्रण ढगलीओ-रवां
थाय ते अर्थ भावना अ.व. नी एरळ नथी. पण ए स्व-

પ્રયત્ન ઉપર અર્થ ચત્રાકાર જેવું જે સિદ્ધશિલાનું સ્વરૂપ આલેખ્ય
 આવે છે, ત્યાં પહોંચવાની ઊગ્ર માવના સેત્રી મનને તથા આત્મ
 જેમ અને તેમ દર્શન કરતી વેલા શુદ્ધતર પનાવવાનો પ્રયત્ન ક
 જાડાઈ પ્રદક્ષિણાના ત્રણ પેરાફરતી વસ્તુને પણ જ્ઞાન-દર્શન-ચારિ
 રૂપી ત્રણ રત્નોની આરાધના કરવાનો તેમજ ભવભ્રમણ દૂર કરવ
 માત્ર મનમા હોયો જોડાઈ કેટલાક ઉપર કહી તેત્રી ક્રિયાઓ ક
 વચ્ચે ટહલૌકિક સ્વાર્થીય ત્રણા ફલીભૂત ધાય એત્રી માવના
 સેવે છે, પણ તે યોગ્ય નથી જિનેશ્વર ભગવાન સરસ્વા કલ્પ
 મઠ્યા પત્રી રત્નોને પ્રદલે કાચના કટકાની આશા રાગવી અને
 માટે માવના માવ્યા કરવી એ શિવસુખના અધિલાપીઓ માટે
 માત્ર પણ પમદ કરવા યોગ્ય નથી, અસ્તુ

દેવવંદન

દેવવંદનના મુર્યત્વે તે પ્રકાર પાડવામા આવ્યા છે (૧) દ્રવ્ય
 વંદન અને (૨) માત્રવંદન. જે વંદનમા માત્ર મસ્તક, ચરણ, હ
 ચલન યાય તેને દ્રવ્યવંદન કહેવામા આવે છે, અને ત્રિશુદ્ધ માનસિ
 ધ્યાન, ધારણા તથા નમસ્કારને માત્રવંદન કહેવાય છે. માત્રવ
 હોય ત્યાં દ્રવ્યવંદન ન હોય એમ કહેવાનો ઉદ્દેશ નથી, તેમજ દ્રવ્ય
 વંદન હોય ત્યાં માત્રવંદન ન હોય એમ પણ કહી શકાય નહીં. વસ્તુ
 ત' પરમ્પરમા ઉપકારક માત્ર સ્વાભાવિક રીતેજ રહેલો હોય
 તોપણ સ્વપ્રતાની સ્મૃતિ અને તે વિષે સરલતાથી વિષેચન થઈ શક
 પટલા માટે એ મેદ મુમુક્ષુઓ લક્ષમા રાગવી પ્રવૃત્તિ કરે છે વંદન
 ઉદ્દેશ પટલોજ જે કે જે પ્રશુભ આતરિક રિપુઓને પરાજિત પ

वेतज्ञान, अनंतदर्शन अने अनंतचारित्र्यनुं अव्यावाय सास्राज्यं
 तगत कर्तुं छे ते प्रभुना गुणोनुं बहु मान करी भक्तिपूर्वक यशो-
 न करी आपणे पण ते सास्राज्यना भागीदार बनवाने योग्य थड
 हीए. अत एव आटली वात तो बहुज अवश्यनी छे के वीतराग
 त्याननी पूजा करती वस्यते किंवा वीतराग देवने वंदन करती वेळा
 पनुं यथार्थ शुद्ध स्वरूप आपणा अंतः-करणने विप्रे सकांत थनुं
 इए. प्रभुनां चरित्रां वांचवाथी, प्रभुना नित्य नामस्मरणथी तथा
 पुनुं पवित्र मने ध्यान करवाथी तेमज गृहगम अने शास्त्रोपदेशथी
 देवस्वरूप हृदयमां प्रतिबिंबित थाय छे. जो के अये ए विषय
 भूमिकामांज संक्षिप्त प्रकारे स्थानांतरे कही गया छीए तोपण
 तृत वर्णन जाणवानी जिज्ञासावाळाए तो आप्त प्रणीत प्रभाविक
 द्वाराज ते जाणी लेवुं एवी अमारी नम्र मन्त्रामण छे.

प्रतिमापूजा शाखाटे ?

आ स्थळे कोइ शंका करणे के भळे देववंदन करवुं, ध्यान करवुं
 मनःशुद्धि राखवी, ए अमारे कबूल मंजुर छे, पण देववंदन
 तथा ध्यान वेळा सन्मुख जिनेश्वरनी प्रतिमा राखवानुं शुं का-
 ? आनो उत्तर स्पष्ट तेमज सरळ छे. अवलंबन वगर प्राथमिक
 प्रकावाळाओ ध्यान करी शकता नथी. वळी ध्यानविधिमां पण
 ता, ध्येय अने ध्याननी त्रिपुटीनुं प्रतिपादन करवामां आव्यु छे.
 हशे ? किंवा प्रतिमाजोनां दर्शन मात्रथी आ कोनी मूर्ति हशे ?
 गे केवां कर्तव्यो कर्यां हशे ? आपणाथी एमनामां कइ जातनी
 आपता हशे ? इत्यादि प्रश्नो उद्भवे छे, अने ए प्रश्नोनुं मनमां

સમાગ્રાન યતા ક્રિયારુચિ ક્રિવા સ-નાર્થ પ્રત્યે આદરભાવ ઉત્પન્ન : છે જૈન શાસ્ત્રમા પ્રતિષ્ઠિત આચાર્યોં એકી જવાજે “ જિનપ્રતિમા િ સારસ્વી ” એવો ગમ્ભીર ઘોષ કરી ગયા છે, જેમો રીતે એક શ્રુત વતી રમણીય મૂર્તિના દર્શન માત્રથી પ્રેશ્કરના મનમા રહેલી વિ વૃત્તિઓ એકાએક ડગાઠો મારી વ્હાર યસી આપે છે તેજ રીતે વ રાગમૂર્તિના દર્શન માત્રથી પળ મનમા રહેલી દિવ્ય વૃત્તિઓ પ્ર: પળે સ્ફુરી આવે છે. આ પ્રમાણે પ્રતિમાપૂજાના મગધમા જેટલુ લગ યારીએ તેટલુ લગ્ગી ગકાય. તેમ છે, પળ જિનવચનને આજ્ઞા માની પ્રવર્તતા ધારિક યુઓ માટે તેની વિશેષ આવડયકતા ન પ્રતિમાજીને સુગમી દ્રવ્યોથી સ્નાન કરાવયુ, પુષ્પ ચડાવવા, અ રચમી અને ટુકામા કટીએ તો તેમને સાલાત્ જિનેશ્વર સમજી પ્રકારે આમુષિત અને દેદોષ્પમાન યનાવવા એ દ્રવ્યપૂજા છે, અને મવ્ય શ્રાવકોને માટે ગ્વામ કર્તવ્ય છે’-શાસ્ત્રમા દ્રવ્યપૂજાના એકઃ પ્રકાર દર્શાવયામા આવ્યા છે, તે પળ સ્મરણમા રાખવા લાયક એ એકમીશ પ્રકાર નીચે પ્રમાણે છે

(૧) સ્નાન (૨) વિલેપન (૩) મ્પયણ (૪) ફાઝ (૫) : (૬) ડ્રૂપ, (૭) ટીપ (૮) ફુલ (૯) તાટુલ (૧૦) પત્ર (૧૧) પુગી (૧૨) નૈત્રેય (૧૩) જઝ (૧૪) યસ્ત્ર (૧૫) છત્ર (૧૬) ચામર (૧૭) યાજિત્ર (૧૮) ગીત (૧૯) નૃત્ય (૨૦) સ્તુતિ : (૨૧) દેવદ્રવ્ય મહાર વૃદ્ધિ. મુરયત્પે કરીને જિનેશ્વર મગયા દ્રવ્યપૂજા આઠ પ્રકારે યટ ગકે છે આ આઠ પ્રકારની પૂજામા : પ્રકારનો સમાવેશ થઈ જાય છે તેમા જે ગમ્ભીર હેતુ રહેલો છે તે

इनकडो भूमिकामां संपूर्ण रीते स्पष्ट थइ शके तेम नथी. प्रत्येक
 धूपपूजा बखते पूजक आत्माए केवा प्रकारनी भावना राखवी जो-
 तेनुं अत्रे संक्षिप्तमांज वर्णन आप्युं छे. प्रभुने निर्मळ जळवडे स्नान
 राखती बखते आपणा मनमां एवी भावना रहेवी जोइए के-“ हे
 प्रभु ! आवा प्रकारना बाह्य प्रक्षालनथी जेम बाह्य मळ विनाश पामे
 तेवी रीते मारा आत्मानो अंतरंग मळ-कर्ममळ पण एनी साथेज
 श पामो. ” चंदनपूजा करती बखते एवी भावना होवी जोइए
 -“ हे प्रभु ! आ चंदन जेवी रीते अंगे अगमां शीतळता प्रकटावे
 तेवीज रीते मारा आत्मानां पण शीतळता प्रकट हो. ” त्रोजी
 धूपपूजा करती बखते एवी भावना उपर आरूढ रहेवु जोइए के-
 पुष्प जेवु सुंदर, शुद्ध अने परागवाळुं छे तेवुज मासं मन पण
 दूर, शुद्ध अने भावसुगंध विशिष्ट हो. ” चौथी धूपपूजा करती
 बखते एवी भावना वर्तवी जोइए के-“ हे प्रभु ! अग्निमां धूप नाख-
 थी जेवी रीते धूप सळगे छे अने तेनो धूमाडो उंचे उंचे चाल्यो
 य छे तेवीज रीते मारा आत्माने लागेला कर्मरूप काष्ठनुं दहन
 थयो, अने शुभ भावनारूपी धूप धूमाडानी पेठे उंचे चडो, अने
 मारो आत्मा पण उच्च स्थाने अवस्थित हो. ” पांचमी दीपकपूजा
 करती बखते एवा भाव रहेवा जोइए के-“ हे प्रभु ! आ दीपक जेवी
 धूते अंधकारने दूर करी सर्वत्र प्रकाशने फेलावे छे तेवीज रीते
 मारा आत्मा उपर रहेलो कर्मरूपी अंधकार दूर हो, अने मारो
 आत्मा दीपकनी पेठे प्रकाशित हो. ” छठी अक्षतपूजा करती बखते
 जेनी भावना रहेवी जोइए के-“ हे प्रभु ! चार गतिथोमांना मारा
 भ्रमणने दूर करी मनं एक एवु अक्षत-अखंड पड प्राप्त थयो के

जेथी पुन आ जन्म, जरा, मृत्युवाळा ससारमा मने रडळवु न पडे सातमी नैवेद्यपूजा करती वखते एवी भावना होवो जोडए के— 'प्रभु! आप जो के निर्वेदी अने अनाहारी जो तोपण आप सन्मुख आ नैवेद्यनी सामग्री मकी आपने एटलीज प्रार्थना व धु के मने पण आ प्रपचमाथी मुक्त करी आपना जेवुज अनाहा परमानन्दमय पद प्राप्त हो' जाठमी फळपूजा करती वखते प मनमा एवो भावप्रवाह वहेवो जोडए के— 'हे प्रभु! आ फळ आप चरणकमळमा वरी एटलुज इच्छु लु के मने पण आपना जेद शिवपदरूपी फळ प्राप्त हो.' आ प्रकारे सक्षिप्त द्रव्यपूजानो हे आप्यो छे, ते उपरवी सत्तरभेदी, एरुवीश प्रकारी, एरुसो अ प्रकारी तथा एरु हजार आठ प्रकारी पूजानो हेतु पण किंचि अशे समजाशे आवा हेतुनु विस्मरण थड जवाने लीये पूजा माहात्म्यने जे उणप आवी छे ते उणप दूर थाभो, अने पूजा उत्तमोतम फळ सर्वने प्राप्त हो

→ चावपूजानो हेतु ←

भाय शब्द परमात्माना स्वरूपनो ज्ञानादिथी निर्गार करी ते लक्षणनु एकाग्र चिते चितवन करवानो उपदेश करे छे द्रव्य पूजा पण जो के भावपूजानु निमित पूर पाडे छे. पण भावपूजानु आशयक अने उपकारक छे ए वातनु विस्मरण थवु जो नथी स्तुति तथा स्तवन विगेरेना गानथी तथा तेमा रहेला अर्थ मननथी चितमा भावनो उद्रेक थाय छे खरेखरो भाय प्रकट कर इच्छनारा वन्दुओए स्ववन-स्तुति आदिमा रहेला अर्थनो एरु व

नर्धार करी लेवो, अने ते पछी पोते तीर्थकर प्रभुमां जे गुणो अनुभवे छे ते गुणो पोतानामां उद्भवे छे के नहीं? तेनो शांत भावे आत्मसाक्षीए विचार करवो. केटलाएक मात्र ओष्ठ अने जिह्वावडे सुस्तवन ललकारी जवामांज पोतानुं कर्तव्य संपूर्ण थयेलुं माने पण ए मान्यता यथार्थ नहीं. गुण अने गुणीनी एकता न थाय असुधी भावपूजा सफल थयेली गणाती नहीं. भावपूजा मुख्यत्वे प्रकारनी छे. एक तो प्रशस्त रागवाळी भावपूजा अने बीजी द्व भाववाळी पूजा. आपणने आपणा परिवार तथा वैभक्त उपरजे राग छे ते स्वार्थना अंशोवाळो होवाथी ते रागने प्रशस्त राग कही काय नहीं, पण निःस्वार्थ भावे पक्षपातरहितपणे गुणोपणा माटे जे राग स्फुरे तेने प्रशस्त राग कहेवामां आवे छे. आवो प्रशस्त राग जो के प्यबंधना हेतुरूप थाय छे तोपण तेथी आत्मगुण प्रकट थतो होवाथी मज आत्मगुण स्थिर थतो होवाथी ते उपादेय छे. शुद्ध भावपूजा मान्य जीवोने माटे बहु विकट छे तोपण तेनुं संक्षिप्त स्वरूप आपले अमे आपवानुं योग्य धार्युं छे. जे आत्माना क्षयोपशमधावी जिन गुण अने ज्ञानादि गुण प्रभुनी प्रभुतामां तल्लीन थया छे, एटले टली आत्मशक्ति प्रगटी छे ते सर्व अरिहंतना गुणने अनुयायी रीने तन्मयतारूप करे ते शुद्ध भावपूजा छे. आवी रीते शुद्ध मर्मल तत्वज्ञानी श्री अरिहंत देव सिद्ध भगवानना रसथी तेना गनी भोगी चेतना रंगाय एटले अन्य विकल्प टाळी अनुभव-वचना सहित प्रभुस्वरूपे रसीली थाय त्यारे आत्मभाव प्रगटे, एटले वय जीव पहेलां आत्मावलंबी थाय त्यारे पोताना गुणने साधतो-पजावतो सम्यग्दर्शनादिक गुणने प्रकट करतो, गुणस्थानकक्रमे

સ્વરૂપાનુભવ કરતો થકો તહીનતા કરી અનાદિ કાલના સત્
પુજ્ય સ્વભાવને પ્રગટ કરે ભાવાર્થ એ છે કે પહેલા “હુ પણ
અને અનતગુણી બુ” એ નિર્ધારરૂપી સમ્યગર્ગન પ્રકટ, સ્યા
સત્તાનુ પ્રકાશન યાય, પત્રી જે સતા પ્રકટી તેના રમણરૂપ-અનુ
રૂપ ચારિત્ર ગુણ પ્રકટે, પત્રી શુક્લ ધ્યાન પ્રકટે, અને યતે નિ
વરણ કેવલજ્ઞાન પ્રકટે આવી રીતે પરમપૂજ્ય શ્રી અરિ
ભાવપૂજાવહે પૂજવાયી પોતાનો પૂજ્ય સ્વભાવ પણ પ્રકટ થયા
રહે નહી. એજ ભાવપૂજાનો હેતુ અને ભાવપુજાનુ સુદર પરિણામ :

પ્રાતિહાર્ય અને અતિશય

ચૈત્યમદન કરતી વેળા આપણે નિત્ય ગાડે છીએ કે—

‘ ચાર ગુણ અરિહત દેવ પ્રણમીજે ભાવે,

સિદ્ધ આઠ ગુણ સમરતા દુઃસ્વ ઢોહગ જાવે.”

આ ચાર ગુણ તે કયા તેની સમજણ પાડવી અત્રે અસ્થાને
ગણાય ચાર ગુણમા આઠ પ્રતિહાર્ય તથા ચાર અતિશયનો સમા
ધાય છે પ્રશુની પાસે પ્રતિહારિ તરોકે જે કાયમ રહે તેને પ્ર
હાર્ય એવુ નામ યપાય છે. આ પ્રાતિહાર્યોનુ સક્ષિપ્ત મુચન ની
શ્લોકમા સ્પષ્ટ રીતે કરવામા આવ્યુ છે—

અશોકવૃક્ષઃ સુરપુષ્પવૃષ્ટિઃ, દિવ્યધ્વનિશ્ચામરમાસન ચ ।

ભામડલ દુદ્ધુભિરાતપત્રૈ, સત્પ્રાતિહાર્યાણિ જિનેશ્વરાણામ્ ॥

અર્થાત્—અશોકવૃક્ષ, દેવતાઓવહે યતી પુષ્પવૃષ્ટિ, દિવ્ય ધ્વ
ચામર, સિંહાસન, ભામડલ, દુદ્ધુભિ અને દત્ર એ પ્રકારે જિને
ભગવાનના આઠ પ્રાતિહાર્યો છે. ભગવાનુ ય્યા ય્યા વિહાર કરે

अथवा समवसरे छे त्यां त्यां देवताओ पोते भक्तिभावथी प्रभुनी
 नायाथी वार गणुं विस्तीर्ण शाखावाळं अशोकवृक्ष, फलनी वृष्टि,
 भुनी देशना मनोहर रूप धारण करे ए माटे स्वरनी पूर्ति, भग-
 वानने विजवा माटे रत्नजडित श्वेत चामरो, भगवानने वेसवा माटे
 वर्णमय सिंहासन, प्रभुना मस्तकने पाछले भागे ज्योतिःमंडळ अने
 भुना मस्तकोपरि त्रण छत्र अने आकाशमां दुदुभि—वाजित्र रचे छे.
 प्रातिहार्ये तुं ध्यान करती वेळा आपणे केवी भावना भाववी जोडए
 पण श्रीसिद्धसेन सूरि महाराजे बहु कवित्वभरी वाणीमां कश्युं छे.

अशोकवृक्षना प्रातिहार्य विषे तेओश्री लखे छे के—

धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा,—

दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः ।

अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,

किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥

भावार्थ—हे प्रभु ! आप ज्यारे धर्मोपदेश आपो छो त्यारे आ-
 पासे वृक्ष पण अशोक थइ जाय छे तो पछी मनुष्यो शोकरहित
 एमां आश्चर्यज शुं छे ? वळी तेम वने ए अस्वभाविक पण
 ते, (कारण के) सूर्योदय थवाथी मनुष्योज मात्र विबोध किंवा
 कासने नथी पामतां, पण वनस्पति सुद्धां पत्रसंकोचादि लक्षण-
 वी निद्रानो त्याग करी विकासने पामे छे, ए सर्व जन प्रसिद्ध वात छे.

वीजा प्रातिहार्यना संबंधमां सूरेश्वर महाराज वदे छे के—

चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुखवृंतमेव,

विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ।

तद्गोचरे सुमनसा यदि वा मुनीश,
गच्छति नूनमथ एव हि वयनानि ॥

भावार्थ—हे स्वामिन् ! देवताओं ज्यारे पुष्पनी वृष्टि करे छेते ते पुष्पो मुख उचु राखीने तथा बीट-वयन नीचु राखीने पृ उपर पडे छे ए आश्चर्यकारक छे, परतु ते पण एक रीते तो वन जोगज छे, कारण के आपणी समीपे शोभायमान किंवा पवित्र वाळाना अंतर-वाह्य वयनो अधोमुख थाय अने भावमुख उन् याय ण तो स्वाभाविकज छे. प्रभुना प्रभावयी भव्य लोकना फि उपर केरी मनहर असर थाय छे तेनु आमा मृचन करयामा अ छे. जेवी रोते पुष्पना वयनो नीचे ढकाइ रहे छे अने पादडी विकसी रहे छे तेवीज रीते प्रभुना दर्शन मात्रयी भव्य प्राणीअं रोमेरोममा विकस्वरता प्राप्त थाय छे

त्रीजा प्रातिहार्यना सत्रधमा तेओश्री प्रकाशे छे के-

स्थाने गभीरहृदयोदधिसभयाया,

पीयूषना तत्र गिरः समुद्रोरथंति ।

पीत्या यतः परमममदसगभाजो,

भव्या प्रजति तरसाऽप्यजरामरत्न ॥

भावार्थ—समुद्रमथनने अते समुद्रमाथी जेवो रीते अमृत व आव्यू इतु अने तेना पानयी देवताओं अमर वन्या हता तेरी आपनी प्राणी गभीर हृदयरूपी समुद्रमा उत्पन्न थयेल अमृतनेज व फाडे छे ते स्वाभाविक छे, कारण के तेना पानयी उत्कृष्ट हर्षव भव्यात्मा-जो जलद्रीधी अजर-अमर पदने पामो जाय छे अर्थात् पनो दिव्य बनि अने अमृत एक मरखाज मुखकर तथा कल्याणकर

ચોથા પ્રાતિહાર્યના ત્રિપદમાં તેઓશ્રી દર્શાવે છે કે-

સ્વામિન્ સુદૃમવનસ્ય સમુન્પતંતો.

મન્યે વદંતિ શુચયઃ મુરચામરૌઘાઃ ।

યેઽસ્મૈ નતિં વિદધતે મુનિપુંગવાય,

તે નૂનમૂર્ધ્વગતયઃ સ્વલુ શુદ્ધભાવાઃ ॥

માવાર્થ—હે સ્વામિસ્ ! મને એમ લાગે છે કે પવિત્ર દેવતાઓવડે તારાં ચામરોના સમૂહ કે જે અત્યંત નીચે નમીને ઉલ્લે છે તેનો જ મહુષ્યોને પત્નો ઉપદેશ આપવાનોજ હોવો જોડણ કે ' જે મનુ- આ મુનિપુંગવ-તીર્થીકર પ્રશુને નમસ્કાર કરે છે તે સ્વરેગ્વર ઊંચી ળવાલા અને ઉચ્ચ ભાવવાલા વને છે. ' વીજા શબ્દોમાં કહીએ તો ચામરો જણાવે છે કે અમે પણ પ્રશુ આગલ પ્રથમ મસ્તક નમા- ળીએ અને એ લઘુતાજ અમને ઊર્ધ્વ ગતિએ પહોંચાડે છે.

પાંચમા પ્રાતિહાર્ય ત્રિપે શ્રી સૂરીશ્વરજી મહારાજ લખે છે કે-

શ્યામં ગંધીરગિમુજ્જ્વલહેમરત્ન,-

સિંહાસનસ્થમિહ ભવ્યમિસંડિનસ્ત્વા ।

આલોકયંતિ રથસેન નદંતમુદ્ધૈ,-

શ્રામીકરાદ્રિશિરસોવ નવાંધુવાહસ્ ॥

માવાર્થ—ભવિજીવરૂપી મયૂરો તે આ સમવસરણને ત્રિપે ઉજ્જ્વલ અને રત્નથી જડેલા સિંહાસનમાં બેઠેલા શ્યામવર્ણ યુક્ત અને ગંધીર ળીવાલા આપને, જેવી રીતે મેરુ પર્વતના શિખરમાં ઊંચે સ્વરે શબ્દ તા-ગર્જના કરતા નવીન મેઘનેજ જુએ તેમ ઉત્સુકપણાથી જુએ છે. રીત મેરુ પર્વતને સ્થાને સિંહાસન સમજવું અને મેઘને સ્થાને પ્રશુનું મ શરીર તથા ગર્જનાને સ્થાને પ્રશુની વાણી સમજવી.

छट्टा प्रातिहार्ये विषे एरी भावना रहेवी जोडए के-
 उद्गच्छता तव शितियुतिमडलेन,
 लुप्तच्छदञ्जविरगोरुतरुर्वभूव ।
 सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग,
 नीरागता व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥

अर्थात्—भगवानना महा तेजस्वी भामडळने लीये अशोरुत्प
 पत्रकाति तथा रक्तता पण लोपाइ गइ, तेनु कारण स्पष्टज ने क र
 द्वेष रहित श्री वीतराग भगवाननी समीपताना प्रभावे चेतनत प्रा
 नीरागता किंवा निर्धमत्वभावने पामे एमा आश्चर्यजनयी प्रभुनी
 णी साभळवायी जे अनहद लाभ थाय छे तेने एरु वाजु राखी
 प्रभुना दर्शनयी जे देवी आनद प्रकटे छे तेने पण एरु तरफ रेह
 दइए, तोपण प्रभुनी समीपतामा रेहवा मात्रयी पण केटलो लाभ थ
 छे तेनु आ श्लोकमा सूचन करवामा आव्यु छे

सातमा देवदुदुभि नामना प्रातिहार्य विषे केरी भावना सेववी
 दर्शावता श्रीमान् मुरीश्वर महाराज आ प्रमाणे रुहे छे-

भो भो' प्रमादमवयूग भजन्वमेन,—
 मागत्य निर्वृतिपुरि प्रति सार्धयाहम् ।
 एतन्निवेदयति देव जगत्प्रयाय,
 मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुदुभिस्ते ॥

अर्थात्—पोतानी गुर्जनारुडे आरुगने घरी लेतो अने शब्दायम
 करतो देवदुदुभिना नाद जगतने एम भयोरी रगो छे के 'हे व्रग
 गतना प्राणीभो ! आजसादि अतरग शत्रुभोने त्यजी दड आ
 तीर्थकर प्रभु के जे तमने मोक्षमार्ग दर्शावनार छे तेमनी पासे आ

तेमनुं शरण स्वीकारो', आ प्रातिहार्यथी प्रभु जगदुद्धारक तथा
ने अभयदान दाता छे एम मूचित थाय छे.

छेला छत्रत्रय नामना आठमा प्रातिहार्यनी भावना विषे आ-
श्री कहे छे के-

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ,
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ।
मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र,-
व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥

भावार्थ—हे प्रभु ! आपना उपर जे त्रण छत्र जैवुं देखाय छे ते
नथी, परंतु मुक्ताना समूहथी युक्त अने उल्लसित एवा छत्रना
नाथी चंद्र पोते पोताना तारामंडळ साथे त्रण प्रकारनुं शरीर
रण करी आपनी पासे सेवा अर्थे हाजर थयो होय एम लागे छे.

तमारी सेवमां हाजर थाय एमां नवाइ पण नथी, कारण के तेनो
धेकार जगतने जे प्रकाश आपवानो हतो ते आपना प्रकाशथी
हाइ गयो हतो, केमके आप पोते ज्यां त्रण भुवनने प्रकाशित करतां
त्यां चंद्र विचारो निष्फळ थाय एमां कइ आश्चर्य नथी !

आ प्रमाणे आठ प्रातिहार्यो जेम समजवा योग्य छे तेज प्रकारे
अतिशयो पण समजवा लायक छे. (१) अपायापगम अतिशय
जेनावडे द्रव्य भाव सर्व प्रकारना उपद्रवो नाश पामे छे, (२) ज्ञा-
तिशय के जेनावडे भगवान् लोकालोकनुं स्वरूप हस्तामलकवत्
हाली शके छे, (३) पूजातिशय के जेनावडे भगवान्नी पूजा
वानी राजा, महाराजा. चक्रवर्त्यादि अने इंद्र जेवा पण अभिलाषा
वे छे, (४) वचनातिशय के जेनाथी श्री तीर्थंकर प्रभुनी वाणी

३५ गुण सयुक्त होइने देव, गनुष्य अने तिर्यचने पोतपोः
भापामा समजाय छे

चैत्यवंदननी विधि.

अमे आ भूमिकामा पूर्वे एक वार कही गया छीए के यथाय
विधिना अभावे आपणे देवदर्शन किंवा देवपूजानु फळ जेवु जं
तेवु प्राप्त करी शकता नथी, एटला माटे आ स्थळे ते विषे कइक
पृता करवानु अमे उचित धार्यु छे चैत्यवदन करनारे प्रथम दश
समजी लेवा जोइए ते नीचे प्रमाणे—

(१) नैपेट्रिकोत्रिक—प्रथम निसिही देरासरे जता अग्रद्वारे
वी आ निसिहीना उच्चारनी साथेज घर विगेरेना सावय-पा
व्यापारोथी निवर्त्तवु. निसिहोने अर्थ पण एज छेके पापमय व्य
रोनो मन, वचन, कायाथी निषेय करवो. बीजी निसिहो जिन
गभारामा पेसती बखते उच्चारवी, अने तेनी साथे देरासरने ल
व्यापारोथी निवर्त्ती द्रव्यपुजामा मनने जोडुं, त्रीजी निसिही चै
वदनना अवसरे भणवी, अने तेनी साथे द्रव्यपुजाथी निवर्त्ती र
नादिवढे भावपुजामा तलीन थवानो प्रयत्न करवो.

(२) प्रदक्षिणात्रिक—देरासरना दक्षिण भागथी चैत्यने
प्रदक्षिणा देवो अने मनमा एंवी भावना भाववी के ससारभ्रम
ट्टवा माटे प्रभुनी जमणी वाजुथी त्रण प्रदक्षिणा करी अनुक्रमे इ
दर्शन अने चारित्रनी आराधना करु छु, अर्थात् त्रण प्रदक्षिणा इ
दर्शन, चारिर्त्तरूप रत्नत्रयैनी सिद्धिने माटे आपु छु.

(३) प्रणामत्रिक—ते हाथ जोडी अजलि करी प्रणाम करवा
केहथी शरीरने जरा नमाडी माथा तथा हाथ आदिथी भूमिनो

करवो ते, त्रोजुं पंचांग प्रणाम एटले वे जानु, वे हाथ तथा मस्त-
भूमिए लगाडो खमासमण आपी प्रणाम करवा ते. आ त्रण प्र-
रे प्रभुने प्रणाम थइ शके छे.

(४) पूजात्रिक—(१) अंगपूजा (२) अग्रपूजा (३) भावपूजा,
त्रण प्रकारे प्रभुपूजा थइ शके छे. अंगपुजामां मन, वचन, काया-
पवित्रता साथे बस्त्रो, पूजानां साहित्यो तथा भूमि अने धननी
शुद्धि होवी जोइए. प्रथम शुद्ध अने निर्दोष स्थाने शांत चित्ते
पूजादि करी, निर्मल बस्त्रो परिधान करी अठपडो मुखकोश थाय
उत्तरासंग राखी मुखकोशवांधी प्रभुनी अंगपूजामां प्रवृत्त थवुं
चित छे. अंगपूजाना प्रारंभमां प्रतिमाना प्रक्षालन पूर्वे भगवान-
अंगने मोरपीछथी के पुंजणीथी प्रमार्जवुं अने त्यारवाद स्नान करा-
स्नान थइ रह्या पछी प्रभुना अंगने अंगलहणां वती लुछी नारखी
सर, चंदन, कर्पूर आदिथी विलेपन करवुं तेसज घरेणां तथा फुल-
दि चडावी मनने उल्लसित करवुं. आ सर्व प्रवृत्ति दरमियान
वात मनमां सतत जाग्रत रहेवी जोइए के मात्र प्रभुने श्रु-
रवा माटेज पूजा नथी, पण तेनी साथे आपणे प्रभु जेवा नि-
ष बनी शकीए एटला माटे आ वधी विधि सेववामां आवे छे.
क आत्माए केवल वाह्यडंवरमांज भुंझाइ नहीं जतां आत्मिक
मो प्राप्त करवानुं लक्ष राखवुं जोइए एवो कहेवानो आशय रहे छे.
अग्रपुजामां धूप, दीप, नैवेद्य आदिनो समावेश थइ जाय
थी अर्थात् प्रभुनी आगळ धूप करवो, दीपक प्रकटाववो तथा
नैवेद्य, फल ने नैवेद्य धरवां अने आरती मंगळदीवो उतारवां,
वजाववो ए सर्व अग्रपुजानो विषय छे. चोखानो साथीयो
मती बखते पण साथीयानां चार पांखडां ते चार गति-मनुष्य

ગતિ, દેવગતિ, નરકગતિ તથા તિર્યચગતિ છે એમ વિચારી ચારેગતિથી મુક્ત થવા સારુ તેની ઉપરના ત્રણ વિદુ જ્ઞાન-દર્શન-ચારિત્રરૂપી ત્રણ રત્નો પ્રાપ્ત કરવાની ભાવના ભાવવી જે એ એટલુજ નહીં, પણ સાથીયાના સર્વોપરિ ભાગે જે અર્ધ ચદ્રવ ચિહ્ન કરવામા આવે છે તે સિદ્ધશિલાની પ્રતિકૃતિ છે એમ ચારી એ સ્થાન મેલ્લવવાની ત્રિલોકનાથને પ્રાર્થના કરવી જોઈ

ભાવપુજામા સ્તુતિ, સ્તવન તથા ચૈત્યવદનનો સમાવેશ થ છે. કાર્યની સરલતા ભાવનેજ અવલવે છે એ વાત અમે પણ અનેક વાર કહી ગયા છીએ, તેથી આભાવપુજા વચ્ચે સ્તુતિ સ્તવનાદિના અર્થોનુ મનન કરતા ભાવનાશ્રેણીએ આરોહણ કરવા અભ્યાસ રાખવો

(૫) અવસ્થાત્રિક—પિંડસ્થ અવસ્થા, પદસ્થ અવસ્થા અને રૂપાતીત અવસ્થા. એ ત્રણ અવસ્થાઓનો આ અવસ્થાત્રિકમા સમાવેશ થાય છે પ્રભુએ તીર્યકર નામકર્મ વાવ્યુ ત્યારથી લડને તે વલ્લજ્ઞાન પ્રાપ્ત કર્યુ ત્યામુધીની અવસ્થાને છદ્મસ્થ અવસ્થા કહવામા આવે છે, અને તેમા પણ જન્માવસ્થા, રાજ્યાવસ્થા, શ્રાવણાવસ્થા સમાઈ જાય છે પ્રભુને સ્નાન કરાવતી વચ્ચે જન્મસ્થાનુ ચિંતન કરવુ, કૈશર ચદન અને શ્રગારો ચડાવતી વચ્ચે રાજ્યાવસ્થાનુ ચિંતવન કરવુ અને ભગવતની કૈશાદિ રહિત મુર્તિ ને દાઢી શ્રમણાવસ્થાનુ ધ્યાન કરવુ પદસ્થ અવસ્થાનુ ધ્યાન કરવેલા કેવળી તરીકેની અવસ્થા ચિંતવવી, અને તેની સાથે આટલું તિહાર્ય તથા ચાર અતિગયની ભાવના સયુક્ત કરવી રૂપાતીત અવસ્થા એ સિદ્ધપણાની અવસ્થા છે. પ્રભુને પર્યાકાસને અથવા કાસોત્સર્ગમુદ્ર

સ્થિત થયેલા નીહાળી તદ્દૂપ થવાની ભાવના ભાવવાની છે.

(૬) દિશાવર્જનત્રિક—ઉંચી, નીચી અને આડી અવલો દૃષ્ટિ ફે-
રવી મૂકી દર કેવલ માત્ર જિનમુખ ઉપરજ દૃષ્ટિ સ્થાપી રાખવી તેને
દિશાવર્જનત્રિક નામથી સંબોધવામાં આવે છે.

(૭) પદભૂમિપ્રમાર્જનત્રિક—ચૈત્યવંદનાદિ કરતી વચ્ચે પગ મૂ-
કાની ભૂમિને ત્રણ વાર પુંજવી તેનો આ ત્રિકમાં સમાવેશ છે.

(૮) આલંબનત્રિક—નમુથ્યુણં વિગેરે સૂત્રનો ઉચ્ચાર કરતાં અ-
રો શુદ્ધ રીતે બોલવા તે વર્ણાલંબન અને સૂત્રના અર્થનું મનન કરવું
અર્થાલંબન તથા જિનપ્રતિમાની ઉપર દૃષ્ટિ સ્થાપી રાખવી તે પ્રતિ-
લંબન, એમ આલંબનના પાંચ ત્રણ પ્રકાર છે.

(૯) મુદ્રાત્રિક—અર્થાત્ યોગમુદ્રા જિનમુદ્રા અને મુક્તાશુક્તિમુદ્રા, એમ
ત્રણ પ્રકારની મુદ્રાઓ સમજી ભાવિક પૂજકે યોગ્ય અવસરે તે મુજબ વ-
હું. બે હાથની દશ આંગળીને પરસ્પર મેલવી કમલના ડોડાના આ-
ગળે હાથ જોડી પેટ ઉપર કોણી રાખવી તે યોગમુદ્રા કહેવાય. આ
મુદ્રાએ સ્વમાસમણ દેવાં અને સ્તવનાદિ કહેવાં. બે પગનાં આંગળાંની
પ્રમાણમાં આગળ ચાર આંગળ જોડવું અને પાછળથી સહેજ ઓછું અંતર
રાખી ઉભા રહી કાલ્પસગ્ગ કરવો તે જિનમુદ્રા કહેવાય. આ મુદ્રાએ
દેવાં દેવાનાં છે, અરિહંતચેડયાણં આદિ કહેવાનું છે તથા
કાલ્પસગ્ગ કરવાના છે. બે હાથ સરસ્વા ગર્ભિતપણે મેળા કરી
કાલ્પના મધ્ય ભાગમાં લગાડવા તેને મોતીની છીપ જેવી મુદ્રા કહે-
વામાં આવે છે. આ મુદ્રાએ જય વીરરાય આદિ મળવાના છે.

(૧૦) પ્રણિધાનત્રિક—(૧) જાવંતિ ચેડાંડ ગાથાથી ચૈત્ય-
નિરૂપ પ્રણિધાન થાય છે, (૨) જાવંત કેવિ સાહુ ગાથાથી ગુરુ-
નિરૂપ પ્રણિધાન થાય છે અને જય વીરરાય પ્રમુખ સૂત્રથી પ્રાર્થના-

સ્વરૂપ પ્રણિધાન થાય છે. એ ત્રણ પ્રકારના પ્રણિધાનનું સ્વરૂપ લક્ષ્મી રાક્ષસા યોગ્ય છે.

દેરાસરમાં પ્રવેશ કરતી વેળા ઉક્ત દશત્રિક જાણવાની જેમ જરૂર છે તેજ પ્રકારે અભિગમનું સ્વરૂપ પણ લક્ષ્યત હોવું જોડાઈ. અભિગમના પાંચ પ્રકાર છે. (૧) ફલ, ફૂલદિ સચિત્ત વસ્તુનો ત્યાગ કરવો. (૨) નાણુ, વસ્ત્ર, આશુપણ આદિ અચિત્ત વસ્તુને ન ઝાઢવું. (૩) મનને એકાગ્ર કરવું. (૪) ઉત્તરાસગ એકવદુ અને નહીં છેડા સહિત રાક્ષસુ (૫) જિનેશ્વરને દૂરથી નીહાલી અજલિવ પ્રણામ કરવા અને “નમો જિણાણ”નો ઉચ્ચાર કરવો. દર્શન કરવેળા પુરુપોએ જિનેશ્વર ભગવાનની જમણી દિશાએ ઉભા રહેવું અને સ્ત્રીઓએ ડાબી દિશામાં ઉભા રહેવું એવી શાસ્ત્રાજ્ઞા છે. આ આજ્ઞા કેટલેક સ્થળે પાલન થતું નહીં હોવાથી સ્ત્રી પુરુપનો સઘટ્ટ થાય છે તે ડચ્છવા જોગ નથી.

પ્રસગોપાત અવગ્રહ અને વદના સવત્રે પણ વે વોલ કહીશુ. જિનેશ્વર ભગવાનથી ૯ હાથ દૂર રહી ચૈત્યવદના કરવી તેને જઘન્ય અવગ્રહ કહેવામાં આવે છે. નવ હાથથી ત્રધારે અને સાઠ હાથની અંતર રહી વદના કરવી તેને મધ્યમ અવગ્રહ કહેવાય છે અને સાઠ હાથ દૂર રહી વદના કરવી તે ઉત્કૃષ્ટ અવગ્રહ છેલ્લાય છે. વદનાના પાંચ તેવા ત્રણ ભેદ છે. કેવલ નવકારાદિ સ્તુતિ શ્લોકાદિથી પ્રશુવદ કરવી તે જઘન્ય વદના, ચૈત્યવદન કરી, નમુશુણ મળી; ઉભા અરિહત્તચેડયાણ કહી કાઉસ્સગ પારી સ્તુતિ કહેવી તેને મધ્યમ વદના અને પાંચ નમુશુણ, આઠ સ્તુતિ તથા જાવતિ ચેડયાણ. જાવતિ કેવિ સાહ અને જય વીયરાયવટે વંદના કરવી તેને ઉત્કૃષ્ટ વદના

૧ આ અવગ્રહમાં દેરાસરની વિશાલતા વિગેરે પ્રમાણ ધ્યાનમાં રાક્ષી તથોગ્ય અવગ્રહ જાણવાના છે

हेवामां आवे छे.

आपणे जे स्तवनोनो देवमंदिरमां पाठ करीए छीए तेने पण पू-
 षाचार्योए चार भागोमां बहेची नाख्यां छे अने ते भेदो पण आ-
 गोपकारक होवाथी हृदयमां राखवा लायक छे. स्तवनना सामान्य-
 चार प्रकार छे. (१) प्रभु पासे योक्षनी मागणी थनी होय एवा
 कारना स्तवनने यांचारूप स्तवन कहेवामां आवे छे. दाखळा तरी-
 :-“जिनजी चंद्रप्रभु अवधारो के नाथ नीहाळजो रे” ए स्तवनमां
 र्त्ता रामविजय कवि पोते पोतानो उद्धार करवानी श्री वीतराग देवने
 र्थना करे छे, तेथी तेवी ढवनां स्तवना यांचारूप स्तवनमां स्थान
 मे छे. (२) गुणोत्कीर्त्तनरूप स्तवन अर्थात् प्रभुना बाल्य अने
 भ्यंतर गुणोना वर्णन साथे तेमनी वाणी अने अतिशयोक्तुं स्वरूप
 मां लक्षगत थतुं होय तेने गुणोत्कीर्त्तनरूप स्तवन कहेवामां
 आवे छे. दृष्टांत तरीके—

“ श्री श्रेयांस जिणंद घनाघन गहगह्यो रे,
 वृक्ष अशोकनी छाये सुभर छाइ रह्यो रे;
 भामंडळनी झवक झवूके बीजळी रे.

उन्नत गढत्रिक इंद्र धनुष्य शोभा मळी रे. ”

आ स्तवनमां प्रभुनां अतिशयोक्तुं अने प्रातिहार्योक्तुं चित्र दृष्टि स-
 ख खडुं थाय छे. तेथी तेने गुणोत्कीर्त्तनरूप स्तवननी कक्षामां सू-
 वामां आवे छे. (३) स्वनिंदारूप स्तवन—अर्थात् स्तोत्र भणनार जे
 वयवडे पोतानी आत्मनिंदा प्रभु पासे सरल चित्त करतो होय तेने
 निंदारूप स्तवन कहेवाय छे. दाखळा तरीके रत्नाकरपचीशी के
 मां बहु असरकारक रीते स्वदोषोक्तुं वर्णन कर्युं छे आ पेटामां स-
 इ शके तेमज गुजराती भाषानां स्तवनोमां पण—
 “ प्रभुजी गुज अवगुण मत देखो—

રાગદશાથી તું રહે ન્યારો. હું મન રાગે ઘાહું
 દ્વેપરહિત તુ સમતા બીનો, દ્વેપમારગ હુ ચાહુ. પ્રભુજી૦ ”

એવા અનેક સ્તવનો મઠી આપે છે. (૪) આત્મસ્વરૂપાનુભવ અશ્વ
 ત્ પ્રભુ સન્મુખ નિશ્ચય સ્વરૂપથી પોતાનામા અને પ્રભુજીમા લેશ
 ભેદ નથી એના અનુભવપૂર્વક સત્ત્વ આત્મસ્વરૂપના નિરૂપણ સાથે સ
 તિ કરતી તેને આત્મસ્વરૂપાનુભવરૂપ સ્તવન કહેવાય. દાગલા તરીકે

“જગત્ દિવાકર શ્રી નમીશ્વર સ્વામા જો,
 તુજ મુસ ડીઠે નાઠી મૂલ અનાદિની રે;
 જાગ્યો મમ્યગ્જ્ઞાન સુધારસ ધામ જો,
 છાડી દુર્જય મિથ્યા નિંદ પ્રમાદની રે—”

ઇત્યાદિ સ્તવનો કે જેમા સ્તુતિ કરનાર શુદ્ધાત્મા પ્રભુની સાથે તદ્
 નતા અનુભવતો હોય તેને ઉપર કહી તેનો કોટીમા મૂકામા આપે

શ્રાંતિમ વચન. ❦❦❦

અધિધે થતું પૂજન તથા વદન દૂર થાય અને પૂર્વાચાર્યોં દશ
 વેલ ફલ પ્રાપ્ત થાય એટલામાટે અમે શાસ્ત્રીય પદ્ધત્તિનો કિંચિન્ પરિચ
 આપનાનો આ ભૂમિકામા પ્રયત્ન સેવ્યો છે. તેમા જો કોડ પળ સ્
 મૂલચૂક કે પ્રમાદ જેવું જણાય તો તેને માટે ક્ષમા યાચી છે એટલે પ્ર
 થીં એ ઠીં એ કે વીતરાગ દેવની પૂજા કે જે પાપનો લોપ કરે છે, દુ
 તિને કાચી ઘડીમા દઢી નાચે છે, આપદાઓનો સહાર કરે છે, પુ
 નો મચય કરે છે, સૌંદર્યને-લક્ષ્મીને ંધારે છે, આરોગ્ય, સૌમા
 અને પ્રેમને સ્વીલાપે છે એટલું જ નહીં, પણ યશોરાશિને પ્રસરાવી અ
 સ્વર્ગ તથા મોક્ષ પર્યંત લડ જઈ શકે છે તે પૂજા અને તે પૂજાનું અલે
 કિક રમણીય ફલ અમારા વાચકોને પણ પ્રાપ્ત થાઓ

પ્રકાશક.

अनुक्रमणिका.

तवनसंग्रह खंरु १ लो प्रातःस्मरण पृष्ठ १ श्री २३.

विवर.	नाम.	पृष्ठ.
१	नवकार मंत्र	२
२	नवकार मंत्रनु महात्म्य-छंद. (वांछित परे विविध परे)	२
३	श्री गौतमस्वामीनो रास. (मोटो)	५
४	श्री गौतमस्वामीनो छंद. (वीर जिनेश्वर कॅरो शिष्य)	१६
५	श्री गौतमस्वामीनुं प्रभाती स्तवन. (मात पृथ्वीसुत प्रातः उठी नमो)	१७
६	सोळ महासतीओनुं प्रातःस्मरण. (आदिनाथ आदे जिनवर वंदी)	१८
७	श्री प्रभाती स्तवन. (उठो उठो रे मोरा आतमराम)	२०
८	विषयवासनात्यागनुं प्रभाती स्तवन. (विषयवासना त्यागो चेतन)	२१
९	श्री प्रभाती स्तवन. (रे जीव जिनधर्म कीजीए)	२२
१०	श्री प्रभाती स्तवन. (जागे सो जिन भक्त कहावे)	२३
<p>तवनसंग्रह खंरु २ जो. देशसरे जवानी विधि</p> <p style="text-align: right;">पृष्ठ २३ श्री ४३.</p>		
११	देशसरे जवानी विधि.	२४
१२	स्वस्तिक (साथीया) नी समजण.	२५
१३	पूजा करवावी विधि.	२६
१४	पूजानी द्रव्य सामग्री.	२७

अथ चैत्यवन्दन विधि पृष्ठ १७ श्री ३४.

१५ स्तुति अत्र मे मकर जन्म	२८
१६ अथ चैत्यवन्दन वार गुण अरिहत देव	२९
१७ अथ ज क्रिचि	३०
१८ अथ नमुद्युण	३०
१९ अथ जाप्रति चेटआट	३१
२० अथ जाप्रत केपि साहू	३१
२१ अथ नमस्कार	३१
२२ अथ स्तवन. अतरजामी सुण अलवेसर	३१
२३ अथ जय वीथराय	३२
२४ अथ अरिहतचेटयाण.	३२
२५ अथ अन्नय ऊससिण्ण.	३२
२६ अथ थोय श्री शत्रुजय तीरथ सार	३३

जिनदर्शन तथा पूजाभावनास्वरूप पृष्ठ ३४ श्री ३५

२७ दर्शनभावना. दर्शनात् दुरितप्रस'	३४
२८ पूजाभावना प्रभु पूजनकु हु चलयो	३५
२९ नय अग पूजाना दोहा जल भरो सपुटपत्रमा	३५
३० प्रदक्षिणाना दुहा काल अनादि अनतथी	३६
३१ साथीयो करती वेळा भाववाना दुहा	३६
३२ फळ मूकती व्रतते भाववाना दुहा	३६
३३ जिनदर्शन महिमा फळ यास्याम्यायतन जिनस्य लभते	३६
३४ दर्शन कर्या पत्नी केटलीक जाणवाजोग मूचना	४५

३५	आजीविका चलाववाना सात प्रकार.	४०
३६	द्रव्यशुद्धि.	४१
३७	आवक जावकनो नियम.	४१
३८	धर्म, अर्थ अने काम.	४२
३९	देश काळ विरुद्ध.	४२
४०	रात्रिभोजननो त्याग.	४३

स्तवनसंग्रह खंरु त्रीजो. तिथि विगेरेनां चैत्यवंदनो,

स्तवनो तथा शोयो पृष्ठ ४४ श्री ६०.

४१	बीजनुं चैत्यवंदन. दुविध धर्म जिणे उपदिश्यो	४४
४२	बीजनुं स्तवन. प्रणमी शारद माय	४५
४३	ज्ञानपंचमीनुं चैत्यवंदन. त्रिगडे वेठा वीर जिन	४६
४४	ज्ञानपंचमीनुं स्तवन. पंचमी तप तमे करो रे प्राणी	४७
४५	अष्टमीनुं चैत्यवंदन. माहा सुदि आठमने दिने	४८
४६	अष्टमीनुं स्तवन. हारं मारं ठाम धरमना साढा पचवीश देश जो	४९
४७	एकादशीनुं चैत्यवंदन शासननायक वीरजी	५१
४८	एकादशीनुं स्तवन. जगपति नायक नेमि जिणंद.	५१
४९	नवपदजीनुं चैत्यवंदन. शिवसंपदा वरवा सदा नव पद धरुं हुं ध्यानमां	५३
५०	श्री सिद्धचक्रनुं स्तवन. श्री सिद्धचक्र आराधीण	५४
५१	अखात्रीजनुं स्तवन. आदि जिणेश्वर कीयो पारणुं	५४
५२	पजुसणनुं स्तवन. पर्वपजुसण आवीयां रे लाल	५५
५३	दीवाळोनुं स्तवन मारे दीवाली थइ आर्ज	५७

- ५४ बीजनी थोय दिन सकळ मनोहर
 ५५ पाचमनी थोय. श्रावण सुदि दिन पंचमी ए
 ५६ आठमनी थोय. मगळ आठ करी जस आगळ
 ५७ एकादशीनी थोय. एकादशी अति रुअडी
 ५८ पजुसणनी थोय. सत्तरभेदी जिनपूजारचीने
 ५९ सिद्धचक्रनी थोय. जिनशासन वछित
 ६० नित्यस्तुति. सकळ करम वारी
 ६१ स्तुति काव्य. अशोरुवृक्ष
 स्तवनसंग्रह खंरु ४ थो. चोवीश तीर्थकरनां चैत्यवंदनं

स्तवनां तथा थोयो पृष्ठ ६१ श्री एए.

- ६२ स्तुति. तुभ्य नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ,
 ६३ श्री रूपभ जिन चैत्यवंदन. आदि देव अलवेसरु
 ६४ " अजितनाथ " " आजितनाथ प्रभु अवतर्या
 ६५ " सभवनाथ " " सावथी नथरी धणी
 ६६ " अभिनदन " " नदन सवर रायना
 ६७ " सुमतीनाथ " " सुमतिनाथ सुहंरु
 ६८ " पद्मप्रभ " " कोसवी पुरी राजीओ
 ६९ " सुपार्श्वनाथ " " श्री सुपास जिणद पास
 ७० " चद्रप्रभ " " लक्ष्मणा माता जनमीआ
 ७१ " सुविधिनाथ " " सुविधिनाथ नवमा नमु
 ७२ " शीतळनाथ " " नदा द्दरथ नंदनो
 ७३ " श्रेयासनाथ " " श्री श्रेयास अग्यारमा
 ७४ " वासुपूज्य " " वासव वदित वासुपूज्य

५	श्री त्रिमलनाथ स्तवनकंपिलपुरे त्रिमल प्रभु	...	६५
६	अनंतनाथ ,, ,, अनंत अनंत गुण आगरु	...	६६
७	धर्मनाथ ,, ,, भानुनंदन धर्मनाथ	...	६६
८	शांतिनाथ ,, ,, शांति जिनेश्वर सोळमा	...	६६
९	कुंथुनाथ ,, ,, कुंथुनाथ कामित दाये	...	६७
१०	अरनाथ ,, ,, नागपुरे अर जिनवरु	६७
११	मल्लिनाथ ,, ,, मल्लिनाथ ओगणीशमा	६७
१२	मुनिसुव्रतस्वामी,, मुनिसुव्रत जिन वीशमा	...	६८
१३	नमिनाथ ,, ,, मिथिला नयरीनां राजीओ	...	६८
१४	नेमिनाथ ,, ,, नेमिनाथ वावीशमा	...	६९
१५	पार्श्वनाथ ,, ,, आश पूरे प्रभु पासजी	...	६९
१६	महाबोरस्वामी ,, सिद्धारथ सुत वंदीण	...	६९
१७	आदीश्वर प्रभुनुं स्तवन माता मरुदेवीना नंद	७०
१८	अजितनाथ प्रभुनुं स्तवन. अजितनाथजो अर्ज उचरुं	७१
१९	संभवनाथ प्रभुनुं स्तवन. साहेव सांभळो रे	...	७१
२०	अधिनंदन प्रभुनुं स्तवन. करुणा नजरथी प्रभुजी कृपालु	...	७३
२१	सुमतिनाथ प्रभुनुं स्तवन. जगतगुरु नाथ साचा रे	...	७३
२२	पद्म प्रभुनुं स्तवन. हे पदम प्रभुजी परम कृपालु	७४
२३	सुपार्श्व प्रभु स्तवन. तार प्रभु तार मुजने	...	७५
२४	चंद्रप्रभनुं स्तवज. चंद्रप्रभ भगवान	...	७५
२५	सुविधिनाथ प्रभुनुं स्तवन. मुजरा साहेव,	...	७६

- ९६ श्री शीतलनाथ प्रभुनु स्तवन. हे शीतलनाथ जिन प्यारा ५
- ९७ ,, श्रेयासनाथ प्रभुनु स्तवन जिनपति श्रेयासनाथ ५
- ,, अरज आ स्वीकारो ५
- ९८ ,, रासुपूज्य प्रभुनु स्तवन. स्वामी तुमे काइ कामण कीधु ५
- ९९ ,, विमलनाथ प्रभुनु स्तवन. विमलनाथजी मृणजो तमे ५
- १०० ,, अनतनाथ ,, ,, नमृ हु करो रे कृपा जिनराय ८
- १०१ ,, धर्मनाथ प्रभुनु स्तवन. जगतपालजी धर्मनाथ रे ८
- १०२ ,, शातिनाथ ,, ,, शक्ति प्रभु पिनति एक मोरी रे ८
- १०३ ,, कुयुनाथ प्रभुनु स्तवन कुयु प्रभुजी दया दिल धारो ८
- १०४ ,, अरनाथ ,, ,, आ अरजी अर जिनपरजी ८
- १०५ ,, मल्लिनाथ ,, ,, मल्लि जिनेश्वर हमसे नोले ८
- १०६ ,, मुनिमुत्रत ,, ,, नमु मुनिसुत्रत जिनराया ८
- १०७ ,, नमिनाथ ,, ,, नमिनाथ भजो जयकारी ८
- १०८ ,, नेमिनाथ ,, ,, साभळ रे सखीया हमारी ८
- १०९ ,, पार्थनाथ ,, ,, आगो आवो पासजी मुज मळीया रे ८
- ११० ,, महावीरस्वामीनु स्तवन. सिद्धारथना रे नदन पिनवुं ८
- १११ ,, महावीर प्रभुनु स्तवन २ जु. वीर जिनेश्वर साहेव मेरा ८
- ११२-१३५ चोप्रीश तीर्थकरनी चोप्रीम थोयो अथवा स्तुतिओ
- सस्कृत ८९ वी ०
- १३६ ,, महावीरस्वामीनी थोय वीजी सस्कृत ६
- १३७ ,, सीमदिरस्वामीनी थोय. ०
- १३८ ,, पच तीर्थनी थोयो ६
- १३९ ,, सिद्धाचलजी थोय ८

३० श्री शांति जिन थोय.	१८
३१ ,, जिन पंचक थोय.	१९

स्तवनसंग्रह खंरु ५ मौ. प्रकीर्ण स्तवन तथा चैत्यवंदन-
संग्रह पृष्ठ १०० श्री १एए.

३२ स्तुति काव्य.	१००
३३ श्री चोवीस तीर्थकरनुं चैत्यवंदन ग्रह समे भात्र धरी घणो	१००
३४ ,, महावीरस्वामीनुं स्तवन. श्री जिनेश्वरा महा- चोर भयहरा	१०१
३५ पार्श्वनाथ स्तवन. पास जिणंद सदा शिवगामी	१०१
३६ ,, नेमिनाथ स्तवन. भवि तुमे नेमनाथने सेवो रे	१०२
३७ ,, रूपभदेवनुं स्तवन. भवजळ पार उतार	१०३
३८ ,, अथ स्तुति काव्य. अष्टापदो श्री आदि जिनवर	१०३
३९ ,, पंच तीर्थ स्तुति. आवु अष्टापद गिरनार	१०४
४० ,, चैत्यवंदन. आज देव अरिहंत नमुं	१०४
४१ ,, आदिनाथ स्तवन. जगजीवन जग बाल हो	१०४
४२ ,, पार्श्वनाथनुं स्तवन. रातां जेवां फुलडां ने	१०५
४३ ,, महावीर जिन स्तवन. नारे प्रभु नहीं मानुं	१०६
४४ ,, सिद्धाचळ स्तुति. पूर्णानंदमयं महोदयमयं	१०७
४५ ,, सिद्धाचळ खामणां. सिद्धाचळ समरुं सदा	१०८
४६ ,, सिद्धाचळनुं चैत्यवंदन. विमल केवलज्ञान कमळा	१०८
४७ ,, सिद्धाचळ स्तवन. विमलाचळवासी मारा बाला	१०९
४८ ,, ,, २ जुं. श्री रे सिद्धाचळ भेटवा—	११०
४९ ,, ,, ३ जुं. मारुं मन मोहु रे श्री सिद्धाचळे रे	११०
५० ,, ,, ४ थुं सिद्धाचळ गिरि भेट्या रे	१११

- १६१ श्री शत्रुजय गिरीराज विनति. सुण जिनवर शेत्रुंजा धणीजी १
 १६२ ,, चैत्यवदन. अरिहत नमो भगवत नमो १
 १६३ ,, रूपभ जिन स्तवन. आज आनद अपार १
 १६४ ,, अजितनाथ स्तवन. अरज अजित जिनराज रे १
 १६५ ,, सभवनाथनु स्तवन. प्रभु तोरी सुरत पर वारी वारीआ १
 १६६ ,, अभिनदन जिन रतवन. सुनो अरजो आ मोरी
 ओ प्रभु मोरा १
 १६७ ,, जिनराज विनति परम देवनो देव तु खरो १
 १६८ ,, सीमधर जिन स्तवन. सुणो चदाजी १
 १६९ ,, ,, २ जु. धन्य वन्य महाविदेहजी १
 १७० ,, पार्श्वनाथ स्तुति. सकलकुशलवल्ली पुष्कारावर्तमेघो १
 १७१ ,, शांति जिन स्तवन. शांतिजीनु मुखडु जोवा भणीजी १
 १७२ ,, पार्श्वनाथ स्तवन पास गणेश्वरा सार कर सेवका १
 १७३ ,, वीर प्रभुनु चैत्यवदन. सिद्धार्थसुत वंदीए १
 १७४ ,, प्रभुना यर्णनु चैत्यवदन पयप्रभ ने वासुपूज्य १
 १७५ ,, प्रभुना भवनु चैत्यवदन. प्रथम तीर्थकरतणा हुवा १
 १७६ ,, अरिहतना लठननु चैत्यवदन. वृषभ लठन रिखभदेव १
 १७७ ,, रूपभदेवनु स्तवन. प्रथम जिनेश्वर प्रगमीए १
 १७८ ,, अजित जिन स्तवन. प्रीतलडी वधाणी रे अजित जिणदशु १
 १७९ ,, सभवनाथजीनु स्तवन साहिव साभळो रे १
 १८० ,, अभिनदन जिन स्तवन. अभिनदन जिन दरिशन तरसीए १
 १८१ ,, सुमति जिन स्तवन. अतुलीवळ अरिहत नमीजे १

८२	श्री पद्मप्रभुनुं स्तवन. श्री पद्मप्रभु जिनराजजी	१३२
८३	„ मुपार्ध्व जिन स्तवन. श्री जिन सातमो राज	१३३
८४	„ चंद्रभुजीनु स्तवन. जिनजी चंद्रप्रभु अवधारो के	१३४
८५	„ सुविधि जिन स्तवन. साहेब सुविधि जिणंदने रे लो	१३५
८६	„ शीतलनाथजीनु स्तवन. महारे शीतल जिनथुं लागी पूरण प्रीत जो	१३६
८७	„ श्रेयांस जिन स्तवन. तुमे बहु मित्री रे साहिवा	१३७
८८	„ वासुपूज्यनु स्तवन. वासुपूज्य जिन त्रिभुवनस्वामी	१३८
८९	„ विमळ जिन स्तवन. विमळ विमळ गुणे राजता	१३९
९०	„ अनंत जिन स्तवन. ज्ञान अनंतुं ताररे रे	१४०
९१	„ धर्म जिनेश्वरनुं स्तवन. श्री धर्म जिणंद दयाळजी ...	१४१
९२	„ शांति जिन स्तवन. शांति जिनेसर साहिवारे	१४२
९३	„ कुंथुनाथ स्तवन कुंथु जिननी हो सेवा मागुं महारा लाल	१४३
९४	„ अरनाथनु स्तवन. श्री अर जिन भवन्नळनो तारु ..	१४३
९५	„ मल्लि जिन स्तवन. महिमा मल्लि जिणंदनो	१४४
९६	„ मुनिसुव्रत जिनस्तवन. मुनिसुव्रत जिन वंदतां	१४५
९७	„ नमि जिन स्तवन. नमिनाथ जिणेसर वंदो के	१४६
९८	„ नेमनाथ जिन स्तवन. निररुथो नेमि जिणंद रे अरिहंताजी	१४७
९९	„ शांति जिन विज्ञप्ति. वे कर जोडी चिनवुं	१४८
१००	„ सिद्धाचळनु स्तवन. चैत्यवंदन श्री विमळ गिरिवर सुर सुसेवित तीर्थ जे शाखत सदा	१४९

२०१	श्री रूपभदेवनु स्तवन रूपभ जिणदशु प्रीतडी	१५०
२०२	सिद्धाचलनु स्तवन, सुण सुण शत्रुजय गिरी स्वामी	१५०
२०३	सिद्धाचल स्तवन जात्रा नवाणु करीए विमळगिरि	१५०
२०४	पुडरीकजीनु स्तवन, प्रणमो प्रेमे पुडरीक राजीओ	१५०
२०५	रायणनु स्तवन नीलुडी रायण तरु तळे	१५३
२०६	महावीरस्वामीनु स्तवन, मारगदेशक मोक्षनो रे	१५४
२०७	गिरुआ रे गुण तुम तणा	१५५
२०८	वीर प्रभुने चित्त धारजे	१५६
२०९	पंच तीर्थनु स्तवन, हे साहेबजी नेऊ नजर करी नाथ सेवरुने तारो	१५७
२१०	तीर्थमाळानु स्तवन शत्रुजय रूपभ समोसर्पा	१५८
२११	शत्रुजानु स्तवन सिद्धाचळ गात्रु रे	१५९
२१२	गिरनारजीनु स्तवन जडने रहेजो मारा बालाजी रे	१६०
२१३	अष्टापदजीनु स्तवन चड अठ दस दोय वदीएजी	१६०
२१४	तारगाजीनु स्तवन, तुग तारग गिरि गोभतो रे लोल	१६०
२१५	आधुजीनु स्तवन आधु अचळ रळीआमणोरे लोल	१६०
२१६	राणकपुरनु स्तवन श्री राणकपुर रळीआमणु रे लोल	१६०
२१७	केशरीयाजीनु स्तवन, केशरीयासे लाग्यु मारु ध्यान रे	१६०
२१८	शिखरजीनु स्तवन, चालो चालो शिखर गिरि जडए रे	१६०
२१९	राजगृही स्तवन, आज आनद धरी	१६०
२२०	वनारसनु स्तवन, पारस प्रभुका चार कल्याणक	१६०
२२१	पावापुरीनु स्तवन, पावापुरीमें वीर जिनेश्वर	१६०
२२२	सखेश्वर पार्श्वनाथनु स्तवन मगळकारी श्री सखेश्वर पार्श्वनाथ जग जयवता	१७०
२२३	भायणी तीर्थनु स्तवन, प्रभु मळिनाथ सुखकारी	१७०

२२४ श्री वृद्ध चैत्यवंदन, केवलनाणी श्री निरवाणी	...	१७२
२२५ ,, कच्छ केवलनाणी.	१७५
२२६ ,, शामळा पार्श्वनाथजीना देरासरतुं वर्णन.	...	१८२
२२७ ,, महावीरस्वामीनां पांच कल्याणकतुं चोढालीयुं.	...	१८३
२२८ कच्छनी प्रसिद्ध प्रतिष्ठानुं चोढालीयुं.	...	१९३

स्तवनसंग्रह खंरु ६ ठो. उपदेशात्मक पदोनी रसमय

चुंटाणी पृष्ठ २०० थी २४२.

२२९ संसारनी असारता विषे, आहा आ संसार असार जीव तुं जो विचारी	२००
२३० आशा. आशा औरनकी क्या कीजे	२०१
२३१ जमनो झपाटो. जम दे नित्य झपाटा रे	२०१
२३२ अमे अमरपद पाम्या. अब हम अमर भये न मरेगे	...	२०२
२३३ आत्मजागृति भावनो उपदेश. जाग रे आतमा जाग रे आतमा	२०३
२३४ घडीना नवनवा रंग. घडीमां सुख आवे छे	२०४
२३५ मिथ्या गर्व. कीस पर मान गुमान करीने	२०५
२३६ अंते एकला जवुं छे. जावुं छे एकला चाली	२०६
२३७ मिथ्या संसार. दोलत दुनिया हारी	२०७
२३८ मोह निद्रामांथी जागो. अबधू खौली नयन अब जावो	...	२०८
२३९ जगतमां तारुं कांइ नथी, नथी जगतमां साथ संबंधी	२०९
२४० स्वप्ना सम संसार. आ स्वप्ना सम संसार	..	२०९
२४१ जीवने शिखामण जीवलडा झटपट जावुं रे	२१०
२४२ मृत्यु. अरे जीव पामर पंखी रे	२११
२४३ मने आ संसारमां सगां संबंधीथी खरी शांति जणाती नथी. सगांओ ! ज्यांसुधी	...	२१२

२४४ तृणानी विचित्रता. हनी दीनताइ त्यारे ताकी पटेलाइ अने	२१३
२४५ प्रभुपूजा प्रत्ये मनने उपदेश. हे मनवा ! का चक्रडोळे चढाव	२१५
२४६ दुनियानी जूटी वाजी. चेतनजी चेतो जूटी आ दुनियानी वाजी	२१७
२४७ यौवन योवन धन सब रंग पतंग रे	२१६
२४८ तृष्णा. अवधू एसो ज्ञान विचारि	२१५
२४९ ससोरनी आसक्तता दु'खे बितवे मन आदिनाथ	२१५
२५० काळनो झपाटो. जपरो काळ झपाटो रे	२१५
२५१ काळनो झपाटो. पकडे काळ पलकमा रे	२१५
२५२ दयामय दृष्टिपात. अतरना काचा केम रह्यो छे कुटी	२२१
२५३ भावी सूचन. चेत तो चैतावु तुने रे पामर प्राणी	२२१
२५४ भूला पढेला मुसाफरने. ओ मुसाफर घेला रे	२२१
२५५ अमे मेमान. अमे तो आज तमारा वे दिनना मेमान	२२१
२५६ श्रावकने चौद नियम पाळवा विपे डुरु स्वरूप.	२२१
२५७ श्रावकना २१ गुणोनु वर्णन	२२१
२५८ श्री वार व्रतनी सखिप्त टीप.	२२९ थी
२५९ वार तिथिनो कोठो.	२४१

स्तवनसंग्रह खंरु ७ मो सज्जायोनो समुच्चय

पृष्ठ २४३ थी २७४.

२६० क्रोधनी सज्जाय कडवा फळ छे क्रोधना	२११
२६१ माननी सज्जाय. रे जीव मान न कीजीए	२११
२६२ मायानी सज्जाय. समकितनु मूल जाणीए जी	२११
२६३ लोभनी सज्जाय. तुमे लक्षण जोजो लोभना रे	२११

२६४	श्री जंबूस्वामीनी सज्जाय. सरस्वती सामिणी विनवुं	२४६
२६५	आप स्वभावनी सज्जाय. आप स्वभावमां रे ...	२४७
२६६	वैराग्य सज्जाय. उचां मंदिर माळीयां ...	२४८
२६७	मन भमरानी सज्जाय. भूल्यो मन भमरा तुंक्यां भभ्यो	२४९
२६८	श्री सुवाहु कुंवरनी सज्जाय. हवे सुवाहु कुंवर एम विनवे	२५१
२६९	परस्त्री त्याग सज्जाय. सुण चतुर सुजाण ...	२५३
२७०	श्रावक योग्य करणीनी सज्जाय. श्रावक तुं उठे परभात	२५४
२७१	गौतमस्वामीनी सज्जाय. हे इंद्रभूति ताहरा गुण कहेतां हरख न माय	२५८
२७२	हितोपदेश सज्जाय. हुं तो प्रणमुं सद्गुरु राया रे	२५९
२७३	मृगापुत्रनी सज्जाय. सुग्रीव नयर सोहामणुजी ...	२६०
२७४	इलाची पुत्रनी सज्जाय. नाम इलापुत्र जाणीए ...	२६३
२७५	लोभनी सज्जाय. लोभ न करीए प्राणीया रे ...	२६५
२७६	शिखामणनी सज्जाय. जीव वारुं लुं मोरा वालमा ...	२६६
२७७	जोवन अस्थिरनी सज्जाय. जोवनीआनी मोजां फोजा	२६६
२७८	श्री शीयळ विषे सज्जाय. सोमविमळ गुरु पय नमी जी	२६७
२७९	श्री समकितनी सज्जाय. समकित नवि लहुं रे ...	२६९
२८०	श्री रात्रिभोजननी सज्जाय. पुण्यसंजोगे नरभव लाध्यो	२७०
२८१	श्री सहजानंदीनी सज्जाय. सहजानंदी रे आतमां ...	२७२
स्तवनसंग्रह खंरु आठसो. लावणीसंग्रह तथा		
आरतीसमूह पृष्ठ २७५-थी २७७.		
२८२	आदिनाथनी लावणी. आदिनाथ निरवाणी नमुं ऐसे ध्यानी	२७५
२८३	अजितनाथनी लावणी. श्री अजितनाथ महाराज	२७६

२८४ शातिनाथनी लावणी सुण शांति शाति दातार	२७
२८५ विमलनाथनी लावणी करु में सेव जिन तेरी	२७
२८६ उपदेश विषे लावणी. चेतन भज ले जिनराज	२७
२८७ केसरीयाजीनी लावणी. सुनिषो रे माता सदाशिविजी	२८
२८८ जमत वसत पचमी ने नौतम क्षेत्र	२८
२८९ थी २९४ होरीओ १ थी ६	२८
२९५ थी २९७ गहुळीओ १ थी ३	२८
२९८ सात मार आदिते जरिहत अम घेर आवो रे	२८
२९९ गरमी. चालो सखीओ मम साथ	२८
३०० गरवो. अनोपम आज रे ओच्छत्र छे महावीर मदिरे रे	२९
३०१ महावीरस्वामीनुं हालरीयु. छानो मोरा छत्र	२९
३०२ महावीरस्वामीनु पारणु. माता त्रिगला झुलावं	
पुत्र पारणें	२९
३०३ आरती.अप्सरा करती आरती जिन आग	२९
३०४ आरती. जे जे आरती आदि जिणदा	२९
३०५ महावीरस्वामीनी आरती. जय देव जय देव	२९
३०६ शातिनाथनी आरती. जय जय आरती शाति तुमारी	२९
३०७ मंगळदीपो, दीवो रे दीपो मगळिक दीपो	२९
३०८ अथ मगळ चार. चारो मगळ चार	२९

स्तवनसंग्रह खरु नवमो. नाटकना रागनां गोयनो

पृष्ठ ३०० थी ३१०.

३०९ थी ३३६ गायन १ थी २८.

३०० थी ३१

स्तवनसंग्रह खंम दशमो.

श्री नवस्मरण, शलोका नेमजीनो नवरसो वगैरे पृष्ठ ३२१ थी ४२४

३७ नवकार मंत्र.	३२१
३८ उवसग्गहर.	३२१
३९ संतिकर.	३२२
४० तिजयपहुत्त.	३२३
४१ नमिऊण.	३२५
४२ श्री अजितशांतिस्तव.	३२७
४३ भक्तामर	३३४
४४ कल्याणमंदिर	३४०
४५ बृहच्छांतिस्तव.	३४७
४६ सामायिक लेवानी विधि	३५१
४७ पञ्चख्खाण लेवानी विधि.	३५८
४८ श्री नेमनाथ स्वामीना शलोको.	३६४
४९ श्री शालिभद्रशाहनो शलोको.	३७१
५० श्री भरत बाहुवलीनो शलोको.	३७९
५१ श्री शखेश्वर पार्श्वनाथनो शलोको.	३८८
५२ श्री आदिनाथनो शलोको.	३९१
५३ श्री शेत्रुंजयनो शलोको.	३९८
५४ श्री शीतल जिन स्तवन. श्री शीतल जिन जगपति					४०६
५५ श्री पद्मप्रभु जिन स्तवन. पद्म जिणेसर प्रणमीए					४०७
५६-५८ सिद्धाचलना स्तवन त्रण...	४०८
५९ श्री नेमिनाथजीनो नवरसो	४११
६० सारशिक्षा संग्रह	४१८
६१ ज्ञानना वे वोलो.	४२१
६२ हितोपदेश.	४२२





क्षमा ते महा दान છે, क्षમા તે મહા તપ છે, ક્ષમા તે મહા જ્ઞાન છે, ક્ષમા તે મહા દમ છે, ક્ષમા તે મહા શીલ છે, ક્ષમા તે મહા પરાક્રમ છે, ક્ષમા સતોપ છે, ક્ષમા તે હૃદયનિ-ગ્રહ છે, ક્ષમા તે મહાકુલ છે, ક્ષમા તે મહા વૌર્ય છે, ક્ષમા તે મહા શૌર્ય છે, ક્ષમા તે મોટી દયા છે, ક્ષમા તે સુદર રૂપ છે, ક્ષમા તે મહા વલ છે, ક્ષમા તે મહા એશ્વર્ય છે, ક્ષમા તે મોટી ધીરતા છે, ક્ષમા તે પરમ વ્રત્ત છે, ક્ષમા તે મહા સત્ય છે, ક્ષમા ઉત્કૃષ્ટ મુક્તિને આપનાર છે, ક્ષમા સર્વ અર્થને સાધવાવાળી છે, ક્ષમા જગત્પૂજ્ય છે, ક્ષમા જગતને હિત કરનાર છે, ક્ષમા તે કલ્યાણને દેવાવાળી છે, ક્ષમા તે ઉત્કૃષ્ટ મગલ છે, ક્ષમા તે અતરંગ ચાર શત્રુઓને નાશ કરનાર છે, માટે ક્ષમાને ધારણ કરી ક્ષમા રાંચીને વર્તો.

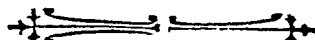


श्री आनंदघनजी कृत

श्री कुंथुनाथ स्वामीनुं स्तवन.

॥ गग गुर्जरी ॥ अंकर देहो मुगरी हमारो० ॥ ए देशी ॥

कुंथुजिन मनहुं किमही न वाजे, हो कुं० ॥ जिम जिम जतन क-
 ने राखुं, तिम तिम अलगुं भाजे हो ॥ कुं० ॥ १ ॥ रजनी वासर
 सती उजह, गयण पायाले जाय; साप खायने मुखहुं थोथुं, एह
 खाणो न्याय हो ॥ कुं० ॥ २ ॥ मुगति तणा अभिलापी तपीया, ज्ञानने
 नान अभ्यासे, वयरीहुं कांइ एहचुं चिते, नाखे अवले पासे हो ॥
 ० ॥ ३ ॥ आगम आगमधरने हाथे; नावे किणविध आंकुं; किहां
 ने जो हठ करी हटकुं, तो व्याल तणी परे वांकुं हो ॥ कुं० ॥ ४ ॥
 थग कहुं तो थगतो न देखुं, शाहुकार पण नाही; सर्व मांहे ने
 हुंथी अलगुं, ए अंचरिज मन मांही हो ॥ कुं० ॥ ५ ॥ जे जे कहुं
 कान न धारे, आप मते रहे कालो; सुर नर पंडित जन समजावे,
 मजे न महारो सालो हो ॥ कुं० ॥ ६ ॥ में जाण्युं ए लिंग नपुंसक,
 कल मरदने ठेले; बीजी वाते समरथ छे नर, एहने कोइ न जेले
 ॥ कुं० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तेणे सघलुं साध्युं, एह वात नहि खोटी
 एम कहे साध्युं ते नवि मानुं, ए कहि वात छे महोटी हो ॥ कुं०
 ८ ॥ मनहुं दुराध्य ते वश आण्युं, ते आगमथी मति आणुं;
 आनंदघन प्रभु माहरुं आणो, तो साचुं करी जाणुं हो ॥ कुं० ॥ ९ ॥



॥ श्रावकनुं कर्तव्य ॥

रात्रीना पाछला पहेरे चार घडी बाकी रहे त्यारे ब्रह्म मुद्रा नवकार मंत्रनुं स्मरण करता श्रावके जाग्रत थवुं. पोते कोण छे, केटलो वखत थयो छे अने लघुनीति के बडीनीतिनी शका ने नहीं एम विचार करतो शय्यामा निद्रा रहित थाय. नामिका करीने श्वासोश्वास दबाववाथी निद्रा रहित थवाय छे, माटे निद्रा रा थइने काइ पण स्पर् कर्या वगर झाडा पीशाव करवाना स्थले शंका रहित थइने महा मंगलकारी नवकार मंत्रनु स्मरण करे. शय्य बेठा ठेठा नवकार मंत्रनु स्मरण करवु होय तो सूत्रनो अविनय करवाने मनमांज चिंतवन करवु. ओछामां ओछुं जाग्रत थती व सात आठ नवकार मंत्रनु स्मरण करवानुं शास्त्रमां कहुं छे. वली ते व धर्मजागरिका एटले धर्म विपेना पिचारो करवा पण श्रेष्ठ छे. हु न छुं, मारे शुं करवानुं छे, पापी छु के धर्मी छुं विगेरे पिचार करी यं नियमथी वर्तवानो निश्चय करे. पछी जो प्रतिक्रमण बनी शके तो करवु अने न बनतुं होय तोपण कुस्पन्न दुःस्वप्न अमंगलिक होव एनु फल मिथ्या करवा माटे जाग्रत यथा पछी चार लोगस कायोत्सर्ग करवो.

॥ स्तवन संग्रह ॥

॥ प्रथम खंड ॥

॥ प्रातःस्मरण ॥

सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वान्नीष्टार्थदायिने ।

सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्वामिने नमः ॥

भावार्थः—सर्व प्रकारनां पापो अने विघ्नोनां नाश करनार तथा प्रकारना मनोरथो सिद्ध करनार अने सर्व प्रकारनी लब्धिओना धार समान श्री गौतमस्वामीने नमस्कार हो ॥

॥ नवकार मंत्र ॥

॥ नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरि-
णं, नमो उवज्जायाणं, नमो दोए सबसाहूणं,
सो पंचनमुक्कारो सबपावप्पणासणो मंगलाणं चस-
सं पढमं हवइ मंगलं ॥

॥ नवकार मंत्रतुं माहात्म्य ॥ दोहरा ॥

॥ वांछित पूरे विविध परे, श्री जिनशासन सार ॥
श्रे श्री नवकार नित्य, जपतां जयजयकार ॥१॥ अरु-
अक्षर अधिक फल, नव पद नवे निधान ॥ वीत-
स्वयं मुख वदे, पंच परमेष्ठी प्रधान ॥२॥ एकज अ-
एक चित्त, समर्पे संपत्ति थाय ॥ संचित सागर

सातनां, पातक दूर पलाय ॥३॥ सकल मंत्र शिर मुकु
मणि, सद्गुरु ज्ञापित सार ॥ सो ज्ञवियां मन शुद्ध
नित्य जपीए नवकार, ॥ ४ ॥

॥ छद हाटकी ॥

॥ नवकार थकी श्रीपाल नरेसर, पाम्यो राज्य
सिद्ध ॥ समशाना विपे शिव नाम कुमरने, सोद
पुरिसो सिद्ध ॥ नव लाख जपंतां नरक निवारे, प
जवनो पार ॥ सो ज्ञवियां जत्ते चोखे चित्ते, नि
जपीए नवकार ॥ १ ॥ बांधी वरुशाखा शिंके वे
हेठल कुंफ हुताश ॥ तस्करने मंत्र समप्यो श्राव
जड्यो ते आकाश ॥ विधि रीते जपतां विषधरि
टाले, ढाले अमृत धार ॥सो॥१॥ वीजोरा कारण र
महावल, व्यंतर दुष्ट विरोध ॥ जेणे नवकारे ह
टाली, पाम्यो यद्द प्रतिबोध ॥ नव लाख जपतां थ
जिनवर, इस्यो ठे अधिकार ॥ सो० ॥ ॥ ३ ॥ पद्विप
शिस्यो मुनिवर पासे, महा मंत्र मन शुद्ध ॥ पर
ते रायसिंह पृथिवीपति, पाम्यो परिगल कृद्ध ॥ ए
थकी अमरापुर पहोच्यो, चारुदत्त सुविचार ॥ सो०
संन्यासी काशी तप साधंतो, पंचाग्नि परजाले ॥ द

पासकुमारे पन्नग, अधवलतो ते टाळे ॥ संज-
 व्यो श्री नवकार स्वयंमुख, इंद्रशुवन अवतार ॥
 १० ॥ ५ ॥ मन शुद्धे जपतां मयणासुंदररी, पामी प्रिय
 योग ॥ इण ध्याने कष्ट टट्युं उंवरनुं, रक्तपित्तनो
 ग ॥ निश्चेशुं जपतां नव निधि थापे, धर्म तणो
 आधार ॥ सो० ॥ ६ ॥ घट मांहि कृष्ण जुजंगम घाट्यो,
 रणी करवा घात ॥ परमेष्ठिप्रजावे हार फूलनो, वसुधा
 हि विख्यात ॥ कमलावतीए पिंगल कीधो, पाप
 णो परिहार ॥ सो० ॥ ७ ॥ गयणांगण जाती राखी
 हीने, पामी बाणप्रहार ॥ पद पंच सुणंतां पांरुपति
 ए, ते थइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमूलक महिमा
 दिर, जवदुःख जंजणहार ॥ सो० ॥ ८ ॥ कंबल ने संबल
 दव काढ्यां, शकट पांचसें धान ॥ दीधे नवकार
 ॥ देवकोके, विलसे अमर विमान ॥ ए मंत्र थकी
 त्ति वसुधामां लही, विलशे जैन विहार ॥ सो० ॥ ९ ॥
 गो चोवीशी हुइ अनंती, होशे वार अनंत ॥ नवकार
 ती कोइ आदि न जाणे, इम जाखे अरिहंत ॥ पूरव
 शि चारे आदि प्रपंचे, समर्या संपत्ति सार ॥ सो० ॥
 १० ॥ परमेष्ठि सुरपद ते पण पामे, जे कृत कर्म कठोर ॥

पुंरुगिरि जपर प्रत्यक्ष पेख्यो, मणिधर ने एक मो
 सहगुरुने सनमुख विधे समरंतां, सफल जनम
 सार ॥ सो० ॥ ११ ॥ शूलिकारोपण तस्कर कीधो, लो
 खरो परसिद्ध ॥ तिहां शेठे नवकार सुणाव्यो, पाम
 अमरनी रिद्ध ॥ शेठने घेर आवी विघ्न निवार्या, सु
 करी मनोहार ॥ सो० ॥ १२ ॥ पंच परमेष्ठी ज्ञानज पंच
 पंच दान चारित्र ॥ पंच सज्जाय महाव्रत पंचह, प
 समिति समकित ॥ पंच प्रमाद विषय तजो पंचह, पा
 पंचाचार ॥ सो जवियां० ॥ १३ ॥

॥ कलश-छप्पय ॥

॥ नित्य जपीए नवकार, सार संपत्ति सुखदायक
 सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो, जपे इम श्री जगनायक ॥ १
 अरिहंत सुसिद्ध, शुद्ध आचार्य जणीजे ॥ श्री उ
 ज्जाय सुसाधु, पंच परमेष्ठी शुणीजे ॥ नवकार स
 संसार ठे, कुशललाज वाचक कहे ॥ एक चित्ते अ
 राधतां, विविध रुद्धि वांठित लहे ॥ १४ ॥

॥ श्री गौमन्वामीनो राम ॥ प्रथम ढाल ॥

॥ वीर जिणेसर चरणकमल कमला कयत्रास
 पणमवि पजणिमु सामि साल गोयम गुरु रासो ॥ म

ण वयण एकंत करवि निसुणो जो जवियां, जिम
 नेवसे तुम देहगेह गुणगण गहगहीआ ॥ १ ॥ जंबुदीव
 सरि नरहखित्त खोणीतलमंरुण, मगधदेश सेणीय
 रेश रिउदलवलखंरुण ॥ धणवर गुवर गाम नाम
 हीं गुणगण सज्जा, विप्प वसे वसुचूइ तठ तसु
 हवी जज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरिइंदचूइ चूवल्लयप-
 सिद्धो चउदह विज्जा विविह रूव नारी रस विद्धो ॥ वि-
 य विवेक विचार सार गुणगणह मनोहर, सात हाथ
 प्रमाण देह रूपे रंजावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण
 जणवी पंकज जल्ले पामिअ, तेजे तारा चंद सूर
 आकाशे जमामिअ ॥ रूवे मयण अनंग करवि मेद्धिउं
 नरधाडिअ, धीरमें मेरु गंज्जीर सिंधु चंगिम चय-
 णामिअ ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जण जंपे
 चिअ, एकाकी कलिजीते इठ गुण मेहव्या सं-
 वअ ॥ अहवा निश्रे पुव्वजम्मे जिणवर इणे अंचिअ,
 ज्ञा पडमा गौरी गंग रतिहा विधि वंचिअ ॥ ५ ॥
 हि बुध नहि गुरु कवि न कोइ जसु आगल रहिउं,
 वसया गुणपात्र ठात्र हींडे परवरिउं ॥ करे निरंतर
 इकर्म मिथ्यामति मोहिअ, इणे ठलि होशे चरण-

नाण दंसणह विसोहिअ ॥ ६ ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ जंबुदीवह जंबुदीवह जरहवासंमि, खोणीत
 लमंरुणो, मगधदेश सेणीय नरेसर, वर गुवर गा
 तिहां, विप्य वसे वसुचूइ सुंदर, तसु जजा पुह
 सयल, गुणगण रूत्रनिहाण, ताण पुत्त विज्जानिलं
 गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥

॥ द्वितीय ढाल ॥ भाषा ॥

॥ अरम जिणेसर केवलनाणी, चउविह संघ पइइ
 जाणी ॥ पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देव निक
 यहि जुत्तो ॥ ७ ॥ देवे समवसरण तिहां कीजे, जि
 दीठे मिथ्यामति खीजे ॥ त्रिजुवनगुरु सिघासणे वेठ
 ततखिण मोह दिगंते पइछा ॥ ८ ॥ क्रोध मान मा
 मदपूरा, जाये नाठा जिम दिने, चौरा ॥ देवडुंडु
 आकाशे वाजी, धर्मनरेसर आव्या गाजी ॥ ९ ॥ कु
 मवृष्टि विरचे तिहां देवा, चउसठ इंद्र जस मा
 सेवा ॥ चामर ठत्र शिरोवरि सोहे, रूपे जिणवर ज
 सहु मोहे ॥ १० ॥ उपसम रसजर चरी वरसंता, योज
 धाणी वखाण करंता ॥ जाणिअ वर्धमान जिण पाय

सुर नर किंनर आवे राया ॥१२॥ कांतिसमूहे जलजल-
 ता, गणय विमाणे रणरणकंता ॥ पेखवि इंद्रचूड मन
 चंते, सुर आवे अम्ह यज्ञ होवेंते ॥१३॥ तीर तरंकक
 जेम ते वहता, समवसरण पहुता गहगहता ॥ तो
 प्रजिमाने गोयम जंपे, इण अवसरे कोपे तणु कंपे ॥
 १४ ॥ मूढा लोक अजाण्यो बोले, सुर जाणंता इम
 हांइ मोले ॥ मु आंगल को जाण जणीजे मेरु अवर
 केम उपम दीजे ? ॥ १५ ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ वीर जिणवर वीर जिणवर, नाणसंपन्न, पावा-
 री सुरमहिय पत्तनाह संसारतारण, तिहिं देवेहिं
 निम्मविअ, समोसरण बहु सुखकाराण, जिणवर
 ग उज्जोअकर तेजे करी दिणकार, सिंहासणे सामीय
 वयो,हुठ सुजयजयकार ॥ १६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ भाषा ॥

॥ तव चकिठं घणमाणगजे, इंद्रचूड चूदेव तो ॥ हुंकारो
 द्वार संचरिठं, कवणसु जिणवर देव तो ॥ १७ ॥ योजन
 वधमि समोसरण, पेखे प्रथमारंज तो ॥ दह दिसि
 इखे विबुध वहू, आवंती सुररंज तो ॥ १८ ॥ मणिमय

तोरण दंड धज, कोसीसे नव घाट तो ॥ वयर विवा
 र्जित जंतुगण, प्रातिहारज आठ तो ॥ १९ ॥ सुर ना
 किंनर असुर वर, इंद्र इंद्राणी राक्ष तो ॥ चित्त चम
 क्किय चितवे ए, सेवंता प्रभुपाय तो ॥ २० ॥ सहस
 किरण सम वीर जिण, पेखवे रूप विशाल तो ॥ एह
 असंजव संजवे ए, साचो ए इंद्रजाल तो ॥ २१ ॥ तव
 बोलावे त्रिजग गुरु, इंद्रचूड नामेण तो ॥ श्रीमुखे सं
 शय सामि सवे, फेडे वेदपण तो ॥ २२ ॥ मान मेढही
 मद ठेली करी, चक्तिण नामे शीस तो ॥ पचसयाज
 व्रत लीळ ए, गोयम पहेलो शीस तो ॥ २३ ॥ वंध
 सजम सुणवि करी, अगनिचूडआवेय तो ॥ नाम ले
 अच्यास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २४ ॥ इणे अनु
 क्रमे गणहर रयण, थाप्या वीरे अग्यार तो ॥ तव उप
 देशे जुवनगुरु, सयमशुं व्रत वार तो ॥ २५ ॥ वि
 लपवासे पारणुं ए, आपणपे विहरंत तो ॥ गोयम
 सयम जग सयल, जयजयकार करंत तो ॥ २६ ॥

॥ वस्तु छद ॥

॥ इन्द्रचूड, इंद्रचूड, चक्रिअ बहु माने, हुकार
 २ करीकपतो, समोसरणे पहीतो तुहीतो तुरंत, अह संस

॥मि सवे, चरमनाह फेडे फुरंत, बोधिवीज संजाय
ने, गोयम जवह विरत्त, दिस्क लेइ सिस्का सहिअ,
एणहरपय संपत्त ॥ २७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ भाषा ॥

॥ आज हुं सुविहाण, आज पचेत्तिमां पुण्य जरो ॥
० ॥ गोयम सामि, जो निअ नयणे अमिय सरो ॥
७ ॥ (सिरिगोयम गणधार, पंचसया मुनि परवरिया ॥
मिय करय विहार, जवियण जन पदिवोह करे ॥)
मवसरण मजारि, जे जे संशय उपजे ए ॥ तेते परउ-
कार, कारण पूढे मुनिपवरो ॥ २८ ॥ जिहा जिहां दीजे
रीख, तिहां तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कन्हे अण-
त, गोयम दीजे दान इम ॥ २९ ॥ गुरुउपरिगुरु जत्ति,
मामी गोयम उपनीय ॥ एणि ठल केवलनाण, रा-
ज राखे रंगचरे ॥ ३० ॥ जो अष्टापद शैल, वंदे चदि
उवीस जिण ॥ आतमलब्धि वसेण, चरमसरीरी
गोइ मुनि ॥ ३१ ॥ इय देसण निसुणेइ, गोयम गण-
रि संचळिउं ॥ तापस पन्नरसएण, तो मुनि दीगो
भावतो ए ॥ ३२ ॥ तपसोसिय निय अंग, अम्ह सगति
वि उपजे ए ॥ किम चरुसे दृढ काय, गज जिम

दीसे गाजतो ए ॥ ३४ ॥ गिरुए एणे अजिमान, ता
 पस जो मने चिंतवे ए ॥ तो मुनि चरियो वेग, आ
 लंबवि दिनकर किरण ॥ ३५ ॥ कंचणमणि निष्पन्न
 दंरु कलस धज वरु सहिअ ॥ पेखवि परमानंद
 जिणहर जरतेसर विहिअ ॥ ३६ ॥ निय निय कार
 प्रमाण, चउदिसि संठिअ जिणह विंव ॥ पणमदि
 मन उदहास, गोयम, गणहर तिहां वसिय ॥ ३७ ॥
 वरु सामीनो जीव, तिर्यक्जुंजक देव तिहां ॥ प्रति
 बोधे पुंरुरीक, करुरीक अध्ययन जणी ॥ ३८ ॥ बलत
 गोयम सामी, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ वेइ आ
 पणे साथ, चाले जिम जुथाधिपति ॥ ३९ ॥ खीर खां
 घृत आणि, अमिअवूठ अंगुठ ठवी ॥ गोयम एक
 पात्र, करावे पारणो सवि ॥ ४० ॥ पचसया शुज जावि
 उज्जल जरियो खीरमसि ॥ साचा गुरु सयोगे, कवल
 केवलरुप हुं ॥ ४१ ॥ पचसया जिणनाह, समवसरं
 प्राकार त्रय ॥ पेखवी केवलनाण, उपन्न उज्जो
 करे ॥ ४२ ॥ जाणो जिणवि पीगुष, गाजती घण मे
 जिम ॥ जिनवाणी निमुणेइ, नाणी हुआ पंचसय ॥ ४३ ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ इण अनुक्रमे, इणे अनुक्रमे, नाण संपन्न, पन्न-
ह सय परिवरिय; हरिय डुरिय, जिणनाह वंदइ;
जाणेवि जगगुरु वयण तिहनाण अप्पाण निंदइ;
धरम जिणेशर इम जणे, गोयम करिस म खेउ;
गहि जइ आपणे सही, होस्युं तुह्या वेउ ॥ ४४ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ भाषा ॥

॥ सामीउं ए वीर जिणंद, पुनिमचंद जिम उह्व-
सेय ॥ विहरिउं ए जरहवासंमि, वरस वहोत्तर संव-
पीय ॥ ठवतो ए कणय उपमेव, पायकमल संघहि
भहिय ॥ आविउं ए नयणाणंद, नयर पावापुरि सुर-
वहिय ॥ ४५ ॥ पेखीउं ए गोयमसामि, देवसर्मा प्रति
पोध कए ॥ आपण ए त्रिशलादेवी,—नंदन पहोतो
रिमपए ॥ वलतो ए देव आकासि, पेखवि जाणयो
जण समे ए ॥ तो मुनि ए मन विश्ववाद, नादनेद
जम उपनो ए ॥ ४६ ॥ कुण समे ए सामिय देखी,
पाप कन्हे हुं टालीउं ए ॥ जाणतो ए तिहुअणनाह,
पोकविवहार न पाळिउं ए ॥ अति जळुं ए कीधळुं
सामि, जाण्युं केवल मागसे ए ॥ चिंतव्युं ए बालक

जेम, अहवा केडे लाग्शे ए ॥ ४७ ॥ हुं किम ए वी
 जिणंद, जगते जोलो जोलव्यो ए ॥ आपणो ए अवि
 हड नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥ साचो ए ए
 वीतराग, नेह न जेहने लाखिउं ए ॥ तिणे समे ए
 गोयम चित्त, राग विरागे वाखिउं ए ॥ ४८ ॥ आवतं
 ए जे उलट, रहेतो रागे साहिउं ए ॥ केवलुं ए नाए
 उपन्न, गोयम सहेजे उमाहिउं ए ॥ त्रिजुवने ए जय
 जयकार, केवलिमहिमा सुर करे ए ॥ गणधरु ए क
 वखाण, जवियण जव जिम निस्तरे ए ॥ ४९ ॥

॥ वस्तु उद ॥

॥ पढम गणहर पढम गणहर, वरिस पचास गिह
 वासे संवसिथ्य, तीस वरिस सजम विचूसिय, सि
 केवलनाण, पुण धार वरस तिहुअण नमंसिथ्य, राज
 ग्रही नगरी ठव्यो, वाणुवय वरसाउ, सामी गोयम
 गुणनिलो, होस्ये सीवपुर ठाउ ॥ ५० ॥

॥ ढाल छद्दी ॥ भाषा ॥

॥ जिम सहकारे कोयल टहुके, जिम कुसुमहव
 परिमल वहेके, जिम चंदन सोगंधनिधि ॥ जि
 गंगाजल लहेरे लहके, जिम कणयाचल तेजे जलके

तिम गोयम सोजागनिधि ॥ ५१ ॥ जिम मानससर
 नेवसे हंसा, जिम सुरवर शिरे कणयवतंसा, जिम
 मह्यर राजीव वने ॥ जिम रयणायर रयणे विदसे,
 जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुण
 क्लिवनि ॥ ५२ ॥ पुनिम निशि जिम ससिहर सोहे,
 सुरतरु महिया जिम जग सोहे, पूरव दिसि जिम
 महसकरो ॥ पंचानने जिम गिरिवर राजे, नरवश
 रे जिम मयगल गाजे, तिम जिनशासन मुनिप-
 रो ॥ ५३ ॥ जिम सुरतरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम
 खे मधुरी जाषा, जिम वन केतकी महमहे ए ॥
 जिम भूमिपति दूधवल चमके, जिम जिणमंदिर
 टा रणके, तिम गोयम लब्धे गहगहे ए ॥ ५४ ॥ चिंता
 णि करे चक्रियुं आज, सुरतरु सारे वंठित काज,
 कामकुंज सो वसि हुल्ल ए ॥ कामगवी पूरे मन कामी,
 अष्ट महो सिद्धि अत्रे धामी, सामी गोयम अणु-
 वरु ए ॥ ५५ ॥ प्रणवाहर पहेलो पन्नणिजे, माया बीज
 विवण निसुणीजे, श्रीमुखे शोजा संजवे ए ॥ देवह
 वरि अरिहंत नलीजे, विनय पहु उवजाय शुणीजे,
 वणे मंत्रे गोयम नमो ए ॥ ५६ ॥ पुर पुर वसता कांइ

करीजे, देश देशान्तर कांश् नमीजे, कवण कां
 आयास करो ॥ प्रह लठी गोयम ममरीजे, का
 सवे ततखिण ते सीजे, नव निधि विलसे तर
 घरे ॥ ५७ ॥ चउदहसे (= उदसय) वारोत्तर वरिसे
 (गोयम गणधर केवल दिवसे) खंन नयर प्र
 पास पसाये, कीयो कवित उपगारकरो ॥ आदिह
 मगल एह नणीजे, परध महोत्सव पहिलो दीजे
 रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ५८ ॥ धन्य माता जेणे उयं
 धरीया, धन्य पिता जिण कुले अवतरीया, धन्य सह
 गुरु जिणे दीखिया ए ॥ निनगवंत विद्यानंकार, ज
 गुण पुहवी न लजे पार, वरु जिम शाखा विस्तर
 ए ॥ ५९ ॥ गौतमस्वामीनो रास नणीजे, चउविह सं
 रलियायत कीजे, सयल संघ आणढ करो ॥ कुकु
 चंदन ठमो देवरावो, णणेक मोतीना चोक पूरावे,
 रयण सिहासण वेमणु ए ॥ ६० ॥ तिहां वेमी गु
 देशना देशे, नविन जीवनां काज सरेसे, उदयवं
 (विजयनद्र) मुनि एम नणे ए ॥ गौतमस्वाम
 तणो ए रास, नणतां सुणतां लीलविलास, सास
 सुख निधि संपजे ए ॥ ६१ ॥ एह रासजे नणे नणां

रमयगल लह्नी घर आवे, मनवंठित्त आशा फले
५ ॥ ६२ ॥

॥ श्री गौतमस्वामीनो छंद ॥

॥ वीर जिनेश्वर केरो शिष्य, गौतम नाम जप-
नेशदिश ॥ जो कीजे गौतरनुं ध्यान, तो घर विलसे
वे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरिवर चढे, मनोवां-
ठेत हेशा संपजे ॥ गौतम नामे नावे रोग, गौतम
नामे सर्व संयोग ॥ २ ॥ जे बैरी विरुआ वंकरा, तस
नामे नावे डुकमा ॥ जूत घेत नवि मंडे प्राण, ते गौत-
नां करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे निर्मल काय, गौतम
नामे वाधे आय ॥ गौतम जिनशासन शणगार, गौतम
नामे जयजयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घृत गोल,
नोवांठित कापरु तंबोल ॥ घर सुगृहिणी निर्मल
वेत्त, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उदयो
अविचल जाण, गौतम नाम जपो जग जाण ॥ म-
होटा मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण ॥
६ ॥ धर मयगल घोरानी जोरु, वारु पहोंचे वांठित
वोरु ॥ महीयल माने मोट राय, जो जुठे गौतमना
दोय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्मा पातक टले, उत्तम नरनी

संगत मखे ॥ गौतम नामे निर्मल ज्ञान, गौतम नामे
वाधे वान ॥ ७ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतम
मना गुण ठे बहु ॥ कहे लावण्यसमय कर जोम
गौतम ठुठे संपत्ति कोरु ॥ ए ॥

॥ श्री गौतमस्वामीनुं प्रभाती स्तवन ॥ राग प्रभाती ॥

॥ मात पृथ्वी सुत प्रातः उठी नमो, गणधर
गौतम नाम गेले ॥ प्रहसमे प्रेमशुं जेह ध्यातां सदा
चढती कला होय वंशवेले ॥ मा० ॥ १ ॥ वसुञ्जि
नंदन विश्वजन वंदन, दुरित निकंदन नाम जेहनं
अजेद बुझे करी जविजन जे जजे, पूर्ण - पहोंचे सह
जाग्य तेहनं ॥ मा० ॥ २ ॥ सुरमणि जेह चितामणि
सुरतरु, कामित पूरण कामधेनु ॥ एह गौतम त
ध्यान हृदये धरो, जेह थकी अधिक नहीं माहात्म
केहेनु ॥ मा० ॥ ३ ॥ प्रणव आदे धरी माया बीड
करी, श्रीमुखे गौतम नाम ध्याये ॥ कोरि मनक
मना सफल वेगे फले, विघन बैरी सवे दूर जाये
मा० ॥४॥ ज्ञान बल तेज ने सकल सुख संपदा, गौतम
नामथी सिद्धि पोमे ॥ अखरु प्रचंरु प्रताप होय अ
निमां, सुरनर जेहने शीश नामे ॥ मा० ॥५॥॥ दुष्ट दूर

द्वे स्वजन मेलो मले, आधि उपाधिने व्याधि नासे ॥
तनां प्रेतनां जोर ज्ञजे वली, गौतम नाम जपतां
द्विसे ॥ मा० ॥ ६ ॥ तीर्थ अष्टापदे आप लब्धे जइ,
वरसें त्रणने दीख दीधी ॥ अष्टम पारणे तापस
रणे, क्षीर लब्धे करी अखुट कीधी ॥ मा० ॥ ७ ॥ वरस
वास लगे गृहवासे वस्या, वरस वली त्रीश करी
र सेवा ॥ बार वरसां लगे केवल जोगव्युं, जक्ति
हनी करे नित्य देवा ॥ मा० ॥ ८ ॥ महीयल गौतम
त्र महिमानिधि, गुणनिधि रुद्धि ने सिद्धिदाइ ॥
दय जस नामथी अधिक लीला लहे, सुजस
प्रजाग्य दोलत सवाइ ॥ मा० ॥ ९ ॥

॥ सोल महासतीओनुं प्रातःस्मरण ॥

॥ आदिनाथ आदे जिनवर वंदी, सफल मनोरथ
गिजीए ए ॥ प्रजाते उठी मांगलिक कामे, सोल
तीनां नाम लीजीए ए ॥ १ ॥ बालकुमारी जग हित-
गोरी, ब्राह्मी जरतनी बहेनरी ए ॥ घटघट व्यापक
झररूपे, सोल सती मांहिजे वरी ए ॥ २ ॥ बाहुबल
गिनी सतीय शिरोमणि, सुंदरी नामे कृषजसुता
॥ अंक स्वरूपी त्रिभुवन मांहे, जेह अनुपम गुण-

जुता ए ॥ ३ ॥ चंदनवाला बालपणाथी, शीयलव
 शुद्ध श्राविका ए ॥ अरुदना बाकुला वीर प्रतिद
 ज्या, केवल लह्मी व्रत चाविका ए ॥३॥ उग्रसेन धुव
 धारिणी नंदनी, राजीमती नेम वल्लजा ए ॥ जोव
 वेशे कामने जीत्यो, संयम लेश देव डुल्लजा ए
 ५ ॥ पंच जरतारी पांरुवनारी, ड्रुपद तनया वखाणी
 ए ॥ एकसो आठे चीर पूराणां, शीयल महिमा त
 जाणीए ए ॥६॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम, कौशल्य
 कुलचंद्रिका ए ॥ शीयल सबुणी रामजनेता, पुए
 तणी प्रणादिका ए ॥ ७॥ कोशंभिक ठामे संतानि
 नामे, राज्य करे रंग राजीठ ए ॥ तस घर गृहिण
 मृगावती सती, सुरभुवने जश गाजीठ ए ॥८॥ सुलस
 साची शीयले ए काची, राची नही विषयारसे ए ॥९
 खरुं जोतां पाप पलामे, नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥१०
 राम रघुवंशीतेहनीकामिनी, जनकसुतासीता सती ए
 जग सहु जाणे धीज करंतां, अनल शीतल थयो शीर
 लथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी वांधी, कुवा थक
 जल काढीयु ए ॥ कलंक उतारवा सती सुजद्रा, चं
 वार उघामीयुं ए ॥ ११ ॥ सुर नर वंदित शिथल अय

त्त, शिवा शिवपद गामिनी ए ॥ जेहने नामे निर्मल
 इए, बलिहारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनाग-
 रे पांरु रायनी कुंता नामे कामिनी ए ॥ पांरुव
 ता दसे दसारनी, बहेन पतिव्रता पद्मिनी ए ॥ १३ ॥
 गियलवती नामे शीलव्रत धारिणी, त्रिविधे तेहने
 दीए ए ॥ नाम जपंतां पातक जाये, दरिण्ड डु-
 रत निकंदीये ए ॥ १४ ॥ निषिधा नगरी नलह नरिं-
 नी, दमयंती तस गेहिनी ए ॥ संकट परुतां शीय-
 राज राख्युं, त्रिभुवन कीर्त्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग
 प्रजिता जगजन पूजिता, पुष्पचुला ने प्रजावती ए ॥
 श्वविख्याता कामितदाता, सोलमी सती पद्मावती
 ॥ १६ ॥ वीरे चाखी शास्त्रे साखी, उदयरल चाखे
 दा ए ॥ वहाणुंवातां जे नर जणशे, ते लेशे सुख
 पदा ए ॥ १७ ॥

॥ श्री प्रभातीः स्तवन ॥

॥ उठो उठो रे मोरा आतमराम, जिनमुख जोवा
 ह्ये रे ॥ प्रभुजीनुं दरिण्ड ठे अति दोहेबुं, ते
 म सोहेबुं जाणो रे ॥ वारंवार मानवजव जेहबुं,
 शत्रुं मुशकील टाणुं रे ॥ उठो उठो ॥ १ ॥ चार दिव-

सनो चटको मटको, देखीने मत राचो रे ॥ विणसी
जातां वार न लागे, कायाघट ठे काचो रे ॥ उठो
उठो ॥ २ ॥ हीरोहाथ अमूलख पायो, मूढपणे मत
गमजो रे ॥ सहेज सबूणा पास जिणंदशुं, राजी थड
चित्त रमजो रे ॥ उठो उठो ॥ ३ ॥ अनंत गुणे करी
जरीठं जिनवर, पूरव पुण्ये पायो रे ॥ ते देखीने
महारा मनगां, आनंद अधिक सोहायो रे ॥ उठो
उठो ॥ ४ ॥ मनगत मेरा आतमराम, करजो सुकृत
कमाइरे ॥ लाज उदय जिणचंद लझे, वत्तें सिद्ध
सवाइ रे, वत्तें आनंद वधाइ रे ॥ उठो उठो ॥ ५ ॥

॥ विषय वासना त्यागनु प्रभाती स्तवन ॥

॥ विषयवासना त्यागो चेतन, साचे मारग लागो
रे ॥ ए आंकणी ॥ तप जप संयम दानादिक सहु, गि
नती एक न आवे रे ॥ इंद्रियसुखमां जो लज प
मन, वक्र तुरंग जिम धावे रे ॥ विषय ॥ १ ॥ एक एकवे
कारण चेतन. बहुत बहुत दुःख पावे रे ॥ ते तो प्रगट
पणे दीसे, इणिविध जाव लखावे रे ॥ विषय ॥ २ ॥
मन्मथ वश मातंग जगतमें, परवशता दुःख पावे
रे ॥ रसना लुब्ध होय जग मूरख, जाल पड्यो पत

तावे रे ॥ विषय० ॥३॥ घ्राण सुवास काज सुन जमरा,
 संपुट मांहे वंधावे रे ॥ ते सरोज संपुट संयुत पुन,
 गमरवके मुख जावे रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ रूप मनोहर देख
 पतंगा, परत दीपमां जाइ रे ॥ देखो याको दुःखकार-
 नमें, नयन जये हे सहाइ रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ श्रोत्रेंद्रिय
 आसक्त मिरगलां, ठिनमें शीश कटारे रे ॥ एक एक
 आसक्त जीव इम, नानाविध दुःख पावे रे ॥ विषय० ॥
 ६ ॥ पंच प्रबल वर्त्ते नित जाकुं, ताकुं कहाजु कहीये
 रे ॥ चिदानंद ए वचन सुणीने, निज स्वप्नावमें
 रहीये रे ॥ विषय० ॥ ७ ॥

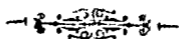
॥ श्री प्रभाती स्तवन ॥

॥ रे जीव जिनधर्म कीजीए, धर्मना चार प्रकार ॥
 ज्ञान शीयल तप जावना, जगमां षट्कुं सार ॥ रे जीव०
 १ ॥ वरस दिवसने पारणे, आदीश्वर सुखकार ॥ शेरनी
 स वोरवीयो, श्रीश्रेयांसकुमार ॥ रे जीव० ॥ २ ॥ चंपा-
 शोल उधारवा, चारणीए काढयां नीर ॥ सतीय सुजडा
 जश थयो, शोयले सुर नर धीर ॥ रे जीव० ॥ ३ ॥ तप
 करी काया शोषवी, सरस नीरस आहार ॥ वीर
 जिणंद वखाणीयो, धन्य धन्नो अणगार ॥ रे जीव०

॥ ४ ॥ अनित्य जावना जावतां, धरतां निर्मल ध्यान ।
 जरत आरीसाजुवनमां, पाम्या केवलज्ञान ॥ रे जीवण ।
 ॥५॥ जैनधर्म सुरतरु समो, जेहनी शीतल ढाया ॥ समय
 सुंदर कहे सेवतां, वांछित फल पाया ॥ रे जीवण ॥६॥

॥ जागे सो जिन जक्त कहावे, सोवे सो संसार
 हे ॥ त्रस जीवकी हत्या न करे, थावर करुणाकार
 हे ॥ जागे ॥ १ ॥ थापणमोसो अदत्त न लेवे
 चोरी मारी वारी हे ॥ पंचनी साखे पाणिग्रहण करतां
 अवर स्त्रीया ब्रह्मचारी हे ॥ जागे ॥ २ ॥ स्नान
 प्रमित जल जिनकी सेवा, परिग्रह संख्या धारी हे
 रुपचंद्र कहे समकितके लक्षण, ताकु वंदनां हमार
 हे ॥ जागे ॥ ३ ॥

अर्हन्तो जगवन्त महिताः सिद्धाश्च सिद्धिगताः ।
 आचर्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः ।
 श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः ।
 पंचते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम्



॥ द्वितीय खंड ॥



धन्यास्त एव त्रुवनाधिप ये त्रिसंभ्य-
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥

ऋत्तयोद्धसत्पुत्रकपद्मलदेहदेशाः

पाहद्वयं तव विज्ञो त्रुवि जन्मज्ञाजः ॥

भावार्थ—हे त्रिभुवननाथ ! हे विभु ! तेज मनुष्योने धन्य छे के जे बीजा कार्यो छोडीने अने भक्तिए करी उल्लास पामता एवा रोमांचथी पोताना शरीरना भाग व्याप्त करी आपना चरणकमलने विधिपूर्वक त्रण काल आराधे छे—सेवे छे.

॥ देरासरे जवानी विधि ॥

त्यारपछी शक्ति अनुसार चौद नियम धारण करवा अने नवकासी पोरिसी विगेरे यथाशक्ति पञ्चरकाण करवुं. पछी जूदुं वस्त्र गहेरीने मलोत्सर्ग मौनपणे ज्यां निर्जीव स्थानक होय त्यां करवो. पछी दंतशुद्धि करवा माटे दातण करवुं अचे ज्यांदांतनो मेल पढे त्या धूल नाखी यतनापूर्वक दररोज दातण करवुं. पछी घरव्यवहारना कार्यथी निवृत्त थइने प्रभुदर्शन तेमज पूजन माटे त्रसादिक जीवरहित अवित्र भूमि उपर अचित्त अने उष्ण गलेल पाणीथी स्नान करवुं. पछी देरासरे जाय त्यारे विनयवंत थइने पोताना कुलाचार प्रमाणे पोतानी शिंपदा अनुसार वस्त्राभूषणनो आडंबर करीने कुडुंब समुदाय साथे

अथवा एकलो प्रभुदर्शन करवाने जाय. देरासरे जइने श्रावण पंचाभिगम साचवे. तेना नाम (१) शस्त्र, पुष्प, बूट तथा सवि वस्तुओ विगेरे दूर मूकवी (२) सर्व आभूषण राखवा (३) उत्तरासण राखवुं (४) प्रभुने देखताज ' नमो जिणाणं ' क (५) मननी एकाग्रता राखवी. आ प्रमाणे पंचाभिगम साचवा श्रावण ' निसिहि ' ए पदनो उच्चार करतो देरासरमा प्रवेश कर देरासरमा प्रवेश करता पहेला तन, मन जेम बने तेम निर्मल अ निष्पाप राखी, देरासर तरफ गति करवानी जरूर छे अने एटा माटे सावत्र व्यापारोमाथी मनने दूर करवु जोइए. प्रभुदर्शन थ मस्तक नमावी प्रणाम करे, पछी भावना करे, पछी ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी प्राप्ति माटे त्रण प्रदक्षिणा करे, पछी निसिहिपूर्व मूल मडपमा प्रवेश करे, प्रभुनी जमणी वाजुए उभा रहीने तेम श्रुणोनी स्तवना करे, पछी स्वस्तिक प्रमुख करे.

॥ स्वस्तिक (साथीया) नी समजण ॥

देरासरमा स्त्री पुरुषो वाजोठ उपर चोखानो जे स्वस्तिक (साथीयो) करे छे, तेमा घणोज गभीर अर्थ रहेलो छे. ते दरे जैने जाणयो जोइए, एम धारी अमे तेनु रहस्य आपीए डीए:—

स्वस्तिक (साथीया) ने चार पाखडा होय छे, ते चार पाखडा एटले (१) मनुष्य, (२) देव, (३) तिर्यक, (४) नारक एम चार गति समजवी, अने तेनी उपरना त्रण विंदुने (१) ज्ञान (२) दर्शन, (३) चारित्र एम त्रण रत्न समजवा. तेनी उपर अर्ध चंद्राकार चिह्न ते ऊर्ध्व स्थान, सिद्धस्थान किंवा मुक्तिस्थान मूचवे छे साथीयानी अदरना चार खानाना चार तथा वचलु ए

मली जे पांच विंदु थाय तेने (१) अर्हत, (२) सिद्ध, (३)
चार्यजी, (४) उपाध्यायजी, (५) सर्व साधु एम पंचप-
ष्ठी जाणवा.

उक्त रीते स्वस्तिक (साथीयो) रचीने इच्छवानुं अथवा प्रार्थ-
नुं के हे त्रिलोकनाथ ! आ चार गतिमांथी मने मुक्त करी ज्ञान-
शन-चारित्ररूप दान दइ अजरामर मोक्षस्थान प्राप्त करवा
वितमान् करो.

चैत्यवंदन एकाग्र चित्तथी करे अने पोताना आत्मानी स्थितिनी
चार करतो थको प्रभुनी स्तवना करे. चैत्यवंदन विधि पुर्ण करी
भु सन्मुख उभा रही पोताना आत्मानी निंदा करे अने प्रभुना
गोनी भावना भावे. पछी वांदणाना आवर्ते विधि साचवी
वरकाण प्रभुसन्मुख ले.

॥ पूजा करवानी विधि ॥

सवारना पूर्वोक्त कहेल ते प्रमाणे प्रातःस्मरण कर्या पछी घर
वहारना कार्यथी निवृत्त थइ प्रभुपूजन माटे त्रसादिक जीवरहित
वित्र भूमि उपर अचित्त अने उष्ण गलेल पाणीथी स्नान करवुं.
शरीरना कोइ भागमांथी रसी के परु नीकलतुं होय तो तेणे
पूजा न करवी. अग्रपूजा अने भावपूजा करवी. स्नान कीधा
थी समाल प्रमुखथी अंग लुंछन करी कामली पहेरवी. शुद्ध जनी-
थी थइने पवित्र स्थानके आवी मनोहर, नवीन, फाटेल के सांधेल
थी एवं सफेद वस्त्र पहेरवुं. वीजाए पहेरेलुं अथवा जे वस्त्रथी लघु-
ति, वडीनीति के मैथुनादिक कीधुं होय तेवुं वस्त्र पहेरवुं नहीं.
इ सफेद वस्त्र न होय तो रेशमी रंगीन वस्त्र पहेरवुं, अने अखंड

उत्तरासण जमणी वाजुथी राखवुं. जो के रेशमी वस्त्र पवित्र माने
छे, परंतु भोजनादिकथी अपवित्र थयेलु रेशमी वस्त्र पूजामा न राख
जोइए. हुंकामा प्रभुपूजामा वापरवानां वस्त्र प्रभुपुजा सिवाय बी
क्याय वापरवा नहीं.

॥ पूजानी द्रव्य सामग्री ॥

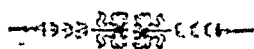
शुद्ध भूमिमा उत्पन्न थयेला सुगंधी पुष्पो, पवित्र केशर, बरार
चंदन, धूप, गायना घीनो दीवो, अखड अक्षत, ताजा नैवेद्य अ
मनोहर स्वादिष्ट सचित्त अचित्त प्रमुख फल ए प्रकारे अष्टप्रकार
पुजानी सामग्री तैयार करवी.

पत्ती देरासरनी जमणी वाजुथी प्रवेश करीने त्रण निसिद्धिनु दि
तवन करे, त्रण प्रदक्षिणा फरे, त्रिकरण (मन, वचन, कायानी
शुद्धि करे, पवित्र पाटला पर बेसीने मनोहर तिलक करे, अने पुजा
विलेपनने धूपथी वूपीने पत्ती निसिद्धि कहेता थका देरासरना मू
महपमा प्रवेश करीने पचाग नमस्कार त्रण वार करे. पत्ती अष्ट
मुखकोश बाधी जिनराजप्रतिमाना आगला दिवसना निर्माल्य उत
पत्ती मोरपीछवडे प्रभुनु प्रमार्जन पोते करे. यतनापुर्यक आग
दिवसना पुष्प चंदन केसर उतारवा अने दुधथी पखाल करीने प
शुद्ध जलयी प्रक्षालन करवु. ते वग्वते जन्माभिपेक समग्री सर्व चित
मनमा चितववो. पत्ती वे के त्रण मुगाला अगलुहणाथी प्रभुनु अ
जलरहित करवु, अने नवे अगे धुपथी केशरने शुद्ध करी पु
करवु. देवपुजा वग्वते मुख्य दृष्टिए करीने मौनज रहेवु कथुं छे.
तेम न पनी शके तो प्रभुना गुणनी भावना भावनी. प्रथम मूलना
कनी पुजा करी पत्ती अनुक्रमे सर्व विंमनी पुजा करवी. दर्शन व

तुं मन प्रफुल्लित धाय तेवी रीते पुष्पथी आंगी रचवी. अनुक्रमे
। दीपनी पुजा करवी.

अग्रपुजा—उज्ज्वल शालि प्रभुखना अगंड अक्षतवडे प्रभु सन्मुख
इ मंगलिकनो आलेख करवो अथवा शुद्ध स्वस्तिक करी भावना
ववी. छेवट ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप रत्नत्रयीना आराधन नि-
त्ते पाटला उपर अक्षतना पुंज करवा. पछी विविध प्रकारनां नैवेद्य
डाववां. तेमां पोताने घेर हमेशां जे भोजन तैयार थतुं होय ते
वेद्य मूकवानो शास्त्रमां अधिकार छे, अने ते पछी उत्तम प्रकारनां
ल धरीं मोक्षनी भावना भाववी. बली गायन करवुं, वार्जिन वगा-
नां, लुण उतारवुं, आरती उतारवी, दीपक करवो ए विगेरे क्रिया-
गानो अग्रपुजामां समावेश थाय छे.

भावपुजा—जिनेश्वर भगवाननी द्रव्यपुजाना निषेधरूप त्रीजी
सिंहिपुर्वक शरु थाय छे. पुरुषे जमणी वाजुए अने स्त्रीए डावी
जुए ओछामां ओछा प्रभुथी नव हाथ अने वधारेमां वधारे साठ
थ छेटे चैत्यवंदन करवा वेसवु. विधिपुर्वक एक चित्ते चैत्यवंदन करी
पुना गुणोनी स्तुति मनोहर स्तवन स्तोत्रथी करवी, अने उत्तम प्र-
रनी शुद्ध मनोवृत्तिवडे भावना भाववी.



॥ स्तुति ॥

॥ अद्य मे सफलं जन्म, अद्य मे सफला क्रिया ॥
नो दिनोदयोऽष्माकं, जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ २ ॥
य मिथ्यांधकारस्य, हंता ज्ञानदिवाकरः ॥ लदितो

महुरीरेऽष्मिन्, जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ १ ॥ अथ
मे कर्मसंघातं, विनष्टं चिरसंचितम् ॥ दुर्गत्यापि
निवृत्तोऽहं, जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ ३ ॥ न हि त्राता
न हि त्राता, नहि त्राता जगत्त्रये ॥ वीतरागसमो
देवो, न जूतो न जविष्यति ॥ ४ ॥ न कोपो न
लोभो न मानं न माया, न हास्यं न ह्यास्यं न गीतं
न कान्ता ॥ न चापत्यशत्रोर्न मित्रं, कलत्रं त्वमेकं प्रपद्ये
जिनं देवदेवम् ॥ ५ ॥ दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापना
शनम् ॥ दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम् ॥ ६ ॥

॥ अथ चैत्यवदन विधि ॥

॥ श्रुमि खमासणो वंदितं जावणिज्जाए निसी
हियाए, महणण वंदामि ॥

(ए प्रमाणे उपर मुजव त्रण खमासमण देश श्रुता
कारेण संदिसह जगवन् चैत्यवंदन करं)

॥ अथ चैत्यवदन ॥

॥ वार गुणअरिहंत देव, प्रणमीजे जावे ॥ सिद्ध
आठ गुण समरतां, दुःख दोहग जावे ॥ आचारज
गुण ठत्रीश, पचवीश उवज्जाय ॥ सत्यावीश गुण
साधुनां, जपतां सुख थाय ॥ अष्टोत्तर सय गुण मली

ए, एम समरो नवकार ॥ धीरविमल पंक्ति तणो,
नय प्रणमे नित्य सार ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जं किंचि नाम तिष्ठं, सग्गे पायादि माणुसे खोए ॥
जाइं जिणविवाइं, ताइंसवाइं वंदामि ॥

॥ अथ नमुच्छुणं ॥

(वे हाथ जोमी नासिका सुधी उंचा राखी कहेवुं.)

॥ नमुबुणं, अरिहंताणं, जगवंताणं, आश्रगराणं,
तिष्ठयराणं, सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससी-
हाणं, पुरिसवरपुंरुरीयाणं, पुरिसवरगंधहृणीं, लोघु-
त्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपइवाणं, लोग-
पज्जोअगराणं, अज्जयदयाणं चरकुदयाणं, मग्गदयाणं,
सरणदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं,
धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरच्चाउरंतचक्कव-
हीणं, अप्पमिहयवरणाणदंसणंधराणं, जिणाणं, जाव-
याणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं,
मुत्ताणं, मोअगाणं, सबनूणं, सबदरिसीणं, सिवमयल-
मरुअमणंतमखयमवावाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइना-
मधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जियजयाणं

जे य अइयाँ सिद्धा, जे अ नविस्संतणाए कोडे
संपइ अ वट्टमाणे, सबे तिविहेण वंदामि ॥

॥ अथ जावन्ति चेइआई ॥

॥ जावन्ति चेइयाइं, उहे अ अहे अ तिरियलोए
अ ॥ सवाइं ताइं वंदे, इह संतो तह संताइ ॥

(इहामि खमासमणे वंदिउं जावणिजाए नि
सीहियाए महणण वंदामि)

॥ अथ जावन्त केवि साहू ॥

॥ जावन्त केवि साहू, जरहेरवयपहाविदेहे अ ।
सवेसि तेसि पणउं, तिविहेण तिदंरुविरयाणां ॥

॥ अथ नमस्कार ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुज्यः ॥

॥ अथ स्तवन ॥

॥ अतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग
तुमारा ॥ सांजलीने आव्यो हुं तीरे, जन्म मरण
दु.ख वारो ॥ सेवक अरज करे ठे राज, अमने शिव
सुख आपो ॥ ए आंकणी ॥ सहुकोनां मनवंठित पूरो
चिता सहुनी चूरो ॥ एवुं विरुद ठे राज तमारुं, केम
राखो ठो पूरे ॥ सेवक ॥ १ ॥ सेवकने बलबलतं

रखी, मनमां महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम
 रहेवाशो, जो उपकार न करशो ॥ सेवक० ॥ ३ ॥
 नटपटनुं हवे काम नहीं ठे, प्रत्यक्ष दरिसण दीजे ॥
 बुझाडे धीजुं नहीं साहेब, पेट पढ्या पती जे ॥
 सेवक० ॥ ४ ॥ श्री शंखेश्वर मंरुण साहेब, विन-
 तनी अवधारो ॥ कहे जिनहर्ष मया करी मुजने, जव-
 सागरथी तारो ॥ सेवक० ॥ ५ ॥

॥ अथ जय वीयराय ॥

(बे हाथ जोमी माथा सुधी उंचा राखी जय
 वीयराय आज्ञवमखंका सुधी कही हाथ जरा नीचा
 उतारी बाकी रहेला जय वीयराय पूरा करवा.)

॥ जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पज्ञावउ
 जयवं ॥ जवनिवेउ मग्गा,—एसारिया इठफलसिद्धी
 १ ॥ लोगविरुद्धचाउ, गुरुजनपूआ परहकरणं च ।
 तुहगुरुजोगो तवय,—एसेवणा आज्ञवमखंका ॥ २ ॥
 गारिजाइजइवि निया,—एबंधणं वीयराय तुह समए ॥
 गहवि मम हुज सेवा, जवे जवे तुम्ह चक्षणाणं
 ३ ॥ डुरकखउ कम्मखउ, समाहिमरणं च बोहि-
 भाजोअ ॥ संपज्जउमह एअं, तुह नाह पणामकरणेणं

॥ ४ ॥ सर्वमंगलमागद्यं, सर्वकल्याणकारणं ॥ प्रधा
सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

॥ अथ अरिहतचेड्याण ॥

(उच्चा थई वोळवुं.)

॥ अरिहंतचेड्याण करेमि काउस्सग्गं वंदणवनि
याए, पूअणवत्तियाए, सक्कारवत्तियाए, सम्माण
त्तियाए, बोहिलात्तियाए, निरुवसग्गवत्तियाए,
सद्धाए, मेहाए, धइए, धारणाए, अणुप्पेहा
वट्टमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

॥ अथ अन्नच्छ ऊससिएण ॥

॥ अन्नह ऊससिएणं नीससिएण खासिएणं ठं
एणं जंजाइएण उहुएण वायनिसग्गेण जमली
पित्तमुहाए सुहुमेहि अंगसंचालेहि सुहुमेहि खेलस
चालेहि सुहुमेहि दिठिसचालेहि एवमाइएएहिं आग
रेहि अन्नग्गो अविराहिउं हुज्ज मे काउस्सग्गो जा
अरिहंताणं जगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ता
कायं ठाणेण मोणेणं जाणेणं अप्पाणं वोसिरामि
त्यारपठी एक नवकारनो काउस्सग्ग करी न
अरिहंताण वोळी, नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायस
५ साधुच्य. कही थोय कहेवी.

पूजीए, पूजानां फल होय ॥ राजा नमे प्रजा न
 आण न लोपे कोय ॥ ५ ॥ फुलां केरा वागमां, वे
 श्री जिनराज ॥ जेम तारामां चंद्रमा, तेम शो
 महाराज ॥ ६ ॥ प्रभु नामकी औषधी, खरे मन
 खाय ॥ रोग पीना व्यापे नहीं, महादोष मीट ज
 ॥ ७ ॥ कुंजे बांध्युं जल रहे, जल विण कुंज न होय
 ज्ञाने बांध्युं मन रहे, गुरु विना ज्ञान न होय ॥ ८
 गुरु दीवो गुरु देवता, गुरु विना घोर अंधार ॥
 गुरुवाणी वेगला, ते रवड्या ससार ॥ ९ ॥ ज्ञान स
 कोइ धन नहीं, समता समु नहीं सुख ॥ जीवि
 समी आशा नहीं, लोभ समुं नहीं दु.ख ॥ १०
 जे दर्शन दर्शन विना, ते दर्शन निषेद्ध ॥ जे दर्श
 दर्शन हुए, ते दर्शन सापेद्ध ॥ ११ ॥ दर्शन दर्श
 रटतो फीरु, तो रणरोज समान ॥ दर्शन शुद्ध स्वत्त
 वतुं, अनुत्तव मन विश्राम ॥ १२ ॥

॥ श्लोक ॥

- सरसशांति सुधारससागर, शुचितरं गुणरत्नमहागरं
 जविकपंकजवोधदिवाकरं, प्रतिदिनं प्रणमामि जिने
 श्वरं ॥ १३ ॥ नमस्कारसमो मंत्र., शत्रुजयसमो गिरी

तरागसमो देवो, न जूतो न जविष्यति ॥ १४ ॥
 ताले यानि विंवानि, यानि विंवानि जूतले ॥
 गेऽपि यानि विंवानि, तानि वंदे निरंतरम् ॥ १५ ॥
 न्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्
 रुण्यजावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥ १६ ॥

॥ पूजाभावना ॥

॥ प्रभु पूजनकुं हुं चढ्यो, केशर चंदन घनसार ॥
 व अंगे पूजा करी, सफल करुं अवतार ॥ १ ॥
 च कोरुने फुलडे, पाम्या देश अठार ॥ कुमार-
 ल राजा थयो, वरत्यो जयजयकार ॥ २ ॥ श्री
 नेश्वर पूजतां, उत्कृष्ट परिणाम ॥ करतां केइ जीव
 मीआ, स्वर्ग मोक्षनां धाम ॥ ३ ॥ समकितने
 जुवालवा, उत्तम एह उपाय ॥ पूजाथी तमे प्री-
 जो, मनवांठित सुख थाय ॥ ४ ॥ जवदव दहन
 वारवा, जलद घटा सम जेह ॥ जिनपूजा जुगते
 री, त्रिविधे कीजे तेह ॥५॥ पूजा कुगतिनी अर्गला,
 न्य सरोवर पाल ॥ शिवगतिनी साहेबनी, आपे मंगल-
 ल ॥६॥ जिन दर्शन पूजा विना, जेहनादहाका जाय ॥
 सर्व वांजीया जाणीए, वली जन्म अकारथ जाय ॥७॥

॥ नव अग पूजाना दोहा ॥

॥ जल जरी संपुटपत्रमां युगलिक नर पूजंत ।
 रूपन चरण अंगुठडे दायक नवजल अंत ॥ १ ॥
 जानुबले काजस्सग्ग रह्या, विचर्या देश विदेश ।
 खमां खमां केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश ॥ २ ॥
 लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ॥ कर
 कांडे प्रभु पूजना, पूजो नवि बहु मान ॥ ३ ॥ मान
 गयुं दोय अंगथी, देखी वीर्य अनंत ॥ नूजावडे
 नवजल तर्या, पूजो खध महंत ॥ ४ ॥ सिद्धशिल
 गुण उजली, लोकांते जगवंत ॥ वसीया तिणे कारण
 नवि, शिरशिखा पूजंत ॥ ५ ॥ तीर्थकर पद पुण्यथी,
 त्रिभुवन जन सेवंत ॥ त्रिभुवनतिलक समा प्रभु
 जाल तिलक जयवंत ॥ ६ ॥ सोल पहोर प्रभु देशनां,
 कंठविवर वर्तुल ॥ मधुर ध्वनि सुर नर सुणे, तेणे
 गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ हृदयकमल उपशम वले,
 वाट्या राग ने रोप ॥ हीम दहे वनखरुने, हृदय
 तिलक संतोष ॥ ८ ॥ रत्नत्रयी गुण उजली, सकल
 सुगुण विश्राम ॥ नाजिकमलानी पूजना, करतां आव-
 चक्ष धाम ॥ ९ ॥ उपदेशक नव तत्त्वना, तिणे नव

ग जिणंद ॥ पूजो बहुविध रागशुं, कहे शुजवीर
णींद ॥ १० ॥

॥ प्रदक्षिणाना दुहा ॥

॥ काळ अनादि अनंतथी, जवत्रमणनो नहीं पार ॥
त्रमणा निवारवा, प्रदक्षिणा दउं त्रण सार ॥ १ ॥
मतीमां जमतां थका, जव जावठ पूर पत्ताय ॥
र्शन ज्ञान चारित्ररूप, प्रदक्षिणा त्रण देवाय ॥ २ ॥
त्म मरणादि सवि जय टले, सीजे जो दर्शनकाज
रत्नत्रय प्राप्ति जणी, दर्शन करो जिनराज ॥ ३ ॥
ज्ञान वरुं संसारमां, ज्ञान परम सुख हेत ॥ ज्ञान
वेना जगजीवना, न लहे तत्व संकेत ॥ ४ ॥ चयते
अंचय कर्मनो, रिक्त करे वली जेह ॥ चारित्र नाम
नेर्युक्ते कहुं, वंदो ते गुणगेह ॥ ५ ॥ दर्शन ज्ञान चा-
रेत्र ए, रत्नत्रयी निर्धार ॥ त्रण प्रदक्षिणा ते कारणे,
नवदुःख जंजनहार ॥ ६ ॥

॥ साथीयो करती वेला भाववाना दुहा ॥

तेमां प्रथम त्रण ढगली अने सिद्धशिला करती वखते भाववुं के-
॥ दर्शन ज्ञान चारित्रना, आराधनथी सार ॥
सिद्धशिलानी उपरे, हो मुज वास श्रीकार ॥ १ ॥

॥ हवे साथीयो करती बखते ॥

॥ अक्षतपूजा करतां थका, सफल करुं अवतार ॥
फल मागुं प्रभु आगळे, तार तार मुज तारं ॥ १ ॥

॥ फल मूकती बखते ॥

॥ फलपूजा करतां थका, सफल करुं अवतार ॥
फल मागुं प्रभु आगळे, तार तार मुज तार ॥ १ ॥
सांसारिक फल मागीने, रवड्यो बहु संसार ॥ अष्ट
कर्म निवारवा, मागुं मोक्षफल सार ॥ २ ॥ चिहुं गति
त्रमण संसारमां, जन्म मरण जजाव ॥ पंचमगति
विण जीवने, सुख नहीं त्रिहुं काल ॥ ३ ॥

॥ जिनदर्शन महिमा फल ॥ शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

यास्याम्यायतनं जिनस्न लज्जते ध्यायंश्चतुर्थफलं,
षष्ठं चोत्स्थित उद्यतोऽष्टममथो गंतुं प्रवृत्तोऽध्वनि ॥
श्रद्धाद्युर्दशमं बहिर्जिनगृहात्प्रात्यस्ततो द्वादशं
मध्ये पादिकमी द्धिते जिनपतौ मासोपवासं फल ॥१॥

अर्थ—हू जिनमदिरमा जइश एवुं चितवता एक उपवासनु
जवाने उठता छठ तपनु, मार्गे चालता अष्टम तपनु, जिनगृह पासे
चार उपवासनु, चैत्यमा आवे त्यारे पाच उपवासनु, चैत्यनी मध्यमां
आवता पदर उपवासनु, अने जिनेवरना दर्शन करता मासो-
पवासनु फल मले छे.

देवदर्शन पूजा आदि कर्या पछी बहार आवे. पछी देरासरना नोकर, चाकर, नामां लेखादिनी तपास करे अने यथोचित सुधारणा करे. दरेक प्रकारनी आशातना टाले अने देवद्रव्य तथा साधारणद्रव्यनी सारी व्यवस्था करे.

व्याख्यानवाणी लक्षपूर्वक श्रवण करे, हृदयमां तेना रहस्यनुं चिंतवन करे, गुरुना अभावे सामायिक समभावे करतां थका पोते स्वाध्याय करे अने करावे.

ए प्रमाणे सवारनी धर्मकरणीमांथी निवृत्त थइ गृहतंत्र चलाववाना उद्यमनो विचार करे. प्रथम प्रहर वीत्या पछी अने द्वितीय प्रहर वीत्या पहेलां शांतिथी शुद्ध भोजन करे. साधु मुनिराज होय तो तेमने बहोरावे तेमज गुरुने सुखशाता पूछी तेमनी शुश्रूषा करे. पछी व्यापारी होय तो बजारमां पोताना व्यापारमांथी द्रव्यउपार्जननो विचार करे अने राज्यनी के बीजी नोकरी होय तो तेओ राज्यसभामां के पोताना काम उपर जाय. व्यापारमां व्यवहारशुद्धि साचववानुं लक्ष राखवुं, कारण के तेथी व्यापरनी वृद्धि थाय छे अने धर्मने बाध आवतो नथी.

॥ आजीविका चलाववाना सात प्रकार ठे ॥

(१) व्यापार (२) विद्या (३) खेती (४) पशुपाल (५) हुन्नर कला (६) नोकरी अने (७) भिक्षा मागवी. आ सातेमां व्यापार सर्वश्री श्रेष्ठ छे. लक्ष्मी व्यापारमांज बसे छे. नोकरी करवी तोपण सारा शैठनी करवो अने धर्मक्रियाने भूली जवी नहीं. व्यापार हमेशां पोतानी पुंजीनुं बल जोइने करवो, देश काल तथा पोताना भाग्योदयनो विचार करवो, विचार कर्या वगर शक्ति उपरांत व्यापार करवाथी हानि अने हांसी थाय छे.

॥ द्रव्यशुद्धि ॥

श्रावकने माटे पंढर कर्मादाननो व्यापार वर्ज्य कह्यो । धर्म सचवाय नहीं एवा व्यापारथी धननो लाभ थतो होय तोप शुद्ध श्रावके ते व्यापार करवो जोइए नहीं छेवट निर्वाह कं रीते थइ न शके तो महारभनो त्याग करी कर्मादाननो व्याप करवो, पण सर्वे जीव पर दयाभाव राखवो, निर्दयपणे चलाव देवु नहीं. हमेशा स्वामिद्रोह, विश्वासघात, वृद्धद्रोह, बालद्रो थापण उल्लववी, खोटी साक्षी, कोइनी घात चितववी, कोइ आजीविकानो भग करवो विगेरे महा पापना कार्यो सर्वथ त्याग करवा.

॥ श्रावक जावकनो नियम ॥

श्रावके पेदाशना प्रमाणमा खर्च करवो. पेदाशना चार भा करवानुं कह्युं छे. एक भागनो सग्रह करे, एक भाग धर्मकार्य अ पोतानी जातना सुखने माटे राखे, एक भाग व्यापारमा नाखे अ चोथो भाग दुःख, दास दासी तथा दुःखी माणसोनी संभा माटे राखे

भाग्यथी प्राप्त थयेला द्रव्यनो हमेशा सदुपयोग करवो अ दान देवामा तथा धर्मकार्यमा प्रापरीने पुण्यनुं उपार्जन कर कारण के लक्ष्मी चपल छे अति तृष्णा पण करवी नही ते लोभने तद्धन तजी पण देवो नहीं. यथायोग्य आ लोक अ परलोकनो विचार करी जे प्रामा पोतानु चित्त शांति प ते थो करवो

॥ धर्म, अर्थ अने काम ॥

शुद्ध श्रावक गृहस्थे अन्योन्य अप्रतिबंधपणे धर्म, अर्थ अने काम ए त्रणे वर्गनुं सेवन करवुं. ए त्रणेने एवो संबंध छे के एक तरफ दुर्लक्ष करवाथी वधुं वगडे छे. धर्म वगरनुं अर्थ साधन अन्यायी भरपूर होय छे अने धर्म तथा अर्थ वगरनी कामभोगनी भासक्ति आ लोक अने परलोकमां घणी नीची गतिए पहोंचाडतार छे तेमज गृहस्थने माटे अर्थप्राप्ति वगर एकलो धर्म साधन नइ शकतो नथी, माटे त्रणे वर्गने परस्पर बाध न आवे तेम अचित साधना करवी.

॥ देश काल विरुद्ध ॥

शुद्ध श्रावके देश विरुद्ध, काल विरुद्ध, राज विरुद्ध अने जाति विरुद्ध वर्तवानो सर्वथा त्याग करवो. जे देशमां जेवा आचार अविचारनो रिवाज होय तेने मान आपवुं, लोक विरुद्ध वर्तवुं नहीं. शास्त्रमां कहुं छे के 'यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं नाचरणीयं नाकरणीयं.' जो के शुद्ध वर्तन होय तोपण लोकाचार विरुद्ध होय तो तेथी अकार नहीं थता तेनो त्याग करवो. काल विरुद्ध एटले चोमासामां मुसाफरी करवी नहीं, फागण मास पडी तल पीलाववा के जाव नहीं. चोमासामां भाजी वनस्पतिनो पण त्याग करवो. जे जेमां जे करवा योग्य होय तेज करवुं अने जे तजवा योग्य होय तेओ त्याग करवो. एने लोक विरुद्ध त्याग कहे छे. राज विरुद्ध त्याग एटले राजाना हुकमने मान आपवुं, राजद्रोह करवो नहीं अने राज्य विरुद्ध हीलचालमां सामेल थवुं नहीं जाति पवुं एटले न्यात जातथी जूदा पडी चालवुं नहीं, कुटुंबनो त्याग करवो नहीं, न्यातना नियमने मान आपवुं अने वधा साथे गीमलीने चालवुं.

॥ रात्रिभोजननो त्याग ॥

पोताने उचित धधामा आवक जावकनो विचार करी संध्य काले तेमांथी निवृत्त थवु अने चार घडी दिवस बाकी रहे त्य भोजन करी लेवुं जोइए. छेक सध्याकाले भोजन करवाथी रात्रिभोजननो दोष लागे छे, रात्रिभोजननो शुद्ध श्रावके सर्पथा त्या करवो जोए. कारण के तेमा अनेक जीवोनी हिंसा थवानुं शास्त्रकार कहे छे, तेमज वली वैदक नियम जोता पण रात्रिभोजन त्या करवाथी शारीरिक प्रकृति सारी रहे छे, मोट रात्रिभोजननो सर्वथ त्याग करवो. भोजन कर्या पछी यथाशक्ति चउविहार, तिविहार दुविहारनु पचरकाण करवुं. दिवस बाकी रहे त्यांज पचरकाण क लेवु, पण तेम कदाच न वनी शके तो रात्रे छेपट सुती वसते प पचरकाण करवु लाभकारी छे.

पछी साजनेला सूर्य अर्ध अस्त थाय ते पहेलां त्रीजी वसत विधि पूर्वक जिनेश्वर प्रभुना दर्शन करे अने ते पछी उपाश्रयमा जा. जयणापूर्वक प्रमार्जन करी सामायिक लड विधिपूर्वक छ प्रकारे आवश्यकने साचववारूप देवसि प्रतिक्रमण करे. रात्रे असुरु प्रतिक्रमण करवुं कशु नथी, पण सूर्य अर्ध अस्त थाय त्वारे वदिता स कहेवुं, एम शास्त्रकारो कहे छे. ते छता कोड कारणसर रात्रिन बार वागे त्यांसुधी थइ शके छे ए प्रमाणे सज्ज्ञाय ध्यान करी इ होय तो तेनी शुश्रुषा करे अने धर्मचर्चा करी. प्रतिबोध पावे.

एक ग्रहर रात्रि गया पछी माफक आवे एवा स्थानक निदे जीवगहित पल्पक विगेरे शय्यामां विधिपूर्वक अल्प निद्रा करे, यथ शक्ति ब्राह्मचर्यनु पालन करे, सुती वसते नवकार मत्रनु स्मरण व अरिहत, सिद्ध, साधु अने जैन धर्म ए चार शरणा याद करे. शान्तिथी अल्प निद्रा करे इति श्रावककर्तव्य.

॥ तृतीय खंफ ॥

यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रम्हेति वेदान्तिनो,
 ष्ठाः बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्त्तेति नैयायिकाः ।
 ह्नित्यथः जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः,
 ऽयं नो विदधातु वाच्चितफलं श्रीवीतरागो जिनः ॥

॥ वार विशेषनां चैत्यवंदनो, स्तवनो तथा थोयो ॥

॥ बीजनुं चैत्यवंदन ॥

॥ दुविध धर्म जिणे उप दिश्यो, चोथा अजिनंदना ॥
 जीजे जन्म्या ते प्रभु, नवदुःख निकंदन ॥ १ ॥
 दुविध ध्यान तुमे परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ इम
 काश्युं सुमति जिने, ते चवीया बीज दिन ॥ २ ॥
 दोय बंधन राग द्वेष, तेहने नवि त्यजीए ॥ मुज परे
 तीतल जिन कहे, बीज दिन शिव नजीए ॥ ३ ॥
 जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीज दिने
 सुपूज्य परे, लहो केवलनाण ॥ ४ ॥ निश्चयनय
 यवहार दोय, एकांत न ग्रहीए ॥ अर जिन बीज
 दिने चवी, एम जिन आगल कहीए ॥ ५ ॥ वर्त्तमान
 तवीशीए, एम जिन कढ्याण ॥ बीज दिने केइ
 मीया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चोवी-

शोए ए, हुश्यां बहु कल्याण ॥ जिन उत्तम पदपद्मने-
नमतां होय सुखखाण ॥ ७ ॥

॥ वीजजुं स्तवन ॥

॥ प्रणमी शारद माघ, शासन वीर सुहंकरु जी
वीज तिथि गुणगेह, आदरो ऋवियण सुंदरु जी ॥ १ ॥
एह दिन पंच कल्याण, विवरीने कहुं ते सुणो जं
॥ माहा सुदि वीजे जाण, जन्म अजिनंदन तणो जं
॥ २ ॥ श्रावण सुदिनी हो वीज, सुमति चव्या सुर
लोकथी जी ॥ तारण ऋवोदधि तेह, तस पद सेतं
सुर थोकथी जी ॥ ३ ॥ समेत शिखर शुभ ठाण
दशमा शीतल जिन गणु जी ॥ चैत्र वदिनी हो वीज
वरंथा मुक्ति तस सुख घणुं जो ॥ ४ ॥ फाल्गुन
मासनी वीज, उत्तम उज्ज्वल मासनी जी ॥ अरनाथ
च्यवन, कर्मद्वये ऋवपासनी जी ॥ ५ ॥ उत्तम माघज
मास, सुदिवीजे वासुपूज्यनो जी ॥ एहीज दिन केव
लनाण, शरण करो जिनराजनो जी ॥ ६ ॥ करणीरूप
करो खेत, समकितरूप रोपो तिहां जी ॥ खात
किरिया ही जाण, खेरु समता करी जिहां जो ॥ ७ ॥
उपशम तद्रूप नीर, समकित ठोरु प्रगट होवे जी ॥

संतोष करी अहो वारु, पञ्चरकाण व्रत चोकी सोहे
 जी ॥ ७ ॥ नासे कर्मरिपु चोर, समकित वृद्ध फल्युं
 तिहां जी ॥ मांजर अनुन्नवरूप, उत्तरे चारित्र फल
 जिहां जी ॥ ८ ॥ शांति सुंधारस वारि, पान करी
 सुख लीजीए जी ॥ तंबोल सम ल्यो खाद, जीवने
 संतोष रस कीजीए जी ॥ १० ॥ बीज करो दोयमास,
 उत्कृष्टी बावीश मासनी जी ॥ चोविहार उपवास,
 पाद्रीये शील वसुधासनी जी ॥ ११ ॥ आवश्यक
 दोय वार, पफिलेहण दोय लीजीए जी ॥ देववंदन
 त्रण काल, मन वच कायाए कीजीए जी ॥ १२ ॥
 उजमणुं शुन्न चित्त, करी धरीए संयोगथी जी ॥
 जिनवाणी रस एम, पीजीए श्रुत उपयोगथी जी
 ॥ १३ ॥ एणी विधि करीए हो बीज, राग ने द्वेष
 हूरे करी जी ॥ केवलपद लही तास, वरे मुक्ति
 उलट धरी जी ॥ १४ ॥ जिनपूजा गुरुन्नक्ति, विनय
 करी सेवो सदा जी ॥ पद्मविजयनो शिष्य, नक्ति
 नामे सुख संपदा जी ॥ १५ ॥

॥ ज्ञानपंचमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ त्रिगडे बेठा वीर जिन, नाखे नविजन आगे

॥ त्रिकरणशुं त्रिहुं लोक जन, निसुणो मन रागे ॥
 १ ॥ आराहो जली जातसें, पांचम अजुवाली ॥
 ज्ञानआराधन कारणे, एहज तिथि निहाली ॥ २
 ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणी एणे संसार ॥ ज्ञान
 आराधनथी लह्युं, शिवपदसुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान
 रहित क्रिया कही, काशकुसुम उपमान ॥ लोका
 लोक प्रकाशकर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञान
 सासोसासने, करे कर्मनो खेह ॥ पूर्व कोनी वरस
 लगे, अज्ञाने करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया
 कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥ ज्ञान तणो महिमा घणो
 अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥ पंच मास लघु पंचमी, जाव
 जीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच मासनी, पंचमी करो
 शुच दृष्टि ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए, कोउस्सग्ग
 लोगस्स केरो ॥ उजमणुं करो जावशु, टाळे जवफेरो ॥ ८ ॥
 एणी पेरे पंचमी आराहीए ए, आणी जाव अपार ॥
 वरदत्त गुणमंजरी पेरे, रंगविजय लहो सार ॥ ९ ॥

॥ ज्ञानपंचमीनुं स्तवन ॥

॥ पंचमी तप तमे करो रे प्राणी, जेम पामं
 निर्मल ज्ञान रे ॥ पहेलुं ज्ञान ने पठी क्रिया, नही को

ज्ञान समान रे ॥ पंचमी० ॥ १ ॥ नंदी सूत्रमां ज्ञान
 वखाण्युं, ज्ञानना पांच प्रकार रे ॥ मति श्रुत अवधिने
 मनःपर्यव, केवल एक उदार रे ॥ पंचमी० ॥ २ ॥ मति
 अष्टावीश श्रुत चउदह वीश, अवधि ठे असंख्यं
 प्रकार रे ॥ दोय जेदे मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक
 उदार रे ॥ पंचमी० ॥ ३ ॥ चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र
 तारा, एकथी एक अपार रे ॥ केवलज्ञान समुं नहीं
 होइ, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पंचमी० ॥ ४ ॥
 गार्श्वनाथ प्रसादे करीने, महारी पूरो उमेद रे ॥
 जमयसुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननों पांचमो जेद
 ॥ पंचमी० ॥ ५ ॥

॥ अष्टमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ माहा सुदि आठमने दिने, विजया सुत जायो
 । तेम फागुण सुदि आठमे, संजव चवी आव्यो
 । १ ॥ चैतर वदनी आठमे, जन्म्या कृष्ण जिणंद
 । दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद
 । २ ॥ माधव सुदि आठम दिने, आठ कर्म करथां
 हर ॥ अजिनंदन चौथा प्रभु, पाम्या सुख नरपूर
 । ३ ॥ एहीज आठम उजली, जन्म्या सुमति जि-

एण्ड ॥ आठ जाति कलशे करी, नवरावे सुर ङ
 ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमे, मुनिसुव्रत खा
 ॥ नेम आपाढ सुदि आठमे, अष्टमी गति पामी
 ५ ॥ श्रावण वदिनी आठमे, नमि जन्म्या ज
 ज्ञाण ॥ तिम श्रावण सुदि आठमे, पासजीनुं निर्वा
 ॥ ६ ॥ ज्ञाडवा वदि आठम दिने, चवीया स्वामी र
 पास ॥ जिन उत्तम पदपद्मने, सेव्याथी शिववास ॥ ७
 ॥ अष्टमीनु स्तवन ॥

॥ हारे मारे ठाम धरमना साका पचवीश दे
 जो, दीपे रे त्यां देश मगध सहुमां शिरे रे लो
 हारे मारे नयरी तेहमां राजगृही सुविशेष जो, रा
 रे त्यां श्रेणिक गाजे गज परे रे लो ॥ १ ॥ हारे मा
 गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो, विचरंत
 तिहां आवी वीर समोसरथा रे लो ॥ २ ॥ हारे मा
 चौद सहस मुनिवरना साथे साथ जो, सुधा रे त
 सयम शीयले अलंकरया रे लो ॥ ३ ॥ हारे मा
 फूट्या रसजर जुट्या अंब कदव जो, जाणु रे गुण
 शील वन हमी रोमंचीठ रे लो ॥ हारे मारे वाय
 ७ वाय सुवाय तिहां अविलव जो, वासे रे परिम

हुं पासे संचीर्ण रे लो ॥ ३ ॥ हारिं मारे देव चतु-
ध आवे कोमाकोम जो, त्रिगुं रे मणि हेम रजतनुं
रचे रे लो ॥ हारिं मारे चोसठ सुरपति सेवे
माहोम जो, आगे रे रस लागे इंद्राणी नचे रे
॥ ४ ॥ हारिं मारे मणिमय हेम सिंहासन बेठा
प जो, ढाले रे सुर चामर मणि रत्ने जड्यां रे
॥ हारिं मारे सुणतां दुंदुभिनाद टले सवि ताप
, वरसे रे सुर फूल सरस जानुं अड्यां रे लो ॥
॥ हारिं मारे ताजे तेजे गाजे घन जेम धुंव जो,
जे रे जिनराज समाजे धर्मने रे लो ॥ हारिं मारे
रखी हरखी आवे जनमन लुंव जो, पोषे रे रस
पडे धोके जर्ममां रे लो ॥ ६ ॥ हारिं मारे आगम
णी जिननो श्रेणिक राय जो, आव्यो रे परिवरीयो
य गय रथ पायगे रे लो ॥ हारिं मारे देइ प्रदक्षिणा
री बेठो ठाय जो, सुणवा रे जिनवाणी मोटे जा-
रे लो ॥ ७ ॥ हारिं मारे त्रिभुवननायक लायक
नगवंत जो, आणी रे जन करुणा धर्मकथा
रे लो ॥ हारिं मारे सहज विरोध विसारी ज-
ना जंतु जो, सुणवा रे जिनवाणी मनमां गह-
रे लो ॥ ८ ॥

॥ एकादशीतु चैत्यवदन ॥

॥ शासननायक वीरजी, प्रभु केवल पायो ॥ सं
चतुर्विध थापवा, महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माध
सीत एकादशी, सोमल छिज यज्ञ ॥ इंद्रचूति अ
मल्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशसे चउगुण
तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करे, मन अति
मान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय हरी ए, एक
दश गणधार ॥ वीरे थाप्या वंदीए, जिनगास
जयकार ॥ ४ ॥ महि जन्म अर महि पास, व
घरण विलासी ॥ रूपन्न अजित सुमति नमी, म
घनघाती विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रन्न शिववास पा
न्नव नवना तोमी ॥ एकादशी दिन आपणी, का
सघली जोमी ॥ ६ ॥ दश क्षेत्रे त्रिहुं कालनां, त्रण
कल्याण ॥ वरस अग्यार एकादशी, आराधो वर ना
॥ ७ ॥ अगीयार अग लखावीए, एकादश पाठां
पुंजणी ठवणी विटणी, मपी कागल काठां ॥ ८
अगीयार अन्नत ठांरवां ए, वहो पस्मिमा अगीय
॥ खिमाविजय जिनगासने, सफल करो अवतार ॥ ९

॥ एकादशीतु स्तवन ॥

॥ जगपति नायक नेमि जिणद, छारिका नग

मोसरथा ॥ जगपति वंदवा कृष्ण नरिंद, जादव
भुं परिवरथा ॥ १ ॥ जगपति धी गुण फूल अ-
ल, नक्तिगुणे माला रची ॥ जगपति पूजी पूठे
ष्ण, द्वायिक समकित शिवरुचि ॥ २ ॥ जगपति
॥रित्रधर्म अशक्त, रक्त आरंभ परिग्रहे ॥ जगपति
ज आतम उद्धार, कारण तुम विण कोण कहे
३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुज नाथ, माथे गाजे
णनिलो ॥ जगपति कोइ उपाय बताव, जेम करे
शवधू कंतलो ॥ ४ ॥ नरपति उज्ज्वल मागशिर
ास, आराधो एकादशी ॥ नरपति एकसो ने
चास, कढ्याणक तिथि उद्वसी ॥ ५ ॥ नरपति
श क्षेत्रे त्रण काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति
वुं जिननां कढ्याण, विवरी कहुं आगल वली
६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, मद्धि जन्म
न केवली ॥ नरपति वर्तमान चोवीशी, मांहे कढ्या-
क आ वली ॥ ७ ॥ नरपति मौनपणे उपवास,
ढसो जपमाला गणो ॥ नरपति मन वच काय
क्षेत्र, चरित्रं सुणो सुव्रत तणो ॥ ८ ॥ नरपति
हिण धातकी खंरु, पश्चिम दिशि इहुकारथी ॥

नरपति विजय पाटण अजिधान, साचो नृप प्रजा-
 पालथी ॥ ए ॥ नरपति नारी चंद्रावती तास, चंद्र
 मुखो गजगामिनी ॥ नरपति श्रेष्ठी शूर विख्यात
 शीयल सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिव
 परिवार, सार झूपण चीवर धरी ॥ नपरति जारं
 नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा करे ॥ ११ ॥ न
 पति पोपे पात्र सुपात्र, साम्नायिक पोषध वरे ॥ नर
 पति देववंदन आवश्यक, कालवेलाए अनुसरे ॥ १२ ॥

॥ नवपदजीनुं चैत्यवदन ॥ हरिगीत ॥

॥ शिवसंपदा वरवा सदा नवपद धरुं हृ ध्यानमां
 नववासनानो वेग टाळे राचतां गुणतानकां ॥ श्री
 पाल मयणासुंदरी साधी घणां सुखीआं ययां, नवपद
 नजो सहु जावथी एसां अखिल मंत्रो रह्या ॥ १ ॥
 अरिहंनपदने प्रथम शुणतां विघ्न सहु छूरे टळे
 वली सिद्ध आचारज अने उवज्जायथी शांति महे
 ॥ पंचम मनोहर साधुपदने सेवतां शिवपुर गया
 नवपद नजो सहु जावथी एसां अखिल मंत्रो रह्या
 ॥२॥ दर्शन अने शुच ज्ञान ने चारित्रपदनी योजन
 ए त्रितयनी अराधना पूरे सदा सहु कामना ॥ अतिर

रह्युं तपपद् चलकतुं वार जस जेदो कह्या, नवपद् नजो
सहु न्नावथी एमां अखिल मंत्रो रह्या ॥ ३ ॥

॥ श्रीसिद्धचक्रुं स्तवन ॥

॥ श्री सिद्धचक्र आराधीए, शिवसुख फल सह-
कार लाल रे ॥ ज्ञानादिक त्रण रहनुं, तेज चढाव-
णहार लाल रे ॥ श्री सिद्ध ॥ १ ॥ गौतमे पूठंतां
कह्यो, वीर जिणंद विचार लाल रे ॥ नवपद् मंत्र
आराधतां, फल लहे नविक अपार लाल रे ॥ श्री
सिद्ध ॥ २ ॥ धर्मरथनां चार चक्र ठे, उपशम ने
पुविवेक लाल रे ॥ संवर त्रीजुं जाणीए, चोथुं सिद्ध-
चक्र ठेक लाल रे ॥ श्री सिद्ध ॥ ३ ॥ चक्री चक्र
यण वले, साधे सयल ठ खंरु लाल रे ॥ तिम सिद्ध-
चक्रप्रनावथी, तेज प्रताप अखंरु लाल रे ॥ श्री सिद्ध
॥ ४ ॥ मयणा ने श्रीपालजी, जपतां बहु फल लीध
लाल रे ॥ गुण जशवंत जिनैंद्रनो, ज्ञानविनोद प्रसिद्ध
लाल रे ॥ श्री सिद्ध ॥ ५ ॥

॥ अखात्रीजनुं स्तवन ॥

॥ आदि जिणेश्वर कीयो पारणुं, आ रस शेलनी
आदि ॥ घना एकसो आठ सेलनी, रस नरीया

ठे नीका ॥ उलट जाव श्रेयांस व्होरावे, मांदि-
 वीच्या बुकारे ॥ आदि० ॥ १ ॥ देवपुंजि वाज
 रही रे, सोनेया रे वरपा ॥ वारे मासशुं कीयो
 पारणो, गइ खुख सब तिरपा रे ॥ आदि० ॥ २ ॥
 रिद्धि सिद्धि कारज मनोकामना, घर घर मंगला
 चार ॥ दुनिया हर्ख वधामणां, शिरे अखात्रीज तेहे-
 वार रे ॥ आदि० ॥ ३ ॥ संकट कांटो विघ्न निवारो,
 राखो हमारी लाज ॥ वे कर जोमी विनवतां, रिख-
 नदेव महाराज रे ॥ आरस शेलमी ॥ आदि० ॥ ४ ॥

॥ पजुसणुं स्तवन ॥

॥ पर्व पजुसण आवीयां रे लाल, कीजे घणु धर्म-
 ध्यान रे ॥ जविक जन ॥ पर्व० ॥ आरंज सकळ
 निवरीए रे लाल ॥ जीवने दीजे अन्नयदान रे ॥
 ॥ ज० ॥ पर्व० ॥ १ ॥ सधला मासमां मास वसो रे
 लाल, जाड्रव मास सुमास रे ॥ ज० ॥ तेहमां आठ
 दिन रुअमा रे लाल, कीजे सुकृत उह्वास रे ॥ ज० ॥
 पर्व० ॥ २ ॥ खांरुण पीसण गारना रे लाल, ना-
 वण धोवण जेह रे ॥ ज० ॥ एवा आरंजने टालीए
 रे लाल, वंठो सुख अठेह रे ॥ ज० ॥ पर्व० ॥ ३ ॥

पुस्तक वासीने राखीए रे लाल, उँहव करीए अनेक
रे ॥ ज० ॥ घर सारु वित्त वावरो रे लाल, हड्डे
आणी विवेक रे ॥ ज० ॥ पर्व० ॥ ४ ॥ पूजा अर्चीने
आणीए रे लाल, सद्गुरुनी पास रे ॥ ज० ॥
ढोल ददामण फेरीया रे लाल, मंगलिक गावो
जास रे ॥ ज० ॥ ॥ पर्व० ॥ ५ ॥ श्रीफल सरस
सोपारीया रे लाल, दीजे स्वामीने हाथ रे ॥ ज० ॥
ज्ञान अनंता बतावीए रे लाल, श्रीमुख त्रिचुवन-
नाथ रे ॥ ज० ॥ पर्व० ॥ ६ ॥ नव वांचना श्री सूत्रनी
रे लाल, सांजलो शुद्धे जाव रे ॥ ज० ॥ स्वामिव-
त्सल कीजीए रे लाल, जवजल तरवा नाव रे ॥ ज० ॥
पर्व० ॥ ७ ॥ चित्ते चैत्य जुहारीए रे लाल, पूजा सत्तर
प्रकार रे ॥ ज० ॥ अंगपूजा सद्गुरु तणा रे लाल,
कीजीए हरख अपार रे ॥ ज० ॥ पर्व० ॥ ८ ॥ जीव
अमार पलावी रे लाल, तेहथी शिवसुख होय रे ॥ ज० ॥
ज्ञान संवत्सरी दीजीए रे लाल, इण समो पर्व न कोइ
रे ॥ ज० ॥ पर्व० ॥ ९ ॥ काउस्सग करी सांजलो रे
जाल, आगम आपणे कान रे ॥ ज० ॥ ठठ अठम
तपस्या करो रे लाल, कीजे उज्ज्वल ध्यान रे

॥ ज० ॥ पर्व० ॥ १० ॥ इणविध आराधने रे लाल
 लेशे सुखनी कोरु रे ॥ ज० ॥ मुक्तिमंदिरमां चालरे
 रे लाल, मति हंस नमे कर जोरु रे ॥ ज० ॥ पर्व० ॥ ११ ॥

॥ दीवालीनुं स्तवन ॥

॥ मारे दीवाली थइ आज, जिनमुख जोवाने ।
 सस्थां सस्थां रे सेवकनां काज, जवदुःख खोवाने ।
 ए टेक ॥ महावीरस्वामी मुगते पोहोता, गौतम केवल
 ज्ञान रे ॥ धन्य अमावास्या दीवाली मारे, वीर प्रइ
 निरवाण ॥ जिन० ॥ १ ॥ चारित्र पाली निरमलुं रे
 टाल्या विषय कपाय रे ॥ एवा मुनिने वंदीए तो
 उतारे जवपार ॥ जिन० ॥ २ ॥ वाकुला वोरया वीरजी
 रे, तारी चंदनवाला रे ॥ केवल लइ प्रभु मुगते
 पहोता, पाम्या जवनो पार ॥ जिन० ॥ ३ ॥ एवा
 मुनिने वंदीए जे, पंच ज्ञाने धारता रे ॥ समवसरण
 देइ देशना रे, प्रभु तारया नर ने नार ॥ जिन० ॥ ४ ॥
 चोवीशमा जिनेश्वर ने, मुगति तणा दातार रे ॥ कर
 जोमी कवि एम जणे रे, प्रभु दुनिया फेरो
 टाल ॥ जिन० ॥ ५ ॥

॥ बीजनी थोय ॥

॥ दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सुविशेष ॥
॥ अय राणा प्रणमे, चंद्र तणी जिहां रेख ॥ तिहां
॥ चंद्र विमाने, शाश्वता जिनवर जेह ॥ हुं बीज तणे
॥ देन, प्रणमुं आणी नेह ॥

॥ पांचमनी थोय ॥

॥ श्रावण सुदि दिन पंचमी ए, जन्म्या नेम जि-
॥ एंद तो ॥ श्याम वरण तनु शोचतुं ए, मुख शारदको
॥ वंद तो ॥ सहस सरस प्रभु आउखुं ए, ब्रह्मचारी
॥ नमवंत तो ॥ अष्ट कर्म हेले हणी ए, पहोता मुक्ति
॥ महंत तो ॥

॥ आठमनी थोय ॥

॥ मंगल आठ करी जस आगल, जाव धरी सुर-
॥ राजजी ॥ आठ जातिना कलश करीने, नवरावे जिन-
॥ राजजी ॥ वीर जिनेश्वर जन्ममहोत्सव, करतां शिव-
॥ शुख साधेजी ॥ आठमनु तप करतां अम घर,
॥ मंगल कमला वाधेजी ॥

॥ एकादशीनी थोय ॥

॥ एकादशी अति रुश्रकी, गोविंद पूठे नेम ॥
॥ नोण कारण ए पर्व मोहुं, कहो मुजशुं तेम ॥ जिनवर

कल्याणक अति घणां, एकसो ने पचास ॥ तेणे कारण
ए पर्व मोटुं, करो मौन उपवास ॥

॥ पञ्जसणनी थोथ ॥

॥ सत्तरजेदी जिनपूजा रचीने, स्नात्र महोत्सव
कीजेजी ॥ ढोल ददामा जेरी नफेरी, जखरी नाद
सुणीजेजी ॥ वीर जिन आगल जावना चात्री,
मानवचक्रव फल लीजेजी ॥ परव पञ्जसण पूरव पुण्ये,
आव्यां एम गणीजेजी ॥ १ ॥ मास पास वली
दसम पुवालस, चत्तारी अछ कीजेजी ॥ उपर वली
दश दोय करीने, जिन चोवीश पूजीजेजी ॥ वरुा
कटपनो ठछ करीने, वीरचरित्र सुणीजेजी ॥ परवेने
दिन जन्ममहोत्सव, धवल मंगल वरतीजेजी ॥ २ ॥
आठ दिवस लगे अमारि पलावी, अछमनुं तप
कीजेजी ॥ नागकेतुनी परे केवल लहीण, जो शुभ जावे
रहीएजी ॥ तेलाधर दिन त्रण कल्याणक, गणधरवाद
वदीजेजी ॥ पास नेमीसर अतर त्रीजे, रूपचरित्र
सुणीजेजी ॥ ३ ॥ वारसें सूत्र ने सामाचारी, संवहुरी
पन्धिकमीएजी ॥ चैत्यप्रवादी विधिगुं कीजे, सकल
जतुने खामीजेजी ॥ पारणाने दिन स्वामिवहल, कीजे

अधिक वक्राङ्गी ॥ मानविजय कहे सकल मनोरथ,
रो देवी सिद्धाङ्गी ॥ ४ ॥

॥ सिद्धचक्रनी थोय ॥

॥ जिनशासन वंठित, पूरण देव रसाल ॥ चावे
त्रिवि त्रणीए, सिद्धचक्र गुणमाल ॥ त्रिहुं काले एहनी,
एजा करे उजमाल ॥ ते अजर अमरपद, सुख
गामे सुविशाल ॥

॥ नित्यस्तुति ॥

॥ सकल करम वारी, मोक्षमार्गाधिकारी ॥ त्रिजु-
वन उपकारी, केवलज्ञानधारी ॥ त्रिवियण नित्य सेवो,
देव ए त्रक्तिचावे ॥ ए जिन त्रजंतां, सर्वसंपत्ति आवे ॥

॥ स्तुति काव्य ॥

अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टिः, दिव्यध्वनिश्चामरमा-
सनं च ॥ त्रामंरुलं दुंदुत्रिरातपत्रं, सत्प्रातिहार्याणि
जिनेश्वराणाम् ॥



॥ खं ४ थो ॥

॥ चोवीश तीर्थकरना चैत्यवदनो, स्तवनो तथा थोयो ॥

तुज्यं नमस्त्रिचुवनार्तिहराय नाथ, तुज्यं नम
 क्षितितलामलभूपणाय । तुज्यं नमस्त्रिजगतः परमे
 श्वराय, तुज्यं नमो जिन जवोदधिशोपणाय ॥ अद्या
 जवत् सफलता नयनद्वयस्य, देव त्वदीयचरणांबुज
 वीक्षणेन । अद्य त्रिलोकतिलकः प्रतिज्ञासते मे, संसा
 रवारिधिरयं चुलुकः प्रमाणम् ॥ अद्य मे सफलं जन्म
 अद्य मे सफला क्रिया ॥ शुभो दिनोदयोऽस्माकं
 जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥

॥ श्रीरूपभ जिन चैत्यवदन ॥

॥ आदि देव अलवेसरु, विनीतानो राय ॥ नादि
 राया कुलमरुणो, मरुदेवा माय ॥ पांचसें धनुपन
 देहनी, प्रजुजी परम दयाल ॥ चोराशी लख पूर्वतु
 जस आशुविशाल ॥ वृषज लंठन जिन वृषधरु ए
 उत्तम गुण मणिखाण ॥ तस पदपद्म सेवन थकी
 लहीए अविचल ठाण ॥ ३ ॥

॥ श्रोत्रजितनाथ चैत्यवदन ॥

॥ अजितनाथ प्रजु अवतर्ग्या, विनीतानो स्वाध

॥ जितशत्रु विजया तणा, नंदन शिवगामी ॥ १ ॥
वहोतेर लाख पूरव तणुं, पाद्व्युं जिणे आय ॥ गज
बंठन बंठन नहीं, प्रणमे सुरराय ॥ २ ॥ सामा-
वारसें धनुषनी ए, जिनवर उत्तम देह ॥ पादपद्म तस
प्रणमीए, जिम लहीए शिवगेह ॥ ३ ॥

॥ श्रीसंभवनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सावढी नयरी धणी, श्री संभवनाथ ॥ जितारि
प नंदनो, चलवे शिव साथ ॥ १ ॥ सेना नंदन चंदने,
जो नव अंगे ॥ चारसें धनुषनुं देहमान, प्रणमुं
नरंगे ॥ २ ॥ साठ लाख पूरव तणुं ए, जिनवर उत्तम
राय ॥ तुरग बंठन पदपद्मने, ममतां शिवसुखथाय ॥ ३ ॥

॥ श्री अभिनंदन चैत्यवंदन ॥

॥ नंदन संवर रायना, चोथा अजिनंदन ॥ कपि
बंठन वंदन करा, नवदुःख निकंदन ॥ १ ॥ सिद्धा-
था जस भावना, सिद्धारथ जस ताय ॥ सामात्रणसें
धनुष मान, सुंदर जस काय ॥ २ ॥ विनीता वासी
दीए ए, आयु लाख पंचास ॥ पूरव तस पदपद्मने,
मतां शिवपुरवास ॥ ३ ॥

॥ श्री सुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सुमतिनाथ सुहंकरु, कोशद्धा जस नयरी ॥

मेघराय मगला तणी, नदन जित वयरी ॥ १ ॥ क्रोच
 लंठन जिनराजोउं, त्रणसें धनुपनी देह ॥ चालीश
 लाख पूरव तणुं, आयु अति गुणगेह ॥ २ ॥ सुमति
 गुणे करी जे जरयो ए, तरयो संसार अगाध ॥ तर
 पदपद्म सेवा थकी, लहो सुख अव्यावाध ॥ ३ ॥

॥ श्री पद्मप्रभ चैत्यमंदन ॥

॥ कोसंबी पुरी राजोउं, धर नरपति ताय ॥ पद्म-
 प्रभ प्रभुतामयी, सुसीमा जस माय ॥ १ ॥ त्रीश लाख
 पूरव तणु जिन आयु पाली ॥ धनुष अढीसे देहकी,
 सवि कर्मने टाली ॥ २ ॥ पद्म लंठन परमेश्वरु ए, जिन-
 पदपद्मनी सेव ॥ पद्मविजय कहे कीजीए, त्रविजन
 सहुनित्यमेव ॥ ३ ॥

॥ श्री सुपार्श्वनाथ चैत्यमंदन ॥

॥ श्री सुपास जिणंद पास, टालो त्रवफेरो ॥ पृथ्वी
 माताने उरे, जायो नाथ हमेरो ॥ १ ॥ प्रतिष्ठित सुत
 सुंदरु, वाणारसी राय ॥ वीश लाख पूरव तणु, प्रभुजीनुं
 आय ॥ २ ॥ धनुष वसे जिन देहकी ए, स्वस्तिक लठन
 सार ॥ पदपद्मे जस राजतो, तार तार त्रव तार ॥ ३ ॥

॥ श्री चद्रप्रभ चैत्यमंदन ॥

॥ लक्षणा माता जनमीआ, महसेन जस ताय ॥

रुपति लंठन दीपतो, चंद्रपुरीनो राय ॥ १ ॥ दश
ख पूरव आसखुं, दोढसो धनुषनी देह ॥ सुर नरपति
वा करे, धरत अति ससनेह ॥ २ ॥ चंद्रप्रन्न जिन
माठमा ए, उत्तम पद दातार ॥ पद्मविजय कहे प्रण-
णीए, मुज प्रभु पार उतार ॥ ३ ॥

॥ श्री सुविधिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥सुविधिनाथ नवमा नमुं, सूग्रीव जस तात ॥
गर लंठन चरणे नमुं, रामा रुकी मात ॥ १ ॥ आयु
लाख पूरव तणुं, शत धनुषनी काय ॥ काकंदी
यरी धणी, प्रणमुंप्रभु पाय ॥ २ ॥ उत्तम विधि जेहथी
हो ए, तेणे सूविधि जिन नाम ॥ नमतां तस पद-
अने, लहीए शाश्वत धाम ॥ ३ ॥

॥ श्री शीतलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ नंदा दृढरथ नंदनो, शीतलशीतलनाथ ॥ राजा ज-
लपुर तणो, चलवे शिव साथ ॥ १ ॥ लाख पूरवनुं
प्रासखुं, नेवुं धनुष प्रमाण ॥ काया माया टालीने,
गह्या पंचम नाण ॥ २ ॥ श्रीवत्स लंठन सुंदरु ए,
दपझे रहे जास ॥ ते जिननी सेवा थकी, लहीए
गिलविलास ॥ ३ ॥

॥ श्री श्रेयासनाथ चैत्यन्दन ॥

॥ श्री श्रेयांस अग्यारमा, विष्णु नृप ताय ।
विष्णु माता जेहनी, एशी धनुपनी काय ॥ १ ॥ वर्ष
चोराशी लाखनु, पाट्युं जेणे आय ॥ पर्गुगी लंठन
पदकजे, सिंहपुरीनो राय ॥ २ ॥ राज्य तजी दीक्षा
वरी ए, जिनवर उत्तम ज्ञान ॥ पाम्या तस पदपद्मने,
नमतां अत्रिचल थान ॥ ३ ॥

॥ श्री वासुपूज्य चैत्यन्दन ॥

॥ वासव वंदित वासुपूज्य, चंपापुरी ठाम ॥ वासु-
पूज्य कुल चंद्रमा, माता जया नाम ॥ १ ॥ महिष
लठन जिन वारमा, सीतेर धनुष प्रमाण ॥ काया
आयु वरस वली, वहोतेर लाख वखाण ॥ २ ॥ संघ
चतुर्विध स्थापीने ए, जिन उत्तम महाराय ॥ तस
मुखपद्म वचन सुणी, परमानंदित थाय ॥ ३ ॥

॥ श्री विमलनाथ चैत्यन्दन ॥

॥ कंपिलपुरे विमल प्रभु, श्यामा मात मलार ॥
कृतवर्मा नृप कुल नजे, उगमीयो दिनकोर ॥ १ ॥
लंठन राजे वराहनुं, साठ धनुपनी काय ॥ साठ
लाख वरसां तणु, आयु सुखदाय ॥ २ ॥ विमल विमल

पोते थया ए, सेवक विमल करेह ॥ तुज पदपद्म
विमल प्रत्ये, सेवुं धरी ससनेह ॥ ३ ॥

॥ श्री अनंतनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अनंत अनंत गुण आगरु, अयोध्यावासी ॥
सिंहसेन नृप नंदनो, थयो पोप निकासी ॥ १ ॥ सुजसा
मात जन्मीयो, त्रीश लाख उदार ॥ वरस आउखु
पालीउं, जिनवर जयकार ॥ २ ॥ लंठन सिंचाणा तणुं
ए, काया धनुष पचास ॥ जिनपदपद्म नम्या थकी,
बहीए सहज विलास ॥ ३ ॥

॥ श्री धर्मनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ ज्ञानुनंदन धर्मनाथ, सुव्रता जली मात ॥ वज्र
लंठन वज्री नमे, त्रण चुवन विख्यात ॥ १ ॥ दश
लाख वरसनुं आउखुं, वपु धनुष पीस्तालीश ॥ रत्नपु-
रीनो राजीउं, जगमां जास जगीश ॥ २ ॥ धर्ममारग
जिनवर कहे ए, उत्तम जन आधार ॥ तिणे तुज
पादपद्म तणी, सेवा करुं निरधार ॥ ३ ॥

॥ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ शांति जिनेश्वर सोलमा, अचिरासुत वंदो ॥
विश्वसेन कुलनजमणि, जविजन सुखकंदो ॥ १ ॥

मृग लंठल जिन आउखुं, लाख वरस प्रमाण ॥ हृत्ति-
 णाउर नयरी धणी, प्रजुजी गुणमणिखाण ॥ २ ॥
 चालीश धनुपनी देहकी ए, समचोरस सठाण ॥ वद-
 नपद्म ज्यु चंदलो, दीठे परम कल्याण ॥ ३ ॥

॥ श्री कुणुनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ कुंथुनाथ कामित दीये, गजपुरनो राय ॥ सिरि
 माता उरे अवतरयो, सुर नरपति ताय ॥ १ ॥ काया
 पांत्रीश धनुपनी, लंठन जस ठाग ॥ केवलज्ञानादिक
 गुणा, प्रणमो धरी रोग ॥ २ ॥ सहस्र पंचाणुं वरसनं
 ए, पाली उत्तम आय ॥ पद्मविजय कहे प्रणमीए
 चावे श्री जिनराय ॥ ३ ॥

॥ श्री अरनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ नागपुरे अर जिनवरु, सुदर्शन नृपनंद ॥ देव
 माता जन्मीयो, जविजन सुखकंद ॥ १ ॥ लंठन नंदा
 वर्त्तनु, काया धनुपह त्रीश ॥ सहस्र चोराशी वरसनं
 आयु जास जगीश ॥ २ ॥ अरुज अजर अज जिनव
 ए, पाम्या उत्तम ठाण ॥ तस पदपद्म आलंवतां, लही
 पद निरवाण ॥ ३ ॥

॥ श्री मल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ मल्लिनाथ उंगणीशमा, जस मिथिला नयरी ।

।जावती जस मावकी, टाले कर्मवयरी ॥ १ ॥ तात
प्री कुंज नरेसरु, धनुष पचवीशनी काय ॥ लंठन
हलश मंगलकरु, निर्मम निरमाय ॥ २ ॥ वरस पंचा-
वन सहसनुं ए, जिनवर लत्तम आय ॥ पद्मविजय
कहे तेहने, नमतां शिवसुख थाय ॥ ३ ॥

॥ श्री मुनिसुव्रतस्वामी चैत्यवंदन ॥

॥ मुनिसुव्रत जिन वीशमा, कढपनुं लंठन ॥ पद्मा
माता जेहनी, सुमित्र नृपनंदन ॥ ॥ १ ॥ राजगृही
नयरी धणी, वीश धनुष शरीर ॥ कर्म निकाचित
पिणुव्रज, उहाम समीर ॥ २ ॥ त्रीश हजार वरस तणुं
ए, पाली आयु उदार ॥ पद्मविजय कहे शिव लह्या,
शाश्वत सुख निरधार ॥ ३ ॥

॥ श्री नामिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ मिथिला नयरीनो राजीउं, वप्रा सुत साचो ॥
जयराय सुत ठोमीने, अवर मत्त साचो ॥ १ ॥ नील
मल लंठन जळुं, पन्नर धनुषनी देह ॥ नमि जिनवरनुं
पोहतुं, गुणगण मणि गेह ॥ २ ॥ दश हजार वरस
णुं ए, पाढ्युं परगट आय ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी,
मीए ते जिनराय ॥ ३ ॥

॥ श्री नेमिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ नेमिनाथ वाचीशमा, शिवादेवी माय ॥ समुद्र
विजय पृथिवीपति, जेह प्रचुना ताय ॥ १ ॥ दश धनु
पनी देहनी, आयु वरस हजार ॥ शंख लंठनध
स्वामीजी, तजी राजुल नार ॥ २ ॥ सोरीपुर नयर
जली ए, ब्रह्मचारी जगवान ॥ जिन उत्तम पदमञ्जने
नमतां अविचल थान ॥ ३ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ आश पूर प्रचु पासजी, त्रोडे जवपाश, ॥ वाम
माता जनमीयो, अहि लंठन जास ॥ १ ॥ अश्वसेन
सुतसुखकरु, नव हाथनी काया ॥ काशी देश वाणा
रसी, पुण्मे प्रचु पाया ॥ २ ॥ एकसो वरसनुं आउण
ए, णली पासकुमार ॥ पद्म कहे मुगते गया
नमतां सुख निरधार ॥ ३ ॥

॥ श्री महावीरस्वामी चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धारथ सुत वंदीए, त्रिशलानो जायो ॥
हत्तीकुंरुमां अवतरयो, सुरनरपति गायो ॥ १ ॥ मृग
पति लंठन प.उळे, सात हाथनी काया ॥ वहाँते
वरसनुं आउखु, वीर जिनेश्वर राया ॥ २ ॥ खिरे

वेजय जिनराजना ए उत्तम गुण अवदात ॥ सात बोलश्री
 णव्या, पद्मविजय विख्यात ॥ ३ ॥

॥ श्री आदीश्वर प्रभुनुं स्तवन ॥

॥ माता मरुदेवीना नंद, देखी ताहरी मूरति माहं
 न लोनाणुं जी ॥ माहं दिल लोनाणुं जो ॥ देखी ० ॥
 करुणानागर करुणासागर, काया कंचनवान ॥ धोरी
 ठन पाउले, कांइ धनुप पांचसें मान ॥ माता ० ॥ १ ॥
 गडे वेसी धर्म कहंता, सुणे पर्यदा वार ॥ जोजन
 मनी वाणी मीठी, वरसंती जलधार ॥ माता ० ॥ २ ॥
 वशी रुमी अप्सरा ने, रामा ठे मनरंग ॥ पाये नेपुर
 णणे कांइ, करती नाटारंज ॥ माता ० ॥ ३ ॥ तुंही
 ह्या तुंही विधाता, तुं जग तारणहार ॥ तुज सरिखो
 हीं देव जगतमां, अरवकीया आधार ॥ माता ०
 ४ ॥ तुंही त्राता तुंही त्राता, तुंही जगतनो देव ॥
 र नर किन्नर वासुदेवा, करता तुज पद सेव ॥ माता ०
 ५ ॥ श्री सिद्धाचल तीरथ केरा, राजा कृषत्र
 णंद ॥ कीर्ति करे माणक मुनि ताहरी, टालो
 जय फंद ॥ माता ० ॥ ६ ॥

॥ श्री अजितनाथ प्रभुनु स्तवन ॥ ललित ॥

॥ अजितनाथजी अर्ज उचरुं, तुज कृपावडे जव
निधि तरुं ॥ शरण आवी आ दास आ समे, विनयथ
विशु वंदीए अमे ॥ १ ॥ विजयथी चव्या विनीत
पति, जननी आपनां विजया सती ॥ रमणी मुक्तिथ
रोज तुं रमे, विनयथी विशु वंदीए अमे ॥ २ ॥ ज
जगत्पति जिन जाचीए, जजन जक्तनुं जक्ति साचं
ए ॥ तरण तारणा तात ठो तमे, विनयथी विशु वंदीए
अमे ॥ ३ ॥ कुटिल थड करयां पाप मे घणां, कुशीट
सेवतां राखी ना मणा ॥ सुखद सेवथी पाप सौ शमे
विनयथी विशु वंदीए अमे ॥ ४ ॥ विषयवृत्तिथी व्र
ना कखु, धन धूती घणु धूलमा धखु ॥ अवर देवत
दिल ना गमे, विनयथी विशु वंदीए अमे ॥ ५ ॥
स्मरण स्वामीनु हु करुं सदा, तरत टालशो आप आ
पदा ॥ सुरपति सौ नाथने नमे, विनयथी विशु वंदीए
अमे ॥ ६ ॥ जैननी सत्ता जिनजी जपे, खचित सर्वन
पाप तो खपे ॥ समजतो नथी वंदना विधि, विनय
आपनी केशवे कीधी ॥ ७ ॥

॥ श्री सभवनाथ प्रभुनु स्तवन ॥

॥ साहेव सांजलो रे, सजव अरज हमारी ॥ जव

नव हुं जम्यो रे, न लही सेवा तमारी ॥ नरक निगो-
 इमां रे, तिहां हुं बहु जव जमीयो ॥ तुम विना दुःख
 सहां रे, अहोनिश क्रोधे धमधमीयो ॥ सा० ॥ १ ॥
 इंद्रियवश पड्यो रे, पाट्यां व्रत नवि सोसे ॥ त्रस पण
 नवि गण्या रे, हणीया थावर होंशे ॥ व्रत चित्त नवि
 धरयां रे, वीजुं साचुं न वोढ्युं ॥ पापनी गोठनी रे,
 तिहां में हश्कलुं खोढ्युं ॥ सा० ॥ २ ॥ चोरी में करी
 रे, चउविह अदत्त न टाढ्युं ॥ श्री जिन आणशुं रे,
 में नवि संजम पाढ्युं ॥ मधुकर तणी परे रे, शुद्ध न
 आहार गवेख्यो ॥ रसना लालचे रे, नीरस पिरु
 उवेख्यो ॥ सा० ॥ ३ ॥ नरजव दोहिलो रे, पामी
 होहवश पनीयो ॥ परस्त्रीदेखीने रे, मुज मन तिहां
 ह्मइ अमीयो ॥ काम न को सरयां रे, पापे पिरु में
 क्षरीयो ॥ शुद्ध बुद्ध नवि रही रे, तेणे नवि आतम
 क्षरीयो ॥ सा० ॥ ४ ॥ लक्ष्मीनी लालचे रे, में बहु
 हीनता दाखी ॥ तोपण नवि मली रे, मली तो नवि
 ही राखी ॥ जे जन अजिलषे रे, ते तो तेहथी नासे
 तृण सम जे गणे रे, तेहनी नित्य रहे पासे ॥
 सा० ॥ ५ ॥ धन्य धन्य ते नरा रे, एहनो मोह विठोनी

॥ विषय निवारीने रे, जेहने धर्ममां जोमी ॥ अन्नद्वय
 ते में चख्यां रे, रात्रिचोजन कीधां ॥ व्रत ठ नदि
 पालीयां रे, जेहवां मूलथी लीधां ॥ सा० ॥ ६ ॥ अनंत
 जव हुं जम्यो रे, जमतां साहिव मलीयो ॥ तुम विण
 कोण दीये रे, बोधरण मुज वलीयो ॥ संजव आपजे
 रे, चरणकमल तुम सेवा ॥ नय एम वनवे रे
 सुणजो देवाधिदेवा ॥ सा० ॥ ७ ॥

॥ श्री अभिनदन प्रभुनु स्तवन ॥

॥ ऋतुं नसीने दुःखीओ कीयो छे ए राह ॥

॥ करुणा नजरथी प्रभुजी कृपालु, दीजीए दरिजन
 देव दयालु ॥ करुणा० ॥ ए टेक ॥ अजिनंदन प्रभु
 पापनिकदन, जक्ति यकी जवजयदुःख टालुं ॥ करुणा०
 ॥ १ ॥ चरण शरण स्वामी करण हुं आव्यो, आप
 प्रतापथी पाप प्रजालुं ॥ करुणा० ॥ २ ॥ जवजयजजन
 जजन करंतां, साहिव समकित गुण अजवालु ।
 करुणा० ॥ ३ ॥ जेन प्रवर्तक शिवमुत केशव, नीहाड
 थयो प्रभु मुखरु नीहालु ॥ करुणा० ॥ ४ ॥

॥ श्री सुमतिनाथ प्रभुनु स्तवन ॥

॥ जगतगुरु सुमतिनाथ साचा रे (२) व्यसन

गत सब दूर करीने, ए जिनने राचो (१) जगत० ॥
 अतुर नर चोरी परहरवी रे (१) मांस मदिरा जुगार
 हेंसा, कदीए नवि करवी (१) तजो परनारी मेरी
 ज्ञान तजो परनारी, वेश्याथी थाये खुवारी ॥ सुमत
 धरी प्रभु आगल नाचो रे (१) व्यसन सात सब दूर
 करीने, ए जिनने राचो ॥ ज० ॥ रावण परनारीथी
 ब्रलचायो रे (१) महा दुःखनी खाण नरकमां, खूब
 जपटायो रे (१) मेरी ध्यान शीयल तप धरजो, जावे
 हडो तप करजो ॥ सुमत धरी जिनपूजा राचो रे ॥
 व्यसन० ॥ ज० ॥ नगरमां जैनशाखा सारी रे (१)
 अघु सत्ता खुशी जिनपूजाथी, सदा आनंदकारी (३)
 मेरी ध्यान पूजन नित्य करवुं, मोहरायनी साथे लखवुं ॥
 तिसिद्धिसुख वरवा नवि राचो रे ॥ व्यसन० ॥ ज० ॥

॥ श्री पद्मप्रभुनुं स्तवन ॥ राग इंद्रसभानो ॥

॥ हे पदम प्रभुजी परम कृपालु, प्रणमं धरी हुंप्रेम ॥
 किंकर केरां कर्म विदारो, तार धरीने रहेम ॥ १ ॥
 वार गतिमां हुं जमी आव्यो, वार अनंती अनंत ॥
 धारव पुन्य थकी हवे मलीयो, पुरुषोत्तम जगवंत ॥
 ॥ सुरपति पूजित शंकर स्वामी, परमेश्वर जिन-

देव ॥ अर्चक तारो तुंडे मागे, पद पंकेरु हसेव ॥ ३ ॥
 जैन प्रवर्तक मंरुल जिनजी, निशदिन गुण तुज गाय ।
 मुनि माणैक कर जोकी वंदे, जगदीश्वर तुम पाय ॥४ ॥
 ॥ श्रीसुपार्श्व प्रभु स्तवन ॥ भेख रे उतारो राजा भरथरी-ए राग

॥ तार प्रभु तार मुजने, जगजीवन जगराजजी
 शरणे आव्यो रे विभु ताहरे, कर जोकीने आजजी ।
 अरज सुणो रे श्री सुपासजी ॥ ए आंकणी ॥ कम
 रे करो प्रभु माहरा, आव्यां वांक अपारजी ॥ कर
 णानिधि करुणा करी, आपो जवजल पारजी ॥ अ
 रज० ॥ तरण तारण जिन तुजने, नमुं वार हजारर्ज
 ॥ परम प्रभु परमात्मा, मुज पुरित प्रहाग्जी ।
 अरज० ॥ मुक्ति आपी जिननाथजी, सारो सेवव
 काजजी ॥ विश्वपति तुजने नमे, मुनि माणैक आ
 जजी ॥ अरज० ॥

॥ श्री चंद्रप्रभु स्तवन ॥ सज्जानो पूरण थयो छे-ए राग ॥

॥ चंद्रप्रभु जगवान् सेवो जवि चंद्रप्रभु तगवान्
 ॥ टेक ॥ चैत्र वदि पचमी दिने चत्रीया, शुभ विजय
 विमान ॥ सेवो० ॥ पोप वदि वारस दिन जनमीया
 चंद्रपुरी शुभ स्थान ॥ सेवो० ॥ लक्ष्मणा जननी ज

॥, प्रभु शिवशर्म निदान ॥ सेवो० ॥ महासेन नृपति
 मञ्जुना पिता, परिपूरण पुन्यवान् ॥ सेवो० ॥ उरुपति
 व्रंढन पाथा जिनजी, काथा इंद्रु समान ॥ सेवो० ॥
 शीक्षा लक्ष प्रभु केवल पाम्या, पाम्या शिवपुर स्थान ॥
 ॥ सेवो० जैन सजा मुनि माणिक मागे, आपो केवल-
 ज्ञान ॥ सेवो० ॥

॥ श्री सुविधिनाथ प्रभुनुं स्तवन ॥ प्रभाती राग ॥

॥ मुजरा साहेब, मुजरा साहेब, साहेब मुजरा
 तेरा रे ॥ साहेब सुविधि जिनेश्वर प्यारा, चरण पखावुं
 धनु तेरा रे ॥ मुजरा० ॥ १ ॥ केशर चंदन चर्चु अंगे
 फूल चम्पावुं सेहरा रे ॥ घंट वजावुं अंगर उखेवुं, करुं
 अदक्षिण फेरा रे ॥ मुजरा० ॥ २ ॥ पंच शब्दके वाजे
 जजाउं, नृत्य करुं अति गहिरा रे ॥ रूपचंद गुण गावत
 अरखित, दास निरंजन तेरा रे ॥ मुजरा० ॥ ३ ॥

॥ श्री शीतलनाथ प्रभुनुं स्तवन ॥ राग वनझारो ॥

॥ हे शीतलनाथ जिन प्यारा, मुज साहिव
 मोहनगारा ॥ टेक ॥ तुमे नंदादेवीना जाया, शुज
 माघ मासमां आया ॥ वदि बारस जन्म तुमारा,
 ज साहिव मोहनगारा ॥ हे शीतल० शुज माघ

वदि प्रभु वारे, करथो दीक्षाउठव प्यारे ॥ धन्य दिन ते
 मंगलकारा, मुज साहिव मोहनगारा ॥ हे शीतल ॥
 तुम नदीलपुरनी मांहि, वनी सजा अति शुभ त्यांहि ।
 मढ्या साधुठ वीश हजार, मुज साहिव मोहनगारा ।
 हे शीतल ॥ वली गणधर एक ने एंशी, तेनी मूर्ती
 चंद्रज जेसी ॥ वली श्रावक साथ अपारा, मुज
 साहिव मोहनगारा ॥ हे शीतल ॥ प्रभु पोष तणो
 दिन सारो, वदि चौदश मंगलकारो ॥ प्रभु केवल-
 ज्ञान सुधारया, मुज साहिव माहनगारा ॥ हे शी-
 तल ॥ हुं वली पूजा करवा आवुं, शुभ केसर चदन
 लावुं ॥ वली पुष्प अने फल प्यारां, मुज साहिव
 मोहनगारा ॥ हे शीतल ॥ प्रभु ज्ञानोदय गुण
 गावे, शीश वामीलाल नमावे ॥ द्यो शिवरमणी आ
 वारा, मुज साहिव मोहनगारा ॥ हे शीतलनाथ
 जिन प्यारा ॥

॥ श्री श्रेयासनाथ प्रभुनु स्तवन ॥

॥ दीननो दयाल छोडी कोने शरणे जाउ-ए देशी ॥

॥ जिनपति श्रेयांसनाथ अरज आ स्वीकारो ॥
 ए टेक ॥ तरण तुंज स्मरण करुं, चौगति निवारो ॥

जिन० ॥ १ ॥ चरण शरण करण आव्यो, जवसमुद्र
तारो ॥ जनम मरण दुःख मुज, जिनजी विदारो ॥

जिन० ॥ २ ॥ जगत त्रात तात स्वामी, दास हुं तमारो ॥

नमुं नमुं नमुं प्रभु, अघसमूह वारो ॥ जिन० ॥ ३ ॥ माफ

करजो में उथापी, आण जे हजारो ॥ दीनदयाल ठेको

हवे, नथी हुं ठोरुनारो ॥ जिन० ॥ ४ ॥ मोक्ष सात

स्वामी, शिष्य काज सारो ॥ माणैकविजय सहित

विभु, जैन सेवक तारो ॥ जिन० ॥ ५ ॥

॥ श्री वासुपूज्य प्रभुनुं स्तवन ॥ साहेबा मोतीडो हमारो—ए देशी ॥

॥ स्वामी तुमे कांइ कामण कीधुं, चित्तुं अमारुं

चोरी लीधुं ॥ साहेबा वासुपूज्य जिणंदा, मोहना

वासुपूज्य जिणंदा ॥ ए आंकणी ॥ अमे पण तुमशुं

कामण करशुं, जक्ति ग्रही मन घरमां धरशुं ॥ सा-

हेबाण ॥ १ ॥ मन घरमां धरीया घर शोजा, देखत

रनित्य रहेशो थिर थोजा ॥ मन वैकुंठ अकुंठित जक्त

योगी, जाखे अनुभव युक्ते ॥ साहेबाण ॥ २ ॥ क्लेशे

वासित मन संसार, क्लेश रहित मनने जवपार ॥

॥ जो विशुद्ध मन घर तुमे आव्या, प्रभु तो अमे

निव निधि रिद्धि पाम्या ॥ साहेबाण ॥ ३ ॥ सात

राज अलगा जइ वेठा, पण जगते अम मनमां पेठा
 ॥ अलगाने वलगा जे रहेवुं, ते चाणा खरुखरु दुःख
 सहेवुं ॥ साहेवा० ॥ ४ ॥ ध्यायक ध्येय ध्यान गुण एके
 जेद वेद करशुं हवे टेके ॥ खीर नीर परे तुमशु मलशु
 वाचक यश कहे हेजे हलशुं ॥ साहेवा० ॥ ५ ॥

॥ श्री विमलनाथ प्रभुनु स्तवन ॥ ललित उद ॥

॥ विमलनाथजी सुणजो तमे, अरज आज तो
 उचारीए अमे ॥ अजरनाथजी त्रिजगत्पति, दीनद-
 याल तुं आप सन्मति ॥ १ ॥ अहनिश ताहरो जाप
 जपीए, तुम कृपा थकी दुःख कापीए ॥ शुजद
 जिनजी वार दुर्गति, दीनदयाल तुं आप सन्मति
 ॥ २ ॥ परम जावधी वंदीए तने, जव सारितपति तार
 दामने ॥ विजु निवारजो मुज कुमति, दीनदयाल तुं
 आप सन्मति ॥ ३ ॥ जगतमां घणा देव तो जमे,
 तुज विना प्रजु मुज ना गमे ॥ जिनपति थकी जाय
 विपत्ति, दीनदयाल तुं आप सन्मति ॥ ४ ॥ चरण-
 पद्मनी सेवना करुं, जवमुद्रथी पारउतरुं, ॥ हृदय धारजो
 माणिक विनति, दीनदयाल तुं आप सन्मति ॥ ५ ॥

॥ श्री अनंतनाथ प्रभुनुं स्तवन ॥

॥ अरे लालदेव इस तर्फ जलदीआव-र देशी ॥

॥ नमुं हुं करो रे कृपा जिनराय, दीयो सेव आजि

अति सुखकार ॥ न रूपं सरूपं न लोचं न मान,

चिदानंद रूपं नमे वालज्ञान ॥ १ ॥ करी पाप छूरे

वरया शिवनार, हवे राज राजेश्वरा मुज तार ॥

दयालुं जिनंदा दयाना निधान, चिदानंद रूपं नमे

वालज्ञान ॥ २ ॥ करयां में अनंतां नहीं जवाय पार,

जरी पाप पेटी न कीधो विचार ॥ नहीं दिन एके

धरयुं तुज ध्यान, चिदानंद रूपं नमे वालज्ञान ॥ ३ ॥

जम्यो जूतले हुं सुणो आज वात, बन्यो राय रांक

अनंतीज जात ॥ नहीं धर्म कीधुं नहों शुज दान,

चिदानंद रूपं नमे वालज्ञान ॥ ४ ॥ धरी प्रेम पूरो हुं

आव्योज आज, जिनंदा हवे हुं सुधारोज काज ॥ करुं

सेव जे हुं लीयो आप कान, चिदानंद रूपं नमे वाल-

ज्ञान ॥ ५ ॥ जिनंदा जिनंदा जपुं नाम हुं, कृपानाथ

आजे दीये सहाय तुं ॥ नहीं अन्य तारा विना गुण-

वान, चिदानंद रूपं नमे वालज्ञान ॥ ६ ॥ नमी

क्रोम वारे वदे वानीलाल, दीयो रत्नमाला वरुं शिव-

माल ॥ सच्चा जैन गावे प्रभु गुणगान, चिदानंद
रूपं नमै बालज्ञान ॥ ७ ॥

॥ श्री धर्मनाथ प्रभुनु स्तवन ॥ ललित छंद ॥

॥ जगतपालजी धर्मनाथ रे, जवक तारजो जाल
हाथ रे ॥ सुखद देव रे, जाव हुं धरी, जिन तने नम
घस्र सर्वरी ॥ १ ॥ लपन ताहरु देखी आज रे, हरस
पामीयो विश्वराज रे ॥ सफल ताहरुं नाथ मे करी
जिन तने नमुं घस्र सर्वरी ॥ २ ॥ शरण ताहरुं हु
हवे करुं, पलक एकमां मुक्तिने वरुं ॥ जनम मरण
दुःखने हरी, जिन तने नमु घस्र सर्वरी ॥ ३ ॥ पूरण
पुन्यथी तुं हवे मदयो, सकल कष्टना उधने रुदयो ।
अरज मुनि माणेकनी धरी, जिन तने नमुं घस्र सर्वरी ॥ ४ ॥

॥ श्री शक्तिनाथ प्रभुनु स्तवन ॥

॥ शांति प्रभु विनति एक मोरी रे, तारी आंखरुं
कामणगारी ॥ शांति० ॥ विश्वसेन राजा तुज ताय रे
राणी अचिरा देवी माय रे ॥ तुं तो गजपुरी नयरीनं
राय ॥ शांति० ॥ १ ॥ प्रभु सोवन कांति विराजे रे
मुगटे हीरा मणि ठाजे रे ॥ तारी वाणी गंगापुर गाडे
॥ शांति० ॥ २ ॥ प्रभु चालीश धनुपनी काया रे, जवि

जनना दिलमां जाव्या रे ॥ कांइ राज राजेसर राया ॥
 ॥ शांति० ॥ ३ ॥ प्रभु मारा ठो अंतरजामी रे, कहुं
 विनंति हुं शिर नामी रे ॥ चौद राजना ठो तुमे स्वामी
 ॥ शांति० ॥ ४ ॥ प्रभु परपदा बारे मांहे रे, दीये दे-
 राना अधिक उठांहे रे ॥ प्रभु अंगीयां जेठ्यां उमाहे
 ॥ शांति० ॥ ५ ॥ श्रावक श्राविका बहु पुण्यवंतां रे,
 पुत्र करणी करे महंतां रे ॥ शांतिनाथनां दरशन क-
 तां ॥ शांति० ॥ ६ ॥ संवत् अठार अठाणुंसो सार रे,
 मासकल्प कख्यो तेणी वार रे ॥ सूरि मुक्तिपदना धार
 शांति० ॥ ७ ॥

॥ श्री कुंथुनाथ प्रभुनुं स्तवन ॥

कुंथु प्रभुजी दया दिल धारो, सेवकने जव पार उ-
 आरो ॥ कुंथु प्रभु० ॥ १ ॥ जवजयजंजन शिवपुरगामी,
 नम मरण जय दुःख विदारो ॥ कुंथु प्रभु० ॥ २ ॥
 रण तमारो हुं शंकर आव्यो, चार गति मुज दूर
 वारो ॥ कुंथु प्रभु० ॥ ३ ॥ दुरित निवारक श्री जिन-
 दा, अविचल दो मुज शिववास सारो ॥ कुंथु प्रभु०
 ४ ॥ चरणजलज वंदे शिर नामी, मुनि माणिक प्रभु
 य तमारो ॥ कुंथु प्रभु० ॥ ५ ॥

॥ श्री अरनाथ प्रभुनु स्तवन ॥

॥ आ अरजी अर जिनवरजी (१) अम तारं
 गरीव निवाज, विरुद तुज राज सहायता करजी ॥ चा
 गतिमां लाख चोरधाशी, योनि दुःखनी खाण ॥ काळ
 अनादि जवअटवीमां, ज्रमण करयुं जगवान् ॥ सहा
 यता करजी ॥ आ अरजी० ॥ काम क्रोध मद मोह
 मानथी, ठोरावो जगनाथ ॥ पामर प्राणी करुं प्रार्थना,
 ग्रहो सेवकनो हाथ ॥ सहायता करजी ॥ आ अर-
 जी० ॥ अनंतवली पण अवल थयो तुं, जग विपे
 जिनराज ॥ कसे सेवक मंगल मायु, प्रभु तुज पद
 आधार ॥ सहायता करजी ॥ आ अरजी० ॥

॥ श्री मल्लिनाथ प्रभुनुं स्तवन ॥ इद्रसभानी देशी ॥

॥ मल्लि जिनेश्वर हमसें वोलो, प्रेम धरी महाराज ॥
 सेवक उजो अरज करे ठे, कर जोकी जिनराज ॥ १ ॥
 जयंत नाम विमानथी चवीया, फागण सुदि चोथ ॥
 मथुरानगरी शोचती, इहागकुलनो उंथ ॥ २ ॥ माग-
 शिर सुदि अगीयारस जाणुं, जन्मतिथि मुखकार ॥
 सुर नर किन्नर उंह्व करतां, हुंते जयजयकार ॥ ३ ॥
 प्रजावती माताना जाया, मेप राशि सोहाय ॥ कुंज

जा कुलचंद्रलो, पचीश धनुपनी काय ॥ ४ ॥ आयु
 र्षे पंचावन सहस्रनुं, नीलावणी काय ॥ कुमारपदवी
 गीगवी, कलश लंठन प्रभु पाथ ॥ ५ ॥ त्रणसो सोधु
 णथे दीक्षा, लीधी प्रभु निज हाथ ॥ उंठव महो-
 नव अतिही जारी, करता थइ सनाथ ॥ ६ ॥ माग-
 शर सुदि अग्यारस प्यारी, दीक्षातिथि सुखकार ॥
 थम पारणुं आनंदकारी, विश्वसेन घरे सार ॥ ७ ॥
 मागशर सुदि अग्यारस जाणुं, केवल लह्योमहाराज ॥
 मागण सुदिनी द्वादशी, पहोंच्या मुक्ति विजुराज
 ८ ॥ अरज दासनी सुणो मद्धिजी, ठो त्रिजगतना
 त ॥ ज्ञानप्रवर्तक मंरुली मलीने, प्रीते जिन-
 ण गात ॥ ९ ॥

॥ श्री मुनिसुव्रत स्वामीनुं स्तवन ॥

॥ मारा स्वामी माराथी छोटा-ए राग ॥

॥ नमुं मुनिसुव्रत जिनराया, राजा सुमित्र कुळे
 ष्या ॥ नमुं श्यामवरण प्रभुनी काया, पदमावती
 त तणा जाया ॥ नमुं ॥ लंठन कूर्म तणुं सोहे,
 त्री जविजननां मन मोहे ॥ नमुं राजगृही नगरी
 ामी, पुरंदर वंदे शिर नामी ॥ नमुं ॥ आयु

त्रीश सहस्र तणुं पाली, वर्या शिवरमणी रूपाली
 ॥ नमुं० ॥ जे प्रभु पदपंकज पूजे, तेना अष्टकर्म रिपु
 धूजे ॥ नमुं० ॥ किंकर हुं हुं प्रभु तारो, जवाब्धि
 थकी मुजने जतारो ॥ नमुं० तुज गुण जैन सत्ता गावे
 माणिक अघसंचय जावे ॥ नमुं० ॥

॥ श्री नमिनाथ प्रभुनु स्तवन ॥ राग वनझारो ॥

॥ नमिनाथ जजो जयकारी, मत जूला जमो न
 नारी ॥ ए आंकणी ॥ ए अनंतवली चिद्रूप, ज
 सेवक सुर नर जूप रे ॥ जुळं निरजय आयुध ठारी
 मत जूला० ॥ जे आपो आप जगदीश, किम समं
 जरण ईश रे ॥ तिणे जपमाला नही धारी, मत जूला०
 गत राग छेष मद हास, हत वेद उदय पर आश रे।
 रति अरति रामा ठारी, मत जूला० ॥ सर्व वेदी गत
 जरमे, जे पूरण ठे सवि धरमे रे ॥ ते देव लक्षण
 जुळं धारी, मत जूला० ॥ वृद्धि गज्जीर सुख सेवे, निज
 रूप लहो जिनदेवे रे ॥ होय सुरशिव मंगलकारी
 मत जूला० ॥

॥ श्री नेमिनाथ प्रभुनु स्तवन ॥ राग वनझारो ॥

॥ सांजल रे सखीयां हमारी, मुजे नेम पियाने

सारी ॥ टेक ॥ प्रभु तोरणकुं जव आये, तव सोर
 गुने सुनाये रे ॥ प्रभु जइ चढे गढ गिरनारी, मुजे
 म० ॥ १ ॥ सखी राजकुं जइ सुनाये, तोहे नेम
 भु ठटकावे रे ॥ वे परणी मुगति नारी, मुजे नेम०
 २ ॥ ए तो शोक कहांसें आइ, मेरे प्यारेकुं जरमाइ
 ॥ में जइ हुं निराधारी, मुजे नेम० ॥ ३ ॥ तुम मात
 ता सुनो जाइ, में संयम लेउं जाइ रे ॥ प्रभु पहेलां
 शिव प्यारी, मुजे नेम० ॥ ४ ॥ जैन प्रकाश अमृत
 पावे, गुणचंद गोपाल गावे रे ॥ प्रभु चरणकमल
 धारी, मुजे नेम० ॥ ५ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथ प्रभुनुं स्तवन ॥

॥ आवो आवो पासजी मुज मर्लीया रे, मारा
 ना मनोरथ फलीया ॥ आवो० ॥ तारी मूरति
 नगारी रे, सहु संघने लागे ठे प्यारी रे ॥
 ने मोही रह्यां सुर नर नारी ॥ आवो० ॥ अल-
 मूरत प्रभु तारी रे, तारा मुखका उपर जाउं
 रे ॥ नाग नागिणीनी जोर उगारी ॥ आवो० ॥
 धन्य देवाधिदेवा रे, सुरलोक करे ठे सेवा रे ॥
 ने आपो शिवपुर मेवा ॥ आवो० ॥ तमे शिव-

रमणीना रसिया रे, जइ मोक्षपुरीमां वसीया रे ।
 मारा हृदयकमलमां वसीया ॥ आवो० ॥ जे कोइ पोश
 तणा गुण गाशे रे ॥ तेनां जवजवनां पातीक जाशे रे ॥
 ॥ तेनां समकित निर्मल थाशे ॥ आवो० ॥ प्रजु त्रेवी
 शमा जिनराया रे, मोता वामादेवीना जाया रे ॥ अ-
 मने दर्शन घोने दयाला ॥ आवो० ॥ हुं तो लळी
 लळी लागुं पाय रे, मारा उरमां ते हरख न माय रे ॥
 एम माणैकविजय गुण गाय ॥ आवो० ॥

॥ श्री महावीर स्वामीनु स्तवन ॥

॥ सिद्धारथना रे नंदन विनवुं, विनतनी अवधार ॥
 जवमंरुपमारिनाटक नाचीयो, हवे मुज दान देवराव ॥
 हवे मुज पार उतार ॥ सिद्धारथ ॥ १ ॥ त्रण रतन
 मुज आपो तातजी, जीम नावे रे संताप ॥ दान दीयंता
 रे प्रजुजी कोसीर कीसी, आपो पदवी रे आप ॥ सि०
 ॥ २ ॥ चरणअगुठे रे मेरु कंपावीयो, सुरनु मोरुथुं रे
 मान ॥ अष्ट करमना रे ऊगना जीतवा, दीधुं वरसी
 रे दान ॥ सि० ॥ ३ ॥ शासननायक सवि सुखदायक,
 त्रिशला कुखे रतन ॥ सिद्धारथनो रे वंश दीपावीयो,
 प्रजुजी तमे धन्य*धन्य ॥ सि० ॥ ४ ॥ वाचकशेखर

।स कीर्त्तिविजय गुरु, पामी तास पसाय ॥ धर्म तणे रसे जिन
गुने चोवीशना, विनयविजय गुण गाय ॥ सि० ॥ ५ ॥

म० ॥ श्री महावीर प्रभुनुं स्तवन ॥

शु ॥ वीर जिनेश्वर साहेब मेरा, पार न लहुं तेरा ॥

२ महेर करी टालो महाराजजी, जन्म मरणना फेरा हो

॥ जिनजी, अब हुं शरणे आव्यो ॥ १ ॥ गर्जावास तणां

ना दुःख मोटां, उंधे मस्तक रहीउं ॥ मल मूतर मांहे

॥ लपटाणो, एहवां दुःखमें सहीआं ॥ हो जिनजि० ॥ २ ॥

३ नरक निगोदमां उपनो ने चवीयो, सूक्ष्म वादर थइउं

॥ विंधाणो सुइने अग्रजागे, मन तिहां किहां रहीउं ॥ हो

जिनजि० ॥ ३ ॥ नरक तणी वेदना अति उल्लसी, सही

॥ ते जीवे बहु ॥ परमाधामीने वश पकीयो, ते जाणो

तमे सहु ॥ हो जिनजि० ॥ ४ ॥ तिर्येच तणा जव कीधा

घणोरा, विवेक नहींय लगार ॥ निशदिननो वहेवार न

जाण्यो केम उतराय जवपार ॥ हो जिनजी० ॥ ५ ॥ देव

तणी गति पुन्य हुं पाम्यो, विषया रसमां चीनो ॥ व्रत

पञ्चस्काण उदय नहीं आव्या, तान मान मांहे लीनो

॥ हो जिनजी० ॥ ६ ॥ मनुष्यजनम ने धर्मसामग्री, पाम्यो

हुं बहु पुण्ये ॥ राग द्वेष मांहे बहु चलीउं, ॥ नटली

समता बुद्धि हो जिनजी ॥ ७ ॥ एक कंचन ने वी
 कामिनी, तेहशुं मनसुं वाध्युं ॥ तेना जोग देवाने
 शूरो, केम करी जिनधर्म साधुं हो जिनजी ॥ ८ ॥ वन
 दोरु कीधी अति जाजी, हुं तुं कोंक जम जेवो ॥ क
 कली कटपनामे जन्म गुमायो, पुनरपि पुनरपि तेह
 हो जिनजी ॥ ९ ॥ गुरु उपदेशथी हुं नथी चीनो, ना
 सदहणा स्वामी ॥ हवे वरुाइ जोइए तमारी, खीजम
 मांहे स्वामी हो जिनजी ॥ १० ॥ चार गति मांहे ररु
 कीयो, तोए न सिध्यां काज ॥ रूपज कह्ने तारो सेवकं
 वांहे ग्रह्यानी लाज हो जिनजि ॥ ११ ॥

॥ योयो अथवा स्तुतिओ ॥

॥ श्रीआदीश्वरस्तुति ॥

जव्यांजोजविवोधनैकतरणे विस्तारिकर्मावली,—
 रंजासामज नाजिनंदन महानष्टापदाज्ञासुरैः ॥
 जक्तया वंदितपादपद्म विद्रुपां संपादय प्रोज्जिता,—
 रंजासाम जनाजिनंदन महानष्टापदाज्ञासुरैः ॥ १ ॥

॥ श्रीअजितनाथस्तुति ॥ पुष्पिताग्रा वृत्त ॥

॥ तमजितमजिनोमि यो विराजद्धनघनसेरुपरागर
 स्तकांतम् ॥ निजजननमहोत्सवेऽधितष्टावनघनमे
 परागनस्तकांतम् ॥ १ ॥ स्तुत जिननिवहंतमर्तितसाध

दिदसुरामरवेण वस्तुवंति ॥ यममरपतयः प्रगाय पार्श्व-
शानदसुरामरवेणवस्तुवंति ॥ १ ॥

म ॥ श्रीसंभवनाथस्तुति ॥ आर्या गीति वृत्त ॥
नुमर्जिन्नशत्रुजवजय शं जवकांतारतार तार ममारम ॥

शतर त्रातजवत्रय शंजव कांतारतारतारममारं ॥ १ ॥

॥ श्रयतु तवप्रणतं विजया परमारमारमानमदमरैः ॥ स्तु-
तरहित जिनकदंबक विजयापरमार मारमानमदमरैः ॥ २ ॥

॥ श्रीअभिनंदनस्तुति ॥ द्रुतविलंबित वृत्त ॥

मामशुभान्यजिनंदन नंदितासुरवधूनयनः परमोदरः ॥

सरकरींद्रविदारणकेसरिन्सुरव धूनय नः परमोऽदरः १

नवराः प्रयतध्वमितामया मम तमोहरणाय महा-

णः ॥ प्रदधतो शुवि विश्वजनीनताममतमोहरणा

महारिणः ॥ १ ॥

॥ श्रीसुमतिनाथस्तुति ॥ आर्या गीति वृत्त ॥

दमदनरहित नरहित सुमते सुमतेन कनकतारेतारे ॥

म दमपालय पालय दरादरातिहृतिहृपातःपातः ॥ १ ॥

धुतारा विधुतारा सदाः सदाना जिना जिताघा-

घाः ॥ तनुतापातनुतापा हितमाहितमानवनव-

जवा विजवाः ॥ १ ॥

॥ श्रीपद्मप्रभस्तुति ॥ वसततिलका वृत्त ॥

पादद्वयी दलितपद्ममृदुः प्रमोद,—

मुन्मुद्गतामरसदामलतांतपात्री ॥

पाद्मप्रज्ञी प्रविदधालु सतां वितीर्ण,—

मुन्मुद्गतामरसदा मलतांतपात्री ॥ १ ॥

सा मे मति विननुताज्जिनपंक्तिरस्त,—

मुद्गा गतामरसज्ञासुरमध्यगाद्याम् ॥

रत्नांशुजिर्विदधती गगनांतराल,—

मुद्गागतामरसज्ञासुरमध्यगाद्याम् ॥ २ ॥

॥ श्रीसुपार्श्वनाथस्तुति ॥ मालिनी वृत्त ॥

कृतनति कृतवान्यो जंतुजातं निरस्त,—

स्मरपरमदमायामानवाधायशस्त ॥

सुचिरमविचलत्वं चित्तवृत्त. सुपार्श्व,

स्मर परमदमाया मानवाधाय शस्तं ॥ १ ॥

व्रजतु जिनतति. सा गोचरं चित्तवृत्तेः,

सदमरसहिताया वोऽधिका मानवानां ॥

पदमुपरि दधाना वारिजानां व्यहारी,—

त्सदमरसहिता या वोधिकामा नवानां ॥ २ ॥

॥ श्रीचंद्रप्रभस्तुति ॥ मदाक्राता वृत्त ॥

तुष्यं चंद्रप्रज्ञ जिन नमस्तामसोज्ज्वलितानां,

हाने कांतानलसम दयावंदितायासमान ॥
विद्वत्पंकत्या प्रकटितपृथुस्पष्टदृष्टांतहेतू-
हानेकांतानलसमदया वंदितायासमान ॥ १ ॥

॥ श्रीसुविधिनाथस्तुति ॥ उपजाति वृत्त ॥

॥ तवाग्निवृद्धिं सुविधिर्विधेयात्स ज्ञासुराद्वीनतपा
गावन् ॥ यो योगिपंकत्या प्रणतो नक्षःसत्सज्ञासु-
द्वीनतपादयावन् ॥ १ ॥ या जंतुजाताय हितानि
जी सारा जिनानामलपद्ममालं ॥ दिश्यान्मुदं पाद-
गं दधाना सा राजिनानामलपद्ममालं ॥ २ ॥

॥ श्रीशीतलनाथस्तुति ॥ द्रुतविलंबित वृत्त ॥

॥ जयति शीतलतीर्थकृतः सदा चलनतामरसंसद्वलं
नं ॥ नवकमंबुरुहां पथि संस्पृशच्चलनतामरसंस-
लंघनं ॥ १ ॥ स्मर जिनान्परिनुन्नजरारजोजननता-
वतोदयमानतः ॥ परमनिर्वृतिशर्मकृतो यतो जन
तोनवतोऽदयमानतः ॥ २ ॥

॥ श्रीश्रेयांसनाथस्तुति ॥ हरिणी वृत्त ॥

कुसुमधनुषा यस्मादन्यं न मोहवशं व्यधुः,
कमलसदृशां गीतारावा बलाहयि तापितं ॥
प्रणमततमां द्राकूश्रेयांसं न चाहृत यन्मनः,
कमलसदृशांगी तारा वाबला दयितापितं ॥ १ ॥

॥ श्रीवासुपूज्यस्तुति ॥

पूज्य श्रीवासुपूज्यावृजिन जिनपते नूतनादित्यकान्ते,
ऽमायासंसारवासावन वर तरसाली नवालानवाहो ॥

आनम्रात्रायतांश्रीप्रज्ञवज्ञवज्ञयाद्विभ्रतीजक्तिजोजा,
मायासं सारवासावनवरतरसालीनवालानवाहो ॥१॥

॥ श्री विमलनाथस्तुति ॥

अपापदमलं घनं शमितमानमामो हितं,
नतामरसजासुरं विमलमालयामोदितम् ॥

अपापदमलंघन शमितमानमामो हित,
न तामरसजासुरं विमलमालयामोदितम् ॥ १ ॥

॥ श्रीअनंतनाथस्तुति ॥

॥ सकलधौतसहासनमेरवस्तव दिशन्त्वज्जिपेकजल
प्लवाः ॥ मतमनन्तजितः लपितोह्वसत्सकलधौतसहा
सनमेरवः ॥ १ ॥ मम रतामरसेवित ते क्षणप्रद
निहन्तु जिनेन्द्र कदम्बक ॥ वरद पादयुगं गतमज्ञता
ममरतामरसे विततेक्षण ॥ २ ॥

॥ श्रीधर्मनाथस्तुति ॥

नमः श्रीधर्म निष्कर्मोदयाय महितायते ॥

मर्त्यामिरेन्द्रनागेन्द्रैर्दयायमहिता ते ॥ १ ॥

जीयोज्जिनौघो ध्वान्तान्तं ततान लसमानया ॥

त्रामंरुलत्विषा यः स ततो नलसमानया ॥ १ ॥

॥ श्रीशांतिनाथस्तुति ॥

राजन्त्या नवपद्मरागरुचिरैः पादैर्जिताष्टापदा,—
द्रेऽकोपद्भुत जातरूपविजया तन्वार्य धीर ह्रमाम् ॥

विज्रत्यामरसेव्यया जिनपते श्रीशांतिनाथास्मरो,—
द्रेकोपद्भुत जातरूप विजयातन्वार्यधी रद्द माम् ॥ १ ॥

॥ श्रीकुंथुनाथस्तुति ॥

जवतु मम मनः श्रीकुंथुनाथाय तस्मा,—

यमितशमितमोहायामितापाय हृद्यः ॥

सकलजरतजर्ताञ्जिनोऽप्यद्गपाशा,—

यमितशमितमोहायामितापायहृद्यः ॥ १ ॥

॥ श्रीअरनाथस्तुति ॥

व्यमुचच्चक्रवर्तिलक्ष्मी मिह तृणमिव यः झणेन तं,

सन्नमदमरमानसंसारमनेकपराजितामरम् ॥

द्रुतकलधौतकान्तमानमतानन्दितञ्चूरिचक्रिजा,—

क्संनदमरमानसं सारमनेकपराजितामरम् ॥ १ ॥

॥ श्रीमल्लिनाथस्तुति ॥

॥ नुदंस्तनुं प्रवितर मल्लिनाथ मे प्रियंगुरोचिररुचि-

रोचितां वरम् ॥ विरुम्बयन्वररुचिमंरुलोज्ज्वलः प्रिये
 गुरोऽचिररुचिरोचितांवरम् ॥ १ ॥ जवाद्गत जगदवतो
 वपुर्व्यथाकदम्बकैरवशतपत्रसं पदम् ॥ जिनोत्तमान्स्तुत
 दधतः स्रजं स्फुरत्कदम्बकैरवशतपत्रसंपदम् ॥ २ ॥

॥ श्रीमुनिसुव्रतस्तुति ॥

जिनमुनिसुव्रतः समवताज्जनतावनतः,
 समुदितमानवा धनमलोत्तवतो जवतः ॥
 अवनिविकीर्णमादिपत यस्य निरस्तमनः,—
 समुदितमानवाधनमलो जवतो जवतः ॥ १ ॥

॥ श्रीनमिनाथस्तुति ॥

स्फुरद्विद्युत्कान्ते प्रविकिर वितन्वति सततं,
 ममायासं चारो दितमद् नमेऽघानि लपितः ॥
 नमद्भव्यश्रेणीजवजयजिदां हृद्यवचसा—
 ममायासंचारोदितमदनमेघानिल पितः ॥ १ ॥

॥ श्रीनेमिनाथस्तुति ॥

चिद्दोषोर्जितराजकं रणमुखे यो लङ्घसख्यं क्षणा,—
 दक्षामं जन ज्ञासमानमहसं राजीमतीतापदम् ॥
 तं नेमि नम नम्रनिर्वृतिकरं चक्रे यद्गुणां च यो,
 दक्षामंजनज्ञासमानमहसं राजीमतीतापदम् ॥ १ ॥

(६६)

॥ श्रीपार्श्वनाथस्तुति ॥

मालामालानबाहुर्दधदधदरं यामुदारा मुदारा,—
द्वीनालीनामिहाली मधुरमधुरसां सूचितोमाचितो-
मा ॥ पातात्पातात्स पार्श्वो रुचिररुचिरदो देवरा-
जावराजी,—पत्रापत्रा यदीया तनुरतनुरवो नंदको
नोदकोनो ॥ १ ॥

॥ श्रीमहावीरस्तुति ॥

॥ नमदमरशिरोरुहस्वस्तसामोदनिर्निद्रमन्दारमा-
लारजोरंजितांहे धरित्रीकृता,—वम वरतम संगमोदार-
तारोदितानंगनार्यावलीलापदेहेक्षितामोहिताक्षोन्नवान्
॥ मम वितरतु वीर निर्वाणशर्माणि जातावतारो धरा-
धीशसिद्धार्थधाम्नि क्षमालंकृता,—वनवरतमसंगमोदार-
तारोदितानंगनार्याव लीलापदे हे क्षितामो हिता-
क्षोन्नवान् ॥ १ ॥

॥ श्री महावीरस्वामीनी थोय ॥

॥ त्रिदशविहितमानं, सप्तहस्तांगमानं ॥ दलितम
दनमानं, सद्गुणैर्वर्द्धमानं ॥ दनवरतजिमानं, क्रोधम-
त्स्यस्यमानं ॥ जिनवरमसमानं, संस्तुवे वर्द्धमानम् ॥ १ ॥

॥ श्री सीमंदिरस्वामीनी थोय ॥

॥ श्री सीमंधर जिनवर, सुखकर साहब देव,

अरिहंत सकलनी, चात्र धरी करुं सेत्र ॥ सकल आगम
पारक, गणधर चाखित वाणी, जयवंती आणा, ज्ञान-
विमल गुणखाणी ॥

॥ श्री पंचतीर्थनी योयो ॥

॥ श्रीशत्रुंजयमुख्यतीर्थतिलकं श्रीनाञ्जिराजांगज,
वंदे रैवतशैलमौलिमुकुट, श्रीनेमिनाथं यथा ॥ तारगेऽ
प्यजितं जिनं चृगुपुरे श्रीसुव्रतं स्तंजने श्रीपार्श्व प्रण-
मामि सत्यनगरे श्रीवर्द्धमानं त्रिधा ॥ १ ॥ वंदेऽनुत्तरकल्प-
चुवने, धैवेयकव्यंतरज्योतिष्यामरमंदराद्रिवसतींस्तीर्थ-
करानादरात् ॥ जवुपुष्करधातकीपु रुचके नंदीश्वरे कुंकले,
ये चान्येऽपि जिना नमामि सततं तान् कृत्रिमाकृत्रि मान् ॥
॥२॥ श्रीमद्वीरजिनस्य पद्महृदतो निर्गम्यते गौतमं, गंगा-
वर्तनमेत्य या प्रविजिदे मिथ्यात्ववैताढ्यक ॥ उत्पत्तिस्थि-
ति हृत्तित्रिपथगा ज्ञानांबुदा वृद्धिगा, सामे कर्ममलं
हरत्वविकल श्रीद्वादशांगी नदी ॥ ३ ॥ शक्रश्चद्ररविग्र-
हाश्च धरणब्रह्मेन्द्रशांत्यविका, दिक्पालाः सकपर्दिगो-
मुखगणिश्चक्रेश्वरी चारती ॥ येऽन्ये ज्ञानतपःक्रियात्र-
तविधिश्चीतीर्थयात्रादिपु, श्रीसंघस्य तुरा चतुर्विधसुरा-
स्ते सतु चद्रकरा ॥ ४ ॥

(ए७)

॥ श्री सिद्धाचलजीनी थोय ॥ पुंडरगिरि महिमा-ए देशी ॥

॥ शत्रुंजय संरुण ऋषज जिणंद दयाल, मरुदेवानं-
दन वंदन करुं त्रण हुं काल ॥ ए तीरथ जाणी पूर्व
नवाणुं वार, आदीश्वर आव्या जाणी लाज अपार ॥१॥
त्रैवीश तीर्थकर चढ्या एणे गिरि जाय, ए तीरथना
गुण सुरसुरादिक गाय ॥ ए पावन तीरथ त्रिचुवन नहीं
तस नोले, ए तीरथना गुण सीमंधर मुख बोले ॥२॥
पुंरगिरि महिमा आगममां परसिद्ध, विमलाचल
जेटी लहीए अविचल रिद्ध ॥ पंचमी गति पहोता
मुनिवर कोनाकोरु, एणे तीरथ आवी कर्मविपाक वि-
ठोरु ॥३॥ श्री शत्रुंजय केरी अहोनिश रक्षाकारी,
आद जिनेश्वर आण हृदयमां धारी ॥ श्री संघ वि-
घ्नहर कवरु जदु गण चूर, श्री रवि बुद्धसागर संघनां
संकट चूर ॥ ४ ॥

॥ शांति जिन थोय ॥ महिनी छंद ॥

॥ गजपुर अवतारा, विश्वसेन कुमारा ॥ अवनी-
तले उदारा, चक्रवि लहीधारा ॥ प्रति दिवस सवारा,
सेवीए शांति सारा ॥ जवजलधि अपारा, पामीए
जेम पारा ॥ १ ॥ जिनगुण जस महि, वासना

विश्ववह्नि ॥ मन सदन च सह्नि, मानवंती निसहि
 सकल कुशल वह्नी, फुलडे वेग कुह्नी ॥ पुरगति तस
 पुह्नि, तासदा श्री बहुह्नि ॥ १ ॥ जिन कथित विशाल
 सूत्र श्रेणी रसाला, सकल सुख सुखाला, मेलवा मुचि
 वाला ॥ प्रवचनपद माला, हूतिका ए दयाला ॥ उ
 धरी सुकमाला, मूकीए मोहजाला ॥ ३ ॥ अति चप
 वखाणी, सूत्रमां जे प्रमाणी ॥ जगवती ब्रह्माणी, विघ्न
 हंता निर्वाणी ॥ जिनपद लप टाणी, कोमो कट्याए
 खाणी ॥ उदयरत्न जाणी सुखढाता सयाणी ॥ ४ ॥
 ॥ श्री जिन पचक्र थोय ॥ हरिगीत उठ ॥

॥ श्री आदि शांति नेमि पास, वीर शासनपति
 वली ॥ नमो वर्तमान अतीत अनागत, चोवीशे जिन
 मन मली ॥ जिनवरनी वाणी गुणनी खाणी, प्रे
 प्राणी सांचली ॥ थया समकित धारी जव निठारी
 सेवे सुरवर लळी लळी ॥



॥ खं ५ मो ॥

॥ प्रकीर्ण स्तवन संग्रह तथा चैत्यवंदन ॥

ॐकारविन्दुसंयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ॥

कामदं मोक्षदं चैव, ॐकाराय नमो नमः ॥

य एव वीतरागः स, देवो निश्चीयतां ततः ॥

ऋविनां ऋवदंऋत्विः, स्वतुद्वयपदवीप्रदः ॥

वीतरागं यतो ध्यायन् वीतरागो ऋवेदृऋवी ॥

ईलिका ऋमरीऋता, ध्यायन्ति ऋमरीं यथा ॥

॥ श्री चोवीस तीर्थकरनुं चैत्यवंदन ॥

॥ प्रह समे ऋाव धरी घणो, प्रणमुं मन रे आनंद

॥ धन्य वेला धन्य ते घनी, निरखुं प्रभु मुखचंद ॥ १ ॥

॥ रिखऋ अजित संऋव ऋला, अऋनिंदन वंदुं ॥ सुमति

॥ यद्वप्रभु जिनवरा, श्री सुपार्श्व जिनेदु ॥ २ ॥ चंद्रप्रभु

॥ पुविधि नमुं, शीतल श्रेयांस ॥ वासुपूज्य विमल प्रभु,

॥ अनंत धर्म जिनेश ॥ ३ ॥ शांति कुंथु अर जिनवरा,

॥ ए ऋण चक्री कहीजे ॥ मद्धि मुनिदुऋत प्रभु, नमि नेम

॥ चमीजे ॥ ४ ॥ पार्श्ववीर नित्य वंदीए, एहवा जिनचोवीश

॥ ज्ञानविमल सूरि प्रणमतां नित्यहोय जगीश ॥ ५ ॥

॥ श्री महावीरस्वामीनु स्तवन ॥

॥ श्री ज्ञेश्वरा प्रभु पार्श्व जिनवरा-ए राग ॥

॥ श्री जिनेश्वरा महावीर जयहरा, उमंग सग
नमन करुं अचल सुखकरा ॥ ए टेक ॥ १ ॥ तारक तुज
सम त्रण जुवनमां, वीजो न भले नाथ ॥ वारक जव-
जयहारक जिनपद, शिवपुर केरो साथ ॥ श्री जि० ॥ २ ॥
महादेव ब्रह्मा जगदीश्वर, वीतराग अविकार ॥ निर्मोही
निर्मायी अलोत्ती, तिम नहीं क्रोध लगार ॥ श्री
जि० ॥ ३ ॥ तुज शासन राजे जग गाजे, मंगल आ-
नंदपूर ॥ शिवसुख उत्तम पद मागे ठे, दिन दिनवधतुं
नूर ॥ श्री जि० ॥ ४ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ पास जिणंद सदा शिवगामी, वालोजी अंतर-
जामी रे ॥ जगजीवन जिनजी, सूरत ताहरी मोहन-
गारी जवियणने हितकारी रे ॥ जगजीवन जिनजी
॥ १ ॥ वामा रे नंदन सांजलो स्वामी, अरज करुं शिर
नामी रे ॥ जग० ॥ देव घणा मे तो नयणे रे दीठा
तमे लागो ठो मीठा रे ॥ जग० ॥ २ ॥ मे तो मन मांहे
तुहीज ध्यायो, रत्न चितामणि पायो रे ॥ जग० ॥ रात
दिवस मुज मन मांहे वसीयो, हुं तु तुम गुण रसियो

रे ॥ जग० ॥ ३ ॥ महेर करीने साहेवा नजरे नीहालो,
तुमे ठो परम कृपाबु रे ॥ जग० ॥ गोमी रे गाममां
तुंहीज सोहिये, सुर नरनां मन मोहीये रे ॥ जग०
॥ ४ ॥ वे कर जोमीने प्रभु पाय लाशुं, नित्य नित्य
दरिशाण माशुं रे ॥ जग० ॥ देव नहीं कोये ताहेरी तोले,
नित्य लाज एणी परे बोले रे ॥ जग० ॥ ५ ॥

॥ श्री नेमिनाथ स्तवन ॥

॥ रघुपति राम हृदयमां रहेजो रे—ए देशी ॥

॥ ऋवि तुमे नेमनाथने सेवो रे, जे मोक्ष वतावण
मेवो ॥ ऋवि० ॥ प्रभु शिवादेवीना जाया रे, शुभ
समुद्रविजयकुल आया रे ॥ सोहे श्याम वरण शुभ
काया ॥ ऋवि० ॥ १ ॥ जेम तारामां चंद्र वखाणुं रे, तेम
सुख तणुं तेज जाणुं रे ॥ वली लंठन शंख प्रमाणुं रे ॥
ऋवि० ॥ २ ॥ जेनी दश धनुष्यनी काया रे, सोरीपुरमां
जन्म धराया रे ॥ रथ तोरणथी जे फरीया ॥ ऋवि०
॥ ३ ॥ जेणे ठंकी ठे राजुल नारी रे, जाइ चढ्या गढ
गिरनारी रे ॥ लीधो संजम त्यां सुखकारी ॥ ऋवि०
॥ ४ ॥ शुभ केशर चंदन रंग रे, घोली मृगमद परिमल
संग रे ॥ पूजो परमात्म नव अंगे ॥ ऋवि० ॥ ५ ॥

गुण वाल झानोदय-गावे रे, वामीलाल तेशीश नमावे
रे ॥ जेथी जनम मरण दुःख जावे ॥ जवि० ॥ ६ ॥

॥ श्रीऋषभदेवतुं स्तवन ॥ विनति अरजो ज्ञान-ए राग ॥

॥ जवजल पार उतार, जिणदजी, जवजल पार
उतार ॥ मुज पापीने तार ॥ जिणंदजी ॥ ए टेक ।
श्री सिद्धाचल तीरथ राजा, त्रण जुवनसां सार ॥ जि० ।
पूर्व नवाणुं वार शेजुंजे, आव्या श्री नोजिकुमार ।
जि० ॥ १ ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगढ्यो, दीगो प्रभु
देदार ॥ जि० ॥ जवोजव जटकी शरणे आव्यो, राखो
दाज आ वार ॥ जि० ॥ २ ॥ चरतादिक असख्यने
तारया, तिम प्रभु मुजने तार ॥ जि० ॥ माता मरुदे-
वाने दीयु, केवलज्ञान उदार ॥ जि० ॥ ३ ॥ द्वायक
समकित मुजने आपो, एहीज परम आधार ॥ जि० ॥
दीनदयालु दरिगण दीजे, पाय पशु सोवार ॥ जि०
॥ ४ ॥ अवसर पामी अरज सुणीने, विनतनी अवधार
॥ जि० ॥ नीतिविजयना वाल सिद्धिनी. आवागमण
निवार ॥ जि० ॥ ५ ॥

॥ अथ स्तुति काव्य ॥ ,

॥ अष्टापदे श्री आदि जिनवर, वीर पावापुरी वरु ।

वासुपूज्य चंपा नयर सिद्धा, नेम रेवा गिरिवरु ॥ १ ॥
समेतशिखरे वीश जिनवर, मोक्ष पहोता मुनिवरु ॥
चोवीश जिनवर नित्य वंडुं, सयल संघ सुहंकरु ॥ २ ॥

॥ श्री पंच तीर्थ स्तुति ॥

आबु अष्टापद गिरनार, समेतशिखर शेत्रुंजो सार ॥ ए
पंचे तीरथ उत्तम ठाम, सिद्धि गया तेने करुं प्रणाम ॥ १ ॥

॥ चैत्यवंदन ॥

॥ आज देव अरिहंत नमुं, समरुं तोरुं नाम ॥ ज्यां
यां प्रतिमा जिन तणी, त्यां त्यां करुं प्रणाम ॥ १ ॥
शेत्रुंजे श्री आदि देव नेम नमुं गिरनार ॥ तारंगे श्री
अजितनाथ, आबु ऋषज जुहार ॥ २ ॥ अष्टापद गिरि
उपरे, जिन चोवीशे जोय ॥ मणिभय मूरति मानशुं,
तरते नरावी सोय ॥ ३ ॥ समेतशिखर तीरथ वरुं, ज्यां
वीशे जिनपाय ॥ वैजार गिरि उपरे, श्रीवीर जिनेश्वर
एथ ॥ ४ ॥ सांरुवगढनो राजीयो, नामे देव सुपास ॥
रिखव कहे जिन समरतां, पहोंचे मननी आश ॥ ५ ॥

॥ श्री आदिनाथ स्तवन ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र सोहामणुं-ए देशी ॥

॥ जगजीवन जग वाल हो, मरुदेवीनो नंद लाल

रे ॥ मुख दीठे सुख उपजे, दर्शन अतिहि आनद
 लाल रे ॥ जग० ॥ १ ॥ आंखनी अंबुज पांखनी, अष्टमी
 शशी शम जाल लाल रे ॥ वदन ते शारद चदलो,
 वाणी अतिहि रसाल लाल रे ॥ जग० ॥ २ ॥ लक्षण
 अंगे वराजतां, अरुहिय सहस उदार लाल रे ॥ रेखा
 कर चरणादिके, अन्यतर नही। पाग लाल रे ॥ जग०
 ॥ ३ ॥ इंद्र चंद्र रवि गिरि तणा, गुण लइ घनीयुं अंग
 लाल रे ॥ जाग्य किहां थकी आवीयुं, अचरिज एह
 उत्तम लाल रे ॥ जग० ॥ ४ ॥ गुण सघला अगे
 प्ररया, दूर करया सवि दोष लाल रे ॥ वाचक जश-
 विजये थुणयो, देजो सुखनो पोष लाल रे ॥ जग० ॥ ५ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथनुं स्तवन ॥

॥ रातां जेवां फुलनां ने, सामल जेवो रग ॥ आज
 तारी आंगीनो, कांड रुको वन्यो रग ॥ प्यारा पासजी
 हो लाल, दीनदयाल मुने नयणे नीहाल ॥ ए आंकणी
 ॥ १ ॥ जोगीवाडे जागतो ने, मातो धींगरु मद्ध ॥
 शामलो सोहामणो ने, जीत्या आठे मद्ध ॥ प्यारा०

॥ १ ॥ तुं ठे मारो साहिवो ने, हुं तुं तारो दास ॥ आशा
पूरो दासनी कांइ, सांजली अरदास ॥ प्याराण ॥ ३ ॥
देव सघला दीठा तेमां, एक तुं अवह्व ॥ लाखेणुं ठे
लटकुं ताहरुं, देखी रीजे दिह्व ॥ प्याराण ॥ ४ ॥ कोइ
नमे पीरने ने, कोइ नमे राम ॥ उदयरल कहेरे प्रभु,
मारो तुमशुं काम ॥ प्याराण ॥ ५ ॥

॥ श्री महावीर जिन स्तवन ॥

॥ नारे प्रभु नहीं मानुं, नहीं मानुं रे अवरनी आण
॥ नारेण ॥ महारे तारुं वचन प्रमाण ॥ नारे प्रभुण ॥
ए आंकणी ॥ हरि हरादिक देव अनेरा, में दीठा
जगसांय रे ॥ नामिनी जरम चूकुटीए, चूड्या, ते मुजने
न सुहाय ॥ नारेण ॥ १ ॥ केइक रागी ने केइक छेषी,
केइक लोत्री देव रे ॥ केइक मद मायाथी जरीया, केम
करीये तस सेव ॥ नारेण ॥ २ ॥ मुद्रा पण तेमां नवि
दीसे प्रभु, तुज मांहेली तिलमात रे ॥ ते देखी दिलकुं
नवि रीजे, शी करवी तेहनी वात ॥ नारेण ॥ ३ ॥
तुं गति तुं मति तुं मुज प्रीतम, जगजीवन आधार रे
॥ रात दिवस स्वपनांतर तुंही, तुं माहारे निरधार ॥
नारेण ॥ ४ ॥ अवगुण सहु लखेखीने प्रभु, सेवक करीने

नीहाल रे ॥ जगबंधव ए विनति मोरी, महारां सवि
 दुःख दूरे टाल ॥ नारे० ॥ ५ ॥ चोवीशमा प्रभु त्रिभु-
 वनस्वामी, सिद्धारथना नद रे ॥ त्रिगलाजीना न्हान
 कीया प्रभु, तुम दीठे अति आनंद ॥ नारे० ॥ ६ ॥
 सुमतिविजय कविरायनो रे, रामविजय कर जोरु रे ॥
 उपगारी अरिहंतजी महारा, जवजवना बंध
 ठोरु ॥ नारे० ॥ ७ ॥

॥ श्री सिद्धाचल स्तुति ॥

॥ पूणानंदमयं महोदयमय कैवल्यचिद्दृग्मय, रूपा-
 तीतमयं स्वरूपरमणं स्वात्ताविकीश्रीमयं ॥ ज्ञानोद्यो-
 तमय कृपारसमय स्याद्वादविद्यालयं, श्रीसिद्धाचलती-
 र्थराजमनिग वंदेऽहमादीश्वरं ॥ १ ॥ श्रीमद्युगादीश्वर-
 मात्मरूप, योगाद्रगम्य विमलादिसंस्थं ॥ सदृज्ञान
 सुदृष्टिसुदृष्टलोकं, श्रीनाजिसूनु प्रणमामि नित्य ॥ २ ॥
 राजादिनाधस्तनञ्जुमिजागे, युगादिदेवांग्रिसरोजपीठं ॥
 देवेद्रवद्य नरराजपूज्य, सिद्धाचलाग्रस्थितमर्चयामि ॥
 ३ ॥ आदिप्रचोर्दक्षिणदिग्विजागे, सहस्रकूटे जिनरा-
 जमूर्ती ॥ सौम्याकृती. सिद्धिततीनिजाश्च, शत्रुंजयस्था
 परिपूजयामि ॥ ४ ॥ आदिप्रचोर्बक्रसरोरुहाच्च, विनि

र्गतां श्रीत्रिपदीमवाप्य ॥ यो द्वादशांगीं विदधे गणेशः,
स पुंरुकीको जयताञ्चिवाद्रौ ॥ ५ ॥

॥ श्री सिद्धाचल खांमणां ॥

॥ सिद्धाचल समरुं सदा, सोरठ देश मोजार ॥
मनुष्यजन्म पामी करी, वंडुं वार हजार ॥ १ ॥

॥ श्री सिद्धाचलनुं चैत्यवंदन ॥

॥ विमल केवलज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन हित-
करं ॥ सुरराज संस्तुत चरणपंकज, नमो आदि जिने-
श्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर श्रृंगमंरुण, प्रवर गुणगण
भूधरं ॥ सुर असुर किन्नर कोमि सेवित ॥ नमो ॥ २ ॥
करती नाटक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं
निर्झरोवली नमे अहोनिश ॥ नामो ॥ ३ ॥ पुंरुकीक
गणपति सिद्धि साधी, कोमी पण मुनि मनहरं ॥ श्री
विमल गिरिवर श्रृंग सिद्धा ॥ नमो ॥ ४ ॥ निज
साध्य साधन सुर मुनिवर, कोमि (अनंत) ए गिरि-
वरं ॥ सुक्ति रमणी वर्या रंगे ॥ नमो ॥ ५ ॥ पाताल
नर सुरलोक सांहि, विमल गिरिवर तो पर ॥ नहीं
अधिक तीरथ तीर्थपति कहे ॥ नमो ॥ ६ ॥ इम
वेमल गिरिवर शिखर मंरुण, दुःख विहंरुण ध्याइए ॥

निज शुद्ध सत्ता साधनार्थ, परम ज्योति निपाइए ॥
 ७ ॥ जीत मोह कोह विठोह निद्रा, परम पद स्थित
 जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पञ्च-
 विजय सुहितकरं ॥ ७ ॥

॥ श्री सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ विमलाचलवासी मारा वाला, सेवकने विसारो
 नहीं ॥ वि० ॥ जल विना मीन दुःख अति पामे,
 जिणद आप जाणो सही ॥ जा० ॥ दुःख हरनारां
 नविजन प्यारा, शरणे तुं महाराज ॥ चार चोर मुज
 केडे पकीया, पुण्यरतनने काज ॥ सेवक० ॥ विमला०
 ॥ १ ॥ पापी चंफालो पकरी मुज, माल हरी लेनार ॥
 जिनजी जो मुज वारे आवो, तो तु उगरनार ॥ सेवक० ॥
 विमला० ॥ २ ॥ जन्म मरणनां दुःख बेव्यां बहु, पए
 नव आव्यो तुम दरवार ॥ सेवक० ॥ विमला० ॥ ३ ॥
 अरजी उर धरी नेह नजर करी, सेवकनी करो सार ।
 कृपा तणा ए सिधु तुम विण, कोण उतारे पार ।
 सेवक० ॥ विमला० ॥ ४ ॥ नवदुःखजन जगधंत
 करो, कठण करमनो नाश ॥ पदपकज रहे प्राण मधु
 कर, पूरो मननी आश ॥ सेवक० ॥ विमला० ॥ ५ ॥

॥ श्री सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ श्री रे सिद्धाचल जेटवा, मुज मन अधिक
 उमाहो ॥ कृषज जिणंद जुहारीने, लीजे जव तणो
 लाहो ॥ श्री० ॥ १ ॥ मणिसय मूरति श्री कृषजनी, ते
 निपाइ अजिराम ॥ जुवन कराव्यां कनकनां, राख्युं
 तरते नाम ॥ श्री० ॥ २ ॥ पूर्व नवाणुं समोसरया,
 स्वामी कृषज जिणंद ॥ राम पांरुव मुक्ते गया, पाम्या
 रमानंद ॥ श्री० ॥ ३ ॥ नेम विना त्रेवीश जिन,
 आव्या सिद्धक्षेत्र जाणी ॥ शेजुंजा समुं तीरथ नहीं,
 गोदया सीमंधर वाणी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पूरव पुण्य
 सायथी, विमलाचल पायो ॥ कांतिविजय हर्षे करी,
 वेमलाचल गुण गायो ॥ श्री० ॥ ५ ॥

॥ श्री सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ मारुं मन मोहुं रे श्री सिद्धाचले रे, देखी हर-
 षेत होय ॥ विधिशुं कीजे रे यात्रा एहनी रे, जव-
 तवनां दुःख जाय ॥ मारुं ॥ १ ॥ पांचमे आरे रे पावन
 कारणे रे, ए समुं तीरथ कोय ॥ मोहोटो महिमा रे
 महीयल एहनो रे, आ जरते इहां जोय ॥ मारुं ॥ २ ॥
 एणे शिरि आव्या रे जिनवर गणधरा रे, सिद्धा साधु

अनंत ॥ कठिण कर्म पण एणे गिरि फरसतां रे
 होय कर्म निशांत ॥ मारुं ॥ ३ ॥ जैनधर्मने साच
 जाणीये रे, मानव तीर्थ ए थंज ॥ सुर नर किन्नर नृ
 विद्याधरा रे, करता नाटारज ॥ मारुं ॥ ४ ॥ धन्य धन्य
 दहानो रे धन्य धन्य ए घनी रे, धरी हृदय मोजार ।
 ज्ञानविमल प्रभु एहना गुण घणा रे, कहेतां नां
 पार ॥ मारुं ॥ ५ ॥

॥ श्री सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ सिद्धाचल गिरि जेट्या रे, धन्य चाग्य हमार
 ॥ ए आंकणी ॥ ए गिरिवरनो महिमा मोटो, कहेत
 न आवे पार ॥ रायण रिखज समोसर्वा स्वामी, पूर
 नवाणु वार रे ॥ ध० ॥ १ ॥ मूल नायक श्री आ
 जिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चार ॥ अष्टद्रव्यथी पूज
 चावे, समकित मूल आधार रे ॥ ध० ॥ २ ॥ जा
 जक्तिशु प्रभुगुण गातां, अपना जनम सुधारो ॥ जात्र
 करी जविजन शुज चावे, नरक तिर्यच गति वा
 रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ दूर देशांतरथी हु आव्यो, श्रवां
 सुणी गुण तोरा ॥ पतित उद्धारन विरुद तुमार
 ए तीर्थ जग साग रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ अढारस ज्यार्श

मास अषाढे, वद आठम जोमवारा ॥ प्रचुके चर्णप-
सायथी संघमां, खेमारतन प्रचु प्यारो रे ॥ ध० ॥ ५ ॥

॥ श्री शत्रुंजय गिरिराज विनति ॥

॥ सुण जिनवर शेरुंजा धणीजी, दास तणी अर-
दास ॥ तुज आगल बालक परेजी, हुं तो करुं वेखास
रे ॥ जिनजी भुज पापीने तार ॥ तुं तो करुणारस
अर्योजी रे, तुं सहुनो हितकार रे ॥ जिनजी ॥ मुज०
॥ १ ॥ हुं अवगुणनो उरमोजी, गुण तो नहीं लववेश ॥
परगुण पेखी नवि शकुंजी, केम संसार तरीश रे ॥
जिनजी ॥ मुज० ॥ २ ॥ जीव तणा वध में करयाजी,
बोदयो मृषावाद ॥ कपट करी परधन हरयांजी, सेव्या
विषय सवाद रे ॥ जिनजी ॥ मुज० ॥ ३ ॥ हुं लंपट हुं
बालचुजी, कर्म कीधां केइ क्रोरु ॥ त्रण जुवनमां को
नहींजी, जे आवे मुज जोरु रे ॥ जिनजी ॥ मुज० ॥ ४ ॥
बिड्र परायां अहोनिशेजी, जोतोरहुं जगनाथ ॥ कुगति
अणी करणी करीजी, जोड्यो तेहशुं साथ रे ॥ जिनजी ॥
मुज० ॥ ५ ॥ कुमति कुटिल कदाग्रहीजी, वांकी गति
अति मुज ॥ वांकी करणी माहरीजी, शी संजलावुं तुज
॥ जिनजी ॥ मुज० ॥ ६ ॥ पुन्य विना मुज प्राणीउंजी,

जाणे मेलुं रे आथ ॥ उंचां तरुवर मोरीयांजी, त्याहि
 पसारे हाथ रे ॥ जिनजी मुज० ॥ ७ ॥ विण खाधा
 विण चोगव्याजी, फोगट कर्म वंधाय ॥ आर्त्तध्यान
 मिटे नहीजी, कीजे कवण उपाय रे ॥ जिनजी मुज०
 ॥ ८ ॥ काजलथी पण शामलांजी, मारामन परिणाम ॥
 स्वप्ना मांहि ताहरुंजी, संचारुं नही नाम रे ॥ जिनजी
 मुज० ॥ ९ ॥ मुग्ध लोक ठगवा जणीजी, करु अनेक
 प्रपच ॥ क्रूर कपट हुं केलवीजी, पाप तणो करुं संच
 रे ॥ जिनजी मुज० ॥ १० ॥ मन चंचल न रहे किमेजी,
 राचे रमणी रे रूप ॥ काम विटवणाशी कहुंजी पनीश
 हुं दुर्गति कूप रे ॥ जिनजी मुज० ॥ ११ ॥ किस्या कहुं
 गुण माहराजी, किस्या कहु अपवाद ॥ जेम जेम संचारुं
 हैयेजी, तेम वाधे विखवाद रे ॥ जिनजी मुज० ॥ १२ ॥
 गिरुआ ते नवि लेखवेजी, निगुण सेवकनी वात ॥ नीच
 तणे पण मंदिरेजी, चद्र न टाळे ज्योत रे ॥ जिनजी
 मुज० ॥ १३ ॥ निगुणो तोपण ताहरोजी, नाम धराव्यु
 दास ॥ कृपा करी सजारजोजी, पूरजो मुज मन आश
 रे ॥ जिनजी मुज० ॥ १४ ॥ पापी जाणी मुज जणीजी,
 मत मूको विसार ॥ विख हवाहल आदखो जी, ईश्वर

न तजे तास रे ॥ जिनजी ॥ मुजण ॥ १५ ॥ उत्तम गुण-
 कारी हुएजी, स्वार्थ विना सुजाण ॥ करसण सिंचे सर
 चरेजी, मेह न मागे दाण रे ॥ जिनजी ॥ मुजण ॥ १६ ॥
 तुं उपकारी गुणनिदोजी, तुं सेवक प्रतिपाल ॥ तुं सम-
 रथ सुख पुरवाजी, कर माहरी संजाल रे ॥ जिनजी ॥
 मुजण ॥ १७ ॥ तुजने शुं कहीये घणुं जी, तुं सौ वाते
 जाण ॥ मुजने धाजो साहिवाजी, चव चव ताहरी
 आण रे ॥ जिनजी ॥ मुजण ॥ १८ ॥ नाचिराया कुलचं-
 दलोजी, मारुदेवीना नंद ॥ कहे जिनहरख निवाज-
 जोजी, देजो परमानंद रे ॥ जिनजी मुज पापीने तार ॥ १९ ॥

॥ श्री चैत्यवंदन ॥

॥ अरिहंत नमो जगवंत नमो, परमेश्वर श्री जिन-
 राज नमो ॥ प्रथम जिनेश्वर प्रेमे प्रेखत, सिद्धां सघलां
 काज नमो ॥ अरिण ॥ १ ॥ प्रभु पारंगत परम महोदय,
 अविनाशी अकलंक नमो ॥ अजरामर अद्भुत अति-
 शयनिधि, प्रवचन जलधिमथंक नमो ॥ अरिण ॥ २ ॥
 तिहुअण चवियण जण मण वंढिय, पूरण देव रसाल
 नमो ॥ लळी लळी पाय नमुं हुं जाले, कर जोमीने
 त्रिकाल नमो ॥ अरिण ॥ ३ ॥ सिद्ध बुद्ध तुं जग जन

सज्जन, नयनानंदन देव नमो ॥ सकल सुरासुर नर व
 नायक सारे अहोनिश सेव नमो ॥ अरि० ॥ ४ ॥
 तीर्थंकर सुखकर साहेव, तुं निष्कारण वंधु नमो ।
 शरणागत ऋषिने हितवत्सल, तुंही कृपारससिधु नमो ।
 अरि० ॥ ५ ॥ केवलज्ञानादर्शें दर्शित, लोकालोक स्वप्ताव
 नमो ॥ नाशित सकल कलंक कलुषगण, दुरित उप-
 द्रव ज्ञाव नमो ॥ अरि० ॥ ६ ॥ जगचिंतामणि जगद्युक्त
 जगहितकारक, जगजननाथ नमो ॥ घोर अपार ऋवो-
 दधितारण, तुं शिवपुरनो साथ नमो ॥ अरि० ॥ ७ ॥
 अशरण शरण नीराग निरजन, निरुपाधिक जगदीश
 नमो ॥ बोधि दीयो अनुपम दानेश्वर, ज्ञानविमल
 सूरीश नमो ॥ अरि० ॥ ८ ॥

॥ श्री ऋषभ जिन स्तवन ॥

॥ कृपा करो भगवान्, अम पर कृपा करो भगवान्-ए राग ॥

॥ आज आनंद अपार, मुज मन आज आनंद
 अपार ॥ ए टेक ॥ सरुदेवीनंदन, कर्मनिकदन निरख्या
 नात्ति कुमार ॥ मुज० ॥ १ ॥ अजर अमर अकलंक
 जिनेश्वर, रूपस्वरूप जगार ॥ मुज० ॥ २ ॥ अशरण
 शरण करण जगनायक, दायक शिवसुख सार ॥

मुज० ॥ ३ ॥ तुम सेवा शुभ चाहे करतां, पोसुं जवनो
पार ॥ मुज० ॥ ४ ॥ कहे जिनदास प्रभु दरिशनश्री,
सफल थयो अवतार ॥ मुज मन आज० ॥ ५ ॥

॥ श्री अजितनाथ स्तवन ॥

॥ राग केरवो ॥

॥ अरज अजित जिनराज रे, मोरी मानो महा-
राजा ॥ मानो महाराजा, मोरी मानो महाराजो ॥
अरज० ॥ जितशत्रु राणी विजयानंदन, शोचत सुंदर
साज रे ॥ मोरी मानो महाराजा ॥ अरज० ॥ १ ॥ हुं
हुं पापी प्रभुजी अद्यापि, वांहे ग्रह्यानी लाज रे ॥ मोरी
मानो महाराजा ॥ अरज० ॥ २ ॥ जवसागरश्री पार
उतारी, दीजीए शिव शिरताज रे ॥ मोरी० ॥ अरज०
॥ ३ ॥ निज सेवक पर कृपा करीजे, अरिहंत अरजी
आज रे ॥ मोरी० ॥ अरज० ॥ ४ ॥ कहे जिनदास
जिनवर प्यारा, पूर्ण करो मन आश रे ॥ मोरी० ॥
॥ अरज० ॥ ५ ॥

॥ श्री संभवनाथनु स्तवन ॥

॥ राग-रहो रहो रे जादवराय दोष घडीयां० राग-खमाच ॥

॥ प्रभु तोरी सुरत परवारी वारीआं, जला वारी

वारीयां जाळं बलिहारीयां ॥ प्रचु० ॥ ए टेक ॥ चंद्र
 ज्योत तेहं मुखमुं विराजे, दंत शोजत दाकम कलीयां ॥
 प्रचु० ॥ १ ॥ नयन सुंदर नाथ तुमारे. अधर मधुर
 मेरो दिल हरीयां ॥ प्रचु० ॥ २ ॥ मोहनी मूरत सोहीनी
 सूरत, निरखत हरखत मन रलीयां ॥ प्रचु० ॥ ३ ॥
 श्री संचव जिनराज सबुणा, देखत पुरगति पूर
 हलीयां ॥ प्रचु० ॥ ४ ॥ कहे जिनदास जिनदरिश-
 नथी, मनके मनोरथ सब फलीया ॥ प्रचु० ॥ ५ ॥

॥ श्री अभिनदन जिन स्तवन ॥

॥ तुज कुमला जीअरवा ओ पिना मोरा-ए राग ॥

• ॥ सुनो अरजी आ मारी उं प्रचु मोरा, सुनो अरज
 आ मारी ॥ अजिनंदन जिनवर सुखकारी, सुनो अरज
 आ मारी ॥ होजी सुनो अरजी आ मारी ॥ ए टेक ।
 मंद मति हुं फदमां फुड्यो, चूड्यो सेवा तुमारी ।
 होजी चूड्यो ॥ सुनो ॥ अजिनदन ॥ १ ॥ जवजं
 जटकी शरन तमारे, हवे आव्यो हु हारी ॥ होज
 हवे ॥ सुनो ॥ अजिनंदन ॥ २ ॥ निज सेवक फ
 कृपा करीजे, रीजे ढीजे सुधारी ॥ होजी रीजे ॥
 सुनो ॥ अजिनंदन ॥ ३ ॥ तुम विन और न जाहुं

जिएंदा, साचुं मानो हुं वारी ॥ होजी साचुं ॥ सुनो ॥
 ॥ अजिनंदन ॥ ४ ॥ कहे जिनदास अब मन मेरे,
 लागी तो संग ताली ॥ होजी लागी ॥ सुनो ॥
 अजिनंदन ॥ ५ ॥

॥ श्री जिनराज विनति ॥

॥ परम देवनो देव तुं खरो, धर्म ताहरो में नथी
 कर्यो ॥ अरसमां चम्यो तुं नवि गम्यो, करमपाशमां हुं
 अति दम्यो ॥ १ ॥ गरीब प्राणीना प्राण में हएया, अस
 आवरो जीव ना गएया ॥ अरर धूजतां श्रोतथी करी,
 अरर एहनी घात में करी ॥ २ ॥ नृप सत्ता जइ जूठ
 खोलीयो, धर्मी जीवनो मर्म खोलीयो ॥ सदगुणी सिरे
 आल आपीआं, अरर पापना पंथ आपीआ ॥ ३ ॥
 अदत्तदानथी हुं नथी करयो, परधनो हरी केर में करयो
 ॥ तस्करो तणा तानमां चड्यो, अरर पापना पुंजमां
 पड्यो ॥ ४ ॥ रमणी रंगमां अंग उल्लस्युं, विषयसुखमां
 चित्तमुं वस्युं ॥ शीयल जंगनो दोष ना गएयो, अरर
 हाय रे बावरो बन्यो ॥ ५ ॥ अथिर दाममां हुं रह्यो
 अमी, धरमवात तो चित्त ना चमी ॥ उद्धत मोहमां
 हुं थयो अति, अरर साहरी शी थशे गति ॥ ६ ॥ क्रूर

चावथी क्रोध मे करयो, सुजन झूहवी रोषमां रह्यो ॥
 सर्व लोकथी रूंप ठोमीयो, तूल तृण थकी तुह्र हुं थयो
 ॥ ७ ॥ चित्त मत्सरे मे बहु कर्यो, ममत चावथी हु
 अति जरयो ॥ मद ठके चढ्यो मानमां अढ्यो, विनय
 ना करयो गर्वमां पढ्यो ॥ ८ ॥ दगलवाजीए हु बहु
 रस्यो, कपट क्रूरमां कोल निर्गम्यो ॥ मुख मीतुं लवी
 सृष्टि जोलवी, अरर केम रे झूलशे जवि ॥ ९ ॥ धन
 हीरा कणी मोती ने मणि, अबुर आथनो हुं थयो धणी
 ॥ अधिक आश तो अतरे घणी, अरर लोचने ना
 शक्यो हणी ॥ १० ॥ मगन मनथी साजनो परे, हित
 घणु धरी पोपीआ खरे ॥ तरकटी तणा फंदमां फस्यो,
 अरर रागथी ना लह्यो कस्यो ॥ ११ ॥ दिल दुःखी रह्यो
 छेप दरदमां, गुण नवि गण्यो मेरी मरदमां ॥ अरुण
 आंखमी रोषथी जरी, अरर सर्वनो हुं थयो अरि ॥ १२ ॥
 निज कुटुंब ने नात जातमां, वढी पढ्यो हु तो वात
 वातमां ॥ अबुज आतमा गर्तमां गढ्यो, अरर क्लेशथी
 कूपमां पढ्यो ॥ १३ ॥ अणहुतां दीयां आल अन्यने,
 अलीक उच्चरी मेढ्यु धनने ॥ सद्गुरु तणो संग ना
 करयो, अरर पापथी पिरु मे जरयो ॥ १४ ॥ परनी चोवटे

(चुगली करी, नृप सत्ता जूठी साहेदी जरी ॥ पिशुन
 धूर्त हूं लांच लालची, पशुपणे रघो पापमां मची ॥ १५ ॥
 पर तणी पुठे दोष दाखवा, जश तणो घणो स्वाद
 चाखवा ॥ रहस बात तो में करी ठती, जवअरण्यमां
 हूं नूढ्यो अति ॥ १६ ॥ अधम काममां हर्ष में धरयो,
 धरस ध्यानसां अमर्षे जरयो ॥ दुर्गणे रच्यो मोहमां
 सच्यो, अरर कर्मना नृत्यसां नच्यो ॥ १७ ॥ ठल विधि
 करी अर्थ संचीआ, जूठ लकी घणा लोक वंचीआ ॥
 पतित रांकने ठेतया बहु, अरर पाप हूं केटलां कहूं
 ॥ १८ ॥ शरीर शुद्ध तो में नवि कर्यो, जम प्रसंगयी
 योनिमां फर्यो ॥ शुद्ध विचार तो चित्त ना चड्यो,
 सिध्या शक्य तो मुजने नड्यो ॥ १९ ॥ कर्म बेरीए
 वींटीयो मने, करगरी करुं अरज जिनने ॥ कर ग्रहो
 अचु रांक जाणीने, दिव दया धरो मेहेर आणीने ॥
 २० ॥ तकसीरो घणी कोशके गणी, वकीसो गुना जग-
 तना धणी ॥ रीऊ करी खरी त्रीनी त्रांसने, शरण राखजो
 रंखोलीदासने ॥ २१ ॥ नज जुजा अरि चंद्रमा ग्रही,
 अपटण प्राचीथी पश्चिमे सही ॥ चतुर्मासमां बिंदरे रही,
 इंदलित ठंदनी जोरु एकही ॥ २२ ॥

॥ श्री सीमधर जिन स्तवन ॥

॥ सुणो चदाजी, सीमंधर परमात्म यासे जाजो

॥ मुज विनतनी, प्रेम धरीने एणी परे तुमे संचला-

वजो ॥ ए आंकणी ॥ जे त्रण जुवननो नायक ठे, जस

चोसठ इंद्र पायक ठे, नाण दरिसण जेहने द्वायक ठे

॥ सुणो ॥ १ ॥ जेनी कंचनवरणी काया ठे, जस धोरी

लंठन पाया ठे, पुरुरीगिणि नगरीनो राया ठे ॥ सुणो ॥

॥ २ ॥ वार पर्पदा मांहि विराजे ठे, जस चोत्रीश अति-

शय ठाजे ठे, गुण पांत्रीश वाणीए गाजे ठे ॥ सुणो ॥

३ ॥ जविजनने ते पक्रिवोहे ठे, तुम अधिक शीतल

गुण सोहे ठे, रूप देखी जविजन मोहे ठे ॥ सुणो ॥

॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसीयो तु, पण नरतमां छूरे

वसीयो तु, महा मोहराय कर फसीयो तुं ॥ सुणो ॥

॥ ५ ॥ पण साहिव चित्तमां धरीयो ठे, तुम आण

खड्ग कर ग्रहीजं ठे, पण कांइक मुजथी करीयो ठे ॥

सुणो ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पुंठ हवे पूरो, कहे पद्मवि-

जथ थाजं गूरो, तो वाधे मुज मन अति

नूरो ॥ सुणो ॥ ७ ॥

॥ श्री सीमंधर जिन स्तवन ॥

॥ धन्य धन्य महाविदेहजी, पुंरुरीगिणि गाम ॥
धन्य तिहांनां मानवीजी, नित्य उठी करे रे प्रणाम ॥
सीमंधर स्वामी कहींये रे हुं, महाविदेह आवीश ॥
जयवंता जिनवर कहींये रे हुं तुमने वांदीश ॥ १ ॥
चांदलीया संदेशकोजी, कहेजो सीमंधर स्वाम ॥ चर-
नक्षेत्रनां मानवीजी, नित्य उठी करे रे प्रणाम ॥ सी०
॥ २ ॥ समवसरण देवे रच्युं तिहां, चोसठ इंद्र नरेश
॥ सोना तणे सिंहासन बेठा, चामर ठत्र धरेश ॥ सी०
॥ ३ ॥ इंद्राणी काढे गहुंलीजी, सोतीना चोक पूरेश ॥
लली लली लीये, लूठणांजी, जिनवर दीये उपदेश ॥
सी० ॥ ४ ॥ एहवे समे में सांजट्युंजी, हवे करवां
पच्चरकाण ॥ पोथी ठवणी तिहांकणेजी, अमृत वाणी
वखाण ॥ सी० ॥ ५ ॥ रायने वहाला घोडलाजी, बेपो-
रीने वहालां ठे दाम ॥ अमने वहाला सीमंधर स्वामी,
जिम सीताने श्रीराम ॥ सी० ॥ ६ ॥ नहीं मागुं प्रभु
राज रुद्धिजी, नहीं मागुं गरथ जंमार ॥ हुं मागुं प्रभु
एटलुंजी, तुम पासे अवतार ॥ सी० ॥ ७ ॥ दैव न
दीधी पांखनीजी, केस करी आवुं रे हजूर ॥ मुजरो

माहरो मानजोजी, प्रह उगमते सूर ॥ सी० ॥ ७ ॥
 समयसुंदरनी विनतिजी, मानजो वारंवार ॥ वे कर
 जोमी विनवुंजी, विनतकी अक्धार ॥ सी० ॥ ८ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथ स्तुति ॥

॥ सकलकुशलवल्ली पुष्करावर्त्तमेघो, दुरिततिमिर-
 चानुः कल्पवृक्षोपमानः ॥ ज्वजलनिधिपोतः सर्वसंप-
 त्तिहेतुः, स ज्वरतु ज्वतां जो । श्रेयसे पार्श्वनाथः ॥ १ ॥
 दशावतारो ज्वनैकमहो, गोपांगनासेवितपादपद्मः ॥
 श्रीपार्श्वनाथः पुरुषोत्तमोऽयं, ददातुवः सर्वसमीहितानि
 ॥ २ ॥ श्रीपार्श्वनाथो ज्वपापताप, -प्रशांतधाराधरचारु-
 रूपः ॥ विघ्नौघहंता प्रणतोरगेड, समस्तकल्याणकरो
 जिनेद्रः ॥ ३ ॥

॥ श्री शांति जिन स्तवन ॥

॥ शांतिजीनु मुखरु जोवा जणीजी, मुज मनरुं रे
 लोनाय ॥ चित्तरु जाणे उमी मिल्जुजी, पण प्रजु केम
 रे मिलाय ॥ शांति० ॥ १ ॥ दैव न दीधी मुजने पांख-
 कीजी, आवु हुं केम रे हजूर ॥ पण प्रजु जाणजो वद-
 नाजी, आतमराम सनूर ॥ शांति० ॥ २ ॥ गजपुरी
 नगरीनो राजीठंजी, अचिरादेवीनंदन एह ॥ जिम रे

पारेवमो राखीउंजी, तिम प्रभु राखजो नेह ॥ शांति०
॥ ३ ॥ मस्तके मुगट सोहामणोजी, काने कुंमल
श्रीकार ॥ बांहे बाजुबंध वहेरखाजी, कंठे नवसरो
हार ॥ शांति० ॥ ४ ॥ आज जले रे दिन उगी-
योजी, दूधडे वूठका मेह ॥ वाचक सहजसुंदर तणोजी,
नित्य लान्न प्रभु गुणगेह ॥ शांति० ॥ ५ ॥

॥ श्रो पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ पास शंखेश्वरा सार कर सेवकां, देवका एवमी
वार लागे ॥ कोमी कर जोमी दरवार आगे खका,
ठाकुरा चाकुरा मान मागे ॥ १ ॥ प्रगट था मासजी
मेली परुदो परो, मोर असुराणने आप ठोको ॥
मुज महीराण मंजुसमां पेसीने, खलकना नाथजी
बंध खोलो ॥ २ ॥ जगतमां देव जगदीश तुं जागतो,
। एम शुं आज जिनराज उंधे ॥ मीटा दानेश्वरी तेहने
। दाखीए, दान दे जेह जग काल मोंधे ॥ ३ ॥ चीर
। पकी जादवा जोर लागी जरा, ततक्षण त्रीकमे तुज
हसंजार्यो ॥ प्रगट पातालथी पलकमां तें प्रभु, जक्त
। जन तेहनो जय निवारयो ॥ ४ ॥ आदि अनादि
। अरिहंत तुं एक ठे, दीनदयाल ठे कोण डुजो ॥

उदयरत्न कहे प्रगट प्रभु पासजी, पामी नयनंजनो
एह पूजो ॥ ५ ॥

॥ श्री वीर प्रभुनु चैत्यवदन ॥

॥ सिद्धार्थसुत वंदीए, त्रिगलानो जायो ॥ क्वत्र
कुरुमां अवतरयो, सुर नरपति गायो ॥ १ ॥ मृग
पति लंठन पाउले, सात हाथनी काया ॥ वहोते
वरसनं आउखुं, वीर जिनेश्वर राया ॥ २ ॥ क्कमा
विजय जिनराजना ए, उत्तम गुण अवदात ॥ सात
बोलथी वर्णव्या, पद्मविजय विख्यात ॥ ३ ॥

॥ श्रीप्रभुना वर्णनु चैत्यवदन ॥

॥ पद्मप्रत्त ने वासुपूज्य, दोय राता कहीए ।
चद्रप्रत्त ने सुविधिनाथ, दोय उज्ज्वल लहीए ।
१ ॥ महिनाथ ने पार्श्वनाथ, दो नीला निरखा ॥
मुनिसुव्रत ने नेमनाथ, दो अजन सरिखा ॥ २ ॥
सोले जिन कंचन समा ए, एवा जिन चोवीश ॥ धीर-
विमल पकित तणो, ज्ञानविमल कहे शिश ॥ ३ ॥

॥ श्री प्रभुना भवनु चैत्यवदन ॥

॥ प्रथम तीर्थकर तणा हुवा, नव तेर कहीजे ॥
शांति तणा नव वारा सार, नव नव नेम लहीजे ॥ १ ॥

दश जव पास जिणंदने, सत्यावीश श्री वीर ॥ शेष
तीर्थंकर त्रिहुं जवे, पाम्या जवजल तीर ॥ १ ॥ ज्यांश्री
समकित फरसीयुं, त्यांश्री गणीए तेह ॥ धीरविमल
पंकित तणो, ज्ञानविमल गुणगेह ॥ ३ ॥

॥ श्री अरिहंतनां लंछननुं चैत्यवंदन ॥

॥ वृषज लंठन रीखजदेव, अजित लंठन हाथी ॥
संजव लंठन घोरुलो, शिवपुरनो साथी ॥ १ ॥ अजि-
नंदन लंठन कपि, क्रौंच लंठन सुमति ॥ पद्म लंठन
पद्म प्रभु, विश्वदेवा सुमति ॥ २ ॥ सुपार्श्व लंठन
साथीउं, चंद्र प्रभु लंठन चंद्र ॥ मगर लंठन सुविधि
प्रभु, श्रीवह लंठन शीतल जिणंद ॥ ३ ॥ लंठन खड्गी
श्रेयांसने, वासुपूज्यने महिष ॥ वराह लंठन पांये
विमलदेव, जविथा ते नामो शीष ॥ ४ ॥ सिचाणो जिन
अनंतने ए, वज्र लंठन श्री धर्म ॥ शांति लंठन
मृगलो, राखे धरमनो जर्म ॥ ५ ॥ कुंथु लंठन बोकरी,
अर जिन नंदावर्त ॥ घट लंठन महि प्रभु, काचबो
मुनिसुव्रत ॥ ६ ॥ नमि जिनने नीलोकमल, पामीए
पंकज मांहि ॥ शंख लंठन प्रभु नेमजी, दीसे उंचे
आंहि ॥ ७ ॥ पारसनाथजीने चरण सर्प, नीलवर्ण
शोजित ॥ सिंह लंठन कंचन तनु, वर्धमान विख्यात

॥ ७ ॥ इणी परे लंठन चितवी ए, उंलखीए जिनराय
 ॥ ज्ञानविमल प्रभु सेवतां, लक्ष्मीरत्न सूरिराय ॥ ८ ॥

॥ श्री रूपभदेयनु स्तवन ॥

॥ प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए, जास सुगंधी रे काय
 ॥ कटपवृद्ध परे तास इद्राणी नयन जे, चृग परे लप-
 टाय ॥ १ ॥ रोग उरग तुज नवि नडे, अमृत जेह
 आस्वाद ॥ तेहथी प्रतिहत तेह मानु कोइ नवि करे,
 जगमां तुमशु रे वाद ॥ २ ॥ वगर धोइ तुज निरमली,
 काया कंचनवान ॥ नहीं प्रस्वेद लगार तारे तु तेहने,
 जे धरे ताहसं ध्यान ॥ ३ ॥ राग गयो तुज मन थकी,
 तेहमां चित्र न कोय ॥ रुधिर आमिपथी गोग गयो
 तुज जन्मथी, दुध सहोदर होय ॥ ४ ॥ श्वासोश्वास
 कमल समो, तुज लोकोत्तर वाद ॥ देखे न आहार
 निहार चर्मचक्षु धणी, एवा तुज अवदात ॥ ५ ॥ चार
 अतिशय मूलथी, उंगणीश देवना कीध ॥ कर्म
 खप्यथी अग्यार चोत्रीश इम अतिशया, समवायांगे
 प्रसिद्ध ॥ ६ ॥ जिन उत्तम गुण गावतां, गुण आवे
 निज अग ॥ पद्मविजय कहे एम समय प्रभु पालजो,
 जेम थाउं अक्षय अन्नग ॥ ७ ॥

॥ श्री अजित जिन स्तवन ॥

॥ प्रीतलकी बंधाणी रे अजित जिणंदशुं, कांइ
प्रभु पाखे क्षण एके मन न सुहाय जो ॥ ध्याननी
ताली रे लागी नेहशुं, जलद घटार जिम शिव सुख
वाहन दाय जो ॥ प्री० ॥ १ ॥ नेहधेलुं मन माहरुं रे
प्रभु अलजे रहे, तन धन मन ए कारणथी प्रभु मुज
जो ॥ मारे तो आधार रे साहिव रावलो, अंतर्गतनुं
प्रभु आगल कहुं गुज्ज जो ॥ प्री० ॥ २ ॥ साहेव ते
साचो रे जगमां जाणीए, सेवकनां जे सहेजे सुधारे
काज जो ॥ एहवे रे आचरणे किम कवीने रहुं, विरुद
तुमारो तारण तरण जिहाज जो ॥ प्री० ॥ ३ ॥ तार-
कता तुज मांहे रे श्रवणे सांजली, ते जणी हुं आव्यो
हुं दीनदयाल जो ॥ तुज करुणानी लेहरे रे मुज कारज
सरे, शुं घणुं कहीए जाण आगल कृपाल जो ॥ प्री०
॥ ४ ॥ करुणादिक कीधी रे सेवक उपरे, जव जय
जावठ जांगी जक्ति प्रसन्न जो ॥ मनवांठित फलियां
रे जिनआलंबने, कर जोमीने मोहन कहे मनरंग
जो ॥ प्री० ॥ ५ ॥



॥ श्री संभवनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ साहिव सांजलो रे, संजव अरज हमारी ॥

जवोचव हुं जम्यो रे, न लही सेवा तुमारी ॥ नरक

निगोदमां रे, तिहां हुं बहु जव जमीयो ॥ तुम विना

दुःख सहां रे, अहोनिश क्रोधे धमधमीयो ॥ साहेव०

॥ १ ॥ इंद्रियवश पड्यो रे, पाट्यां व्रत नवि सुंसे ॥

त्रस पण नवि गण्या रे, हणीया थावर हुंशे ॥ व्रत

चित्त नवि धरयां रे, वीजु साचु न वोढ्युं ॥ पापनी

गोठकी रे, तिहां मे हड्ढु खोढ्युं ॥ साहेव० ॥ २ ॥

चोरी मे करी रे, चलविह अदत्त न टाढ्यु ॥ श्री जिन

आणशु रे, में नवि संयम पाढ्युं ॥ मधुकर तणी परे

रे, शुद्ध न आहार गवेख्यो ॥ रसना लालचे रे,

निरस पिरु उवेख्यो ॥ साहेव० ॥ ३ ॥ नरजव दोहिलो

रे, पामी मोहवश पकीं ॥ परस्त्री देखीने रे, मुजमन

तिहां जइ अकीं ॥ काम न को सरयां रे, पापे पिरु

मे चरीं ॥ शुद्ध बुद्ध नवि रही रे, तेणे नवि आतम

तरीं ॥ साहेव० ॥ ४ ॥ लक्ष्मीनी लालचे रे, मे बहु

दीनता दाखी ॥ तोपण नवि मली रे, तो नवि रही

राखी ॥ जे जन अजिलखे रे, ते तो तेहथी नासे ॥

नृण सम जे गणे रे, तेहनी नित्य रहे पासे ॥ साहेब०
 ॥ ५ ॥ धन्य धन्य ते नरा रे, एहनो मोह विठोकी ॥
 विषय निवारीने रे, जेहने धर्ममां जोकी ॥ अजदय ते
 में जख्यां रे, रात्रिचोजन कीधां ॥ व्रत ठ नवि पालीयां
 रे, जेहवां मूलशी लीधां ॥ साहेब० ॥ ६ ॥ अनंत जव
 हुं जम्यो रे, जमतां साहिब मलीयो ॥ तुम विना
 कोण दीये रे, बोधरण मुज वलीयो ॥ संजव आपजो
 रे, चरणकमल तुम्ह सेवा ॥ नय एम विनवे रे, सुणजो
 देवाधिदेवा ॥ साहिब० ॥ ७ ॥

॥ श्री अभिनंदन जिन स्तवन ॥

॥ अजिनंदन जिन दरिशाण तरसीए, दरिशाण
 दुर्लज देव ॥ मत मत जेदे रे जो जइ पूठीए, सहु थापे
 अहमेव ॥ अजिनंदन० ॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिशाण
 दोहलुं, निर्णय सकल विशेष ॥ मदमें घेरयो रे आंधो
 केस करे, रवि शशि रूप विलेख ॥ अजिनंदन० ॥ २ ॥
 हेतु विवादे हो चित्त धरी जोइए, अति दुर्गम नय-
 वाद ॥ आगमवादे हो गुरुगम को नहीं, ए सबलो
 विषवाद ॥ अजिनंदन० ॥ ३ ॥ घाति कुंगर आका
 अति घणो, तुज दरिशाण जगनाथ ॥ धीठाइ करी मारग

संचरुं, सेगुं कोइ न साथ ॥ अजिनंदन० ॥ ४ ॥ दरि
 शण दरिशण रटतो जो फरु, तो रणरोऊ समान ।
 जेहने पिपासा हो अमृतपाननी, किम जांजे विषपान
 ॥ अजिनंदन० ॥ ५ ॥ तरस न आवे हो मरण जीवन
 तणो, सीजे जो दरिशण काज ॥ दरिशण दुर्लभ सुलभ
 कृपा थकी, आनदघन महाराज ॥ अजिनंदन० ॥ ६ ॥

॥ श्री सुमति जिन स्तवन ॥

॥ मोहना माती द्यो हमारो-ए देशी ॥

॥ अतुलीवल अरिहंत नमीजे, मन तनु वचन
 विकार वमीजे ॥ श्री जिन केरी आण वहीजे, तो मन-
 वांछित सहेजे लीजे ॥ सेवीए जवि सुमति जिणंदा,
 टालीए जवफंदा ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अशुजाश्रवनो
 संग न कीजे, समकित शुद्ध सुधारस पीजे ॥ अजय
 सुपात्र दान दोय दीजे, निज गुरुनी जली जक्तिवदीजे
 ॥ से० ॥ टाली० ॥ २ ॥ सुमति जिनेश्वर सुमति जो
 आपे, जिन दरशनथी दुर्गति कापे ॥ नाम जपो अष्टो-
 त्तर शत जापे, मोहतिमिर हसे तप रवितापे ॥ से० ॥
 टाली० ॥ ३ ॥ त्रिकरण शुद्ध नवनिध निर्दूषण, पहेरो
 शील सखील विनूषण ॥ सगयथी नित्य रहीए बुखा,

जबलगे नन्न अश्वगाहे पूखा ॥ से० ॥ टाली० ॥ ४ ॥
धर्मनुं काम ते आवशुं कीजे, गुरु मुख वचन विनय करी
कीजे ॥ जबसमुद्र तरवां वांठीजे, जरु चेतन वेहु जिन्न
दखीजे ॥ से० ॥ टाली० ॥ ५ ॥ पंचमगतिगामी प्रभु
पाया, सवि कारज सिद्धां दिल जाया ॥ साक्षाग्यचंद्र
गुरु सुपसाया, स्वरूपचंद्रे जिनना गुण गाया ॥
से० ॥ टा० ॥ ६ ॥

॥ श्री पद्मप्रभुनुं स्तवन ॥

॥ श्री पद्मप्रभु जिनराजजी, तनु रक्त कमल सम
वान हो ॥ ज्ञान अनंतशुं जाणता, दिल करुणगेह
समान हो ॥ श्री पद्म० ॥ १ ॥ केवलदर्शन देखीने, कहे
लोक अलोकनी वात हो ॥ समयंतर उपयोगथी, साकार
अनाकार जात हो ॥ श्री पद्म० ॥ २ ॥ जावि श्रूत त्रि-
ष्यनी, त्रि आगल कहे जगनाथ हो ॥ चतुमुखे वाणी
प्ररूपता, तारण कारण त्रवपाथ हो ॥ श्री पद्म० ॥ ३ ॥
पुष्कर मेघ थकी त्रली, बोधि अंकुर रोपणहार हो ॥
श्रद्धा जाषण रमणता, मूल कंद खंद निरधार हो ॥ श्री
पद्म० ॥ ४ ॥ शम संवेग निर्वेदता, अनुकंपा अने
आस्तिक्य हो ॥ शाखा चार अने त्रलो, ऊर्ध्व शाखा

ते विन्मि आधिक्य हो ॥ श्री पद्म ॥ ५ ॥ पत्र संपत्ति
 सुखरूपीया, सुरसुख ठे त्यां फूल हो ॥ फल शिवसुख
 पामे नवि जिहां, अक्षय स्थिति अनुकूल हो ॥ श्री
 पद्म ॥ ६ ॥ चाव मेघ बहु गुण जाणीए, जिनवाणी
 सकल मल शोध हो ॥ वाणी नवनिस्तारिणी, ते सुणी
 पाम्यो प्रतिबोध हो ॥ श्री पद्म ॥ ७ ॥ ते उपकारी
 त्रिलोकने आपे अविचल सुखवास हो ॥ सौजाग्यचद्र
 पसायथी, कहे स्वरूपचंद्र गुण चास हो ॥ श्री पद्म ॥ ८ ॥

॥ श्री सुपार्थ जिन स्तवन ॥

॥ दक्षिण दोहिलो हो राज-ए देशी ॥

॥ श्री जिन सातमो राज, स्वामी सुपासजी राज,
 तेहनुं दर्शन हो लहीए पूरण पुण्यथी ॥ मनु शुभ ध्यानी
 हो राज, समकितदानी हो राज, गोंजा अधिक हो
 कहीए सुर नर अन्यथी ॥ १ ॥ जगत शिरोमणी राज,
 पास जिणंदनो राज, नमीए, तेहने रे शुद्ध चावित
 नक्तिथी ॥ जिनप्रतिमाने हो राज, रूप विद्याने हो
 राज, पूजो प्रणमो हो ध्यावो शुभ स्कर युक्तिथी ॥ २ ॥
 वांछित काजे हो राज, स्वामी निवाजे हो राज, ते जिन
 आपे हो रुमी शिवपुर सपदा ॥ जस मुख दीठे हो राज,

रातक नीठे हो राज, नामे नावे हो दारिद्र दोहगता,
 कदा ॥ ३ ॥ बाह्य अच्यंतर हो राज, शुभ गुण शोभता
 हो राज, सहस्र अष्टोत्तर हो आपे अनंत गुणाकरा ॥
 दोष न दीसे हो राज, अढार अनेरा हो राज, निज
 गुण निर्मल हो ज्ञासे जे निशाकरा ॥ ४ ॥ नयरी वाणा-
 रसी हो राज, रयणे उद्धसी हो राज, तिहां प्रभु जन्म्या
 हो स्वामी नर सुर इंदना ॥ साँचाग्यचंद्रनो हो राज,
 सेवक बोले हो राज, स्वामी साची हो मानो स्वरू-
 पनी वंदना ॥ ५ ॥

॥ श्री चंद्रप्रभुजोतुं स्तवन ॥

॥ जिनजी चंद्रप्रभु अवधारो के, नाथ नीहालजो रे
 लोल ॥ बमणी बिरुद् गरीबनिवाजनी, वाचा पालजो रे
 लोल ॥ १ ॥ हरखे हुं तुम शरणे आव्यो के, मुजने
 राखजो रे लोल ॥ चोरटा चार चुगल जे चूमा के, तेने
 दूर नाखजो रे लोल ॥ २ ॥ प्रभुजी पंच तणी परशंसा
 के, रुमी थापजो रे लोल ॥ मोहन महेर करीने मुजने,
 दरिशन आपजो रे लोल ॥ ३ ॥ तारक तुम पालव में
 जाव्यो के, हवे मुने तारजो रे लोल ॥ कुतरी कुमति
 थइ ठे केडे के, तेने वारजो रे लोल ॥ ४ ॥ सुंदरी

सुमति सोहागण सारी के, प्यारी ठे घणी रे लोल ॥
 तातजी ते विण जीवे चौद के, जुवन करयु आंगण रे
 लोल ॥ ५ ॥ लख गुण लखमणा राणीना जाया के, मुज
 मन आवजो रे लोल ॥ अनुपम अनुभव अमृत मीठी
 के, सुखनी लावजो रे लोल ॥ ६ ॥ दीपती दोढसो
 धनुष्य परिमाण के, प्रजुजीनी देहनी रे लोल ॥ देवनी
 दश पूरव टाख मान के, आयुष्य बेलनी रे लोल ॥ ७ ॥
 निर्गुण निरागी पण हु रागी के, मन मांहे रे रह्यो
 लोल ॥ शुभ गुरु सुमतिविजय सुपसाय के, रामे सुख
 लह्यो रे लोल ॥ ८ ॥

॥ श्री सुविधि जिन स्तवन ॥

॥ हवे न जाउ मही वेचवा रे लोल-ए देशी ॥

॥ साहेव सुविधि जिणदने रे लो, पूजो धरी मन
 खंत ॥ शुभ ज्ञात्रिणी रे, चालो जइए जिनवर वंदवा रे
 लो ॥ उमंग आणी अगमां रे लो, आलम सूको दिगत
 ॥ शु० ॥ चा० ॥ १ ॥ चरण पावन थाये चालतां रे
 लो, दर्शने नयन पवित्र ॥ शु० ॥ पंचाङ्गिगमने सजा-
 रीने रे लो, निसिही त्रिकरण विचित्र ॥ शु० ॥ चा०
 ॥ २ ॥ शिर नामी कर जोनी रे लो, वंदन करो एक-

चित्त ॥ शु० द्रव्य चाव तव साचवी रे लो, शुद्ध करो
 समकित्त ॥ शु० ॥ चा० ॥ ३ ॥ जिनप्रतिमा जिनसारखी
 रे लो, एहमां नहीं संदेह ॥ शु० ॥ तेहनी जक्ति कस्या
 थकी रे लो, लंहीए सुख अठेह ॥ शु० ॥ चा० ॥ ४ ॥
 शोभन विधि सुविधि प्रभु रे लो, मगर लंठन महा-
 राय ॥ शु० ॥ दीजे सौजाग्य पद सेवतां रे लो, आत्म
 स्वरूप पसाय ॥ शु० चा० ॥ ५ ॥

॥ श्री शीतलनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ महारे शीतल जिनशुं लागी पूरण प्रीत जो, साहे-
 वजीनी सेवा जवदुःख चांजशे रे जो ॥ जिनप्रतिमां
 जिन सारखी दिलमां जोय जो, जक्ति करतां प्रभुजी
 खूब निवाजशे रे जो, ॥ १ ॥ जेणे जोतां लाधुं रत्न चिंता-
 मणि हाथ जो, तेहने रे मूकीने कुण ग्रहे कांचने रे
 जो ॥ जेणे मनशुं कीधां जूठानां पच्चस्काण जो, ते नर
 बोले सो वाते पण साचने रे जो ॥ २ ॥ जेपाम्या परि-
 गल प्रीते अमृतपान जो, खारुं जल ते पोवा कहो कुण
 मन करे रे जो ॥ जे घरमां बेठा पाम्या लखमी जोर
 जो ॥ धनने काजे देश देशांतर कोण फरे रे जो ॥ ३ ॥
 जेणे सेव्या पूरण चित्ते अरिहंत देव जो, तेहनां रे

मन मांहे किम वीजा गमे रे जो ॥ ए तो दोपरहित
 निकलंकी गुणजंकार जो, मनहुं रे अमारुं प्रभु साथे
 रमे रे जो ॥ ४ ॥ मुने मलीया पूरण चाग्ये शीतल-
 नाथ जो, देखीने हु हरख्यो तन मन रंजोयां रे जो,
 ॥ ए तो दोलतदार्या प्रभुजीनो देदार जो, में तो जोतां
 प्रभुने कर्मदल गजीयां रे जो ॥ ५ ॥ श्री विधिपद्धे
 देहरे सुंदरा नगर मोजार जो, आंगी रे नवरंगी
 शिखर सोहामणी रे जो ॥ ए तो तेजे दीपे जगमग
 ज्योति विशाल जो, सोहे दे मनमोहन मूर्ति रलिया-
 मणी रे जो ॥ ६ ॥ सय सत्तर एकाशीए रुमो चाड्रव
 मास जो, स्तवन रच्युं ए प्रेमे परव पजुसणे रे जो ॥
 श्री सहजसुंदर शिष्य बोले झणी परे वाणी जो, चावे
 रे नित्य लाज कहे हरपे घणे रे जो ॥ ७ ॥

॥ श्री श्रेयास जिन स्तवन ॥

॥ कर्म न छूटे रे प्राणीया-ए देशी ॥

॥ तुमे बहु मित्री रे साहिवा, मारे तो मन एक
 ॥ तुम विण वीजो रे नवि गमे, ए मुज मोटी रे टेक ॥
 श्री श्रेयांस कृपा करो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मन राखो
 तुमे सवि तणां, पण किहां एक मली जाउ ॥ लल-

चावो लख लोकने, साथी सहेज न थारु ॥ श्री० ॥ १ ॥
 राग नरे जन मन रहो, पण तिहुं काल वैराग ॥ चित्त
 तुमारा रे समुद्रनो, कोइ न पामे रे ताग ॥ श्री० ॥
 ३ ॥ एवा शुं चित्त मेलव्युं, मेलव्युं पहेलां न कांइ ॥
 सेवक निपट अबूऊ ठे, निर्वहेशो तुमे सांइ ॥ श्री०
 ॥ ४ ॥ निरागीशुं रे किम मले, पण मलवानो एकांत ॥
 वाचक यश कहे मुज मिट्यो, नक्ते कामण तंत ॥ श्री० ॥ ५ ॥
 ॥ श्री वासुपूज्यनुं स्तवन ॥

॥ वासुपूज्य जिन त्रिभुवनस्वामी, घननामी पर-
 नामी रे ॥ निराकार साकार सचेतन, करम करम फल
 कामी रे ॥ वा० ॥ १ ॥ निराकार अज्ञेद संग्राहक,
 ज्ञेदग्राहक साकारो रे ॥ दर्शन ज्ञान दुज्ञेद चेतन,
 वस्तु ग्रहण व्यापारो रे ॥ वा० ॥ २ ॥ कर्ता परिणामी
 परिणामो, कर्म जे जीवे करीए रे ॥ एक अनेक रूप
 नयवादे, नियते नथ अनुसरीए रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ दुःख
 सुख रूप करम फल जाणो, निश्चय एक आनंदो रे ॥
 चेतनता परिणाम न चूके, चेतन कहे जिनचंदो रे ॥
 वा० ॥ ४ ॥ परिणामी चेतन परिणामो, ज्ञान करम
 फल ज्ञावी रे ॥ ज्ञान करम फल चेतन कहीए, लेजो

तेह मनावी रे, ॥ वा० ॥ ५ ॥ आत्मज्ञानी श्रमण
कहावे, वीजा तो द्रव्यलिगी रे ॥ वस्तुगते जे वस्तु
प्रकाशे, आनंदघन मति संगी रे ॥ वा० ॥ ६ ॥

॥ विमल जिन स्तवन ॥

॥ विमल विमल गुणे राजता, बाह्य अच्यंतर जेद ॥
जिणंद जुहारीए ॥ सूची पुला दृष्टांतथी, मन वच काय
निवेद ॥ जि० ॥ १ ॥ स्पष्ट बद्ध निधत्त ते, निकाचित
अविशेष ॥ जि० ॥ आत्मप्रदेश मांहे मढ्या, मल ते
कर्म प्रदेश ॥ जि० ॥ २ ॥ असंख्य प्रदेशी चिन्मयी,
चेतन गुण सजाए ॥ जि० ॥ प्रदेशे प्रदेशे रमी रही,
वर्गणा कर्म अपार ॥ जि० ॥ ३ ॥ पंच रसायन जावना,
जावित आत्म तत्त्व ॥ जि० ॥ उपलता ठांकी कनकता,
पामे उत्तम सत्त्व ॥ जि० ॥ ४ ॥ प्रथम जावना श्रुत
तणी, वीजी तपतीय सत्त्व ॥ जि० ॥ तुरीय एकत्व
जावना, पंचम जाव सुसत्त्व ॥ जि० ॥ ५ ॥ एम करी
सर्व प्रदेशने, विमल करया जिनराय ॥ जि० ॥ नाम
यथार्थ विचारीने, नमे स्वरूप नित्य पाय ॥ जि० ॥ ६ ॥

॥ श्री अनंत जिन स्तवन ॥

॥ राग मारु-देशी करेलडानी ॥

॥ ज्ञान अनंतुं ताहरे रे, दरिशन ताहरे अनंत ॥

सुख अनंतमय साहिवा रे, वीर्य पण उद्धस्युं अनंत
॥ १ ॥ अनंत जिन आपजो रे, मुज एह अनंताचार
॥ अ० ॥ मुजने नहीं अवरशुं प्यार ॥ अ० ॥ तुजने
आपंतां शी वार ॥ अ० ॥ एह ठे तुज यशनो ठार ॥
अ० ॥ ए आंकणी ॥ आप खजीनो न खोलवो रे, नहीं
मलवानी चिंत ॥ मारे पोते ठे सवे रे, पण विचे आव-
रणनी चिंत ॥ अ० ॥ २ ॥ तप जप किरिया मोघरे रे,
जांजी पण जांगी न जाय ॥ एक तुज आण लगे थकी
रे, हेलासां परही थाय ॥ अ० ॥ ३ ॥ मात जणी मरु-
देवीने रे, जिन ऋषजे क्षणमां दीध ॥ आप पियारुं
विचारतां रे, इम किम वीतरागता सिद्ध ॥ अ० ॥ ४ ॥
ते माटे तस अरथीया रे, तुज प्रार्थता जे कोइ लोक ॥
तेहने आपो आपणी रे, तिहां न घटे कराववी टोक
॥ अ० ॥ ५ ॥ तेहने तेहनुं आपवुं रे, तिहां श्यो उपजे
ठे खेद ॥ प्रार्थना करते ताहरे रे, प्रभुताइनो पण
नहीं ठेद ॥ अ० ॥ ६ ॥ पाम्या पामे पामशे रे, ज्ञाना-
दिक जेह अनंत ॥ ते तुज आणाथी सवे रे, कहे
मानविजय उद्धसंत ॥ अनंत० ॥ ७ ॥

॥ श्री धर्म जिनेश्वरनु स्तवन ॥

॥ मुखने मरकलढे-ए देगी ॥

॥ श्री धर्म जिणंद दयालजी ॥ धर्म तणो दाता ॥

सवि जंतु तणो रखवालजी ॥ धर्म तणो त्राता ॥ जस

अमीय समाणी वाणीजी ॥ धर्म० ॥ जेह निसुणे त्रवि

प्राणीजी ॥ धर्म० ॥ १ ॥ तेहना चित्तनो मल जायजी ॥

धर्म० ॥ जिम कतक फले जल थायजी ॥ धर्म० ॥

निर्मलता तेहज धर्मजी ॥ धर्म० ॥ कलुपाड मिट्यानो

मर्मजी ॥ धर्म० ॥ २ ॥ निज धर्म तो सहज सजा-

वजी ॥ धर्म० ॥ तोहि तुज निमित्त प्रजावजी ॥ धर्म० ॥

वनराजी फुलन शक्तिजी ॥ धर्म० ॥ पण श्रुतराजे होइ

व्यक्तिजी ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ कमलाकरे कमल विकासजी

॥ धर्म० ॥ सौरजता लखमीवासजी ॥ धर्म० ॥ ते दिन-

कर करणी जोयजी ॥ धर्म० ॥ इम धर्मदायक तु होयजी

॥ धर्म ॥ ४ ॥ ते माटे धर्मना रागीजी ॥ धर्म० ॥ तुज

पद सेवे वरुजागीजी ॥ धर्म० ॥ कहे मानविजय उव-

जायजी ॥ धर्म० ॥ निज अनुभव ज्ञान पसायजी ॥

धर्म० ॥ ५ ॥

॥ श्री शांति जिन स्तवन ॥

॥ शांति जिनेसर साहिबा रे, शांति तणो दातार
॥ सव्वुणा ॥ अंतरजामी ठो माहरा रे, आतमना आधार
॥ स० ॥ शांति० ॥ १ ॥ चित्त चाहे प्रभु चोकरी रे,
मन चाहे मलवाने काज ॥ स० ॥ नयण चाहे प्रभु
निरखवा रे, द्यो दरिशाण महाराज ॥ स० ॥ शांति०
॥ २ ॥ पलक न विसरो मन थकी रे, जेम मोरा मन
मेह ॥ स० ॥ एक पखा केम राखीए रे, राज कपटनो
नेह ॥ स० ॥ शांति० ॥ ३ ॥ नेह नजर नीहालतां रे,
वाधे बमणो वान ॥ स० ॥ अखूट खजानो प्रभु ताहरो
रे, दीजीए वंठित दान ॥ स० ॥ शांति० ॥ ४ ॥ आश
करे जे कोइ आपणी रे, नहीं मूकीए निराश ॥ स०
॥ सेवक जाणीने आपणो रे, दीजीए तास दिलास ॥
स० ॥ शांति० ॥ ५ ॥ दायकने देतां थका रे, कण
नवि लागे वार ॥ स० ॥ काज सरे निज दासनां रे, ए
मोटो उपगार ॥ स० ॥ शांति० ॥ ६ ॥ एवुं जाणीने
जगधणी रे, दिल मांहि धरजो प्यार ॥ स० ॥ रूपविजय
कविरायनो रे, मोहन जयजयकार ॥ स० ॥ शांति० ॥ ७ ॥

॥ श्री कुथुनाय स्तवन ॥

॥ केसरवरणो हो काढ कसुबो महारा लाल-ए देगी ॥

॥ कुंथु जिननी हो सेवा मागु महारा लाल, जिनय
करीने हो पाये लागु महारा लाल ॥ जगजीवन जिनर्ज
हो शण चव दीठा महारा लाल, साकर दुधथी हे
लागे मीठा महारा लाल ॥ १ ॥ समोसरण वेठा हो
प्रजुजा दीपे महारा लाल, समता रसशुं हो जगने
जीपे महारा लाल ॥ देवदुदुजि रुमा हो गगने वाजे
महारा लाल, वली तिहां किण जाणु हो जामंरुल
ठाजे महारा लाल ॥ २ ॥ चारे दिशि देवता हो चामर
ढाले महारा लाल, चवना फेरा हो प्रजुजी ढाले महारा
लाल ॥ जिनजीनुं दर्शन हो मोहनगारुं महारा लाल,
पल एक दिलथी हो हुं न विसारुं महारा लाल ॥ ३ ॥
सेवक उपर हो महेर धरीजे महारा लाल, सुखरुं दीजे
हो ताप हरीजे महारा लाल ॥ नित्य लाज प्रणमी हो
एम पयपे महारा लाल, प्रजुजीने समरी हो पातक
कपे महारा लाल ॥ ४ ॥

॥ श्री अरनाथनुं स्तवन ॥

॥ आणमरा जांगी-ए देगी ॥

॥ श्री अर जिन चवजलनो तारु, मुज मन लागे

वारु रे ॥ मनमोहन स्वामी ॥ वांह ग्रही ए त्रविजन
तारे, आणे शिवपुर आरे रे ॥ मन० ॥ १ ॥ तप जप
मोह महा तोफाने, नाव न चाले माने रे ॥ मन० ॥
पण नवि त्रय मुज हाथोहाथे, तारे ते ठे साथे रे ॥
मन० ॥ २ ॥ जगतने स्वर्ग स्वर्गथी अधिकुं, ज्ञानीने
फल देइ रे ॥ मन० ॥ काया कष्ट विना फल लहीए,
मनमां ध्यान धरेइ रे ॥ मन० ॥ ३ ॥ जे उपाय बहु-
विधनी रचना, योग माया ते जाणो रे ॥ मन० ॥ शुद्ध
द्रव्य गुण पर्याय ध्याने, शिव दीये प्रभु सपराणो रे ॥
मन० ॥ ४ ॥ प्रभु पद वलग्या ते रह्या ताजा, अलगा
अंग न साजा रे ॥ मन० ॥ वाचक यश कहे अवर न
ध्याउं, ए प्रभुना गुण गाउं रे ॥ मन० ॥ ५ ॥

॥ श्री महि जिनि स्तवन ॥

॥ सासु पूछे हे वहु-ए देशी ॥

॥ महिमा महि जिणंदनो, एके जीने कह्यो किम
जाय ॥ योग धरे त्रिन्न योगशुं, चालो पण योगना
हेखाय ॥ म० ॥ १ ॥ वयणे समजावे सत्ता, मन सम-
जावे अनुत्तर देव ॥ औदारिक काया प्रत्ये, देव समीपे
करावे सेव ॥ म० ॥ २ ॥ चाषा पण सवि श्रोताने,

निज निज ज्ञापाए समजाय ॥ हरखे निज निज रीजमां
 प्रभु तो निरविकार कहाय ॥ म० ॥ ३ ॥ योग अवस्था
 जिन तणी, ज्ञाता हुये तिणे समजाय ॥ चतुरनी वात
 चतुर लहे, मूढ विचारा देखी मुजाय ॥ म० ॥ ४ ॥
 मूख जन पामे नही, प्रभु गुणनो अनुभव रसखाद ॥ मान-
 विजय उवजायने, तेरसस्वादे गयो विखवाद ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन ॥

॥ पाडव पावे वदता-ए देशी ॥

॥ मुनिसुव्रत जिन वंदतां, अति उद्धसित तन मन
 थाय रे ॥ वदन अनोपम निरखतां, मारां जव जवनां
 दुःख जाय रे ॥ १ ॥ मारां जव जवनां दुःख जाय,
 जगद्गुरु जागतो ॥ सुखकद रे ॥ सुखकद अमंद आणद,
 परम गुरु जागतो ॥ सु० ॥ ए आंकणी ॥ निशिदिन
 सूतां जागतां, हृद्माथी न रहे छूर रे ॥ जव उपकार
 सजारीए, तव उपजे आनंद पूर रे ॥ त० ॥ ज० ॥ सु०
 ॥ २ ॥ प्रभु उपकार गुणे जरया, मन अवगुण एक न
 समाय रे ॥ गुण गुण अनुबंधी हुआ, ते तो अक्षय
 जाव कहाय रे ॥ ते० ॥ ज० ॥ सु० ॥ ३ ॥ अक्षय पद
 दीये प्रेम जे, प्रभुने ते अनुभव रूप रे ॥ अक्षर स्वर

गोचर नहीं, ए तो अकल अमाय अरूप रे ॥ ए० ॥
ज० ॥ सु० ॥ ४ ॥ अक्षर थोना गुण घणा, सज्जनना
ते न लिखाय रे ॥ वाचक यश कहे प्रेमथी, पण मन
मांहे परखाय रे ॥ प० ॥ ज० ॥ सु० ॥ ५ ॥

॥ श्री नमि जिन स्तवन ॥

॥ गरवो कोणे रे कोराव्यो के नंदजीना लाल रे—ए देशी ॥

॥ नमिनाथ जिणेसर वंदो के, दिलमां आणी रे ॥
ए तो विप्रा राणी नंदो के, गुणमणि खाणी रे ॥ ए
तो विजय नृपति कुलचंदो के ॥ दि० ॥ एहने दीठे पर-
मानंदो के ॥ गु० ॥ १ ॥ ए तो सोवन वर्ण सोहाया
के ॥ दि० ॥ एणे मेली संसारनी माया के ॥ गु० ॥ ए
तो वीतराग नाम कहाया के ॥ दि० ॥ ए तो मुक्ति
मंदिरमां वाया के ॥ गु० ॥ २ ॥ हुं तो जक्ति करुं चढे
चावे के ॥ दि० ॥ जेम जन्म मरण जय नावे के ॥ गु० ॥
धरे मंगलमाला आवे के ॥ दि० ॥ मुज मनहुं आनंद
पावे के ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रभुमूर्ति मुजने प्यारी के ॥ दि०
॥ जवियणने मोहनगारी के ॥ गु० ॥ गुण गावे सुर
नर नारी के ॥ दि० ॥ प्रभु आपे संपत्ति सारी के ॥
गु० ॥ ४ ॥ प्रभु तमे हुं सेवक तारो के ॥ दि० ॥ मुज

आवागमन निवारो के ॥ गु० ॥ मुज विनतनी अवधारोवे
॥ दि० ॥ । नत्य लाज ठे दास तुमारो के ॥ गु० ॥ ५ ॥

॥ श्री नेमनाथ जिन स्तवन ॥

॥ आवो जमाट प्राहुणा ए-देशी ॥

॥ निरख्यो नेमि जिणंद रे अरिहंताजी, राजेमनी
कयो ल्याग जगवंताजी ॥ ब्रह्मचारी सजम ग्रह्यो अरि०
अनुक्रमे थया वीतराग जगवंताजी ॥ १ ॥ चक्र चामर
सिहासने अरि० पादपीठ सकेत जग० ॥ ठत्र चाटे
आकाशमां अरि० देवदुष्टि वरतंत जगवंताजी ॥ २ ॥
सहस्र जोयण ध्वज सोहतो अरि० प्रभु आगल चालंत
जगधं० कनककमल तव उपरे अरि० विचरे पाय ठवंत
जगवंताजी ॥ ३ ॥ चार सुखे देइ देगना अरि० त्रण
गढ जाकजमाल जग० ॥ केशरी जस सुनवो अरि०
वाधे नहीं कोइ काल ॥ जग० ॥ ४ ॥ कांटा पण उध-
होइ अरि० सर्व लोक अनुकूल जग० ॥ खट ऋतु सम-
काले फले अरि० वायु नहीं प्रतिकूल जग० ॥ ५ ॥
पाणी सुगंध मुर कुसुमनी अरि० वृष्टि होइ गुं रसाल
जग० ॥ पंखी देइ सुप्रदक्षिणा अरि० वृद्ध नमे अता-
राल जग० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पद पद्मनी अरि० सेव

करे सुर कोरु जग० ॥ चार निकायना जघन्यथी अरि०
चैत्यवृद्ध तिम जाइ जगवंताजी ॥ ७ ॥

॥ श्री शांति जिन विज्ञप्ति ॥

(दोहा)

॥ बे कर जोमी विनवुं, सुण श्री जिनवर शांति ॥
गाप खमावुं आपणां, जे कीधां एकांत ॥ १ ॥ ढाल ॥
एकांत कहुं सुणो स्वामी, हुं तो चरण तमारा पामी ॥
मुज मांहे कपट ठे बहुलां, ते तो सुणंता मन थाये
हुलां ॥ २ ॥ पर विद्र प्रगट में कीधां, कूमां आल
न परने दीधां ॥ तेथी डोरुवो मुज तात, शांतिनाथ
मुणो सोरी वात ॥ ३ ॥ दोहा ॥ जव अनंत जमी
आवीयो, चरण तुमारे देव ॥ जिम राख्युं पारेवमुं, तिम
राखो मुज हेव ॥ ४ ॥ ढाल ॥ हवे एकेंद्रिद्रियादिक
जीव, दुहव्या करता अति रीव ॥ तस क्षाख चोराशी
झेद, राग द्वेष पमाड्या खेद ॥ ५ ॥ मृषा बोलतां
नावी लाज, तो किम सरशे आतम काज ॥ चोरी इण
जव परजव कीधी, पर रमणीशुं दृष्टिज दीधी ॥ ६ ॥
दोहा ॥ मधुबिंदु सम विषयसुख, दुःख तो मेरु समान
॥ मानवी मन चिंते नहीं, करतो कोरु अज्ञान ॥ ७ ॥

ढाल ॥ अज्ञानपणे श्रद्धि मेली, व्रत वाकी जली पं
जेली ॥ हवे सार करो प्रजु मोरी, रात दिवस सेव
करुं तोरी ॥ ७ ॥ बहु गुनही तुं श्री शांति, मुज टाले
जवनी चांति ॥ हुं तो मागुं तुं अविचल राज, इम
पजणे श्री जिनराज ॥ ए ॥

॥ श्री सिद्धाचलनु चैत्यवदन ॥

॥ राग हरिगीत ॥

॥ श्री विमल गिरिवर सुरसुसेवित तीर्थ जे शाश्वत
सदा, महिमा मनोहर जेहनो जिनराज गावे सर्वदा ॥
मुनिराजनां मंरुल जिहां विचरी परम सुखने बर्या,
गावो सदा गिरिराजना गुण काज सघलां तो सर्वा ॥
१ ॥ त्रैलोक्यमां त्रण कालमां जेनो विहेद न थाय ठे,
सुर असुर इंद्र नरेद्र सरवे ज्ञावथी गुण गाय ठे ॥ ज्यां
प्रथम श्री जिनराज पूर्व नवाणु वार समोसर्वा, गावो
सदा गिरिराजना गुण काज सघलां तो सर्वा ॥ २ ॥
पुंरुरीक प्रथमाधीश गणपति साधता गति पंचमि, जस
नामथी संकट अने जवनीरुता जाये शमी ॥ दर्शन
अने स्पर्शन थकी जवयो घणा जवथी तर्वा, गावो सदा
गिरिराजना गुण काज सघलां तो सर्वा ॥ ३ ॥

॥ श्री रूपभद्रंस्तुं स्तवन ॥

॥ रूपन्न जिणंदशुं प्रीतमी, किम कीजे हो कहो
 चतुर विचार ॥ प्रभुजी जइ अलगा वस्या, तिहां किये
 नवि हो को वचन उच्चार ॥ रूपन्न जिणंदशुं प्रीतमी ॥
 ए आंकणी ॥ १ ॥ कागल पण पहोंचे नहीं, नवि पहोंचे
 हों तिहां को परधान ॥ जे पहोंचे ते तुम समो, नवि
 चाखे हो कोइनुं व्यवधान ॥ रूपन्न ॥ २ ॥ प्रीति करे
 ते रागीया, जिनवरजी हो तुमे तो वीतराग ॥ प्रीतमी
 जेह अरागीथी, जेलववी हो ते लोकोत्तर माग ॥
 रूपन्न ॥ ३ ॥ प्रीति अनादिनी विष जरी, ते रीते हो
 करवा मुज जाव ॥ करवी निर्विष प्रीतमी, किये जाते
 हो कहो बने बनाव ॥ रूपन्न ॥ ४ ॥ प्रीति अनंती
 पर थकी, जे तोडे हो ते जोडे एह ॥ परम पुरुषथी
 रागता, एकत्वता हो दाखी गुणगेह ॥ रूपन्न ॥ ५ ॥
 प्रभुजीने अवलंबतां, निज प्रभुता हो प्रगटे गुणराश ॥
 देवचंद्रनी सेवना, आपे मुज हो अविचल सुख-
 वास ॥ रूपन्न ॥ ६ ॥

॥ श्री सिद्धाचलंस्तुं स्तवन ॥

॥ सुण सुण शत्रुंजय गिरि स्वामी, हुं तो अरज

करुं शिर नामी ॥ कृपानिधि विनति अवधारो, जव
 सागरपार उतारो ॥ कृपानिधि० ॥ १ ॥ प्रभु मूरत मोह
 नगारी, निरख्या हरखे नर नारी, जाउ वारी हुं वा
 हजारी ॥ कृपानिधि० ॥ २ ॥ हवे कीसीय विमास न
 कीजे, मुज उपर महेर धरीजे, दिलरजन दरिशा
 दीजे ॥ कृपानिधि० ॥ ३ ॥ आज सयल मनोरथ फलीआ
 जव जवनां पातीक गलीआ, प्रभु जो मुजसे मुख
 मलीआ ॥ कृपानिधि० ॥ ४ ॥ समर्या संकट टली जाय
 नित्य नव नव मंगल थाय, मुज आतम पुन्य जेराय ॥
 कृपानिधि० ॥ ५ ॥ कर जोनी विनति कीजे, केशर
 चंदन चरचीजे, दिन धन्य धन्य तेह गणीजे ॥ कृपा-
 निधि० ॥ ६ ॥ सेवो स्वामी सदा सुखदायी, कम ना
 न रहे घर कांइ, वाधे सपत्ति शोऊ सवाइ ॥ कृपा-
 निधि० ॥ ७ ॥ प्रभु दर्श सरस लह्यो तोरो, एथी हरखित
 होवे चित्त मोरो, जेम दीठो चंदचकोरो ॥ कृपानिधि०
 ॥ ८ ॥ नात्तीराय कुमर कुलचदा, जविजन मन नयन
 आनंदा, उल्लगे सुर असुर जिणंदा ॥ कृपानिधि० ॥ ९
 ॥ जयकारी रूपज जिणंदा, प्रह सम धरे परमआनंदा,
 वंदे श्रीजिन जक्ति मुनीदा ॥ कृपानिधि० ॥ १० ॥

॥ श्री सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ जात्रा नवाणुं करीए विमलगिरि ॥ जात्रा नवाणुं
करीए ॥ ए आंकणी ॥ पूरव नवाणुं वार शेत्रुंजा गिरि,
ऋषज जिणंद समोसरीए ॥ वि० ॥ १ ॥ कोनि सहस
जव पातक त्रुटे, शेत्रुंजा सामो रुग चरीए ॥ वि० ॥ २
॥ सात ठठ दोय अठम तपस्या, करी चढीए गिरि-
वरीए ॥ वि० ॥ ३ ॥ पुंरुरीक पद जपीए हरखे, अध्य-
वसाय शुज धरीए ॥ वि० ॥ ४ ॥ पापी अन्नव्य न
नजरे देखे, हिंसक पण उद्धरीए ॥ वि० ॥ ५ ॥ जुंइ
संधारो ने नारी तणो संग, दूर थकी परिहरीए ॥
वि० ॥ ६ ॥ सचित्त परिहारी ने एकल आहारी,
शुरु साथे पद चरीए ॥ वि० ॥ ७ ॥ पन्निक्मणां दोय
विधिशुं करीए, पाप पमल विखरीए ॥ वि० ॥ ८ ॥
कलिकाले ए तीरथ मोटुं, प्रवहण जिम जवदरीए ॥
वि० ॥ ९ ॥ उत्तम ए गिरिवर सेवंता, पद्म कहे जव
तरीए ॥ वि० ॥ १० ॥

॥ श्री पुंडरीकजीनुं स्तवन ॥

॥ प्रणमो प्रेमे पुंरुरीक राजाठ, गाजीठ जगमां रे
एह ॥ सौजागी ॥ जात्रा रे जातां रे पगे पगे निरजरे,

बहु चत्र संचित खेह ॥ सौं ॥ प्रणमो ॥ १ ॥ होइ
 वज्रलेप समोवडे, ते पण जाये दूर ॥ सौं ॥ जो ए
 गिरिनु दर्शन कीजीए, चात्र नक्ति चरपूर ॥ सौं ॥
 प्रणमो ॥ २ ॥ गौहत्यादिक हत्या पंच ठे, कारक तेहना
 जे होय ॥ सौं ॥ ते पण ए गिरि दरशन जो करे,
 पामे शिवगति सोय ॥ सौं ॥ प्रणमो ॥ ३ ॥ श्री शुक्र
 राजा नृपति इण गिरि, करतो जिनवर ध्यान ॥ सौं ॥
 खट मासे रिपु विलय गया, बाधो अधिक तस वान
 ॥ सां ॥ प्रणमो ॥ ४ ॥ चद्रशेखर निज नगिनी
 जोगवी, पाप कीधो महंत ॥ सौं ॥ ते पण ए तीरथ
 आराधतां, पाम्यो शुभ गति संत ॥ सौं ॥ प्रणमो ॥
 ॥ ५ ॥ मोर सर्प बाधण प्रमुख, बहु जीव ठे जे विक-
 राव ॥ सां ॥ ते पण ए गिरि दरिशन पुन्यथी, पामे
 सुगति विशाल ॥ सां ॥ प्रणमो ॥ ६ ॥ एवो महिमा
 ए तीरथ तणो, चैत्री पुनमे विशेष ॥ सौं ॥ श्री विज-
 यराज सूरीश्वर शिष्यनो, दिन गया दुख लेश ॥
 सौं ॥ प्रणमो ॥ ७ ॥

॥ श्री रायणनु स्तवन ॥

॥ नीलुकी रायण तरु तले ॥ सुण सुंदरी ॥ पीलुका

प्रचुना पाय रे ॥ गुणमंजरी ॥ उज्ज्वल ध्याने ध्याइए
॥ सुण० ॥ एहीज सुक्ति उपाय रे ॥ गुण० ॥ १ ॥
शीतल ठायए बेसीए ॥ सुण० ॥ रांतको करी मन रंग
रे ॥ गुण० पूजीए सोवन फूलडे ॥ सुण० ॥ जेम होय
प्रीति अचंग रे ॥ गुण० ॥ २ ॥ खीर ऊरे जेह उपरे ॥
सुण० ॥ नेह धरीने एह रे ॥ गुण० ॥ त्रीजे जवे ते
शिव लहे ॥ सुण० ॥ याये निर्मल देह रे ॥ गुण० ॥
३ ॥ प्रीत धरी प्रदक्षिणा ॥ सुण० ॥ दीये एहने जे
सार रे ॥ गुण० ॥ अचंग प्रीति होय तेहने ॥ सुण०
॥ जव जव तुम आधार रे ॥ गुण० ॥ ४ ॥ कुसुम फल
पत्र मंज रे ॥ सुण० ॥ शाखा थरु ने मूल रे ॥ गुण०
॥ देव तणा वासाय ठे ॥ सुण० ॥ तीरथने अनुकूल रे
॥ गुण० ॥ ५ ॥ तीरथ ध्यान धरो मुदा ॥ सुण० ॥
सेवो एहनी ठाय रे ॥ गुण० ॥ ज्ञानविमल गुण जाखीयो
॥ सुण० ॥ शेत्रुंजा माहात्म्य मांह रे ॥ गुण० ॥ ६ ॥

॥ श्री महावीरस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ मारगदेशक सोहनो रे, केवलज्ञान निधान ॥
जाव दया सागर प्रचु रे, परउपगारी प्रधान रे ॥ १ ॥
वीर प्रचु सिद्ध थया, संघ सकल आधारो रे ॥ हवे

इण नरतमां, कोण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥
 नाथ विहुणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विहुणो रे जीव ॥ साधे
 कोण आधारथी रे, परमानंद अजंग रे ॥ वीर० ॥
 ३ ॥ माता विहुणो वाल ज्यु रे, अरहो परहो अय-
 नाय ॥ वीर विहुणा जीवना रे, आकुल व्याकुल थाय
 रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय ठेदक वीरनो रे, विरह ते
 केम खमाय ॥ जे दीठे सुख उपजे रे, ते विण केम
 रहेवाय रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक जवसमुद्रनो रे
 जवअटवी सत्यवाह ॥ ते परमेश्वर विण मले रे, केम
 वाधे उत्साह रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर थका पण श्रुत
 तणो रे, हतो परम आधार ॥ हवे इहां श्रुत आधा-
 ठे रे, अहो जिनमुद्रा सार रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ त्रण
 काले सवि जीवने रे, आगमथी आणद ॥ सेवो ध्यावो
 जवि जनो रे, जिनपदिमा सुखकद रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥
 गणधर आचारज मुनि रे, सहुने इणी परे सिद्ध ॥
 जव जव आगम सगथी रे, देवचंद्र पद लीध रे
 ॥ वीर० ॥ ९ ॥

॥ श्री महावीरस्वामीनु स्तवन ॥

॥ गिरुआ रे गुण तुम तणा, श्री वर्धमान जिन

राया रे ॥ सुणतां श्रवणे अमी ऊरे, माहरी निर्मल
थाये कायारे ॥ गि० ॥ १ ॥ तुम गुण गण गंगाजले,
हुं जीवी निर्मल थाळं रे ॥ अवर न धंधो आदरुं, निशि-
दिन तोरा गुण गाळं रे ॥ गि० ॥ २ ॥ ऊढ्या जे गंगाजले,
ते ठिद्धर जल नवि पेसे रे ॥ जे मालती फूले मोहीआ, ते
बावल जड नवि वेसे रे ॥ गि० ॥ ३ ॥ एम अमे तुम गुण
गोठशुं, रंगे राच्या ने वली माच्या रे ॥ ते केम परसुर
आदरुं, जे परनारी वश राच्या रे ॥ गि० ॥ ४ ॥ तुं गति तुं
मति आशरो, तुं आळंवन मुज प्यारो रे ॥ वाचक यश
कहे माहरे, तुं जीवन जीव आधारो रे ॥ गि० ॥ ५ ॥

॥ श्री महावीरस्वामीतुं स्तवन ॥

॥ वीर प्रजुने चित्त धारजे ॥ सदा रे जीव ॥ वीर
प्रजुने चित्त धारजे ॥ काल अनादिना मोह अरि जे,
विवेक असिथी तुं मारजे ॥ सदा रे० ॥ १ ॥ आर्त ने
रौद्र ध्यान कहां ठे, धर्मथी तेने निवारजे ॥ सदा रे०
॥ २ ॥ चोराशी लक्ष योनि मांहे फेरा फरतां, अज्ञानी
जीवने तारजे ॥ सदा रे० ॥ ३ ॥ कुदेव कुधर्मी चित्त
विषेथी, स्वरूप जाणी विसारजे ॥ सदा रे० ॥ ४ ॥ दीन
तनोनां दुःख जोडने, रहेम धरीने उधारजे ॥ सदा

रे० ॥ ५ ॥ परोपकारी जीव यथा जे, गुणो तेना ह
संचारजे ॥ सदा रे० ॥ ६ ॥

॥ श्री पचतीर्थनु स्तवन ॥

॥ चौबीश चांकनी देगी ॥

॥ हे साहेवजी नेक नजर करी नाथ सेवकने तारं
॥ हे साहेवजी ॥ महेर करी पूजानु फल मूने आलो ।
प्रभु तुज मूरति मोहनवेली, पूजे सुर अप्सरा अल
वेली, वर घनसार केसरशु भेली ॥ हे साहेवजी ॥ १ ॥
सिद्धाचल तीर्थ जवि सेवो, चोढ क्षेत्रे तीरथ नहं
एवो, एम बोले देवाधिदेवो ॥ हे साहेवजो ॥ २ ॥ गिर
नारे जइए नेम पासे, इहां जविजन सिद्धि जाशे
जस ध्याने पातकनां नासे ॥ हे साहेवजी ॥ ३ ॥ आबु
गढे आदि जिनराया, नेम नाथ शिवादेवी जाया, जस
चोसठ डद्रे गुण गाया ॥ हे साहेवजी ॥ ४ ॥ वली
समेतशिखरे जघन ईश, गया मोक्षे जिनराज वीश,
ध्येय ध्यावो जविजन निशदिन ॥ हे साहेवजी ॥ ५ ॥
अष्टापदे सकल कर्म टाली, प्रभु वरीया शिववधू लट-
काली, आदीश्वर पूजनां दीवाली ॥ हे साहेवजी ॥
६ ॥ ए तीर्थ प्रणमो मनरंगे, वली पूजा प्रभुने नव
अगे, कहे धर्मचद्र अति उमंगे ॥ हे साहेवजी ॥ ७ ॥

॥ श्री तीर्थगात्राहुं स्तवन ॥

॥ शत्रुंजय ऋषत्त समोसर्था, जला गुण जस्था रे ॥
सिद्धा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ त्रण कट्याणक
तिहां थयां, मुगते गया रे ॥ नेमीश्वर गिरनार ॥ तीरथ०
॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरि सेहरो रे ॥ जरते
जराव्यां विंव ॥ तीरथ० ॥ आबु चोमुख अति जलो,
त्रिचुवन तिलो रे ॥ विमल-वसहि वस्तुपात्र ॥ तीरथ०
॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्धा
तीर्थकर वीश ॥ तीरथ० ॥ नयरी चंपा निरखीए, हेंये
हरखीए रे ॥ सिद्धा श्री वासुपूज्य ॥ तीरथ० ॥ ३ ॥
पूरव दिशे पावापुरी, कूडे जरी रे ॥ मुक्ति गया महो-
वीर ॥ तीरथ० ॥ जेसलमेर जुहारीए, दुःख वारीए रे ॥
अरिहंत विंव अनेक ॥ तीरथ० ॥ ४ ॥ विकानेरज वंदीए,
चिर नंदीए रे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ तीरथ० ॥
सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे ॥ फलोधी थंजणपास ॥
तीरथ० ॥ ५ ॥ अंतरीक अजावरो, अमीऊरो रे ॥ जीरा-
वलो जगनाथ ॥ तीरथ० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो, जात्रा
करो रे ॥ रोणपुरे रिसहेस ॥ तीरथ० ॥ ६ ॥ श्री नाकु-
लाइ जादवो, गोफी स्तवो रे ॥ श्री वरकाणो पास ॥

तीरथ० ॥ नंदीश्वरनां देहरां, वावन जलां रे ॥ रुचक
 कुंरुले चार चार ॥ तीरथ० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्वती,
 प्रतिमा ठती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ तीरथ० ॥
 तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुज इहां रे ॥ समय-
 सुदर कहे एम, तीरथ ते नमु रे ॥ ८ ॥

॥ श्री शेत्रुजातुं स्तवन ॥

॥ बहाला वेगे आयो रे—ए राग ॥

॥ सिद्धाचन गावुं रे, मोतीडे वधावुं रे ॥ दादा
 सुणो विनति होजी ॥ प्रभु मारां जवोजवनां दुःख वार
 ॥ दादा सुणो० ॥ १ ॥

॥ साखी ॥

प्रथम पति पृथ्वी तणा, पेला जिणंद मुणींद ॥
 योगींद्र श्री आदीश्वर, मरुदेवी साता नंद ॥ हु तो
 गिरिवरना गुण गाउ रे ॥ दादा सुणो० ॥ २ ॥ जो
 प्रीत पालो पूर्वनी, सन्मुख जालो आप ॥ पापी अध-
 मने उऊरो, प्रतिपालनी, ए ठाप ॥ दयानिधि दिलमां
 हुं लावु रे ॥ दादा सुणो० ॥ ३ ॥ कुर्कट मटी राजा
 थयो, जे सूरजकुडे चंद ॥ जगिनीजोगी उऊर्यो, जे
 चंद्रशेखर नरिंद ॥ हुं तो मोहथी जग मचावुं रे ॥

दादा सुणो ॥ ४ ॥ ए ठाम सिद्ध अनंतनो, ठे शाश्वतो
गिरिराज ॥ सिद्धि बर्या पांरुव प्रमुख, ए मुक्ति मंदिर
पाज ॥ प्रज्ञ तांरुं ध्यान लगावुं रे ॥ दादा सुणो ॥ ५ ॥
तारो प्रज्ञ जो मुजने, तो गणुं जगदाधार ॥ नथी ख-
जानो कांय खोट, तरी तारीयां नर नार ॥ रुकी तारी
आंगीउं रचावुं रे ॥ दादा सुणो ॥ ६ ॥ त्रिभुवन विषे
नहीं तीर्थ, बीजुं कहे वीर जिणेंद्र ॥ गिरिराजनां गुण-
गान गाये, सेवक सांकलचंद्र ॥ हुं तो आवागमन पावुं
रे ॥ दादा सुणो ॥ ७ ॥

॥ श्री गिरिनारजीनुं स्तवन ॥

॥ गरवानी देशी ॥

॥ जइने रहेजो मारा वालाजी रे, श्री गिरिनारने
गांख ॥ जइने ॥ अमे पण तिहां आवशुं ॥ मारा ॥
ज्यारे पामीशुं जोख ॥ जइ ॥ १ ॥ जान लइ जुनागढे
॥ मारा ॥ आव्या तोरण आप ॥ जइ ॥ पशुआं पेखी
पाठा वढ्या ॥ मारा ॥ जांतां न दीधो जवाव ॥ जइ
॥ २ ॥ सुंदर आपण सारिखा ॥ मारा ॥ जोतां नहीं
मढे जोरु ॥ जइ ॥ बोढ्या अणबोढ्या करो ॥ मारा ॥
ए वाते तमने खोरु ॥ जइ ॥ ३ ॥ हुं रागी तुं वैरागीउं

॥ मारा० ॥ जगमां जाणे सह्यु कोइ ॥ जइ० ॥ राग
तो लागी रहे ॥ मारा० ॥ वैरागी रागी न होय ॥ जइ०
॥ ४ ॥ वर वीजो हू नवि वरुं ॥ मारा० ॥ सघला मेली स
वाद ॥ जइ० ॥ मोहनीयाने जइ मली ॥ मारा० ।
मोटा साथे श्यो वाद ॥ जइ० ॥ ५ ॥ गढ तो एक
गिरनार ठे ॥ मारा० ॥ नर तो ठे एक श्री नेम ॥ जइ०
॥ रमणी एक राजीमती ॥ मारा० ॥ पूरो पाड्यो जेणे
प्रेम ॥ जइ० ॥ ६ ॥ वाचक उदयनी वंदना ॥ मारा०
॥ मानी लेजो महाराज ॥ जइ० ॥ नेम राजुद मुक्ते
मह्यां ॥ मारा० ॥ सारयां आतम काज ॥ जइने र
हेजो मारा वालाजी रे ॥ ७ ॥

॥ श्री अष्टापदजीनु स्तवन ॥

॥ कुवर गभारो नजरे देखताजी—ए देगी ॥

॥ चउ अठ दस दोय वंदीएजी, वर्तमान जग-
दीश रे ॥ अष्टापद गिरि उपरेजी, नमतां वाधे ज-
गीश रे ॥ ञरत ञरतपति जिनमुखेजी, उच्चरीयां
व्रत वार रे ॥ दर्शनशुद्धीने कारणेजी चोवीश प्रचुनो
विहार रे ॥ चउ० ॥ १ ॥ उंचपणे कोस तिग कहुजी,
योजन एक विस्तार रे ॥ निज निज मान प्रमाण ञ-

प्राचीयांजी, विं व स्वपर उपगार रे ॥ चण्ड ॥ २ ॥ अ-
जेतादिक चण्ड दाहिणेजी, पश्चिमे पदिमा आठ रे ॥
अनंत आदे दश उत्तरेजी, पूरवे रिखन्न वीर पाठ रे
चण्ड ॥ ३ ॥ रिखन्न अजित पूर्वे रद्याजी, ए पण आ-
मपाठ रे ॥ आत्मशक्ते करे जातराजी, ते त्रवि
भुक्ति वरे हणी आठ रे ॥ चण्ड ॥ ४ ॥ देखो अ-
वंबो श्री सिद्धाचलेजी, हुथ्या असंख्य उद्धार रे ॥
आज दिने पण एणे गिरिजी, ऊगमग चैत्य उदार रे
॥ चण्ड ॥ ५ ॥ रहेशे उत्सर्पिणी लगेजी, देवमहिमा
गुण दाखी रे ॥ सिंह निषद्यादिक थिरपणेजी, वसु-
ध्व हिंरुनी शाख रे ॥ चण्ड ॥ ६ ॥ केवली जिनमुख
ने सुष्युंजी, एणे विधे पाठ पठाय रे ॥ श्री शुचवीर
चनरसेजी, गया रिखव शिव ठाय रे ॥ चण्ड ॥ ७ ॥

॥ श्री तारंगाजीलुं स्तवन ॥

॥ तुंग तारंग गिरि शोन्नतो रे लाल, राजे अजित
जिणंद रे ॥ सोन्नागी ॥ दर्शन करतां दुःख टले रे
लाल, होये परमानंद रे ॥ सोन्नागी ॥ तुंग ॥ १ ॥
अजित जिणंद जुहारीने रे लाल, कीजे सफल अव-
गार रे ॥ सोन्नागी ॥ महिमा जस गाजे सदा रे लाल,

उतारे जवपार रे ॥ सोजागी ॥ तुंग० ॥ २ ॥ केाटि
 शिला जस उपरे रे लाल, सिद्धशिलानी जेम रे
 सोजागी ॥ शोत्रे नयणे नीहावतां रे लाल, मोद धं
 मन जेम रे ॥ सोजागी ॥ तुंग० ॥ ३ ॥ अवलंवन वेत
 मुदा रे लाल, मोह पराजय आय रे ॥ सोजागी ॥ तां
 ते तीरप्र गणो रे लाल, जव्य जनोने सहाय रे ॥ सो
 जागी ॥ तुंग० ॥ ४ ॥ निरखी हरखे सहु जनो रे लाल
 सेवे सुर नर संत रे ॥ सोजागी ॥ रत्नत्रयी प्रगटं
 खरी रे लाल आवे जवनिधि अंत रे ॥ सोजागी ।
 तुंग० ॥ ५ ॥

॥ श्री आनुजीनु स्तवन ॥

॥ फोडलो परंत धुमलो रे-ए देशी ॥

॥ आनु अचल रलीआमणो रे लोल, देलवाडे मनो
 हार ॥ सुखकोरी रे ॥ वादलीए जेसर धस्यु रे लोल
 देवल दीपे चार ॥ वलीहारी रे ॥ जाव धरीने जेटीए
 रे लोल ॥ आ० ॥ वार वादशाह वशकरी रे लोल
 विमल मत्रीश्वर सार ॥ सुख० ॥ तेणे प्रासाद निपाडं
 रे लोल, रिखव जगदाधार ॥ व० ॥ आ० ॥ १ ॥ तेह
 चैत्यमां जिनवरु रे लोल, आठसे ने ठेंतेर ॥ सु० ॥ जेह

तीठे प्रमु सांजरे रे लोल, मोह करयो जीणे जेर ॥ व०
 । आ० ॥ २ ॥ द्रव्य जरी धरती जली रे लोल, लीधो
 वलकाज ॥ सु० ॥ चैत्य तिहां मंदावीठं रे लोल, देवा
 शैवपुर राज ॥ व० ॥ आ० ॥ ३ ॥ पंढरसें कारीगरे रे
 लोल, दीवीधरा प्रत्येक ॥ सु० ॥ तेम मरदनकारक
 ली रे लोल, वस्तुपाल ए विवेक ॥ व० ॥ आ० ॥ ४ ॥
 । कोरणी नोरणी तिहां करी रे लोल, दीठां वने ते
 वात ॥ सु० ॥ पण नवि जाये मुखे कही रे लोल, सुर-
 गुरु सम विख्यात ॥ व० ॥ आ० ॥ ५ ॥ त्रण वरसे
 नीपन्यो रे लोल, ते प्रासाद उत्तम ॥ सु० ॥ वार कोनी
 त्रेपन लक्ष्मणे रे लोल, खरच्या द्रव्य उठरंग ॥ व० ॥
 आ० ॥ ६ ॥ देराणी जेठाणीना गोखला रे लोल, देखतां
 हरख ते थाय ॥ सु० ॥ लाख अढार खरचीआ रे लोल,
 धन्य धन्य एहनी माय ॥ व० ॥ आ० ॥ ७ ॥ मूलना-
 यक नेमीसरु रे लोल, जन्म थकी ब्रम्हचार ॥ सु० ॥
 निज सत्ता रमणी थया रे लोल, गुण अनंत आधार ॥
 व० ॥ आ० ॥ ८ ॥ चारसें ने अरुसठ जलां रे लोल,
 जिनवरबिंब विशाल ॥ सु० ॥ आज जले में जेटीया रे
 लोल, पाप गयां पाताल ॥ व० ॥ आ० ॥ ९ ॥ रिखज

धातुमयी देहरे रे लोल, एकसो पीस्तालीश चिव ॥ सु०
 ॥ चोमुख चैत्य जुहारीए रे लोल, मरुधरमां जेम अं व
 ॥ व० ॥ आ० ॥ १० ॥ वाणु काउस्सग्गीआ तेहसां रे
 लोल, अगन्यागी जिनराय ॥ सु० ॥ अचलगढे वहु
 जिनवरा रे लोल, वहुं तेहना पाय ॥ व० ॥ आ० ॥
 ११ ॥ धातुमयी परमेसरु रे लोल, अद्रुत जास स्वरूप
 ॥ सु० ॥ चउमुख जिन वंदतां रे लोल, थाये निज गुण
 चूप ॥ व० ॥ आ० ॥ १२ ॥ अढारसे ने अढारमां रे
 लोल, चउतर वदि त्रीज दिन ॥ सु० ॥ पालणपुरना
 संघशु रे लोल, प्रणमी थयो धन्य धन्य ॥ व० ॥ आ०
 ॥ १३ ॥ तेम शांति जगदीसरु रे लोल, जात्रा करी
 अद्रुत ॥ सु० ॥ जे देखी जिन सांजरे रे लोल, सेव
 करे पुरहुत ॥ व० ॥ आ० ॥ १४ ॥ इम जाणी आवु
 तणी रे लोल, जात्रा करशे जेह ॥ सु० ॥ जिन उत्तम
 पद पामशे रे लोल, पद्मविजय कहे तेह ॥ व० ॥
 आ० ॥ १५ ॥

॥ श्री राणकपुरनु स्तवन ॥

॥ श्री राणकपुर रली आमणु रे लोल ॥ श्री आदी-
 सर देव ॥ मन मोह्यु रे ॥ उत्तम तोरण देहरुं रे लाल

निरखीजे नित्यमेव ॥ मन० ॥ श्री० ॥ १ ॥ चञ्चवीश
 मंरुप चिहं दिशे रे लाल, चञ्चमुख प्रतिमा चार ॥ मन० ॥
 त्रिचुवन दीपक देहरं रे लाल, समोवरु नहीं संसार ॥
 मन० ॥ श्री० ॥ २ ॥ देहरी चोराशी दीपती रे लाल,
 सांज्यो अष्टापद मेर ॥ मन० ॥ चले जुहारयां ज्ञोवरां
 रे लाल, सुतां उठी सवेर ॥ मन० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ देश
 जाणीतुं देहरं रे लाल, मोटो देश मेवारु ॥ मन० ॥
 लख नवाणुं लगावीया रे लाल, धन धरणे पोरवारु ॥
 मन० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ खरतरगठही खांतशुं रे लाल,
 निरखतां सुख थाय ॥ मन० ॥ पांच प्रासाद बीज वली
 रे लाल, जोतां पातीक जाय ॥ मन० ॥ श्री० ॥ ५ ॥
 आज कृतारथ हुं थयो रे लाल, आज थयो आणंद ॥
 मन० ॥ यात्रा करी जिनवर तणी रे लाल, डूर गयुं
 दुःख दंद ॥ मन० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ संवत् सोलने ठांतरे
 रे लाल, मागशिर मासं मजार ॥ मन० ॥ राणकपुर
 यात्रा करी रे लाल, समयसुंदर सुखकार ॥ मन ॥
 श्री० ॥ ७ ॥

॥ श्री केशरीयाजीनुं स्तवन ॥

॥ केशरीयासें लाग्युं मारुं ध्यान रे, बीजुं मुने कांइ

न गम्भे रे ॥ के० ॥ नात्रि जूप मरुदेवीको नन्दन, तुम
पर जीया खुरवान रे ॥ वीजुं० ॥ केश० ॥ १ ॥ धनुष
पांचसें मान मनोहर, काया कंचनवान रे ॥ वीजुं० ॥
केश० ॥ २ ॥ जुगला रे धर्म निवारण साहिव, राजेश्वर
राजांन रे ॥ वीजु० ॥ केश० ॥ ६ ॥ रुपन्नदासकी आशा
पूरजो, सेवक अपना जान रे ॥ वीजु० ॥ केश० ॥ ४ ॥

॥ श्री शिखरजीनु स्तवन ॥

॥ चालो चालो शिखर गिरि जडए रे चा० ॥ वीश
जिणद मुगते गया ॥ चालो० ॥ ए आंकणी ॥ पालगं-
जमे सफल बोलाइ, मधुवनमे जड रहीए रे ॥ वी० ॥
१ ॥ आठ मदिरे है श्वेतांबरका,तीन दिगंवरी लहीए
रे ॥ वी० ॥ सीता नाळे निर्मल थडने, केशर प्याला
ग्रहीए रे ॥ वी० ॥ २ ॥ विपम पाहारुकी कुंज गलनमे,
शीतलता बहु लहीए रे ॥ वी० ॥ पश्चिम आठ पूरव
दिशि वारे, वीश टुंक जिनपद लहीए रे ॥ वी० ॥ ३
॥ शामलीया पारसको मदिर, विच शिखर पर सोहीए
रे ॥ वी० ॥ वीश टुंके जिनपूजन करके, नरकव लाहो
लहीए रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ उगणीशसे डग्यार महा वदि,
एकादगी विधु कहीए रे ॥ वी० ॥ संघ सहित यात्रा

जइ सफली, विनय नमत गुण गहीए रे ॥ वी० ॥ ५ ॥

॥ श्री राजगृही स्तवन ॥

॥ शिखरजीकी यात्रा क्युं न करे-ए देगी ॥

॥ आज आनंद धरी, सखी मोरी आज आनंद
धरी ॥ ए आंकाणी ॥ राजगृहीमें पांच मंदिरका, दर्शन
पूजा करी ॥ गोवर गाममें एक मंदिर है, गौतम जनम
पुरी ॥ सखी० ॥ १ ॥ विपुलाचल रतनगिरि डुजो,
बन्नीजो उदयगिरि ॥ सोन गिरि वैजार पंचोपरि, मंदिर
सोल वरी ॥ सखी० ॥ २ ॥ मंदिर मुद्रा चरन पुरातन,
वंडुं चाव धरी ॥ बहु मुनि मुगतिपद पाये, धन्य धन्य
एह गिरि ॥ सखी० ॥ ३ ॥ उष्ण योनि जलका बहु
थानक, कुंरुकी रचना करी ॥ केवली प्रचुका ज्ञान
विना नर, तीरथ पद पकरी ॥ सखी० ॥ ४ ॥ तीरथ
भूमि पद फरशानसें, नरत्नव सफल करी ॥ क्रोधादिक
सब दूर निवारो, समता विनय धरी ॥ सखी० ॥ ५ ॥

॥ श्री बनारसनुं स्तवन ॥

॥ पारस प्रचुका चार कट्याणक, बनारसमें लहीए
रे ॥ पारस० ॥ त्रिद्विपुरमें दो मंदिर है, सोइ पुरातन
कहीए रे ॥ पारस० ॥ १ ॥ रामघाट पर फुशलाजीके,

मंदिर वंदन जइए रे ॥ और बहु मंदिर है सुदर
 तारीफ कहा मुख कहीए रे ॥ पारस० ॥ २ ॥ वदनी
 घाट पर एक मंदिर है, श्री सुपार्श्व गुण गहीए रे ।
 चार कव्याणक है प्रभुजीका, गगा लहिरां लहीए रे ।
 पारस० ॥ ३ ॥ कोश सात पर चंद्रपुरी है, चंदा प्र
 पद पहीए रे ॥ कव्याणक चारौं जनहुका, यात्रा कर
 नकु जइए रे ॥ पारस० ॥ ४ ॥ कोश तीन पर सिंह
 पुरी है, श्री श्रेयांस प्रभु कहीए रे ॥ च्यवन जन
 दीक्षा केवलकी, रचना बहुविध लहीए रे ॥ पारस० ।
 ५ ॥ चारौं जिनका सोल कव्याणक, दर्शने चित्त ठर
 इए रे ॥ जनम सफल जयो यात्रा करनसे, विनय
 नमत सुख पइए रे ॥ पारस० ॥ ६ ॥

॥ श्री पावापुरीनु स्तवन ॥

॥ पावापुरीमे वीर जिनेश्वर, मुक्ते गये बंदो नवि
 चरना ॥ पावा० ॥ ए आंकणी ॥ जल मंदिरमे चर
 पुरातन, समवसरण रचना दिल ठरना ॥ पावा० ॥

॥ जलकी लहेर कमल शीतलता, नाग फीरत उन
 नहौं करना ॥ पावा० ॥ २ ॥ मंदिर और वगीचामें है
 प्रभु मुद्रा दर्शन नव तरना ॥ जमणी वाजु सन्मुख

वेदी पर, प्रभुपदका नित्य पूजन करना ॥ पावा० ॥ ३ ॥
॥ देवर्द्धिगणि ह्रमाश्रमणकी, मूर्ति गणधरजीका चरना
॥ दादाजी थूलिचद्र मुनिका, मंदिर चिहुं दिशि पातक
हरना ॥ पावा० ॥ ४ ॥ धर्मशालाकी रचना सुंदर, देख-
तही दिल आनंद करना ॥ कट्याणक चूमि फरशनथें,
दर्शन पूजन शिवसुख वरना ॥ पावा० ॥ ५ ॥ उगणीश
एकादश वदि, फागुन पंचमीके दिन दर्शन करना ॥
यात्रा सफल चह सबहुंकी, विनय नमत प्रभुके नित्य
धरना ॥ पावा० ॥ ६ ॥

॥ श्री संखेश्वर पार्श्वनाथनुं स्तवन ॥

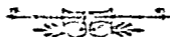
॥ मंगलकारी श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ जग जयवंता,
विघ्ननिवारक चवनिघितारक जय जय शिवकर जगवंता
॥ मंगल० ॥ १ ॥ जादवकुलनी जरा निवारी नवण
नीरथी सुखकंदा, मंत्र महा नवकार सुणावी करयो धर-
णपति मुखचंदा ॥ मंगल० ॥ २ ॥ ध्याइए निशदिन
निर्मल तुम नाम शांति सुख देनारा, हाथ जोडी संगाय
नाथजी विनवीए दुःख दलनार ॥ मंगल० ॥ ३ ॥ चरण
शरण चय मरण निहंता करण कोरु कट्याण तणुं,
नव्य नाथ मम हाथ ग्रहीने करो दास अरदास जणुं

॥ मंगल० ॥ ४ ॥ अमृत सम अम पर तम ठाया जव
जव होजो सुखकारी, रत्न रमणता करता एक दि
शिव लक्ष्मी ठे वरनारी ॥ मंगल० ॥ ५ ॥

॥ श्री भोयणी तीर्थनु स्तवन ॥

॥ राग वनजारो ॥

॥ प्रजु मद्धिनाथ सुखकारी, समरुं दिल हर्ष वधार
॥ श्री जोयणी तीर्थ विराजे, सहु विघ्न विदारण काजे
॥ प्रगट्या महिमा अवतारी ॥ प्रजु मद्धि० ॥ १ ॥ स
अंग उमंग धरीने, करे यात्रा मोह हरीने, जय जय
सुमंगलकारी ॥ प्रजु मद्धि० ॥ २ ॥ मनमोहन मूर
तारी, देखी हरखे दिल चारी, दिलथी नहीं पूर थनारं
॥ प्रजु मद्धि० ॥ ३ ॥ तुम नाम सदा हुं ध्यावु, शि
संपद अक्षय पावुं, प्रजु अरज सुणो आ मारी ॥ प्र
मद्धि० ॥ ४ ॥ जगतारक नाम धरावो, मोहरायने आ
रुवावो, करुं वदन वार हजारी ॥ प्रजु मद्धि० ॥ ५ ॥
सम मन मदिरमां वसजो, प्रजु मुजथी पूर न खसजो
आपो ग्लत्रयी जयकारो ॥ प्रजु मद्धि० ॥ ६ ॥



॥ अथ श्री वृद्धचैत्यवंदन प्रारंभ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ केवलनाणी श्री निरवाणी, सागर महाजस विमल
ते जाणी ॥ सर्वानुजृति श्रीधर गुणखाणी, दत्त दामो
दर वंदुं प्राणी ॥ १ ॥ सुतेज स्वामी मुनिसुव्रत जाणी,
मुमतिने शिवगति पंचमनाणी ॥ अस्तांग नेमीसर
प्रनिल ते जाणी, यशोधर सेवो मन मांदि आणी ॥
॥ कृतारथ जपतां नवि होय हाणी, धमीसर पाम्या
शेवपुर गाणी ॥ शुद्ध मति शिवकर स्यंदन ठाणी,
प्रप्रतिना गुण गाये इंद्राणी ॥ ३ ॥ वाचक मूला कहे
उगते जाणी, स्तवन जणो जिम थारु नाणी ॥ ए चोवीशी
नित्य नित्य गाणी, मुक्ति तणां सुख जिम द्यो ताणी ॥४॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आदि अजितज रे, संजव अन्निनंदन जणुं ॥ श्री
मुमतिज रे, पद्मप्रज्जनीना गुण थुणुं ॥ श्री सुपारस रे,
वेंद्रप्रज्ज जग जाणीए ॥ सुविधि शीतल रे, श्रेयांस हरेखे
खाणीए ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ वखाणीए श्री वासुपूज्य,
वेमल अनंत धर्म शांति ए ॥ कुंथु अर मद्धि मुनि-
व्रत, नमि नेम ध्याउं चित्त ए ॥ शूर धीर पार्श्व वीर,

वर्त्तमाने जिनवरा ॥ करजोकी वाचक जणे मूला, स्वामी
सेवक सुखकरा ॥ १ ॥

॥ ढाल व्रीजी ॥

॥ पद्मनाभ सूरदेव, सुपर्श्व स्वयप्रभ होइ ॥ सर्वा-
नुभूति देवसुत, उदय पेढालज जोइ ॥ १ ॥ पोटिल
सत्कीर्त्ति, मुनिमुवत अमम निःकपाय ॥ निपुलायक
निर्मम, चित्रगुप्ति वंडुं पाय ॥ २ ॥ समाधि सुसवर
यशोधर विजय मन्त्रि देव ॥ अनंतवीरज जडकृत, तेहनी
कीजे सेव ॥ ३ ॥ अनागत जिनवर, होशे तेहनां नाम
॥ जणे वाचक मूला, तेहने करुं प्रणाम ॥ ४ ॥

॥ ढाल चौथी ॥

॥ महाविदेह पंच मजार, प्रत्येके जिन चार ॥ सीमं-
धर जुगमधर, षाहु सुवाहु अ सुखकार ॥ १ ॥ सुजात
स्वयप्रभ स्वामी, रूपज्ञानन लेहु नामी ॥ अनंतवीरज
देव, सूर प्रभु करु अ सेव ॥ २ ॥ विशाल वज्रंधर साहु,
चडानन चंडवाहु ॥ जुजंग ईश्वर गाळं, नेमि प्रभु चित्त
ए लाळं ॥ ३ ॥ वीरसेन महाभद्र वंडुं, देवजसा दीठे
आनंदु ॥ अजितवीरिय वदन, शाश्वता रूपज चंडानन
॥ ४ ॥ वर्द्धमान वारिपेण ईश, ए हुवा जिन चौवीश

॥ एवा ठनुं ए जिनवर, वाचक मूला कहे सुखकर ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ हवे पायाले लोक मज्जा, जिहां असुरकुमार ॥
लाख चोसठ जिनजुवन अठे, तिहां करुं जुहार ॥ १ ॥
नागकुमार मांहि कह्यां, तिहां लाख चोराशी ॥ एतां
जिनहर तिहां नमुं, थाउं समकितवासी ॥ २ ॥ सोवन-
कुमार मज्जा लाख, बहुंतेर प्रासाद ॥ ठनुं लाख वायु
मज्जा, सुणीए सुरनाद ॥ ३ ॥ दीपकुमार दिशाकुमार,
वली उदधिकुमार ॥ विद्युत् स्तनितकुमार अने, वली
अग्निकुमार ॥ ४ ॥ ए ठए स्थानक जाणीए, प्रत्येके
जिनहर ॥ बहुंतेर बहुंतेर लाख तिहां, जवियण जिन
सुखकर ॥ ५ ॥ एंवकारे सवि मली, बहुंतेर तिहां लाख
॥ साठ कोमी जिनहर नमुं, श्री जिनवर जाख ॥ ६ ॥
लाख साठ नेव्याशी कोमी, अने तेरसें कोमी ॥ जिन-
पदिमा श्री जिन तणी, वंडुं बे कर जोमी ॥ ७ ॥
असंख्या व्यंतर जोइषी, असंख्यां जिनहर ॥ असंख्य
पदिमा जिन तणी, नमीए नहीं दुर्गतिहर ॥ ८ ॥
वाचक मूला कहे देव, दीउं सुमति सदा मुज ॥ जिन-
वचने हुं वीन थइ, गाउं जिनजी तुज ॥ ९ ॥

॥ ढाल उद्दी ॥

॥ सोहम ईशान सनत्कुमार ए, माहिंद वंज रे लांतक
 सार ए ॥ झुटक ॥ सार शुक अने सहसारह, आनत
 प्राणत आरण ॥ अच्युत नवग्रैवेयक त्रिक तिहां, पंच
 अनुत्तर तारण ॥ अनुक्रमे प्रासाद कहीए, लाख सहस
 शत संख्या ॥ वत्रीश अठावीश वारह, अठ चउ लाख
 अख्या ॥ १ ॥ चाल ॥ पन्नास चालीश ठ सहस जिन-
 हरा, दो दो दोढज दोढज सतवरा ॥ झुटक ॥ वरा सत्तवर
 इग्यारोत्तर, सत्योतर सी जाणीए ॥ एकसो लपर पच
 अनुत्तर, अनुक्रमे वखाणीए ॥ सर्वे मली जिनहर जिन
 हर, लाख चोराशी साख ए ॥ सहस सत्ताणुं आगलां,
 तिहां वीश ने त्रण लाख ए ॥ २ ॥ चाल ॥ एकसो
 कोमी रे, वावन कोमी ए ॥ लाख चोराणुं रे, संख्या
 जोमीए ॥ झुटक ॥ जोमीए चोसठ सहस एकसो,
 चालीशे तिहां आगली ॥ जिनप्रासाद एकसो असिअ
 खेखे, वंडु प्रतिमा उज्जाली ॥ चैत्य संख्या ऊर्ध्व लोके,
 वीर वचन विख्यात ए ॥ वाचक मूला कहे जणजो,
 स्तवन ए परजात ए ॥ ३ ॥



॥ ढाल सातमी ॥

॥ वेयढगिरि सितिर शय जिनहर, वृषधरनां तिहां
 व्रीशजी ॥ कुरुडुमनां दश जिनहर वोढ्या, गजदंते
 तिहां व्रीशजी ॥ १ ॥ असिअ ते जिनहर कुरुडुम
 परिधे, असिअ वखारे जाणुंजी ॥ मेरु तणां पंचाशी
 जिनहर, झुकारे चार वखाणुं जी ॥ २ ॥ मानुपोत्तर
 पर्वत ति ां चारज, नंदीसरनां व्रीशजी ॥ कुंरुल रुचक
 तिहां चार चार जिनहर, रुषजादिक तिहां ईशजी
 ॥ ३ ॥ पंच सया झग्यारे अधिकां, जिनहर तीर्थे लोकेजी
 ॥ पन्निमा एकसठ सहस चारसें, वोली सघले थोकेजी
 ॥ ४ ॥ अधो ऊर्ध्व ने तीर्थे लोके, सवे मली कोनी आठे-
 जी ॥ लाख ठप्पन ने सहस सत्ताणुं, पणसय चोत्रीश
 पाठेजी ॥ ५ ॥ जिनपन्निमा पन्नरसें कोनी, वेंतालीश
 वली कोनीजी ॥ लाख पंचावन सहस पणवीस, पणसय
 चालीश जोनीजी ॥ ६ ॥ एतां स्तवन जणे जे जावे,
 प्रह उगमते सूरेजी ॥ वाचक सूला कहे गुण गातां,
 दुर्गति नासे झूरेजी ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ अठावय समेतशिखर गिरि ॥ साजनजीअ ॥
 रेवत गिरि सितुंज ॥ गजपद धम्म चक्र कहुं ॥ सा० ॥

वैज्जारगिरि उत्तंग ॥ १ ॥ रावते कुजरावते ॥ सा० ॥
 तिहुअण गिरि ग्वालेर ॥ काशी अवती जाणीए ॥
 सा० ॥ नागोर जेसलमेर ॥ २ ॥ सोरिपुर हृष्टिणाउरे ॥
 सा० ॥ अवल इरावण पास ॥ पीरोजीपुरे नूअरु जलो
 ॥ सा० ॥ फलोधि पूरे आश ॥ ३ ॥ विकानेर ने मेरुते
 ॥ सा० ॥ सीरोही आवुशृग ॥ राणकपुर ने सादनी ॥
 सा० ॥ वरकाणे मनरग ॥ ४ ॥ चिन्नमाल ने कोटडे ॥
 सा० ॥ वाहरुमेर मोजार ॥ रायधणपुर रक्षियामणु ॥
 सा० ॥ शांतिनाथ दयोड्र जुहार ॥ ५ ॥ साचोर जालोर
 रारुद्रे ॥ सा० ॥ गोनीपुर वर पास ॥ पाटण अमदा-
 वाद वली ॥ सा० ॥ सखेसर दीजे चास ॥ ६ ॥ अमी-
 ऊरे नवपह्लवे ॥ सा० ॥ नव खंरु थलाद्रे ठाम ॥ तारंगे
 बुरहानपुरे ॥ सा० ॥ वंडुं माणक शाम ॥ ७ ॥ खंजा-
 यत ने तारापुरे ॥ सा० ॥ मातर ने गंधार ॥ लोरुण
 चितामणि वरु ॥ सा० ॥ सुरत रुजोड्र जुहार ॥ ८ ॥
 देवक पाटण देवगिरि ॥ सा० ॥ नवेनगर वंदी जोय
 ॥ दीवादिक सवि वदरे ॥ सा० ॥ अंतरिक सिरिपुर
 होय ॥ ९ ॥ वरुनगर ने कुंगरपुरे ॥ सा० ॥ इरु
 मालव देश ॥ कल्याणक जिहां जिन तणां ॥ सा० ॥

मन सूधे प्रणमेश ॥ १० ॥ गाम नगर पुर पाटणे ॥
सा० ॥ जिनमूरति जिहां होय ॥ वाचक मूला कहे
मुऊ ॥ सा० ॥ वंदतां शिवसुख होय ॥ ११ ॥ कलश ॥
ठनुंए जिनवर ठनुंए जिनवर ॥ अधो ऊर्ध्व ने लोक
तीर्ते जाणुं ए ॥ सासय असासय जिनपदिमा, ते सवे
वखाणुं ए ॥ गह्व विधिपद्म पूज्य परगट, श्री धर्म-
मूर्ति सूरींदु ए ॥ वाचक मूला कहे जणतां, रुद्धि
वृद्धि आणुंए ॥ १२ ॥

॥ इति वृद्धचैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥



(१७९)

॥ श्री कन्न केवलनाणी ॥

॥ मगलाचरण ॥

॥ अरज करुं आनंदथी, जय जय जग कर्तार ॥
“ लखम ’ तिनंति आ समे, उर धारो सुखकार ॥

॥ गीति ॥

॥ श्री महि जिनवरने, पाये लागी प्रगट करुं कविता ॥
करुणा मुज पर करजो, जेथी प्रसरे काव्य तणी रविता ॥

॥ कच्छ देशे आवेल जैन चैत्यांनी केवलनाणी ॥

॥ दक्षिण चरते कुकण देशे ॥ साजीनजीअ ॥ मुंवड
मंदर कहेवाय ॥ जिनमदिर जिहां घणां ॥ साजीन-
जीअ ॥ वंडुं वारंवार ॥ १ ॥ कन्न देशे शोचता ॥ सा-
जीनजअ ॥ सुथरीअ कीधो वास ॥ आशा सहुनी
पूरवे ॥ साजीनजीअ ॥ गरतकळोरु जिन पास ॥ २ ॥
साहेरो कोठारो वरानीउं ॥ साजीनजीअ ॥ सांधाण
शांति जुहार ॥ सांधव परजाड वारोपद्धर ॥ साजीन
जीअ ॥ वांकुअ अजित जुहार ॥ ३ ॥ अरखाणु रापर
सिंधोनी ॥ साजीनजीअ ॥ राणपुर दादा जुहार ॥
जसापुर जखौ वदर ॥ साजीनजीअ ॥ वंडुं वीर जिणंद

॥ ४ ॥ वरुसर शुजापुर बांढीउं ॥ साजीनजीअ ॥ तेरा
नलीआ मुजार ॥ चंद्रप्रभु अति दीपता ॥ साजीन-
जीअ ॥ वंडुं वंडुं वारंवार ॥ ५ ॥ मंजल विथोण अंगीउं
नखत्राणुं ॥ साजीनजीअ ॥ माकपट परगणुं कहेवाय
॥ गढसीसो ने कोटमो ॥ साजीनजीअ ॥ देवपुर देव
जुहार ॥ ६ ॥ राधणजर ने कोटमी ॥ साजीनजीअ ॥
नागरचो चीआसर गाम ॥ वंडी नाणपुर डुमरो ॥
साजीनजीअ ॥ मोरीमंजल आदि जुहार ॥ ७ ॥ वढ
लठेरी बाहामो ॥ साजीनजीअ ॥ चींयसरा लायजो
गाम ॥ देढीआ बायेट हालापु ॥ साजीनजीअ ॥
सात्रराइ चोजाय गाम ॥ ८ ॥ नानुं मोटो रतमीउं ॥
साजीनजीअ उंनकोट गोधरो गाम ॥ सेमी दोण मेराओ
॥ साजीनजीअ ॥ नवेवास संति जुहार ॥ ९ ॥ रायण
कोमाय नागलपुर ॥ साजीनजीअ ॥ मांमवी चैत्य पांच
जुहार ॥ गाम गुंदीआरी तणुंआणुं ॥ साजीनजीअ ॥
आसंबीउं ने वाहु ठे गाम ॥ १० ॥ वीदमा जामिआ
कांमाकाहा ॥ साजीनजीअ ॥ नानी मोटी खाखर
जुहार ॥ जुजपुर त्रेगमी देशलपुर ॥ साजीनजीअ ॥
मुंनरा नगर जुहार ॥ ११ ॥ गोएर वारइ बुणी बसरो

॥ साजीनजीअ ॥ बांकी पत्री वरानो ठे गाम ॥ टुंढा
 नविनार कपाइउं ॥ साजीनजीअ ॥ चदरा नगरी
 मुजार ॥ १२ ॥ वावन जिनालय दीपतां ॥ साजीन-
 जीअ ॥ वडु वंडु वीर जिणंद ॥ जुअरुदगारुं कुंधोडी
 ॥ साजीनजीअ ॥ अंजार दुधइ गाम ॥ १३ ॥ चचाउ
 चोवारीउं जीसरो ॥ साजीनजीअ ॥ गरपातर धमरुको
 गाम ॥ किमीआशर नगर रव वकुतरो ॥ साजीनजीअ
 ॥ जगी जरु चीरुमीउं गाम ॥ १४ ॥ गीमी सणुउं
 उमइयो ॥ साजीनजीअ ॥ रापर फतेगढ गाम ॥ तुणा
 चीमाशर आदेशर ॥ साजीनजीअ ॥ सांतखपुर वेवो
 ठे गाम ॥ १५ ॥ प्रांसुउं ने गांगोधर ॥ साजीनजीअ ॥
 चीत्रोरु मुनफरो गाम ॥ वांढीउं वेध वखाणीए ॥ साजी-
 नजीअ ॥ कानमेर आधोइ गाम ॥ १६ ॥ वेज पासर
 अंवेमी कटारीउं ॥ साजीनजीअ ॥ सिकारपुर लाकमीउं
 गाम ॥ जुज मानकुउं वेराजो ॥ साजीनजीअ ॥ पुनमी
 तुवमी चुनमी ठे गाम ॥ १७ ॥ मुखा फराघीउं रामाणीउं
 ॥ साजनजीअ ॥ चट्ट नयुसानी कहेवाय ॥ संख्या
 सोनी जाणीए ॥ साजीनजीअ ॥ उपर वत्रीश गाम ॥
 १८ ॥ गाम नगर पुर पाटणे ॥ साजीनजीअ ॥ जिन-

मूरति जिहां होय ॥ उत्तमसागर कहे पूज ॥ साजी-
नजीअ ॥ वंदतां शिवसुख होय ॥ १ए ॥ कलश ॥
ठनुंअ जिनवर ठनुंअ जिनवर, अथो ऊर्ध्व ने लोक
तीर्हो जाणीए ॥ सासय असासय जिनपदिमा, ते सवे
वखाणीए ॥ १ गठ विधिपद्द पूज्य प्रकट, ज्ञानदान
मुणंडु ए ॥ वाचक मूला कहे जणतां, रिद्धि वृद्धि
आणंडु ए ॥ २ ॥ इति कहुदेशनी तीर्थमाला संपूर्ण ॥

॥ श्री शामला पार्श्वनाथजीना देरासरसुं वर्णन ॥

॥ त्रोटक छंद ॥

॥ सुखदाइ सवाइ शहरे जणुं, मही मंरुण कठ चूमि
तणुं ॥ शाहुकार श्रीमंत जनो बहुला, नव यौवन नारी
घणी चपला ॥ जिनमंदिर सुंदर शोभी रहां, सुरलोकथी
लावी विमान ग्रहां ॥ नव रंगीत पंच सुवर्णमयी, बहु
बारी ऊरुख गवाह सइ ॥ चीतरेल मनोहर शिष्टप
जने, नर नारी जनावर पही अने ॥ सुर किंनर दानव
नागीनका, जुवना सुर वंतर ज्योतिष्का ॥ बली साथ
साहेली टोली मली, गुण गाय जिनेश्वरना विमली ॥
सुरी किंनरी खेचरी प्रदक्षि, बहु नृत्ये सुगीत मुखे
स्तवती ॥ धरी जेरी पखाज मृदंग बहु, सरणाइ सतारथी

गाय सहु ॥ गणी कोण शके गुण तेह तणा, जली जार्ती
जूली रहे जणतां ॥ जइ तेरा नगरे शुभ्र जाव धरी,
चरणंबुज वंदन हर्ष करी ॥ प्रभु पार्श्व जिनेश्वर शाम-
लीआ, निरखत मुज पाप सवे टलीआं ॥ करजोकी
लखमशी वदे मुखथी, तुम मुक्त करो मुजने दुःखथी ॥
सुख शांति करो पूरी ताप हरो, बल बुद्धि पराक्रमवान
करो ॥

॥ अथ श्री महावीरस्वामीना पाच कल्याणकनु
चोढालीयु प्रारभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रेमे प्रणमुं सरस्वती, मागुं अविचल वाणी ॥ वीर
तणा गुण गायशुं, पंच कट्याणिक जाणी ॥ १ ॥ गुण
गातां जिनजी तणा, लहीए जवनो पार ॥ सुख समाधी
होये जीवने, सुणजो सहु नर नार ॥ २ ॥

॥ राम थु जो-ए देशी ॥

॥ जंबुद्वीपना भरतमां जो ॥ रुकुं माहणकुंठ ठे
गाम जो ॥ रूपनदत्त माहण तिहां वसे जो, तस
नारी देवानंद नाम जो ॥ १ ॥ चरित्र सुणो
जिनजी तणां जो ॥ ए आंकणी ॥ जेम समकित

निर्मल थाय जो, अष्ट महासिद्धि संपजे जो ॥ वली
 पातक दूर पलाय जो ॥ च० ॥ १ ॥ उजली ठठ-
 आषाढनी जो, योगे उत्तराफाट्गुनी सार जो ॥ पुष्पो-
 त्तर सुविमानथी जो, चवी कुखे लीयो अवतार
 जो ॥ च० ॥ ३ ॥ देवानंदा तेणी रयणीए जो, सुतां
 सुपन लह्यां दश चार जो ॥ फल पूठे निज कंथने
 जो, कहे ऋषभदत्त मन धारजो ॥ च० ॥ ४ ॥ जोग
 अरथ सुखपामशुं जो, तमे लहेशो पुत्ररतन जो ॥ देवा-
 नंदा ते सांजली जो, कीधुं मनमां तहत्ति वचन जो ॥
 च० ॥ ५ ॥ सांसारिक सुख जोगवे जो, सुणो अच-
 रिज हुठ तिणी वार जो ॥ सुधर्म इंद्र तिहांकणे जो,
 जोइ अवधि तणे अनुसार जो ॥ च० ॥ ६ ॥ चरम
 जिणेशर उपना जो, देखी हरख्यो इंद्र महाराज जो ॥
 सात आठ पग साहमो जइ जो, एम वंदन करे शुभ
 साज जो ॥ च० ॥ ७ ॥ शक्रस्तव विधिंशुं करी जो, फरी
 बेठो सिंहासन जाम जो ॥ च० ॥ मन विमासणमां
 परुयुं जो, चित्त चिंतवे सुरपति जाम जो ॥ च० ॥ ८ ॥
 जिन चक्री हरि रामजी जो, अंत पंत माहणकुले जोय
 जो ॥ आव्या नहीं नहीं आवशे जो, ए तो उग्र जोग

राजकुले होय जो ॥ च० ॥ ए ॥ अंतिम जिणेश्वर आ-
 वीया जो, ए तो माहणकुलमां जेण जो ॥ ए तो अठे-
 रात्रूत ठे जो, थयुं हुंसा अवसर्पिणीमां तेण जो ॥ च०
 ॥ १० ॥ काल अनंत जाते थके जो, एहवा दश अठेर
 थाय जो ॥ इण अवसर्पिणीमां थया जो, ते कहीए
 जे चित्त लाय जो ॥ च० ॥ ११ ॥ गर्जहरण उपसर्गने
 जो, मूलरूपे आव्या रवि चंद्र जो ॥ निष्फल देशना जे
 थइ जो, गयो सौधर्म चमरेंद्र जी ॥ च० ॥ १२ ॥ ए
 श्री वीरनी वारमां जो, कृष्ण अमरकका गया जाण जो
 ॥ नेमनाथने वारे सही जो, स्त्रीतीर्थ मद्धि गुणखाण
 जो ॥ च० ॥ १३ ॥ एकसो आठ सिद्धा रूपने जो,
 वारे सुविधिने असंयती जो ॥ शीतलनाथ वारे थयुं जो,
 कुल हरिवंशनी उत्पत्ती जो ॥ च० ॥ १४ ॥ एम विचार
 करे इदलोजी, प्रभु नीच कुले अवतार जो ॥ तेहनुं का-
 रण शुं अठे जो, इम चिंतवे हृदय मजार जो ॥ च० ॥ १५ ॥

॥ ढाल वीजी ॥

॥ आसो मासे शरद पूनमनी रात जो-ए देशी ॥

॥ जव मोटा कहीए प्रभुना सत्यावीश जो, मरिची
 ५ त्रिदंकी ते मांहे त्रीजे जवे रे जो ॥ तिहां जरत चक्री-

सर वांढे आवी जोय जो, कुलनो मद करी नीच गो-
 त्र वांध्युं तेहवे रे जो ॥ १ ॥ ए तो माहणकुलमां आव्या
 जिनवर देव जो, अति अणजुगतुं एह थयुं थाशे नहीं
 रे जो ॥ जे जिनवर चक्री नीच कुल मांहे जो, ठे मा-
 हरो आचार धरुं उत्तम कुले सही रे जो ॥ २ ॥ एम
 चितवी तेड्यो हरिणगमेपी देव जो, कहे माहणकुंडे
 जइने ए कारज करो रे जो ॥ ठे देवानंदानी कुखे चरम
 जिणंद जो, हर्ष धरीय प्रचुने तिहांथी संहरो रे जो ॥
 ३ ॥ नयर द्वात्रिकुंफ राय सिद्धारथ गेह जो, त्रिशला
 राणी तेहनी ठे रूपे जली रे जो ॥ तस कुखे जइ
 संक्रमावो प्रचुने आज जो, त्रिशलानो जे गर्ज अठे ते
 माहणकुले रे जो ॥ ४ ॥ जेम इंद्रे कहुं तेम कीधुं त-
 द्वाण तेण जो, व्याशी रातने अंतरे प्रचुने संहरथा
 रे जो ॥ माहणी सुपनां जाणे त्रिशला हरी लीधने जो,
 त्रिशला देखी चौद सुपन मनमां धरथां रे जो ॥ ५ ॥
 गज वृषज अने सिंह लक्ष्मी फूलनी माल जो, चंदो
 सूरज ध्वज कुंज पद्म सरोवरु रे जो ॥ सागर ने देव-
 विमानज रत्ननी राशि जो, चौदमे सुपने देखी हरखी
 अग्नि मनोहरु रे जो ॥ ६ ॥ शुभ सुहणां देखी हरखी

त्रिशला नार जो, परचाते उठीने पियु आगल कहे रे
 जो ॥ ते सांचली दिलमां राय सिद्धारथ नेह जो,
 सुपनपाठक तेनीने पूठे फल लहे रे जो ॥ ७ ॥ तुम
 होशे राज अरथ नेसुत सुख नोग जो, सुणी त्रिशला-
 देवी सुखे गर्ज पोपण करे रे जो ॥ तव माता हेते
 प्रभुजी रह्या संलीन जो, ते जाणीने त्रिशला दुःख
 दिलमां धरे रे जो ॥ ८ ॥ मे कीधां पाप अघोर नवो-
 नव जेह जो, दैव अटारो दोषी देखा नवि शके रे जो
 ॥ मुज गर्ज हरथो जे किम पामुं हवे तेह जो, रांक
 तणे घेर रत्न चितामणि किम टके रे जो ॥ ९ ॥ प्रभु-
 जीए जाणी ततखिण दुःखनी वान जो, मोह विटंवन
 जाकिम जगमां जे लहुं रे जो ॥ जुठ अदीठा पण एवमो
 जागे मोह जो, नजरे वांध्या प्रेमनु कारण गुं कहुं रे
 जो ॥ १० ॥ प्रभु गर्ज थकी हवे अजियह लीधो एह
 जो, मातपिता जीवतां संयम वेशुं नहीं रे जो ॥ एम
 करुणा आणी तुरत हलाव्यु अंग जो, माताने मन
 उपन्यो हर्ष घणो सही रे जो ॥ ११ ॥ अहो जाग्य
 अमारुं जाग्य सहीयर आज जो, गर्ज अमारो हाट्यो
 सहु चिता गइ रे जो ॥ एम सुखजर रहेतां पूरण हुवा

नव मास जो, ते उपर वली सानीसात रयणी थइ रे
जो ॥ १२ ॥ तव चैत्र तणी सुदि तेरस उत्तरा रिस्क
जो, जन्म्या श्री जिन वीर हुइ वधामणी रे जो ॥ सहु
धरणी विकसी जगमां थयो प्रकाश जो, सुर नरपति
घर वृष्टि करे सोवन तणी रे जो ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ माहरी सही रे समाणी-ए देशी ॥

॥ जनम समय श्री वीरनो जाणी, आवी ठप्पन
कुमारी रे ॥ जगजीवन जिनजी ॥ जनम महोत्सव करी
गीतज गाये, प्रभुजीनी जाउं बखिहारी रे ॥ ज० ॥ १ ॥
ततक्षण इंद्र सिंहासन हाव्युं, घोषे घंटा वजरावी रे
॥ ज० ॥ मलीया कोनी सुरासुर देवा, मेरु पर्वते आवी
रे ॥ ज० ॥ २ ॥ इंद्रो पंच रूपे प्रभुजीने, सुरगिरि उपर
लावे रे ॥ ज० ॥ यत्न करी हैरामां राखे, प्रभुने शीश
नमावे रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ एक कोनी साठ लाख कलशदा,
निर्मल नीरे नरीया रे ॥ ज० ॥ नाहनो बालक ए
किम सहेशे, इंद्रे संशय धरीया रे ॥ ज० ॥ ४ ॥
अतुलीबल जिन अवधे जोइ, मेरु अंगुठे चंप्यो रे
॥ ज० ॥ पृथ्वी हांलकलोल थइ तव, धरणीधर तिहां

कप्यो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ जिननुं बल देखीने सुरपति,
 जक्ति करीने खमावे रे ॥ ज० ॥ चार वृषजनां रूप
 धरीने, जिनवरने नवरावे रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ अमृत अंगुठे
 थापीने, माता पासे मेले रे ॥ ज० ॥ देव सहु नंदीसर
 जाये, आवतां पातक ठेले रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ हवे प्रजाते
 सिद्धारथ राजा, अति घणा उठव मंरावे रे ॥ ज० ॥
 चकले चकले नाच करावे, जगतनां दाण ठंरावे रे ॥
 ज० ॥ ८ ॥ वारमे दिवसे सज्जन संतोपी, नाम दीधुं
 वर्द्धमान रे ॥ ज० ॥ अनुक्रमे वधतां आठ वरसना, हुआ
 श्री वर्द्धमान रे ॥ ज० ॥ ९ ॥ एक दिन प्रभुजी रमवा
 चाढ्या, तेवतेवका संघाती रे ॥ ज० ॥ इंद्रमुखे परशंसा
 निसुणी, आव्यो सुर मिथ्याती रे ॥ ज० ॥ १० ॥ पन्न-
 गरूपे जाडे बलग्यो, प्रभुजीए नाख्यो जाली रे ॥ ज०
 ॥ तारु समान बली रूप कीधु, मुठीए नाख्यो उठाली
 रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ चरणे नमीने खमावे सुर, नाम धरे
 महावीर रे ॥ ज० ॥ जेहवा तुमने इंद्रे बखाण्या, तेहवा
 ठो प्रभु धीर रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ मातपिता निशाले जण-
 वा, मूके बालक जाणी रे ॥ ज० ॥ इद्र आवी तिहां
 प्रभज पूठे, प्रभु कहे अर्थ बखाणी रे ॥ ज० ॥ १३ ॥

जोवन वय जाणी प्रभु परण्या, नारी यशोदा नामे रे
॥ ज० ॥ अठ्यावीशमे वरसे प्रभुनां, मातपिता स्वर्ग पामे
रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ चाइजीनो आग्रह जाणी, दोय वरस
घरवासी रे ॥ ज० ॥ तेहवे-लोकांतिक सुर बोले, प्रभु
कहो धर्म प्रकाशी रे ॥ ज० ॥ १५ ॥

॥ ढाल चौथी ॥

॥ तारे माथे पंचरंगी पाग सोनानो छोगलो मास्जी-ए देशी ॥

॥ प्रभु आपे वरसी दान जलुं रवि उगते ॥ जिन-
वरजी ॥ एक कोमी ने आठ लाख सोनैया दिन
प्रते ॥ जि० ॥ मागशिर वदि दशमी उत्तरा योगे
मन धरी ॥ जि० ॥ चाइनी अनुमति मागीने दीक्षा
वरी ॥ जि० ॥ १ ॥ तेह दिवस थकी चउनाणी
प्रभुजी थया ॥ जि० ॥ साधिक एक वरस ते चीवर-
धारी प्रभुजी ॥ जि० ॥ पठी दीधुं वंजणट वे वार
खंकोखंडे करी ॥ जि० ॥ प्रभु विहार करे एकाकी
अनिग्रह चित्त धरी ॥ जि० ॥ २ ॥ साप्तावार वर्षमां
घोर परिषह जे सह्या ॥ जि० ॥ शूलपाणि ने संगम
देव गोशाळाना कह्या ॥ जि० ॥ चंफकोशी ने गो-
वाले खीर रांधी पग उपरे ॥ जि० ॥ काने खीला

खोस्या ते दुष्ट सहु प्रभु उद्धरे ॥ जि० ॥ ३ ॥ लेख
 अरुदना वाकला चदनवाला तारीया ॥ जि० ॥ प्रभु
 परउपकारी सुख दुःख सम धारीयां ॥ जि० ॥
 ठमासी वे ने नव चोमासी कहीए रे ॥ जि० ॥
 अढीमास त्रिमास दोढ मास ए वे वे लहीए रे
 ॥ जि० ॥ ४ ॥ पट्ट कीधा वे वेमास प्रभु सोहा-
 मणा ॥ जि० ॥ चार मास ने परक वहोतेर ते रलि-
 यामणा ॥ जि० ॥ ठठ वस उंगणत्रीश वार अठम
 वखाणीए ॥ जि० ॥ नद्रादिक प्रतिमा दिने वे
 चौदश जाणीए ॥ जि० ॥ ५ ॥ साकावार वर्ष तप
 कीधां विण पाणीए ॥ जि० ॥ पारणां त्रणसे उंगण-
 पचास जाणीए ॥ जि० ॥ तव कर्म खपावी ध्यान
 शुक्ल मन ध्यावता ॥ जि० ॥ वैशाख सुदि दशमी
 उत्तरा योगे सोहावता ॥ जि० ॥ ६ ॥ शाली बृद्ध
 तले प्रभु पाम्या केवलनाण रे ॥ जि० ॥ लोका-
 लोक तणा परकाशी थयो प्रभु जाण रे ॥ जि० ॥
 इन्द्रचूति प्रमुख प्रतिबोधी गणधर कीध रे ॥ जि० ॥
 संघथापना करीने धर्मनी देशना दीध रे ॥ जि०
 ॥ ७ ॥ चौद सहस जला अणगार प्रभुने शोचता

॥ जि० ॥ वली साध्वी सहस ठत्रीश कही निलोंजता
॥ जि० ॥ उंगणसाठ सहस एक लाख ते श्रावक संपदा ॥ जि० ॥ तीन लाख ने सहस अठार ते श्राविका संपदा ॥ जि० ॥ ७ ॥ चौदपूर्वधारी त्रणसें संख्या जाणीए ॥ जि० ॥ तेरसें उंहिनाणी सातसें केवली वखाणीए ॥ जि० ॥ लब्धिधारी सातसें विपुलमति वली पांचसें ॥ जि० ॥ वली चारसें वादी ते प्रभुजी पासे वसे ॥ जि० ॥ ए ॥ शिष्य सातसें ने वली चौदसें साध्वी सिद्ध थयां ॥ जि० ॥ ए प्रभुजीनो परिवार कहेतां मन गहगह्यां ॥ जि० ॥ प्रभुजीए त्रीश वरस घरवासे जोगव्यां ॥ जि० ॥ ठग्नस्थपणामां वार वरस ते जोगव्यां ॥ जि० ॥ १० ॥ त्रीश वरस केवल वहेतालीश वरस संजमपणुं ॥ जि० ॥ संपूरण वहोतेर वरस आयु श्री वीर तणुं ॥ जि० ॥ दीवाली दिवसे स्वाति नक्षत्र सोहंकरु ॥ जि० ॥ मध्य राते मुक्ति पोहोता प्रभुजी मनोहरु ॥ जि० ॥ ११ ॥ ए पांच कट्याणक चोवीशमा जिनवर तणां ॥ जि० ॥ ते त्रणतां गणतां हरख होये मनमां घणा ॥ जि० ॥ जिन शासननायक त्रिशला सुत चित्त रंजणो ॥ जि० ॥ त्रवियणने शिवसुखकारी त्रवन्नय त्रंजणो ॥ जि० ॥ १२ ॥

॥ कलग ॥

॥ जयवर जिनवर संघ सुखकर, युएयो अति उत्सुक
धरी ॥ संवत् सत्तर एकाशीए, सुरत चोमासु करी ।
श्री सहजसुंदर तणो सेवक, नक्तिशुं एणी परे कहे ॥
प्रभुजीशुं पूरण प्रेम राख्यो, नित्य लान्न वंठित लहे ॥१३॥

॥ कच्छनी प्रसिद्ध प्रतिष्ठानु चोढालीयु ॥

॥ दोहरा ॥

॥ कुंकण देश सोहामणो, ममाइ वंदर धाम ॥ अनं-
तनाथजीना देहरे, मांरुवी वंदर साम ॥ १ ॥ सध चतुर
जिहां शोचीए, तिहां परम निधान ॥ दशा उंसवाल
कुळे प्रगटीयो, सवा नेणशी काम ॥ २ ॥ वेलजी माळु
मांहे दीपता, कंगवजी नायक सुजाण ॥ सध मली
तिहां सामटो, वरतावी जिन आण ॥ ३ ॥ जात्राए जावे
सहु रीऊगु, वाजिन्नो नहीं पार ॥ घेला पदमशी शुन्न
सेवतां, हियडे हरख अपार ॥ ४ ॥ संवत् उंगणीसें अ
ढारमां, मागशिर सुदि एकादशी वार ॥ जगद्गुरु दि
सोहावीया, घोघा वदिर मोजार ॥ ५ ॥

॥ श्री अरिहतपद याइए-ए देशी ॥

॥ नवखंराजी जुहारीए, जात्रा कीधी मनोहार ल

लना ॥ पुन्य पसायथी पामीए, अधिकी उमेद अपार
ललना ॥ नवण ॥ १ ॥ शामली मूरत सुहामणी, जलके
केवल ज्योत ललना ॥ परचो पूरे पासजी, आतमनो
आधार ललना ॥ नवण ॥ २ ॥ कामकाज सवि मेलीयां,
कीधो परउपकार ललना ॥ जगति ज्ञावशुं जे कीजे,
शिवगतिनो विसराम ललना ॥ नवण ॥ ३ ॥ पहेली
जात्रा तिहां कीधी, बीजी ज्ञावनगर मऊार ललना ॥
गोमीपास जिन वंदीए, पातीक दूर पलाय ललना ॥ पास
जिनेशर वंदीए ॥ ४ ॥ तव तिहांथी चाळीया, जेटवा
शेत्रंजा राय ललना ॥ स्नात्रपूजा जे करे, शुद्ध स्वरूप
नीहाल ललना ॥ पासण ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शेत्रंजो सुहामणो, मरुदेवीनो नंद ॥ युगला-
धर्म निवारतो, नमो नमो युगादि जिणंद ॥ १ ॥ संघ
सामैयां सारां कर्या, वाजित्र सब सोहाय ॥ गीत गावे
पुणवंतनां, जाइ तलेटी समुदाय ॥ २ ॥ संसारे जमतां
थकां, गयो एले अवतार ॥ मानवजव जो पामीए, जाउं
शेत्रंजे सुपसाय ॥ ३ ॥ श्रावककुले अवतर्या, पाम्यो सर्वथी
प्रार ॥ आतिमरूप नीहालतां, वधते मंगलमात्र ॥ ४ ॥

(१९५)

॥ धन धन ते जग प्राणीया मनमोहन मेरे-ए देशी ॥

॥ शेत्रुजो सोहामणो ए जेटवा आदेसर दयाल

मनमोहन मेरे ॥ १ ॥ चामुख चार दिशे जलो ॥ मन

॥ नव टुके नीहाल ॥ मन० ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र जल

॥ मन० ॥ त्रिहुं वंदना सार ॥ मन० ॥ २ ॥ शिवपुरम

वासो वसे ॥ मन० ॥ उमेद अधिक अपार ॥ मन०

कामकाज सवि फड्यां ॥ मन० ॥ दरिसण देख्या आ

॥ मन० ॥ ३ ॥ साहमीवठल तिहां कल्यां ॥ मन०

दीधां साधुने दान ॥ मन० ॥ जात्रा नवाणुं जे करे ,

मन० ॥ धन्य ते नर ने नार ॥ मन० ॥ ४ ॥ पंच

काले पामवो ॥ मन० ॥ एहवा प्रचुनो दीदार ॥ मन०

॥ सर्व तीर्थथी ठे वमो ॥ मन० ॥ शिवगतिनो वि

सराम ॥ मन० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ सिद्धाचल सहु जेटया, जाव धरी जरपूर ॥ आ

वशे आशाए बहु, मन वचन करी शुद्ध ॥ १ ॥ त

तिहांथी चालीया, सोरठ देश मजार ॥ राजकोट आर्व

तिहा, कीधो आगम विस्तार ॥ २ ॥ आडवर कीधं

बहु, रचना बहु रसाल ॥ अधिकी उपमा ते कहुं, मन-
मां करी विशाल ॥ ३ ॥ धर्म करे धनवंत ते, देखी
देख्या करे शाल ॥ अवसर ते जाणजो, चाखे
तव ते सार ॥ ४ ॥

॥ सांभलो शेठजी विनति रे ॥ ए देशी ॥

॥ कळ देश सुहामणो रे लाल, सरव मांहे सार ॥
मन मोहुं रे ॥ धनवंत वसे तिहां रे लाल, श्रावकनो
परिवार ॥ मन० ॥ कळ० ॥ १ ॥ परउपगारी तिहां
हुआ रे लाल, चद्रेसर पाटण ॥ मन० ॥ जगमुसा
लासा तिहां हुआ रे लाल, दीधां जगतने दान ॥ मन०
॥ कळ० ॥ २ ॥ तव श्रावक तिहां ते हवा रे लाल,
धनवंत धर्मी कहेवाय ॥ मन० ॥ पुण्यपसायथी पामी-
या रे लाल, खरचे धन अपार ॥ मन० ॥ कळ० ॥ ३ ॥
प्रेमे प्रतिष्ठा जे करे रे लाल, आब्या मोरवी मजार ॥
मन० ॥ जगतिचावशुं जेटीया रे लाल, फले मनोरथ
सर्व ॥ मन० ॥ कळ० ॥ ४ ॥ संघनी शोजा सारी कहुं
रे लाल, वजर वाजित्र रसाल ॥ मन० ॥ जुगति जोवा
जेवी करी रे लाल, जली जेट ॥ मन० ॥ कळ० ॥ ५ ॥

(१९७)

॥ दुहा ॥

॥ सकारपुर बहु शोचतो, उपतो अधिक अपार
चली जातशुं जेटवा, आव्या अंजार मोजार ॥ १
जिम जोशए तिम शोचियो, श्रावकनो परिवार ॥
एकसो दोय, उपसंख्या कीधी मनोहार ॥ २ ॥ ह
हियका मांहे घणो, करथां धरमनां काज ॥
अधिको ओपतो, कोइ करी परिणाम ॥ ३ ॥

॥ ज्ञान आगळ सुदर दीवो रे मनमोहन सुदर मेला-ए देशी

॥ आव्या कोठारा नगर मजार, वाजित्र वली ल
॥ रचना रची अपार रे, मलीया माणस बहु सार रे
मनमोहन सुंदर मेलो ॥ हरख हिये सहुने घणो रे
मन० ॥ ह० ॥ १ ॥ देश देशं ककोतरी जावे, ह
सहु ते आवे ॥ मननी मोजे सुख सहु पावे, ज
जग सहु गावे रे ॥ मन० ॥ हरख० ॥ २ ॥ आठ
उठव मंकावे, मांकावासां सघ सुहावे ॥ जगति
जात करावे, तीकमजी वेलजी तवन केवरावे रे
मन० ॥ हरख० ॥ ३ ॥ गठ अश्ल सागरशुं जरी
रतनसागर सूरि ज्ञाननो दरीयो ॥ सर्व साधु संघे
रिवारे परिवरीयो, हरख हियडे मनने धरीयो रे

मन० ॥ हरख० ॥ ४ ॥ गजपुरी नगरीमें ताजा, विश्वसेन
महाराजा ॥ अचिरा माताए हुलराव्या, शांतिनाथ
तिहां पधराव्या रे ॥ मन० ॥ हरख० ॥ ५ ॥ एक लाख
वरस आयु प्रमाणे, धनुष चालीशनुं मान ॥ मृगवंहून
मानुं ज्ञान, प्रभु पधरावी दीधां दान रे ॥ मन० ॥ हर-
ख० ॥ ६ ॥ सावग जारानो देहरो कीधो, शिखर चढा-
वीने जश लीधो ॥ जिम कटपतरुनी परे ध्वज रोप्यो,
महा सुदि तेरस वार बुध सिध्यो रे ॥ मन० ॥ हरख०
॥ ७ ॥ देहरानी मांरणी सारी लागी, नवानगरथी
प्यारी ॥ अधिक उपमा रसाली, जिन देखी तिम लागे
प्यारी रे ॥ मन० ॥ हरख० ॥ ८ ॥ सामीवहल करीयां
सारां, श्रीसंघने लागे प्यारां ॥ चतुर्विध संघ हरखाया,
उंगणीश अठार महा सुद तेरस वारा रे ॥ मन० ॥
हरख० ॥ ९ ॥

॥ कलश ॥

॥ गायो गायो रे शांति तणो गुण गायो, घर घर
उठव अधिक मंराव्यो, संघ सकल हरखायो रे ॥ शांति
तणो गुण गायो ॥ १ ॥ कहू देश कोठारा नगरमें प्रति-
ष्ठाजाव बनायो, अचल गहू अधिक उपायो, रतनसागर

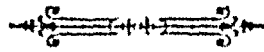
(१९९)

सूरि कहाव्यो रे ॥ शांति० ॥ २ ॥ घर घर थाल
पायो, पांच हजार ते परमाणो, तीकमज वेलजी
यो रे ॥ शांति० ॥ ३ ॥ जाचक जनने गुण ॥ ४ ॥
दान अधिको देवराव्यो, मनसां ध्यावे शिवरामपद
जिम जगमां जश गवरावे रे ॥ शांति० ॥ ४ ॥

॥ इति चौढालीयुं स्तवन संपूर्ण ॥



॥ षष्ठ खंड ॥



॥ उपदेशात्मक पदोनी रसमय चुंटणी ॥

॥ संसारनी असारता विषे ॥

॥ जपती श्रीतमनी जपमाल-ए राग ॥

॥ आहा आ संसार असार जीव तुं जो विचारी,
आधि व्याधि उपाधि अहोनिश जारी ॥ जारी जन्म
जरा ने मरण जवारी ॥ आहा० ॥ १ ॥

॥ साखी ॥

॥ रोम रोम व्यापी रह्या, रोग असंख्य प्रकार ॥ प-
लमां प्रगटे परवशे, पड्यो करे पोकार ॥ जानी ले आ-
तम अलगी, काया आ करमे वलगी ॥ वलगी कष्ट
सहे मन मानी मारी ॥ आहा० ॥ २ ॥

॥ साखी ॥

॥ काम क्रोध मोह मान मद, लोभ जुठ व्यक्तिचार
॥ हिंसा परिग्रहमां पनी, लहे नव अटवी पार ॥ तन
धन धरणी परणी, काजे करजे ए करणी ॥ करणी तेवी
पार उतरणी तारी ॥ आहा० ॥ ३ ॥

॥ साखी ॥

॥ वीतराग वैराग्यधर, वीर वचन अनुसार ॥

(२०१)

मोहजाल सूकी परी, निर्मोही शणगार ॥ टो २१
द्वयो कर्म करी लहे, लहे आनदधन पद ॥ १ ॥
॥ आशा ॥ ४ ॥

॥ आशा ॥

॥ आशा औरनकी क्या कीजे, ज्ञान सुधारस पी
॥ आशा ॥ जटके द्वार द्वार लोकनके, कूकर - १
धारी ॥ आत्म अनुभव रसके रसीया, उतरे न ४
खुमारी ॥ आशा ॥ १ ॥ आशा दासीके जे जाये,
जन जगके दासा ॥ आशा दासी करे जे नायक,
यक अनुभव प्यासा ॥ आशा ॥ २ ॥ मनसा ४
प्रेम मसाला, ब्रह्म अग्नि परजाली ॥ तन जाठी
टाड पीये कस, जागे अनुभव लाली ॥ आशा ॥ ३
अगम पीयाला पीयो मतवाला, चिह्नी अध्यात्म
सा ॥ आनंदधन चेतन वै खेले, देखे लोक तमासा
आशा ॥ ४ ॥

॥ जमनो जपाटो ॥

॥ जम दे नित्य ऊपाटा रे, कोइ चेतनहारा चेतो
हारे कोइ ॥ जम ॥ ठी, ठी, ठी, ठी, दांत काढे
पलसा बगडे पीठी ॥ दीठी दीठी घणानी

चरुप आवी गइ चीठी ॥ जमण ॥ १ ॥ मात पिता जाणे
सुत मारो, थाये दिन दिन मोटो ॥ मोत नजीक आ-
वे ठे एक दिन, खेळ थरो जाइ खोटो ॥ जमण ॥ २ ॥
बंधु जाणे बंधव मारो, जीबे जुग जुग जोकी ॥ काल
अचानक आवी पकमरो, तरत नाखरो तोनी ॥ जमण
॥ ३ ॥ सोल अंग राणमार सजीने, रोवक सासु रीजे
॥ एक दी लाल बेरागण वनधुं, बेश बदलवो बीजो ॥
जमण ॥ ४ ॥ दर्पण लइ शुं मुखकुं देखो, ससजो जम-
नी सहेजमां ॥ एक दी कररो काग कोलाहल, चरुप
सुवाडे चेहमां ॥ जमण ॥ ५ ॥ दारा पुत्र परिवार त-
जीने, जावुं मिटकत मेदी ॥ रुधिराज जिनराज विना
नथी, कोइ खरेखर वेदी ॥ जमण ॥ ६ ॥

॥ अमे अपरपद पाश्या ॥

॥ अब हम असर जये न करेगे ॥ अबण ॥ या का-
रण मिथ्यात दीयो तज, क्युं कर देह धरेगे ॥ अबण ॥
॥ १ ॥ राग द्वेष जग बंध करत है, इनको नाश करेगे
॥ मर्यो अनंत कालतें प्राणी, सो हम काज हरेगे ॥
अबण ॥ २ ॥ देह विनाशी हुं अविनाशी, अपनी गति
पकरेगे ॥ नासी जासी अम थिर वासी, चोखे व्है

निखरेंगे ॥ अत्र ॥ ३ ॥ मर्यां अनंत वार दिन ॥
अव सुख दुःख विसरेगे ॥ आनंदघन निपट
अक्षर दो, नहीं समरे सो मरेगे ॥ अत्र ॥ ४ ॥

॥ आत्मजागृति भावनो उपदेश ॥

॥ बुलगा छद ॥

॥ जाग रे आतमा जाग रे आतमा, मोहनी
चोर लुटे ॥ वित्त दाग अने विपयनी वासना,
शत्रुर्ष खूब कुटे ॥ जाग ॥ १ ॥ वृत्ति वाहिर वहे
आठे ग्रहे, आत्मा अन्तिथी जान झूटयो ॥ क्रोध
मानथी लोच साया थकी, लक्ष चोरागीमां खूब
॥ जाग ॥ २ ॥ पामी मानवपणु पुण्य
मुक्ति साधन अरे तें विसारयु ॥ खूब अपकृत्यथी
गाकु जरयुं, जावुं नरकमां केम धारयु ॥ जाग ॥ ३
श्वस उन्नासथी जीव आयु घटे, खबर नहीं
केम थारो ॥ कालनु कृत्य ते आ क्षणे कीजीए,
थी आ जवाब्धि तरारो ॥ जाग ॥ ४ ॥ कोटी
आवरो नहीं कदि साथमां, पाप ने पुण्य साथेज
॥ दान करजे सदा धर्म वाटे मुदा, दानथी
मोक्ष पावे ॥ जाग ॥ ५ ॥ स्मरण कर देवनु

दीननुं, साधुनां दर्शने पुण्य आवे ॥ साधु दर्शन थकी
 साधु वंदन थकी, कोटी जवनां कल्यां पाप जावे ॥
 जागण ॥ ६ ॥ साधुना संगथी आत्मा जागतो, तीर्थ
 जंगम मुनि जव्य सेवो ॥ तीर्थ जंगम मुनि कटपवेदी
 अहो, पुष्करावर्तना सेध जेवो ॥ जागण ॥ ७ ॥ साथी
 ले सिद्धने धर्म व्यवहारथी, जक्ति उत्साहथी यत्न
 धारो ॥ धर्मकरणी करी फोक आवे नहीं, धर्मथी आ-
 वशे दुःख आरो ॥ जागण ॥ ८ ॥ उंच त्यागी अहो देह
 देवल विषे, शुद्ध चेतन प्रभुने जगामो ॥ बुद्धि-
 सागर सदा जावना मोगरी, स्मरणनो घंट हेते व-
 गामो ॥ जागण ॥ ९ ॥

॥ घडीना नवनवा रंग ॥

॥ गज्जल ॥

॥ घनीमां सुख आवे ठे, घनीमां दुःख आवे ठे ॥
 घनीमां चित्त चकरोले, घनीमां तत्त्व तो खोले ॥ १ ॥
 घनीमां ज्ञाननी वातो, घनीमां शोकनी वातो ॥ घनी-
 मां प्रेमना प्याला, घनीमां शोकनी ज्वाला ॥ २ ॥ घ-
 नीमां लागतुं मीतुं, घनीमां आय नहीं दीतुं ॥ घनीमां
 चित्त आणंदे, घनीमां चित्तुं फंदे ॥ ३ ॥ घनीमां

क्रोधनी माया, घस्तीमां ध्याननी ठाया ॥ घस्तीमां च्य
 ननी बेला, घस्तीमां मित्रना मेला ॥ ४ ॥ घस्तीमां च
 धुलधाणी, घस्तीमां थाय गुणखाणी ॥ घस्तीमां थाय
 सारुं, घस्तीमां थाय अंधारुं ॥ ५ ॥ घस्तीमां अन्न ने पाण
 घस्तीनी वात नहीं जाणी ॥ घस्तीमां चित्तने चारु
 घस्तीमां वेसवा गार्की ॥ ६ ॥ घस्तीमां रकनी बेला, च
 स्तीमां होय वगडेला ॥ घस्तीमां चित्त हरुकायुं, घस्ती
 चित्त ठे माहुं ॥ ७ ॥ घस्तीमां तत्त्वनी वातो, घस्ती
 युद्धनी लातो ॥ घस्तीमां थाय अणधारयु, जीवन
 जाग ठे हारयुं ॥ ८ ॥ घस्तीमां चित्त दिलगीरी, च
 मां वात अणधीरी ॥ घस्तीमां वात ठे खोटी, घस्ती
 वात बहु मोटी ॥ ९ ॥ घस्तीमां रंग ठे न्यारा, समज
 दिलमां प्यारा ॥ घस्तीना रंगमां गोटा, घस्तीना
 ठोटा ॥ १० ॥ घस्तीमां ज्ञाननी वाजी, घस्तीमां रक
 काजी ॥ बुद्ध्यविध ध्यानमां धीरा, विवेके
 एजो वीरा ॥ ११ ॥

॥ मिथ्या गर्व ॥

॥ कीस पर मान गुमान करीने, एक प्रजुजीको
 न धरीजे ॥ जोवन जोर सायाके नीशेमे, जूल गये

पुरु एक पलमें ॥ की० ॥ १ ॥ क्रोध कूपमें परुके गी-
 मारा, एक लपाय न शोधुं तुमारा ॥ की० ॥ २ ॥ लोज
 बुगाइसें सोह पायके, ब्होत दुःखी हुउ नरक जायके
 । की० ॥ ३ ॥ पांच मित्रके फंदमें परुके, वारंवार तुं
 नक नमीके ॥ की० ॥ ४ ॥ इनकुं ठोरु तुम ध्यान
 नगावो, अजर अमर सुख रहेजे पावो ॥ की०
 । ५ ॥ जिनदासकी आश पूरीने, जैन प्रकाशक
 पुण गाइजे ॥ की० ॥ ६ ॥

॥ अंते एकला जवुं छे ॥

॥ जावुं ठे एकला चाली, खंखेरी हाथने खाली ॥
 जावुं ॥ ठाली माथाकुट ठाली ठठारो, मोज रह्यो
 जोइ म्हाली ॥ घाली वेठा घरवेला गुमानी, जमना
 नाशे जाली रे ॥ जावुं ॥ १ ॥ जावुं अचानक अथिर
 आ थानक, तोय रह्यो धुल घाली ॥ काची काया तारी
 काचनो कुंपो, मुठ मरुमां ठाली रे ॥ जावुं ॥ २ ॥
 जाण जुवानी जोर आ तांरुं, जाय पाणीपूर चाली ॥
 जरा आवीने जुतीयां वाग्यां, तुतीयां म कर खाली रे
 ॥ जावुं ॥ ३ ॥ जुठी माया तने मीठी लागे पण,
 वेड दीधो वाली ॥ घेरी लीधो तने गढमां घेला,

घाणीमां दीधो घाली रे ॥ जावुं ॥ ४ ॥ मानवजन
 अकारथ लीधो, दीधो दाटज वाली ॥ अत समे सं
 वैजव फोकट, वीरनी ले रखवाली रे ॥ जावुं ॥ ५

॥ मिथ्या ससार ॥

॥ काम छे दुष्ट विकारी-ए राग ॥

॥ दोलत दुनिया हारी, जावुं जीव दोलत दुनिय
 हारी ॥ जनम्यो ते जवानो नकी (१) कोइ रह्यु नहं
 जारी ॥ जावुं ॥ १ ॥ पलनी खवर नही प्राणीने, का
 जमे शिर माली ॥ जावुं ॥ २ ॥ पांऊव कौरव राम
 गजानन, कस गयो रे मोरारी ॥ जावुं ॥ ३ ॥ राव
 योद्धो रणमां हार्यो, कीधी कष्ट पथारी ॥ जावुं ॥ ४
 सत्यवादी हरिशंङ्ग गया, बली हाकेम ने अधिकारी
 जावुं ॥ ५ ॥ वीर गया ने धीर गया कोइ, अर्स
 गया निरधारी ॥ जावुं ॥ ६ ॥ महामल योद्धा न
 पास्यो, रणमां यग विस्तारी ॥ जावुं ॥ ७ ॥ चक्रव
 निज वैजव सूकी, चाढ्या एकला हारी ॥ जावुं ॥
 ॥ मात पिता सुत नौतम नारी, श्रीत पटकमा विसा
 ॥ जावुं ॥ ९ ॥ पाप पुण्यनी पालो बांधी. जाय र
 लक जो विचारी ॥ जावुं ॥ १० ॥ पाप प्रयोगे पु

वधारी, अधिक करी रखवाली ॥ जावुं ॥ ११ ॥ कोनी
एक न साथे आवे, हस्त चोर जनारी ॥ जावुं ॥
१२ ॥ अंत समे सौ वैजव फोकट, सत्य धर्म सुख-
कारी ॥ जावुं ॥ १३ ॥ सांकलचंद्र सदा प्रभु ध्याने,
दुर्गति दूर निवारी ॥ जावुं ॥ १४ ॥

॥ मोह निद्रामांधी जागो ॥

॥ राग-आशावरी ॥

॥ अवधू खोली नयन अब जोवो, द्विग मुद्रित
कहा सोवो ॥ अवधू ॥ मोहनिंद सोवत तुं खोयो,
सरवस माल अपाणा ॥ पंच चोर अजहुं तोय लूटत,
ततास भरम नहीं जाण्या ॥ अवधू ॥ १ ॥ मली चार
तंचमाल चोकमी, मंत्री नाम धराया ॥ पाइ केफ पीया-
तला तोहे, सकल मुलक ठग खाया ॥ अवधू ॥ २ ॥
शत्रुराय महाबल जोद्धा, निज निज सैन्य सजाये ॥
गुणठाणेमें बांध मोरचे, घेरया तुम पुर आवे ॥ अवधू
॥ ३ ॥ परमादी तुं होय पियारे, परवशतां दुःख पावे
॥ गया राजपुर सारथ सेंती, फिर पाठा घर आवे ॥
अवधू ॥ ४ ॥ सांजली वचन विवेक मित्तका, ढिनमें
निज दल जोड्या ॥ चिदानंद एसी रमत रमतां, ब्रह्म
बंका गढ तोड्या ॥ अवधू ॥ ५ ॥

॥ जगतमा तारु रुद्र नथी ॥

॥ नथी जगतमां साथ संवंधी, विना जिनेश्व
नाथ ॥ शु फोकट फांकां मारे मूरखमा, जरे आचर्य
वाथ ॥ कमलपत्र पर जलविट्टने, सुकातां शी वार ।
श्रावणनी जल जरी वादलीठ, विखरातां शी वार ।
जीवतर समजवुं तेवु, आखर नही लेनुं देवु ॥ जी
जवु ठे खाली हाथ, अंतमां पाप पुण्य संगाय ॥ कांइ
सायी-पथी जीव पासी गयो, नरजव नगर वजार ।
सोदागर समजी जड, करो पुण्य जेपार ॥ जीव जवु ठे
खाली हाथ, अंतमां पाप पुण्य संगाय ॥ कांइ ॥

॥ स्वमा सम ससार ॥

॥ आ स्वमा सम ससार, समजी लीयोने गाणा ॥
दुर्लभ मानव अवतार, अचनी माहि उं गाणा ॥ वाङ्म-
पणुं रमतां गुमावे, जुवानीमां लंपटपणु नावे ॥ वृद्ध-
पणाए जीव लोने तणाये, रट नही कीर्तार रे ॥ आ०
॥ मरण श्वास जल चालु थाये, कृत्य कुन नजरे उन्न-
राये ॥ पीनाय जारे पस्ताय पापी त्तारे, आंसु
वहे चोधार रे ॥ आ० ॥

॥ जीवने शिखामण ॥

॥ चेतावुं चेती लेजे रे-ए राग ॥

॥ जीवलमा ऊटपट जावुं रे, खटपट लटपटमां शुं
ऊज्यो ॥ मोह माया मांहि मलकातां, शिवपंथ पुर
न सुज्यो ॥ जीवण ॥ १ ॥ मस्तानो थइ मगरुमीमां,
झूली करे नकाको ॥ खचित आउखुं तुटी जातां, थाशे
धरु धकाको ॥ जीवण ॥ २ ॥ वाजं वाजा लातं लाता,
गालं गाला आवो ॥ वात तकाका गपगकाका, मारो
नहीं पण फावो ॥ जीवण ॥ ३ ॥ वात वातमां लकी
पनीने, धमंधमा बहु करशो ॥ उचालो अणधारयो
तरशो, काम कदि नहीं करशो ॥ जीवण ॥ ४ ॥ गपा-
सपां नात जातमां, ऊगमां जकमाशो ॥ प्राण पलकमां
रुतो रहेशे, खतां दुःखनां खाशो ॥ जीवण ॥ ५ ॥
नोटी जालो कुतर पालो, हसता हसता चालो ॥ एक
दिन काचुं फाटी जाशे, परजव पंथ न जालो ॥ जीवण
॥ ६ ॥ पहेरो पाघनी पाए घनीनी, मरनी मुठो म्हालो
॥ वणी ठणीने अंते मरवुं, ठाठ पनी रहे ठालो ॥
जीवण ॥ ७ ॥ ठेलठवीला शाह ने शाणा, पण अंते गज-
ताणा ॥ प्रजु नज्या विण पार न पाम्या, पाप करम

पनाणा ॥ जीव० ॥ ७ ॥ लाख चोराशी जटको चारी
 ए तो नर ने नारी ॥ बुद्धिसागर अवसर पामी, धर्म
 करो सुखकारी ॥ जीव० ॥ ए ॥

॥ मृत्यु ॥

॥ अरे जीव पामर पंखी रे, भाथे मृत्यु वाज दे
 मोटो ॥ गफलतमां गमगीन वन्याथी, वले घनीमां गोटे
 ॥ अरे० ॥ १ ॥ ऊरुप दूझे ऊरुपे ऊटपट, वार न
 लागे जाऊी ॥ रमत गमतनो रग वगाडे, वगनी जावे
 वाजी ॥ अरे० ॥ २ ॥ राजन साजन माजन मोटा, मृत्यु
 आगल ठोटा ॥ जलजला पण उठ्या चागी, खेल थड
 गया खोटा ॥ अरे० ॥ ३ ॥ फकरु थडने अकरु चाले,
 मारग सीधो जाली ॥ काल पकरुशे वज्र पेटीमां, पेसो
 जो पाताले ॥ अरे० ॥ ४ ॥ जेनी हाके धरणी धुजे,
 ते पण उठ्या चाली ॥ माटी काया माटी मांहि, खट-
 पट विशे खाली ॥ अरे० ॥ ५ ॥ जणो गणो पण अंते
 जय ठे, आंख मीचारो उनी ॥ काया वानी करमाडे
 कट, कपट कला सहु कुनी ॥ अरे ॥ ६ ॥ मुसाफर ते
 मान मानवी, सर्गां न साथे आवे ॥ करशो ते जोगवशे
 जवमा, करयां कर्म सहु पावे ॥ अरे० ॥ ७ ॥ आगामां

अमथा अथकावुं, चांतिमां चरमावुं ॥ जावन सधलु
 हारी जावुं, पाप पाश पककावुं ॥ अरेण ॥ ७ ॥ विप-
 यवासना विष ठे व्हालुं, आशावुं अजवावुं ॥ मान सूरख
 खोदुं ते सहु, ठाम रहे सहु ठालुं ॥ अरेण ॥ ८ ॥ करो
 व्यापारो नद्वे हजारो, सत्तासां देखाता ॥ करो नोकरी
 हाजी हा करी, सद्दामां ठे व्हा ॥ अरेण ॥ ९ ॥ करो
 कर्म पण शर्म न ठेवट, मुक्तिमार्ग जट जालो ॥ बुद्धि-
 सागर अवसर पामी, समता सुखसां व्हालो ॥ अरेण ॥ १० ॥

॥ मने ओ संसारमां सगां संबधीथी खरी शांति
 जणाती नथी ॥

॥ गजल ॥

॥ सगांल ! स्वार्थ ज्यांसुधी, मरता त्यां लगी मित्र
 ॥ अशक्त त्यां लगी पुत्रो, कुटुंबी स्वार्थना माटे ॥ उप-
 रनो प्रेम ललनानो, प्रिया ए स्वार्थ ज्यांसुधी ॥ उपरनो
 व्हाल देखाडे, विपत्तिमां नथी कोइ ॥ अशाता उदये
 सधला, अरे शाता उदय सवला ॥ अरे शाता अशा-
 तामां, वखतना रंग वेरंगी ॥ अरे जे स्वार्थना साधु,
 उपरथी प्रेम देखाडे ॥ विपत्ति वेला नथी जेला, जरा
 नहीं उदखे त्यारे ॥ थयो पंखी तणो मेळो, सहु निज

मार्गने लेशे ॥ मलीने चिन्न ज्यां थावुं, घणा मेला थय
 एवा ॥ जगतभां वाह्य दृष्टिए, कल्या मेला अनंता रे ।
 मद्यो नही शांतिनो ठेको, अरे रे जांऊवा जलमां ।
 समज उं जीव मारा रे, गणी सहु खेळने जूठा ॥ सह
 जनी शांति परखी ले, सदानी एह शोधी ले ॥ उपाधि
 दुःखनी क्यारी, उपायो जो करे कोटे ॥ तथापि दुःख
 देख्वाशे, उपाधि सग ठोकी दे ॥ अही तुसारनी पेठे
 अरे आशातणां विदु ॥ पलकमा सर्व चल थाशे, फना
 सहु देखतां थाशे ॥ मधुविदु समा सुखकां, जविष्ये
 दु ख देनारां ॥ समज नकी खरुं दिलमां, सुधारी ले
 जीवन सारु ॥ मने जासे जगत् खप्नु, हवे ए दृष्टिनो
 साक्षी ॥ नथी ए दृष्टिनो दृष्टा, तटस्थत्व हवं सहुमां ॥
 खरो निश्चय थयो मुजने, फरे नही भुवनी पेठे ॥ विचा-
 रीशु सुधारीशुं, ग्रहीशु मुक्ति निसरणी ॥ मने मारो
 मद्यो दीवो, सकल ज्यां जासता तेउं ॥ बुद्ध्यविधि
 साध्य साधीशुं, ग्रहीने साधनो सघलां ॥

॥ तृणानी विचित्रता ॥

॥ एक गरीबनी वपती गयेली तृणा ॥

॥ मनहर उद ॥

॥ हती दीनताइ त्यारे ताकी पटेलाइ अने, मर्ल

पटेलाइ त्यारे ताकी ठेशेठाइने ॥ सांपकी शेठाइ त्यारे
 ताकी मंत्रिताइ अने, आवी मंत्रिताइ त्यारे ताकी नृप-
 ताइने ॥ मली नृपताइ त्यारे ताकी देवताइने, दीठी
 देवताइ त्यारे ताकी शंकराइने ॥ कहे सेवक मानो
 मानो शंकराइ मली, वधे तृष्णाइ तोय जाय न मरा-
 इने ॥ १ ॥ करोचली पनी दाढी रुाचा तणो दाट वाढ्यो,
 काली केशपटी विपे श्वेतता ठवाइ गइ ॥ सुंघबुं सांज-
 लबुं ने देखबुं ते मांकी वाढ्युं, तेम दांतआवली ते खरी
 के खवाइ गइ ॥ वली केरु वांकी हारु गयां अंग रंग
 गयो, उठवानी आय जतां लाकनी लेवाइ गइ ॥ कहे
 सेवक एम युवानी हराइ पण, मनथी न तोय रांरु ममता
 मराइ गइ ॥ २ ॥ करोमोना करजना शिर पर रुंका वागे,
 रोगथी रुंधाइ गयुं शरीर सुकाइने ॥ पुरपति पण माथे
 पीरुवाने ताकी रह्यो, पेट तणी बैठ पण शके न पूराइने
 ॥ पितृ अने परणी मचावे अनेक धंध, पुत्र पुत्री खाउं
 खाउं दुःख दाइने ॥ कहे सेवक तोय जीव जावा-
 दावा करे, जंजाल ठंमाय नहीं तजी तृष्णाइने ॥ ३ ॥
 थइ हीण नाकी अचानक जेवो रह्यो पनी, जीवन
 दीपक पाम्यो केवल जंखाइने ॥ ठेली इसे पड्यो जाली

जाइए त्यां एम जाख्युं, हवे टाढी माटी थाय ते
तो ठीक जाइने ॥ हाथने हलावी त्यां तो खीजी बुढे
सूचव्युं ए, वोढ्या विना वेस वाल तारी चतुराइने
॥ कहे सेवक देखो देखो आसपास केवो, जतां गइ
नही कोशे ममता मराइने ॥ ४ ॥

॥ प्रभुपूजा प्रत्ये मनने उपदेश ॥

॥ हे मनवा ! कां चकरोले चक्राव ! सत्पथ मारे
साधवो, शिव प्रीति साधन थाय ॥ साध्य दृष्टिमां
आवतुं, जावारोग्य थवाय ॥ हे मनवा ॥ १ ॥ पूजा प्रीति-
रूप ठे, प्रीतिरूप अनेक ॥ दर्शन नाम नमन स्तुति,
ध्यान मग्नता ठेक ॥ हे मनवा ॥ २ ॥ प्रीतिमां जन जे
वसे, प्रीति पात्र समान ॥ मनवा कां प्रीति करे ? वि-
षय अचूक निदान ॥ हे मनवा ॥ ३ ॥ धाव धाव करतो
फरे, पवन थकी वधी जाय ॥ ध्याने करी स्थिरता तु
था, ध्येयात्माना सहाय ॥ हे मनवा ॥ ४ ॥ वध मोक्ष
हेतु थइ, नव कर कुव्यवहार ॥ जाव सन्निपातथी,
मुक्त दशा अवधार ॥ हे मनवा ॥ ५ ॥ कूनी जगनी वा-
सना, था तु तेथी खिन्न ॥ आत्म धर्म अवलोकीने,
जिन परमात्मा लीन ॥ हे मनवा ॥ ६ ॥

॥ दुनियानी जूठी बाजी ॥

॥ चेतनजी चेतो जूठी आ दुनियानी बाजी,
देह्यो शुं तेमां राची माची रे ॥ चेतनजी० ॥ १ ॥

देअज्ञाने अंध थड जोधुं न जीवका, अंते तो कांइ
नथी तारुं ॥ हसता हें हें करतां हो मानवी, फाटी
जोशे तारुं काचुं रे ॥ चेतनजी० ॥ २ ॥ महेल वनाया

वनाग वनाया, लक्ष्मीना थोजा गणाया ॥ एक दिन

दुःखधारयो उगीश देहथी, कोइ न जाणे कथां जाया

वेरे ॥ चेतनजी० ॥ ३ ॥ मनमां आवे तेडु मानी ले

मानवी, एले जाशे जन्मारो ॥ बुद्धिसागर सदा गुरुजीना

शरणे रहीने, आत्म ऊट तारो रे ॥ चेतनजी० ॥ ४ ॥

॥ यौवन विषे गज्जल ॥

॥ यौवन धन सब रंग पतंग रे, सत मन मूरख

राचो रे (१) प्रातःसमय जो नजरे आवे, मध्य दिने

नहीं दीसे रे ॥ खीन्नी गुलावकवी करमाशे, करयो

विरथा मन हींसे रे ॥ यौवन० ॥ १ ॥ पवन ऊकोरसें

त्वादल वीखरे, युं तुम जीवन नासे रे ॥ वीजलीका

चमकारा जेसे, लक्ष्मी लीला जाशे रे ॥ यौवन० ॥ २ ॥

द्वय संग तरंग सुपनका, चंचल चित्तसें चेतो रे ॥

नहीं जाऊं सासरीये ने नहीं जाऊं पीथरीए, पीथुजीकी
सोम वीठाइ ॥ आनंदघन कहे सुणो जाइ सोधु तो,
ज्योतसे ज्योत मिलाइ ॥ अवधू० ॥ ६ ॥

॥ संसारनी आसक्तता ॥

॥ दुःखे चिंतवे मन आदिनाथ, सुखे कोइ ना कदि
सांजरे ॥ ए दुःख ठे ए सुख ठे, ए सत्य नांही कदि
करे ॥ दुःखे० ॥ १ ॥ सगांशु सहोदर राचतो, स्वस्त्री
संगमां बहु मालतो ॥ स्थिर ना थयो शिवप्रीतिमां,
कार्य क्यां थकी तारु सरे ॥ दुःखे० ॥ २ ॥ सुख ज्यां
मने मानी लीधुं, ते स्थाननुं स्मरण कीधुं ॥ ए सुख गयुं
ने दुःख रहुं, ते सुखार्थ याद प्रभु करे ॥ दुःखे० ॥ ३ ॥
आत्मा जडे विलसी रह्यो, आत्मा स्वज्ञान चूली गयो
॥ आसक्तिथी परिवद्ध थइ, नवांरूप लइ शुं अवतरे ॥
दुःखे ॥ ४ ॥ आसक्तथी तुं मुक्त था, अनासक्तिमां तुं
आसक्त था ॥ ॥ आत्मजाव सर्व जीवो मही, परमात्म
वनी तुं विचरे ॥ दुःखे० ॥ ५ ॥

॥ कालनो ज्ञपाठे ॥

॥ जबरो काल ऊपाटोरे, माथे मरण बीक बे मोटी
॥ जंतर जाणे मंतर जाणे, जाणे तंतर टाला ॥

महोत बन्ने मरदान मर्द ज्यां, धुजी पडे धराला ॥
 जवरो० ॥ १ ॥ वैद वोलावो सैद वोलावो, करो उकाला
 कुटी ॥ खुटी ते तो जरूर खुटी, खुटी तणी नहीं
 बुटी ॥ जवरो० ॥ २ ॥ ज्ञोयरुं खोदो शिखो सरोदो, तत्त्व
 विचारो ताजां ॥ खानी जेद दहानी उमो पण, बलशे
 उंधां वाजां ॥ जवरो० ॥ ३ ॥ जोस जुठ निर्दोष जणीने
 कोश शुक्नना काढो ॥ जम किकरनो अजव ऊपाटो,
 गजव करे ठे गाढो ॥ ॥ जवरो० ॥ ४ ॥ वेश उतारो केश
 उतारो, देश उतारो डूजे ॥ पकडे आवी सोत पलकमां,
 जीवल्लो शु फुजे ॥ जवरो० ॥ ५ ॥ रोटी बदलो, चोटी
 बदलो, लोटी बदलो लाखो ॥ दरद मरद जे गर्द करी
 दे, मोत मर्द ठे आखो ॥ ॥ जवरो० ॥ ६ ॥ धर्म करो
 अधर्मने मेली, खांतेथी, ह्यो खेली ॥ रुपिराज जिन-
 राज विना नथी, कोइ वरावर वेली ॥ जवरो० ॥ ७ ॥

(१)

॥ पकडे काल पलकमां रे, कांइ अजव ऊपाटो आ
 तो ॥ जीव विचारे अज्ञेदान अइ, मेदान करीने माळु
 ॥ काल विचारे खेदान करवा, जोग मळे तो जाळुं
 पकडे० ॥ १ ॥ गरु गरु गरु नोवत वाजे, जवरु लइकर
 जातुं ॥ खरुखरु खरुखरु कोइ हसे, कोइ जालु माळ

ज्ञातुं ॥ पकडे० ॥ २ ॥ घोमो नाचे वरघोमामां, ऊग-
 ऊग ऊलके फुलो ॥ जोडे जोने जमना नाचे, लामकना
 शुं फुलो ॥ पकडे० ॥ ३ ॥ नारी सारी घर सूत्र पुत्र दो,
 दे जीवना सारु जाणे ॥ काल विचारे फराल करवा,
 त्रास पमावुं टाणे ॥ पकडे० ॥ ४ ॥ जमादार सरदार
 तैयार त्यां, ठमीदार नित्य बोले ॥ अमलदार बलदार
 काल तो, गणे तणखला तोले ॥ पकडे० ॥ ५ ॥ रोवरु
 रीजे नंग रंग जोड, अंग वरावर उंपे ॥ खलगलक
 कुरवान करी दे, काल पलकमां जो कोपे ॥ पकडे० ॥
 ६ ॥ देह आल पंपाल कालजय, शिखामण आ
 बेदी ॥ ऋषिराज जिनराज विना, नथी कोड वरावर
 बेदी ॥ पकडे० ॥ ७ ॥

॥ दयामय दृष्टिपात ॥

अंतरना काचा केम रह्यो ठे कुटी, केम रह्यो ठे
 कुटी हैयाना फुड्या ॥ केम० ॥ उत्तम अवसर आ मान-
 वतन, क्षणमां जाय वहुटी ॥ अंतरना० ॥ १ ॥ खातां
 पीतां ने वावरतां, खरची जाशे खुटी ॥ पुन्म कर्मने
 काजे दमनी, ठेडेशी नहीं बुटी ॥ अंतरना० ॥ २ ॥ काम
 क्रोध मद लोच वूंटारा, धीरज धन ले वुंटी ॥ जुंमा

चुंडे हावे जटक्यो, तोए न आशा चुटी ॥ अंतरना
 ॥ ३ ॥ काचा कुंज समान कलेवर, फुलण जोशे फूटी
 शम दम साधन संप सरलता, चोंपवडे वे चुंटी
 अंतरना ॥ ४ ॥ वगनी वाजी वेस वनावा, वीजी क्य
 ठे बुटी ॥ केशव कहे प्रभु नाम सुधारस, घेरो रस तं
 घुंटी ॥ अंतरना ॥ ५ ॥

॥ काया मनोहर वंगलो, वूंटारो तारी मानवी
 ॥ सध्या समयना रंग जेवी, जीदगीर्त जाणवी
 ॥ आशारूपी विपवेलथी, वीटाइ पामर शुं करे
 ॥ वेला वेलानी ठायनी, पस्तावो पाठल शुं करे
 ॥ भावी सूचना ॥

॥ राश-देश, ताल-लावणी ॥

॥ चेत तो चेतावु तुने रे, पामर प्राणी ॥ ए टेव
 ॥ तारे हाथे वपराशे, तेटकुंज तारुं थाशे ॥ वीजु त
 वीजाने जोशे रे ॥ पामर ॥ १ ॥ सजी घरवार सास
 लुं कहे ठे मारुं मारुं ॥ तेमा नथी कशुं, तारुं रे ।
 पामर ॥ २ ॥ माखीए मधपूकुं कीधु, न खाधु न खाव
 दीधुं ॥ वूंटनारे वूंटी लीवु, रे ॥ पामर ॥ ३ ॥ खंखे
 रीने हाथ खाळी, उर्चातु जावु ठे चोळी ॥ करे माथा

होरु ठाली रे ॥ पामर ॥ ४ ॥ साहुकारमां सवायो ॥
 खपतिमां लेवायो ॥ कहे साचुं शुं कमायो रे ॥ पामर ॥
 ५ ॥ कमायो तुं माल केवो, आवे तारी साथे एवो
 अबेज तपास तेवो रे ॥ पामर ॥ ६ ॥ हजी हाथमां
 बाजी, करतुं प्रचुने राजी ॥ मुक्ती तारी याशे ताजी
 ॥ पामर ॥ ७ ॥ हाथमांथी वाजी जाशे, पठीथी
 स्तावो याशे ॥ कशुं न करी शकाशे रे ॥ पामर ॥
 ८ ॥ हाथमांथी धन खोयुं, धूलथी कपाल धोयुं ॥ जाण-
 णुं तारु जोयुं रे ॥ पामर ॥ ९ ॥ मननो विचार तारो,
 नमां रही जनारो ॥ वलती न आवे वारो रे ॥ पामर ॥
 १० ॥ नीकट्यो शरीरमांथी, पठी तुं मालीक नथी
 कहे दलपत कथी रे ॥ पामर ॥ ११ ॥

॥ भूल पडेला मुसाफरने ॥

॥ धीरानी काफी- राग ॥

॥ उं मुसाफर घेला रे, सीधो रस्तो त्याग मां ॥
 प्ररे मूरखा मन मेला रे; अबली वाटे जाग मां ॥ मा-
 गानी अंधारी बांधी, बन्यो आंधलो बेल ॥ चोर्याशीनी
 प्राणी फेरी, त्यांनीकट्युं तारु तेल ॥ तोय नथी थाक्यो
 मध दरियाने ताग मां ॥ उं ॥ १ ॥ काळे कोळीउं

थाये मोहथी, चंभर कुमार पूराय ॥ दीपक तेज वि
 मोहीने, पतंग जस्म थइ जाय ॥ आ दुनियानी होल
 रे, उठलीने परमां आगमां ॥ ॐ ॥ १ ॥ पुण्य पूर्व
 प्रबल हतां, ते पाम्यो मानव देह ॥ मोह करोलीयो जा
 पाथरी, देशे तुजने ठेह ॥ ए वेर तारां जुनां रे, आव्यो
 ठे आजि लागमां ॥ ॐ ॥ ३ ॥ नाम तेहनो नाश ठे
 सहुने शिर अवसान ॥ जाणे जुवे रुवे निरंतर, तोय
 न जजे जगवान ॥ मीठाश ते शी लागे रे, तजनय
 अधिक फागमां ॥ ॐ ॥ ४ ॥ जगवत जजी त्यज म
 नगमतां, शु कर विषय विशेष ॥ अत्तर तेल फुले
 त्यजने, शी चोपरुवी मेश ॥ तजीने मोह मेवारे, ली
 बोली खावा लागमां ॥ ॐ ॥ ५ ॥ मोह भाया ठे ज
 गनी राणी, तेन तारी जाण ॥ पाप प्रपच करे कमाणी
 करी खेच ने ताण ॥ चोरी तुं करमां चोटा रे, पुद्ग
 लना आ वागमां ॥ ॐ ॥ ६ ॥ पान करीने जक्ति र
 सायन, अमर वनी जा वीर ॥ अवर नथी रस ए सम
 उत्तम, विचार कर करी धीर ॥ विषय विष चुसी रे
 हाथेथी मृत्यु माग मां ॥ ॐ ॥ ७ ॥ हीरा जक्ति
 सुवर्ण दावनी, जरशुंतेमां थोर ॥ अमूढ्य हीरो मान

जीवन, गुमावे शुं ढोर ॥ वसंत तने वारे रे, हंसा
जा मां कागमां ॥ उ० ॥ ७ ॥

॥ अमे मेमान ॥

॥ काफी ॥

॥ अमे तो आज तमारा वे दिनना ॥ मेमान ॥ सफळ
हरो आ सहज समागम, सुखनुं एज निदान ॥ अमे०
॥ १ ॥ आव्या जेम जशुं ते रीते, सर्वे एम समान ॥
गाढा कोइ दिने नहीं मलीए, क्यां करशो सन्मान ॥
प्रमे० ॥ ॥ २ ॥ साचवजो संबंध परस्पर, धर्मे राखी
यान ॥ संपी सद्गुण लेजो देजो, दूर करी अजिमान ॥
प्रमे० ॥ ३ ॥ लेश नथी अमने अंतरमां, मान अने
प्रपमान ॥ होय कशी करुवाश अमारी, तो प्रिय
हरजो पान ॥ अमे० ॥ ४ ॥

॥ श्रावकने चौद नियम पालवा विषे टुंक स्वरूप ॥

१ सचित्त-बीजवालां फल, फूल अने धान्य प्रमुख
अपरिपक खावानुं प्रमाण करवुं. २ द्रव्य-जुदा जुदा
वादनो अनुभव थाय तेवा खावा पीवाना पदार्थोनुं
प्रमाण करवुं, ३ विगड-दुध, दही, घी, गोल, तेल,
गाली तावी (कफाड) विषयोनुं बने तेडवुं प्रमाण क-

रवुं. ४ उपानह—पगरखां तथा मोजां प्रमुख पगे पहे.
 रवानु वनी शके तेटखुं प्रमाण करवुं. ५ तंवोल—पान,
 सोपारी, एलची, लवीग विगेरे मुखवासनुं प्रमाण करवुं.
 ६ वस्त्र—पहेरवां उढवां योग्य वस्त्रो उपयोगमां लेवानुं
 प्रमाण करवुं ७ कुसुम—पुष्प, फुलेल अत्तर प्रमुख सुंघवा
 योग्य द्रव्योनु प्रमाण करवु ८ वाहन—गोमी, घोडा,
 उट, वहाण, रेड्वे, स्टीमर प्रमुख स्वारीनु प्रमाण
 करवुं फरतुं चरतुं ने तरतु प्रमाण करवु ९ शयन—जेना
 उपर बेसी के सुइ शकाय तेवां पाट, पलंग, मांचा,
 तलाड, गादी प्रमुखनुं प्रमाण करवु. १० विलेपन—
 चंदन, वरास, औषध प्रमुख शरीरे चोपरुवा योग्य
 द्रव्योनुं प्रमाण करवु ११ ब्रह्मचर्य—मन, वचन अने
 कायाथी सर्वथी के देशथी दिवसे के रात्रे पालवा नि-
 यम राखवो १२ दिशि—दिकूविरमण नामना ठठा
 ब्रतमां करेल नियमनो दिशा विदिशाना प्रमाणनो
 नियम करवो. १३ स्नान—आखा शरीरे सर्व स्थान अने
 हाथ पगनी शुद्धिरूप देश स्नाननु प्रमाण करवुं. १४
 चक्र—जोजन (खानपान) संबधी सुखे निर्वाह थाय

तेटलुं प्रमाण करवुं. अज्यासयोगे जेम जेम संतोपवृत्ति
वधती जाय तेम तेम वस्तुउनो संक्षेप करवो. पंदर
कर्मादान पैकी वधांनो के वने तेटलांनो खास त्याग करवो.

॥ श्री श्रावकना २१ गुणोतुं वर्णन ॥

॥ आ जयंकर अने पारावार संसारत्रमणमां
जमतां थका जीवने मनुष्य जन्मादि उत्तम; सामग्री
मलवी अति दुर्लभ ठे, कदाच ते मले तोपण शुद्ध
धर्मनी योग्यता प्राप्त थवी बहुज मुश्किल ठे, तो पठी
शुद्ध धर्मनी प्राप्तिनी दुर्लभतानुं तो कहेवुंज शुं ?
माटे ज्ञानी महाराज धर्मनी योग्यता पामवाना
श्रावकनां २१ उत्तम लक्षण रूप २१ गुणोतुं कांश्क
टुंक स्वरूप बतावे ठे.

१ क्रुद्ध नहीं—अक्रुद्ध गंज्जीर आशयवालो सूदम
रीते वस्तुतत्त्वनो विचार करवाने शक्ति धरावनार स-
मर्थ जीवन विशेष धर्मरत्नने पामी शके. २ रूपनिधि—
प्रशस्त रूपवालो पांचे इंद्रियो जेने स्पष्ट रीते प्राप्त
थयेल ठे एवो अर्थात् शरीर संवंधी सुंदर आकृतिने
धरनार आत्मा. ३ सौम्य—स्वभावैज पाप दोष रहित
शीतल स्वभाववालो आत्मा. ४ जनप्रिय—सदाचारने

सेवनार लोकप्रिय आत्मा ५ क्रूर नहीं—क्रूरता या
 निष्ठुरतावडे जेनुं मन मलिन थतुं नथी एवो अक्लिष्ट
 याने प्रसन्न चित्तयुक्त गांत आत्मा. ६ चीरु—आ लोक
 संबधी अपवादथी करवावालो अर्थात् अपवादचीरु
 तेमज पापचीरु होवार्थी वधी रीते संजालीने चालनार
 उन्नय लोक विरुद्ध कार्यनो अवश्य परिहार करनार
 आत्मा ७ अशक—ठल प्रपंचवडे परने पाशमां नाख-
 वार्थी दूर रहेनार ८ सुदखिन—शुभ दाक्षिण्यवंत उचित
 प्रार्थनानो जंग नही करवावालो समयोचित वरती
 सामानुं दिल प्रसन्न करनार ९ लज्जालुर्ज—जज्जाशील
 अकार्य वर्जी सत्कार्यमां स्हेजे जोराइ शके एवो म-
 र्यादाशील पुरुष १० दयालुर्ज—सर्व कोइ प्राणीवर्ग उ-
 पर अनुकपा राखनार ११ सोमदिठिमज्जथ—रागद्वेष
 रहित निष्पक्षपातपणे वस्तुतत्त्वने यथार्थ रीते उलखी
 मध्यस्थताथी दोषने दूर करनार १२ गुणरागी—स
 द्गुणीनोज पक्ष करनार, गुणनोज पक्ष लेनार १३
 सत्कथ—एकांत हितकारी एवी धर्मकथा जेने प्रिय ठे
 एवो १४ सुपक्क—सुशील अने सानुकूल ठे कुटुंब

नेनुं एवो सौजाग्यवंत. १५ दीर्घदर्शी—प्रथमथी सारी
 रीते विचार करीने परिणामे जेभां लाभ समायो होय
 एवा शुभ कार्यने करवावालो. १६ विशेषज्ञ—पक्षपात
 रहितपणे गुण दोष हिताहित कार्य अकार्य लचित
 अनुचित ज्ञान अज्ञान पेय अपेय गम्य अगम्य विगरे
 विशेष वातनो जाणकार. १७ वृद्धानुगत—परिपक्व बुद्धि-
 वाला अनुभवी पुरुषोने अनुसरी चालनार, नहीं केजेम
 आव्युं तेम उह्वंखलपणे इहा मुजब काम करनार. १८
 विनयवंत— गुणाधिकनुं उचित गौरव साचवनार सुवि-
 नीत. १९ कृतजाण—बीजाए करेला गुणने कदापि नहीं
 विसरी जनार. २० परहितकारी—स्वतः स्वार्थ विना
 परोपकार करवामां तत्पर, दाक्षिण्यतावंत तो ज्यारे
 नेने कोइ प्रेरणा अथवा प्रार्थना करे त्यारे परोपकार
 करे अने आ तो पोताना आत्मानीज प्रेरणाथी स्व-
 कर्तव्य समजीनेज कोइनी कंइ पण अपेक्षा राख्या
 विनाज परोपकार कर्था करे एवा उत्तम स्वभावने स्वा-
 भाविक रीते धरनारा जव्य आत्मा. २१ लब्धलक्ष—
 कोइ पण कार्यने सुखे साधी शके एवो कार्यदक्ष.

(११९)

॥ श्री वार व्रतनी मक्षिप्त टीप ॥

॥- सम्यक्त्व ॥

१ शुद्ध देव-ते श्री अरिहंत (अठार दूपण रहित). २ शुद्ध गुरु-ते पंच महाव्रतना पालवावाला सुसाधु. ३ शुद्ध धर्म-ते केवलिजापित

॥ आ उपर प्रमाणे त्रण तत्त्व भारे मानवां अन्य मिथ्यात्वी देव गुरु आदिकने कारणसर नमवुं पडे तो व्यवहार साचववानी जयणा स्वलिगी (वेपधारी)ने व्यवहारथी तथा उपकारबुद्धिथी वंदनादिक करवु पडे तेनी जयणा, भूलथी अतत्त्वने तत्त्व अने अधर्मने धर्म मनाइ जाय तेनी जयणा. रोज सवारना वनतां सुधी उठा-मां उठुं नवकारशीतुं पञ्चरकाण करवु अने सांजे पुविहार के चोविहार करवो शक्ति प्रमाणे दर वर्षे रु सात क्षेत्रमां वापरवा सात क्षेत्रनां नाम (१) साधु (२) साध्वी (३) श्रावक (४) श्राविका (५) देरासर (६) जैन प्रतिमा अने (७) ज्ञान ॥ ज्यां देरासरनो जोग होय, त्यां रोज एक वखत दर्शन करवां अने पूजानी जयणा. जे दिवसे दर्शन न थइ शके ते दिवसे त्याग करवो.

(१३०)

वार व्रत.

१ (देशथकी) प्राणातिपातविरमण व्रत.

कोइ व्रस जीवने जाणी जोइने संकल्पीने इरादापूर्वक हणवानी बुद्धिए हणवा नहीं. आरंभ समारंभे तथा व्यापारमां तेमज औषधा-दिकना प्रयोगथी हणाय तेनी जयणा. *

२ (देशथकी) मृषावादविरमण व्रत.

१-कन्यालीक^१ एटले के कन्या संबंधी सगपण विवाहादिमां जूठुं बोलवुं नहीं.

* आ खाली पडेली जग्यामां पोताने ते व्रतना संबंधमां जे लखवुं होय ते लखवुं.

१ नानी कन्याने मोटी न कहेवी अने मोटी कन्याने नानी न कहेवी विगेरे. कन्यालीकथी दरेक बे पगवाला संबंधी जूठुं नहीं बोलवानो समावेश थाय छे, पण व्रत लेनारने जेवी अपेक्षा होय तेवी रीते पच्चरखवाण करवुं.

२-गवालीकँ एटले गाय पशु आदिक चोपगा जनार स-
वधी जूठु गोलवुं नहीं.

३-भूम्यालीकँ एटले भूमि, खेतार मकान सवधी जूठु
गोलवु नहीं.

४-थापणमोसो एटले पारकी थापण ओलगवी नहीं.

५-कूडी सास एटले खोटी साक्षी पूरवी नहीं.

आ उपरात जेओने विशेष छुट राखवानी जरूर जणाय ते
ओए नीचे लखी लेवु.

२ गवालीकमा दरेक चार पगवाला प्राणी सवधी खोटु गोलवानो
समावेश थाय छे, तोपण प्रत लेनारने खाली जग्यामां आगार राखी
छेवा नानी गायने मोटी कहेवी अने मोटीने नानी कहेवी, बोडा
दुधगालीने वधारे दुधगाली कहेवी अने वधारे वेतरगालीने ओडा
वेतरवागी कहेवी विगेरे.

३ पोतानी जमीन विगेरे बीजानी कहेवी, बीजानी जमीन विगेरे
पोतानी कहेवी.

३ (देशथकी) अदत्तादानविरमण व्रत.

१-गांठ न छोडवी.

२-खीसो न कातरवो.

३-खातर न पाडवुं.

४-तालुं न भांगवुं.

५-लूंट न करवी.

६-कोइनी पडी रहेली चीज लेवी नहीं.

आ उपरांत जेओने विशेष त्याग करवो होय तेओए नीचेनी जग्यामां लखी लेवुं.

४ (देशथकी) मैथुनविरमण व्रत.

स्वस्त्री^१(पोतानी परणेली) सिवाय परस्त्रीनो सर्वथा का-
याथी त्याग करवो.

१ तेमज स्त्रीओए (परणेला) पति सिवाय परपुरुषनो सर्वथा
त्याग करवो.

आठम चौदश आठिकना पञ्चस्वण करवा होय तो नीचे
लखी लेवु.

५ (देशधकी) परिग्रहपरिमाण व्रत

परिग्रहनु नीचे प्रमाणे परिमाण करवुं.

१-रोकडा रु

खपे

२-स्थायर मिलकत* (घर, द्वाड विगेरे) रु.

नी

किमतनी खपे,

३-सोना* रूपाना दागीना तथा झवेरात रु

नी

किमतना खपे

४-नांकर चाकर (सरया)

खपे.

५-सोना* रुपा सिवाय नीजो धातु रु

नी किम-

तनी खपे

* आ मिलकत खरीदती वग्वते जेटली किमतनी होय तेदली

किमतनो हिमाव गणवो.

६-फरनीचर रु.	नी किमतनुं खपे.
७-जनावर (संख्या)	खपे.
८-ते *सिवाय बीजी मिलकत रु.	सुधीनी खपे.
९-धान्य *किमत रु.	सुधी खपे.

अथवा एकंदर रीते रोकड, स्थावर अने जंगम मिलकत
धुं मलीने रु.

६ दिशिपरिमाण व्रत.

पूर्व दिशाए	गाड जवुं खपे.
अग्नि खुणामां	गाड जवुं खपे.
दक्षिण दिशाए	गाड जवुं खपे.
नैर्ऋत्य खुणामां	गाड जवुं खपे.
पश्चिम दिशाए	गाड जवुं खपे.
वायव्य खुणामां	गाड जवुं खपे.
उत्तर दिशाए	गाड जवुं खपे.
ईशान खुणामां	गाड जवुं खपे.
ऊर्ध्व (उंचे)	गाड जवुं खपे.
अधो (नीचे)	गाड जवुं खपे.

* आ मिलकत खरीदनी वखते जेटली किमतनी होय तेटली किम-
तनो हिसाव गणवो.

* व्यापारने माटे जयणा.

१ आ प्रमाणे एकंदर नियम पण थाय छे.

आ उपरात कागल, तार अने छापाओ वाचवानी अथव लखवानी तेमज माणस मोकलवानी जयणा.

७ जोगोपजोगपरिमाण व्रत

भोग एटले एक वार भोगाय ते, जेमके पुष्प, विलेपन भोजन विगेरे.

उपभोग एटले एकज चीज बहु वार भोगाय ते, जेमके वस्त्र, अलकार, घर, स्त्री, विगेरे.

उपर प्रमाणे भोग अने उपभोगनी वस्तुनु परिमाण करवु तेने मातमु भोगोपभोगपरिमाण व्रत कहे छे

तेने माटे हमेशा चौद नियम वारवा.

१—*सचित्त वस्तु रोज

खपे

* १ पृथ्वी-माटी, मीठु विगेरे

२ पाणी-पीवा तथा नावाने माटे परिमाण करवु.

३ अग्नि-चूला, सगडी, चूल विगेरेनु परिमाण करवु

४ वायु-पखा, हिंडोलाखाट विगेरेनु परिमाण करवु.

५ वनस्पति-अमुक वनस्पति टोपमाथी जे दिवसे जे खाती होय ते वांगिलेयी.

- २—द्रव्य एटले खावापीवाना पदार्थ रोज स्वपे.
- ३—*विगय एटले घी, तेल, दुध, दहीं. गोल अने कडा*
विगय ए छ विगयमांथी एक विगयनो प्रत्येक दिवसे
त्याग करवो.
- ४—वाणह एटले उपानह, पगरखां तथा मोजां
विगेरेनी जोड स्वपे.
- ५—तंबोल ते पान सोपारी विगेरे मुखवान स्वपे.
- ६—वच्छ एटले वस्त्र स्वपे.
- ७—कुसुम ते सुंघवानी वस्तु स्वपे.
- ८—वाहन एटले गाडी, वहाण, घोडा विगेरे स्वपे.
- ९—शयन एटले शय्या अने आसन स्वपे.
- १०—विलेपन ते शरीरे चोपडवानी वस्तु स्वपे.
- ११—ब्रह्मचर्यनो नियम धारी लेवो.
- १२—दिशि ते दशे दिशाए कोश जवुं.

* विगयनो त्याग वे प्रकारे थइ शके छै. (१) काची विगयनो त्याग एटले दुध विगेरे मूल पदार्थनो त्याग, अने (२) पाकी विगयनो त्याग एटले मूलमांथी वनेला सघला पदार्थनो त्याग, जेमके दुधपाक, मिष्टान्न विगेरे.

* तळेली चीज (पक्वान्न विगेरे) ते त्रण घाण पहेलां समजवुं.

१. फरतुं, तरतुं अने चरतुं.

२. छट्टा व्रतमां दिशिपरिमाण करेलुं होय तेमांथी ओछुं करवुं.

१३—न्हाण ते रोज

वखत स्नान करवु.

(लोकाचारनी जयणा.)

१४—भक्त ते भोजन गेर

अने पाणी गेर

खपे

पंदर कर्मादान.

१ डगालकर्म—चुनो, इंट, नळीया, कोलसा, गुपेल तेल विगेरे जे भट्टीथी चीज पाकती होय तेनो भट्टी करावीने तथा पकावीने वेपार न करवो.

२ वनकर्म—ते पान, फूल, शाक, लाकडा विगेरेनो व्यापार न करवो.

३ साडीकर्म—गाडा, हळ प्रमुख तैयार करावी तेनो व्यापार न करवो

४ भाडीकर्म—गाडी, योडा विगेरे भाडे आपवानो व्यापार न करवो, तेम् वेचवानो व्यापार न करवो, घरनु वेचवु पडे तेनी जयणा.

५ फोडीकर्म—सुरग करामी जमीन फोडाववानो धधो करवो नहीं

६ दतवाणिज्य—हाथीदांत विगेरेनो व्यापार न करवो.

७ लखवाणिज्य—लाख तथा गुदनो व्यापार न करवो.

१ पंदर कर्मादान माहेथी कोड चीजना गेर, वोन्ड राखवा पडे तथा तेनो सट्टो करवो पडे तेनी जयणा.

८ रसवाणिज्य—घी, गोळ, तेलना व्यापारना त्याग करवो.
जयणा राखवी होय तो नियम करी लेवो.

९ विपवाणिज्य—अफीण, झेर विगेरेनो व्यपार न करवो.

१० केशवाणिज्य—पशु पंखीनां केश, पीछां, उम विगेरेनो व्यपार न करवो.

११ यंत्रपिष्टकर्म—ते मील, जीन, संचा. घाणी, बंटी विगेरेथी थंधो न करवो.

१२ निर्लाछनकर्म—कोइ बळद, घोडा विगेरेने समराववा नहीं.

१३ दव—वनमां अग्निदाह देवो नहीं.

१४ शोषणकर्म—सरोवर, तळाव विगेरेना पाणीनुं शोषण कराववुं नहीं, कारणसर कुवा, टांकां गळाववां पडे तनी जयणा.

१५ असतीपोषण—रमतने खातर कुतरा, विलाडा, मेना, पोपट विगेरे पाळवां नहीं.

आ पंदर कर्मदानमां जेने जे रीते त्यागमां फेरफार करवो होय तेणे आ नीचेनी जग्यामां अनुक्रमे लखी लेवुं.

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

११

१२

१३

१४

१५

७ अनर्थदकविरमण व्रत

कोडने फासी आपता होय त्या जोवा जवु नही, कोड पण पक्षी-ओने क्रीडाने माटे घेर पाळवा नहीं तेमज कुतरा, बिलाडा विगेरे हिंसक जानवरोने पाळवा नहीं हाथी, घोडा, पाडा, वेटा, कुकडा विगेरेनी लडाडनी रमत ज्या थती होय त्या जोवा जवु नही. रस्ते चालता जोवाड जवाय तेनी जयणा. वने त्यासुगी स्त्रीकथा, राजकथा, देशकथा तथा भोजनकथा विना कारण नहीं करवानो उपयोग राखवो, पण पञ्चस्त्राण नही.

आ सिवाय कोड पण अनर्थदक थतो होय तो वनता सुर्ध उपयोग राखवो, पण पञ्चस्त्राण नथी शस्त्रना व्यापारनो आम समावेश थाय छे, तो तेनो त्याग के जयणा नीचे लखो छेवु

(२४०)

ए सामायिक व्रत.

दर वर्षे सामायिक करुं. रोगादिक कारणे जयणा.

१० दिशावगाशिक व्रत.

चौद नियम धारवा अने संक्षेपवानो स्वप करुं एनो अधिकार सातमा व्रतमां आवेलो छे. वळी परंपराथी दश सामायिकनुं दिशावगाशिक व्रत चाले छे ते दर वर्षे करुं. रोगादिक कारणे जयणा.

(१४१)

११ पौषध व्रत.

दर वर्षे आठ पहोरना अथवा चार पहोरना पौषध करुं.

१२—अतिथिसंविज्ञाग व्रत.

पौषधना पारणे अथवा तेम न बने तो वर्ष एकमा वार साधुने दान आप्या पछी जमवु, अने आखा वर्षमा कोड उत्तम साधुनो जोग न बने तो कोड उत्तम साधमी भाइने वार जमाहीने पछी जमवु.

(२४२)

वार तिथि लीलीतरी खांरुं, दलरुं.

(त्याग के जयणा लखरुं) (त्याग के जयणा लखरुं)

अगर वजन माप विगेरेथी लखी लेरुं.

शुदि २

५

८

११

१४

१५

दि २

५

८

११

१४

•))

॥ सप्तम खंड ॥



॥ क्रोधनी सज्जाय ॥

॥ कर्वां फल ठे क्रोधनां, ज्ञानी एम बोले ॥ रीर
 तणो रस जाणीए, हलाहल तोले ॥ कर्वां० ॥ १ ॥
 क्रोधे क्रोम पूरव तणुं, संजम फल जाय ॥ क्रोध सहित
 तप जे करे, ते तो लेखे न थाय ॥ कर्वां० ॥ २ ॥ साधु
 घणो तपीयो हुतो, धरतो मन बैराग ॥ शिष्यना क्रोध
 थकी थयो, चरुकोशीज नाग ॥ कर्वां० ॥ ३ ॥ आग
 लठे जे घर थकी, ते पहेलु घर वाले ॥ जलनो जोग
 जो नवि मले, तो पासेनु परजाले ॥ कर्वां० ॥ ४ ॥
 क्रोध तणी गति एहवी, कहे केवलनाणी ॥ हाण क
 जे हेतनी, जालवजो एम जाणी ॥ कर्वां० ॥ ५ ॥ उद
 यरत्न कहे क्रोधने, काढजो गले साही ॥ काया करज
 निर्मली, उपशम रस नाही ॥ कर्वां० ॥ ६ ॥

॥ माननी सज्जाय ॥

॥ रे जीव मान न कीजीए, माने विनय न आटे
 रे ॥ विनय विना विद्या नहीं, तो किस समकित पावे
 रे ॥ रे जीव० ॥ १ ॥ समकित विण चारित्र नहीं, चा

रिन्न विण नहीं मुक्ति रे ॥ मुक्तिनां सुख ठे शाश्वतां,
ते केम लहीए जुक्ति रे ॥ रे जीव० ॥ १ ॥ विनय वनो
संसारमां, गुणमां अधिकारी रे ॥ माने गुण जाये
गली, प्राणी जोजो विचारी रे ॥ रे जीव० ॥ ३ ॥ मान
हरयुं जो रावणे, ते तो रामे मायो रे ॥ दुयोंधन गरवे
हरी, अंते सवि हारयो रे ॥ रे जीव० ॥ ४ ॥ सूकां
ताककां सारिखो, दुःखदायी ए खोटो रे ॥ उदयरत्न
हहे मानने, देजो देशवटो रे ॥ रे जीव० ॥ ५ ॥

॥ मायानी सज्जाय ॥

॥ समकितनुं मूल जाणीए जी, सत्य वचन साहात्
। साचामां समकित वसे जी, मायामां मिथ्यात्व रे ॥
प्राणी म करीश माया लगार ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥
मुख मीठो जूठो मने जा, कूककपटनो रे कोट ॥ जीने
तो जी जी करे जी, चित्तमां ताके चोट रे ॥ प्राणी०
। २ ॥ आप गरजे आघो पडे जी, पण न धरे विश्वास
। मनशुं राखे आंतरो जी, ए मायानो पास रे ॥ प्रा-
णी० ॥ ३ ॥ जेहशुं बांधे प्रीतनी जी, तेहशुं रहे प्र-
तेकूल ॥ मेल न ठंडे मन तणो जी, ए मायानुं मूल रे
। प्राणी० ॥ ४ ॥ तप कीधुं माया करी जी, मित्रशुं

राख्यो रे जेद ॥ मद्धि जिनेश्वर जाणजो जी, ते पास्या
 स्त्रीवेद रे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥ उदयरल कहे सांजलो जी,
 मेलो मायानी बुद्ध ॥ मुक्तिपुरी जावा तणो जी, ए
 मारग ठे शुद्ध रे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥

॥ लोभनी सज्जाय ॥

॥ तुमे लक्षण जो जो लोचनां रे, लोभे जन पास
 क्षोचना रे ॥ लोभे काह्या मन कोट्या करे रे, लोभे
 दुर्घट पंथे रचरे रे ॥ तुमे० ॥ १ ॥ तजे लोभ तेहनां लज
 चामणां रे, वली पाये नमीने करु खामणां रे ॥ लोभे
 मरजादा न रहे केहनी रे, तुमे सगत मेलो तेहनी रे
 ॥ तुमे० ॥ २ ॥ लोभे घर मेली रणमां मरे रे, लोभे
 उच ते नीचु आचरे रे ॥ लोभे पाप जणी पगलां जरे
 रे, लोभे अकारज करतां न उंसरे रे ॥ तुमे० ॥ ३ ॥
 लोभे मनरु न रहे निर्मलु रे, लोभे सगपण नासे वे-
 गलु रे ॥ लोभे न रहे प्रीति ने पावतु रे, लोभे धन मेळे
 बहु एकतुं रे ॥ तुमे० ॥ ४ ॥ लोभे पुत्र प्रत्ये पिता
 हणे रे, लोभे हत्यापातक नवि गणे रे ॥ ते तो दाम
 तणे लोभे करी रे, उपर मणिधर थाये ते मरी ॥
 तुमे० ॥ ५ ॥ जोतां लोचनो थोच दीसे नहीं रे, णुं

सूत्र सिद्धांते कहुं सह। रे ॥ लोत्रे चक्री सूत्रम नामे
जुज रे, ते तो समुद्र मांहे कुवी सुवो रे ॥ तुमे० ॥ ६
॥ एम जोणीने लोत्रने ठंरुजो रे, एक धर्मशुं ममता
मंरुजो रे ॥ कवि उदयरत्न जोखे मुदा रे, वंष्टुं लोत्र
तजे तेहने सदा रे ॥ तुमे० ॥ ७ ॥

॥ श्री जंबूस्वामीनी सज्जाय ॥

॥ सरस्वती सामिणी विनवुं, सद्गुरु लागुं जो पाय
॥ गुण रे गाशुं जंबूस्वामीना, हरख धरी मन मांय ॥
धन्य धन्य जंबूस्वामीने ॥ १ ॥ चारित्र ठे वत्स दो-
हिलुं, व्रत ठे खांरानी धार ॥ पाये अणुआणे जी चा-
दवुं, करवो जी उग्र विहार ॥ धन्य० ॥ २ ॥ मध्याह्न
पठी करवी गोचरी, दिनकर तपे रे निलाम ॥ वेवु
कवळ सम कोलीया, ते किम वाढ्या रे जाय ॥ धन्य०
॥ ३ ॥ कोमी नवाणुं सोवन तणी, तमारे ठे आठे जी
नार ॥ संसार तणां सुख सुण्यां नहीं, जोगवो जोग
उदार ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ रामे सीताने विजोगडे, ब्होत
कीयो रे संग्राम ॥ बती रे नारी तमे कांश् तजो, कांश्
तजो धन ने धान ॥ धन्य० ॥ ५ ॥ परणीने शुं जी
परिहरो, हाथ मढ्यानो संबंध ॥ पठीथी स्वामी करशो

उरतो, जिम कीधो मेघ मुणीद ॥ धन्य० ॥ ६ ॥
 जबू कहे रे नारी सुणो, अम मन संयम जाव ॥ सा-
 चो स्नेह करी लेखवो, तो संयम द्यो अम साथ ॥
 धन्य० ॥ ७ ॥ तेणे समे प्रजवो जी आवीयो, पांचसें
 चोर संघात ॥ तेने पण जंबूस्वामीए बुजव्यो, बुजध्यां
 मात ने तात ॥ धन्य० ॥ ८ ॥ सासु ससराने बुजव्या,
 बुजवी आठे नार ॥ पांचसें सत्यावीशशु, लीधो जी
 संयम चार ॥ धन्य० ॥ ९ ॥ सुधर्मा स्वामी पासे आ-
 वीया, विचरे ठे मनने उद्वास ॥ कर्म खगावी केवळ
 पामीया, पहोच्या जी मुक्ति मोजार ॥ धन्य० ॥ १० ॥

॥ आप स्वभावनी सज्जाय ॥

॥ आप स्वजावमां रे, अवधू सदा मगनमे रहेना
 ॥ जगत जीव हे करमाधोना, अचरिज कतुअ न
 लोना ॥ आप० ॥ १ ॥ तुम नही केरो कोइ नही तेरा,
 क्या करे मेरा मेरा ॥ तेरा हे सो तेरी पासे, अवर सवे
 अनेरा ॥ आप० ॥ २ ॥ वपु विनाशी तुं अविनाशी,
 अव हे इनको वलासी ॥ वपु संग जब छूर निकासी,
 तव तुम शिवका वासी ॥ आप० ॥ ३ ॥ राग ने रीसा
 दोय खवीसा, ए तुम दुःखका दीसा ॥ जब तुम उनकुं

दूर करीसा, तब तुम जगका ईशा ॥ आप० ॥ ४ ॥
 परकी आशा सदा निराशा, ए हे जगजन पासा ॥ ते
 काटनकुं करो अच्यसा, लहो सदा सुखवासा ॥ आप०
 ॥ ५ ॥ कवहीक काजी कवहीक पाजी, कवहीक हुआ
 अपत्राजी ॥ कवहीक जगमें कीर्ति गाजी, सब पुद्-
 गलकी बाजी ॥ आप० ॥ ६ शुद्ध उपयोग ने समता-
 धारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी ॥ कर्म कलंककुं दूर नि-
 वारी, जीव वरे शिवनारी ॥ आप० ॥ ७ ॥

॥ वैराग्य सङ्गाय ॥

॥ उंचां मंदिर मालीयां, सोरु वालीने सुतो ॥ कहामो
 कहामो एने सहु कहे, जाणे जन्म्योज नहोतो ॥ एक
 रे दिवस एवो आवशे, मने सबलोजी साखे ॥ मंत्री
 मढ्या सर्वे कारीमा, तेनुं कांइ नव चाखे ॥ एक० ॥१॥
 साव सोनारां रे सांकलां, पहेरण नव वाघा ॥ धोखुं रे
 वस्तर एना कर्मनुं, ते तो शोधवा लाग्या ॥ एक० ॥२॥
 चरु कढाइ अति घणां, बीजानुं नहीं देखुं ॥ खोखरी
 हांमी एना कर्मनी, ते तो आगल देखुं ॥ एक० ॥३॥
 केना ठोरु ने केनां वाठरु, केनां मा ने बाप ॥ अंतकाखे
 जावुं जीवने एकला, साथे पुण्य ने पाप ॥ एक० ॥४॥

संगी रे नारी एनी कामिनी, उची टगमग जुवे ।
 तेनु पण कांड चाले नहीं, वेठी धुसके रुवे ॥ एक० ॥ ५ ॥
 व्हालां ते व्हालां गुं करो, व्हालां बोटावी बलशे ।
 व्हालां ते वननां लाकरां, ते तो साथेजी बलशे ॥ एक० ॥
 ॥ ६ ॥ नहीं तापी नहीं तुंवकी, नथ्री तरवानो आरो ।
 उदयरत्न प्रजु डम जणे, मने पार उतारो ॥ एक० ॥ ७ ॥

॥ मन भमरानी सज्जाय ॥

॥ जूड्यो मन जमरा तु क्यां जम्यो, जम्यो दिवस
 ने रात ॥ मायानो बांध्यो प्राणीज, जमे परिमल जत
 ॥ जूड्यो ० ॥ १ ॥ कुज काचो रे काया कारमी, तेहर्न
 करो रे जतन ॥ विणमंता वार लागे नहीं, निर्मल राख
 रे मन ॥ जूड्यो ० ॥ २ ॥ केनां ठोरु ने केनां वाठम
 केहनां माय ने वाप ॥ प्राणी रे जावु ठे एकजु, साथे
 पुण्य ने पाप ॥ जूड्यो ० ॥ ३ ॥ आशा तो फुंगर जेवकी
 मरवुं पगलां रे हेठ ॥ धन संची संची कांड करो, करे
 देवनी वेठ ॥ जूड्यो ० ॥ ४ ॥ धंधो करी धन मेलव्यु
 लाखां उपर क्रोरु ॥ मरणनी वेला मानवी, लोयो क
 दोरो ठोरु ॥ जूड्यो ० ॥ ५ ॥ मृग्व कहे धन माहर्न

घोखे धान्य न खाय ॥ वल्ल विना जइ पोढवुं, लखपति
 लोकमा मांय ॥ ऋद्वयो ॥ ६ ॥ नवसागर दुःखजले
 नर्यो, तरवो ठे रे तेह ॥ वचमां नय सवलो थयो, कर्म
 वायरो ने मैह ॥ ऋद्वयो ॥ ७ ॥ लखपति ठत्रपति सव
 गया, गया लाख बे लाख ॥ गर्व करी गोंखे बेसता,
 सर्व थया बली राख ॥ ऋद्वयो ॥ ८ ॥ धमण धुखंती
 रे रही गइ, बुज गइ लाल अंगार ॥ एरणको ठवको
 मढ्यो, उठ चढ्यो रे लुहार ॥ ऋद्वयो ॥ ९ ॥ उवट
 मारग चालतां, जावुं पहेले रे पार ॥ आगल हाट न
 वाणीयो, संबल लेजो रे सार ॥ ऋद्वयो ॥ १० ॥ पर-
 देशी परदेशमें, कुणशुं करो रे सनेह ॥ आया कागल
 उठ चढ्या, न गणे आंधी ने मैह ॥ ऋद्वयो ॥ ११ ॥
 केइ चाढ्या रे केइ चालशे, केइ चालणहार ॥ केइ बेठा
 रे बुढा बापका, जाये नरक मोजार ॥ ऋद्वयो ॥ १२ ॥
 नीण घर नोबत वाजती, थाता ठत्रीशे राग ॥ खंडेर
 भइ खाली पड्यां, बेठण लाग्या बे काग ॥ ऋद्वयो ॥
 १३ ॥ नमरो आव्यो रे कमलमां, देवा कमलनुं फूल ॥
 कमलनी वांढाए मांहे रह्यो, जिमं आथमते सूर ॥

चूड्यो० ॥ १४ ॥ सद्गुरु कहे वस्तु वहोरीए, जे कोइ
 आवे रे साथ ॥ आपणो दाज उगारीए, देखुं साहिव
 हाथ ॥ चूड्यो० ॥ १५ ॥

॥ श्री सुवाहु कुवरनी सज्जाय ॥

॥ हवे सुवाहु कुंवर एम विनवे, अमे लेशु संजम
 चार ॥ माकी मोरी रे ॥ वीर प्रभुनी वाणी सांचली,
 तेणे में जाण्यो अथिर संसार ॥ माकी हवे हुं नही राचु
 रे संसारमां ॥ १ ॥ हारे जाया तुज विना सूनां मंदिर
 सूनां मालीयां, जाया तुज विना सूनो संसार ॥ जाया
 मोरा रे माणैक मोती मुकीकां, कांइ रिद्धि तणो नही
 पार ॥ जाया मोरा रे तुज विना घकीए न नीसरे ॥ २
 ॥ हारे माजी तन धन जोवन कारमो, कारमो कुटुंब
 परिवार ॥ माकी मोरी रे, कारमो सगपणमा कोण रहे
 ॥ मे तो जाण्यो अथिर संसार, माकी मोरी रे ॥ हवे०
 ॥ ३ ॥ हारे जाया संयम पथ घणो आकरो, जाया जेम
 ठे खांमानी धार ॥ जाया मोरा रे, बावीश परीसह
 जीतवा ॥ जाया रहेवुं जीव पास, जाया मोरा रे ॥ तुज०
 ॥ ४ ॥ हारे माकी वनमां रहे ठे मृगलां, तेनी कोण

करे संज्ञाल ॥ माफी मोरी रे वनमृगनी पेरे चालशुं,
अमे एकलका निरधार ॥ माफी ० ॥ ५ ॥ हारे माजी
नरक निगोदमां हुं जस्यो, जस्यो अनंत अनंती वार ॥
माफी मोरी रे ठेदन जेदन भं तलां, ते कहेतां नावे पार ॥
माफी हवे ० ॥ ६ ॥ हारे जाया पांचसो पांचसो नारीजं,
रहेवा पांचसो पांचसो म्हल ॥ जाया मोरा रे उंचा ते
कुलनी उपनी, रूपे अपसरा समान ॥ जाया ० ॥ ७ ॥
हारे माजी घरमां जो नीकले एक नागणी, सुखे निद्रा
न आवे लगार ॥ तो पांचसो नागणीजंमां केम रहूं,
गहं मनकुं आकुल व्याकुल थाय ॥ माफी हवे ० ॥ ८ ॥
हारे जाया एटवा दिवस हुं जाणती, रमाफी बहु रीते
वाल ॥ जाया दिवस अटारो आवीयो, तुं ले ठे संजम
नार ॥ जाया ० ॥ ९ ॥ हारे माजी मुसाफर आव्यो कोइ
परुणलो, फरी जेगो थाय न थाय ॥ इम मानवजव पा-
सवा दोहिलो, धर्म विना दुर्गति भोजार ॥ माफी हवे ०
॥ १० ॥ हवे पांचसो वहुजं एम विनवे, तेमां वडेरी करे
ठे जवाब ॥ वालम मोरा रे, स्वामी तमे तो संजम लेवा
पंचर्या ॥ स्वामी अमने ते कवण आधार, वालम मोरा

रे वालीम विना किम रही शकुं ॥ ११ ॥ हारे माजी
 मात पिता ने चाइ वेनमी, नारी कुटुंब ने परिवार ।
 मामी मोरी रे अत समय अलगां रहे, एक जैन धरम
 तारणहार ॥ मामी हवे० ॥ १२ ॥ हारे माजी कार्च
 ने काया कारमी, समी पकी पण सीजाय ॥ जीवमो जाय
 ने काया पकी रहे मुआ पठी वाली करे राख ॥ मामी०
 ॥ १३ ॥ हवे धारिणी माता रही विनवे, आपु मनहि
 रहे संसार ॥ नविक जन रे, एक दिवसतुं राज्य जो
 गवी ॥ सयम लीधु महावीर स्वामी पास नविक जन रे
 सुवाहु कुवर सयम आदर्शु ॥ मामी० ॥ १४ ॥ तप तपी
 काया शोपनी, आराधी गया देवलोक ॥ नविक जन
 रे पदर नव पूरा करी महाविदेह क्षेत्रमां जाशे मोक्ष
 ॥ नविक जन रे ॥ १५ ॥

॥ परस्त्री त्याग सज्जाय ॥

॥ सुण चतुर सुजाण, परनारीशु प्रीत कवु नव की
 जीए ॥ ए आंकणी ॥ हारे जेणे परनारीशुं प्रीत करी
 तेने हैडे रंघण थाय वणी ॥ तेणे कुल मरजादा कांठ
 न गणी ॥ सुण० ॥ १ ॥ तारी लाज जशे नात जातमां
 तुं तो हलवो पकीश सहु साथमां ॥ ए धुमानो न आवे

हाथमां ॥ सुण० ॥ १ ॥ हारि सांज पडे रवि आथमे,
तारो जीव जमरानी पर जमे ॥ तुने घरनो धंधो कांड
न गमे ॥ सुण० ॥ ३ ॥ हारि तुं जइश मलोश घूतीने,
तारुं धन लेशे सर्व धूतीने ॥ पठी रहीश हैटुं कूटीने ॥
सुण० ॥ ४ ॥ तुं तो वेठो सुठो मरकीने, तारुं काढजुं
खाशे करकीने ॥ तारुं मांस लेशे उऊरकीने ॥ सुण० ॥
५ ॥ तुंने प्रेमना प्याला पाइने, तारां वस्त्र लेशे वाइने ॥
तुंने करशे खोखुं खाइने ॥ सुण० ॥ ६ ॥ तुं तो पर मं-
दिरमां पेसीने, तिहां पारकी सेजे वेसीने ॥ तें जोग
कर्या घणा हेंसीने ॥ सुण० ॥ ७ ॥ जेम जुजंग थकी
करता रहीए, तेम परनारीने परिहरीए ॥ जवसायर
फेरा नवि फरीए ॥ सुण० ॥ ८ ॥ व्हाला परणी नारीश्री
ब्रीत सारी, ए माथुं वढावे परनारी ॥ तमे निश्चे जा-
णजो निरधारी ॥ सुण० ॥ ९ ॥ सद्गुरु कहे ते साचुं ठे,
तारी कायानुं सर्वे काचुं ठे ॥ एक नाम प्रभुनुं साचुं
ठे ॥ सुण० ॥ १० ॥

॥ श्रावक योग्य करणीनी सज्जाय ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ श्रावक तुं उठे परजात, चार घरी ले पाठवी रात ॥

॥ मनमां समरे श्री नवकार, जेम पामे ' जवसायर
 पार ॥ १ ॥ कवण^१ देव कवण गुरु धर्म, कवण अमारुं ठे
 कुलकर्म ॥ कवण अमारो ठे व्यवसाय^२, एवुं चितवजे मन
 मांय ॥ २ ॥ सामायिक लेजे मन शुद्ध, धर्मनी हैडे
 धरजे वुद्ध ॥ पम्किमणु करजे रयणी^३ तणु, पातक^४
 आलोइ आपणुं ॥ ३ ॥ काया शक्ते करे पच्चखाण,
 सुधी पाळे जिननी आण जणजे गणजे स्तवन स-
 ज्जाय, जिणहुंति^५ निस्तारो थाय ॥ ४ ॥ चितवे^६ नित्य
 चउदे निम, पाळे दया जीवतां सीम ॥ देहरे जाइ जु-
 हारे देव, द्रव्य जावर्था करजे सेव ॥ ५ ॥ पूजा करतां
 लाज अपार, प्रजुजी मोटा मुक्ति दोतार ॥ जे उत्थापे
 जिनवर देव, तेहने नव दंरुकनी टेव ॥ ६ ॥ पोशाळे^७
 गुरु वंदजे जाय, सुणे वखाण सदा चित्त लाय ॥ नि-
 र्दूषण सुजंतो^८ आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ७ ॥

१ कोण. २ व्यापार-रोजगार. ३ रात्रिनु. ४ पाप. ५ जेथी
 ६ चौद नियम सदाय धारजे. पौपधशाला-उपाश्रये. ८ दोष वगरनो
 साधुने खपे एवो शुद्धमान

स्वामित्सल^१ करजे घणुं, सगपण मोहोदुं सामी तणुं ॥
 दुःखीया हीणा दीनने देख, करजे तास दया सुवि-
 शेष ॥ ७ ॥ घर^२ अनुसारे देजे दान,^३ मोटाशुं म करे
 अन्निमान ॥ गुरुने मुख लेजे आखमी^४, धर्म न मूकीश
 एके घनी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, उठा अधि-
 कानो परिहार ॥ म जरजे केनी कूमी साख, कूमा
 जनशुं कथन म जाख ॥ ९ ॥ अनंतकाय^५ कही व-
 त्रीश, अन्नदय^६ वावीशे विश्वावीश ॥ ते जद्दण नवि
 कीजे किमे, काचां कुणां फल मत जिमे ॥ १० ॥ रा-
 त्रिचोजनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी
 साबु लोह ने गली, मधु धावनी मत वेचो वली ॥ ११ ॥
 वली म करावे रंगण पास, दूषण घणां कह्यां ठे तास ॥
 पाणी गलजे बे बे वार, अणगल पीतां दोष अपार
 ॥ १२ ॥ जीवाणीना^७ करजे यत्न, पातक ठंकी करजे
 पुण्य ॥ ठाणां इंधण चूलो जोइ, बावरजे जिम पाप न
 होय ॥ १३ ॥ घृतनी परे वावरजे नीर, अणगल नीर

१ स्वधर्मिनी सेवा. २ संपत् प्रमाणे. ३ बलीया साथे वाथ भीडीश
 नहीं. ४ व्रत, नियम, प्रतिज्ञा. ५ जमीनकंद विगेरे. ६ मध, माखण,
 काचुं मीठुं विगेरे. ७ पाणीनो संखारो वालतां वचेलं जीवजंतुओ.

म धोइश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सुधुं पालजे, अतिचार सघल
 टाखजे ॥ १५ ॥ कक्षां पन्नरे कर्मादान, पाप तणी पर
 हरजे खाण ॥ माथे म लेजे अनरथदंरु,^१ मिथ्या मेढ
 म नरजे पिरु ॥ १६ ॥ समकित शुद्ध हैडे राखजे, बोल
 विचारीने चाखजे ॥ पांच तिथि म करे आरंज, पाढे
 शीयल तजी मन दंज ॥ १७ ॥ तेल तक्र^२ घृत दुध न
 दहीं, उघासां मत मेढे सही ॥ उत्तम ठामे खरचे वित्त
 पर उपगार करे शुज चित ॥ १८ ॥ ^३दिवसचरि
 करजे चोविहार, चारे आहार तणो परिहार ॥ दिवस
 तणां आलोए पाष, जिम चांजे सघला सताप ॥ १९
 ॥ संध्याए आवश्यक^४ साचवे, जिनवर चरण शरण
 नवजवे ॥ चारे शरण करी दृढ होय, सागारी^५ अ
 णसण ले सोय ॥ २० ॥ करे मनोरथ मन एहवा, ती
 रथ शेनुजे जायवा ॥ समेतशिखर ओघु गिरनार, जे
 टीश हुं धन्य धन्य अवतार ॥ २१ ॥ श्रावकनी करणी ठे
 एह, एहथी थाये नवनो ठेह^६ ॥ आठे कर्म पडे पा

१ मिथ्यात्व मेलथी आत्माने मलिन करीश नहीं. २ उाश. ३ मूर्ध
 अस्त थया पहेला सत्रला खानपाननो त्याग करजे. ४ प्रतिक्रमणादि
 ५ अमुक जागार (छुट) यालु. ६ अत, छेडो.

गलां, पाप तणा बूटे आमला^१ ॥ ११ ॥ वारु लहीए
अमर^२ विमान, अनुक्रमे पामे शिवपुरधाम ॥ कहे जि
महर्ष जणे ससनेह, करणी दुःखहरणी ठे एह ॥ १३ ॥

॥ गौतमस्वामीनी सञ्जाय ॥

॥ हे इंद्रचूति ताहरा गुण कहेतां हरख न माय,
हे गुणदरिया सुरवधू कर जोकी गुण गाय ॥ ए. आं-
कणी ॥ जे शंकर विरंजीनी जोकी, वली मोरलीधरने
वेढोकी ॥ ते. जिनजी साथे प्रीत जोकी ॥ हे इंद्र०
। १ ॥ वेदना अरथ सुणी साचा, वीरना चेला थया
जाचा ॥ कोइ लब्धिए न रह्या काचा ॥ हे इंद्र० ॥ २
॥ परिग्रह नवविधना त्यागी, तुमची जागरणदशा जागी
। धर्मध्यान शुक्लध्यानना रागी ॥ हे इंद्र० ॥ ३ ॥
अनुजोग चारना बहु जाण, तेणे निर्मल प्रबल तुज
नाण ॥ अमरत रस सम मीठकी वाण ॥ हे इंद्र० ॥
४ ॥ जे काम नृपने रमवा दमी, त्रण गति त्रिवटे तेह
पकी ॥ ते रमणी तुजने नहीं नकी ॥ हे इंद्र० ॥ ५ ॥
अति जागरणदशा ज्यारे जागी, जावठ सधली त्यारे
जागी ॥ कहे धर्मजीत नोबत वागी ॥ हे इंद्र० ॥ ६ ॥

ॐ (१५९)

॥ हितोपदेश सङ्गाय ॥

॥ हुं तो प्रणमुं सद्गुरु राया रे, माता सरसतीन
बंदुं पाया रे ॥ हुं तो गां अतमराया ॥ जीवणजं
वारणे मत जाजो रे ॥ तुम घेर वेठा कमावो चेतनजं
॥ वारणे मत जोजो रे ॥ १ ॥ ताहरे वाहिर दुर्मि
राणी रे, केताशु कुमति कहेवाणी रे ॥ तुने जोलव
चांधशे ताणी ॥ जी० ॥ वा० ॥ २ ॥ ताहरा घरमां
त्रण रतन रे, तेनुं करजे तुं तो यतन रे ॥ ए अखू
खजानो ठे धन ॥ जी० ॥ वा० ॥ ३ ॥ ताहरा घरम
पेठा ठे धूतारा रे, तेने काढोने प्रीतम प्यारा रे
एथी रहोने तुमे न्यारा ॥ जी० ॥ वा० ॥ ४ ॥ सत्ताव
नने काढो घरमांथी रे, त्रेवीशने कहो जाये इहांथी
॥ पठी अनुभव जागशे मांहेथी ॥ जी० ॥ वा० ॥
॥ सोल कपायने दीयो शीख रे, अढार पापस्थानक
मगावो चीख रे ॥ पठे आठ करमनी शी वीक ॥ जी
॥ वा० ॥ ६ ॥ चारने करोने चकचूर रे, पांचमीशु था
हजूर रे ॥ पठे पामो आनंद जरपूर ॥ जी० ॥ वा०
७ ॥ विवेकदीवे करो अजुवालो रे, मिथ्यात्व अधक
रने टाळो रे ॥ पठे अनुभव साथे माळो ॥ जी०

० ॥ ७ ॥ सुमति साहेबीशुं खेलो रे, दुर्गतिनो ठेको
हेलो रे ॥ पढे पामो मुक्ति गढ हेलो ॥ जी० ॥ बा०
ए ॥ ममताने केम न मारो रे, जीती बाजी कांइ
ारो रे ॥ केम पामो जवनो पारो ॥ जी० ॥ बा० ॥ १०
शुद्ध देव गुरु सुपसाय रे, मारो जीव आवे कांइ ठाय
॥ पढे आनंदघन मन थाय ॥ जी० ॥ बा० ॥ ११ ॥

॥ मृगापुत्रनी सज्जाय ॥

॥ सुग्रीव नयर सोहामणुं जी, राजा श्री बलचद्र ॥
स घरणी मृगावती जी, तस नंदन गुणवंत रे ॥ माफी
ण लाखिणो जाय ॥ १ ॥ संयम चिंतामणी समो जी,
प्रधिक मोरे मन थाय ॥ तन धन जोवन कारमो जी,
खिण खिण खूटे आय रे ॥ माफी० ॥ २ ॥ एक दिन
ठा मालीये जी, नारीने परिवार ॥ शीश सूर दाजे
ले जी, दीठो सीरी अणगार रे ॥ माफी० ॥ ३ ॥ तस
रसण जव सांजयो जी, आव्यो मन वैराग ॥ आमण
मण उतर्यो जी, लाग्यो माताने पाय रे ॥ माफी० ॥
॥ पाय लागीने विनवे जी, सांजलो मोरी रे मात ॥
भाटकनी परे नाचीठ जी, हवे न लेखुं घात रे ॥ माफी०
॥ ५ ॥ साते नरके हुं चम्यो जी, अनंत अनंती रे वार

॥ ठेदन जेदन त्यां सद्यां जी, कहेतां न लहुं पार रे ।
 मानी० ॥ ६ ॥ सायरजल पीधां घणां जी, वली पीध
 मायनां थान ॥ तृप्ति न पाम्यो प्राणीर्ज जी वली वर्ल
 मागुं मान रे ॥ मानी० ॥ ७ ॥ वयण सुणी वेटा तण
 जी, जननी धरणी ढलत ॥ चित वद्यु तव आरडे जी
 नयणे नीर ऊरत रे ॥ मानी० ॥ ८ ॥ वलतुं मानी इम
 जणे जी, सांजलो मोरा रे पुत ॥ मनमोहन मुज वाहले
 जी, कांइ जोगे घरसूत्र रे ॥ जायो तुज विण घनीय न
 जाय ॥ ९ ॥ मोटां मंदिर मालीयां जी, नारीनो परि-
 वार ॥ वहु तुम पाखे ए सहु जी, रण समोवनी थाय
 रे ॥ जाया० ॥ १० ॥ दश मसवामा उदर धर्यो जी, ज-
 नम तणे दुःख दीठ ॥ कनककचोले पोसीयो जी, हवे
 हुं थइ अनिठ रे ॥ जाया० ॥ ११ ॥ जोवनवय रमणी
 तणा जी, लीजे बहुला रे जोग ॥ ए जोवन वीत्या पठी
 जी, आदरजो तप जोग रे ॥ १२ ॥ परघर जिक्का मा
 गवी जी, अरस विरस विहार ॥ चारित्र ठे वहु दो
 हिलो जी, जेसी खांमानी धाररे ॥ जाया० ॥ १३ ॥
 पच महाव्रत पालवां जी, पालवा पच आचार ॥ दोष
 वेतोलीश टालवा जी, लेवो शुद्ध आहार रे ॥ जाया०

॥ १४ ॥ मीणदांत दोहमय चणा जी, तुं किम चावीश
 वहु ॥ वेलुकवल सम कोलीया जी, संजम कहे जिन-
 राज रे ॥ जाया० ॥ १५ ॥ पलंग तलाइ पोढता जी,
 करवा चूमि संधार ॥ कनककचोलां ठांमवां जी, वहु
 काचलीए व्यवहार रे ॥ जाया० ॥ १६ ॥ शियाखे शीत
 गाय ठे जी, उनाखे लू वाय ॥ वरसाखे अति दोहिलो
 नी, घनी वरस सो थाय रे ॥ जाया० ॥ १७ ॥ कुंवर
 तणे सुण मावनी जी, संयम सुख जंडार ॥ चौद राज
 मगरी तणा जी, फेरा टालणहार रे ॥ मामी० ॥ १८
 । सुण अमारा बाबुना जी, कोण करशे तुज सार ॥
 रोग जब आवी लागशे जी, नहीं औषध उपचार रे ॥
 जाया० ॥ १९ ॥ वनमां रहे ठे मृगदां जी, कोण करे
 तेहनी सार ॥ वनमृगनी परे चालशुं जी, अनुमति दीयो
 मोरी माय रे ॥ मामी० ॥ २० ॥ माय मोकलावीने वली
 जी, समरथ साहस धीर ॥ श्रीगुरु चरणे जइ नम्यो जी,
 हीक्षा द्यो श्री वीर रे ॥ जाया० ॥ २१ ॥ सुर नर कि-
 नर बहु मिट्या जी, उंहुवनो नहीं पार ॥ सर्वविरति
 नेणे आदरी जी, जिणे लहीए चवजळ तीर रे ॥ जाया०
 ॥ २२ ॥ षट्काय गोवलीयो जी, उपशम रस चंमार ॥

समिति गुप्ति रूपि पालतो जी, निराधार आधार रे ॥
जाया ० ॥ १३ ॥ मृगापुत्र रूपि राजीयो जी, पाम्यो शि-
वपुरठाम ॥ सिंहविमल एम विनवे जी, होजो तोस प्र-
माण रे ॥ जाया तुज विण घनीय न जाय ॥ १४ ॥

॥ इलाची पुत्रनी सज्जाय ॥

॥ नाम इलापुत्र जाणीए, धनदत्त शेठनो पुत्र ॥ न
टवी देखीने मोहीउं, नदि राख्युं घरनु सूत्र ॥ १ ॥ क
रम न ठूटे रे प्राणीयां, पूरव नेह विकार ॥ निज कुद
ठंकी रे नट थयो, नाणी शरम लगार ॥ करम ० ॥ २ ॥
॥ मात पिता कहे पुत्रने, नट नवि थइए रे जात ।
पुत्र परणावुं रे पदमिणी, सुख विलसों संघात ॥ करम
॥ ३ ॥ कहेण न मान्यु रे तातनुं, पूरव कर्म विशेष ।
नट थइ शीख्यो रे नाचवा, न मटे लख्या रे लेख ।
करम ० ॥ ४ ॥ इकपुर आव्यो रे नाचवा, उचो वंश
विशेष ॥ तिहां राय जोवाने आवीउं, मलीयां लोव
अनेक ॥ करम ० ॥ ५ ॥ ढोल वजावे रे नटवी, गाठे
किन्नर साद ॥ पायतल घुघर घमघमे, गाजे अंवर नाद
॥ करम ० ॥ ६ ॥ दोय पग पहेरी रे पावकी, वंश चढ्यो
गज गेल ॥ नोधारो थइ नाचतो, खेले नवनवा खेल ।

करम० ॥ ७ ॥ नटवी रंजा रे सारिखी, नयणे देखे रे
 जाम ॥ जो अंतेउरमां ए रहे, जनम सफल मुज ताम
 ॥ करम० ॥ ८ ॥ तव तिहां चिंते रे जूपति, बुद्ध्यो
 नटवीनी साथ ॥ जो नट पडे रे नाचतो, तो नटवी करुं
 मुज हाथ ॥ करम० ॥ ९ ॥ कर्मवशे रे हुं नट थयो,
 नाचुं तुं निराधार ॥ मन नवि माने रे रायनुं, तो कोण
 करवो विचार ॥ करम० ॥ १० ॥ दान न आपे रे जू-
 पति, नटे जाणी ते वात ॥ हुं धन वांनुं तुं रे रायनुं,
 राय वंठे मुज घात ॥ करम० ॥ ११ ॥ दान लहुं जो हुं
 रायनुं, तो मुज जीवित सार ॥ एम मन मांहे चिंतवी,
 चढीउं चोथी रे वार ॥ करम० ॥ १२ ॥ थाल जरी
 शुद्ध मोदके, पदमणी उज्जी ठे वार ॥ द्यो द्यो कहे ठे
 लेता नथी, धन्य धन्य मुनि अवतार ॥ करम० ॥ १३ ॥
 एम तिहां मुनिवर वोहोरता, नटे पेख्या महाजाग ॥
 धिगू धिगू विषया रे जीवने, एम नट पास्यो वैराग ॥
 करम० ॥ १४ ॥ संवरजावे रे केवली, थयो ते कर्म ख-
 पाय ॥ केवलमहिमा रे सुर करे, लब्धिविजय गुण
 गाय ॥ करम न बूटे रे प्राणीया ॥ १५ ॥

(१६५)

॥ लोभनी मञ्जाय ..

॥ लोच न करीए प्रोणीया रे, लोच बूरो संसार
लोच समो जगमां नहीं रे, दुर्गतिनो दातार
चविकजन, लोच बूरो रे संसार ॥ करजो तुमे नि
धार ॥ चविकजन ॥ जिम पामो चवपार ॥ च०
लोच० ॥ १ ॥ अति लोचे लक्ष्मीपति रे, साग
नामे शेठ ॥ पूर पयोनिधिमां पड्यो रे, जड वेत
तस हेठ ॥ च० ॥ लोच० ॥ २ ॥ सोवनमृगन
लोचथी रे, दशरथ सुत श्रीराम ॥ सीता नारी गमा
वीने रे, जमीयो ठामो ठाम ॥ च० ॥ लोच० ॥ ३ ॥
दशमा गुणठाणा लगे रे, लोच तणु ठे जोर ॥ शिव
पुर जातां जीवने रे, एहज मोटो चोर ॥ च०
लोच० ॥ ४ ॥ क्रोध मान माया लोचथी रे, दुर्गति
पामे जीव ॥ परवश पकीळ वापको रे, अहोनिश
पाडे रीव ॥ च० ॥ लोच० ॥ ५ ॥ परिग्रहना परि
हारथी रे, लहीए शिवसुख सार ॥ देव दानव नर
पति थइ रे, जाशे मुक्ति मोजार ॥ च० ॥ लोच० ॥ ६ ॥
जावसागर पंक्ति जणे रे, वीरसागर बुध शिष्य
लोच तणे त्यागे करी रे, पहोंचे सयल जगीश
चविकजन ॥ लोच० ॥ ७ ॥

॥ शिखामणनी सज्झाय ॥

॥ जीव वारु तुं मोरा वालमा, परनारीथी प्रीति म
जोरु ॥ परनारीनी संगत नहीं जला, तारा कुलमां
लोगशे खोरु ॥ जीवण ॥ १ ॥ जीव ए संसार ठे
कारमो, दीसे ठे आलपंपाल ॥ जीव एहवुं जाणी
चेतजे, आगल माठीडे नाखी ठे जाल ॥ जीवण ॥ २ ॥
जीव मात पिता ज्ञाइ वेननी, सहु कूटुंब तणो परि-
वार ॥ जीव वेती वारे सहु सगुं, पठे लांवा कीधा
जुहार ॥ जीवण ॥ ३ ॥ जीव देहेली लगे सगुं आंगणुं,
शेरी लगे सर्गी माय ॥ जीव सीम लगे साजन
जलो, पठे हंस एकीलो जाय ॥ जीवण ॥ ४ ॥ जीव
जातां तो नवि जाणीउं, नवि जाण्यो वार कुवार ॥
जीव गारुं जरीयुं इंधणे, वली खोखरी हांमली
सार ॥ जीवण ॥ ५ ॥ जीव आठम पाखी न उंलखी,
जीव बहुलां कीधा पाप ॥ जीव सुमतिविजय मुनि
एम जणे, जीव आवागमन निवार ॥ जीवण ॥ ६ ॥

॥ जोवन अस्थिरनी सज्झाय ॥

॥ जोवनीआनी मोजां फोजां, जाय नगरां देती
रि ॥ घनी घनी घनीआलां वाजे, तोही न जागे

तेथी रे, ॥ जो० ॥ १ ॥ जरा राहसी जोर करे ठे
 फेलावी फजेती रे, ॥ आवी अवधे उंशके नहीं
 खखपतिने खेती रे ॥ जो० ॥ २ ॥ माले वेगो मोड
 करे ठे, खांते जोवे खेती रे ॥ जमरो जमरो तार्ण
 खेशे, गोफण गोला सेती रे ॥ जो० ॥ ३ ॥ जे ते
 उपर जोर करो ठो, चतुर जुवोने चेती रे, ।
 मांधाता सरखा नर वलीया, रोजवियो थया रेती रे ।
 जो० ॥ ४ ॥ जिन राजाने शरणे जाऊं, जोराळो के
 न जेथी रे ॥ दुनियामां दुजो दीसे नहीं, आखर
 तरशो तेथी रे ॥ जो० ॥ ५ ॥ दंत पड्या ने मोस
 थयो, काज सयुं नहीं केथी रे ॥ उदयरत्न कहे
 आपे समजो, कहीए वातो केती रे ॥ जो० ॥ ६ ॥

॥ श्री शीयळ विषे सज्जाय ॥

॥ सोम विमल गुरु पय नमी जी, निज गुरु चरण
 वंदेवि ॥ शील तणा गुण गायशुं जी, हियडे हृद
 धरेवि रे, ॥ जीवना ॥ धरीए शील व्रत सार ॥ १ ॥
 शील विण व्रत सवि खरुहडे जी, शील विण
 संयम सार रे ॥ जीवना ॥ धरीए शील व्रत सार
 ए आंकणी ॥ तोरणथ्री रथ वालीयो जी, जाग्ये

म कुमार ॥ राजीमती विनवे घणुं जी, न धरे
गोह लगार रे ॥ जीवना ॥ धरीए० ॥ २ ॥ श्रुति-
तद्र कोश्या घर रहे जी, चतुरपणे चउ मास ॥
वटरस नित्य नोजन करे जी, न पड्यो कोश्या
गश रे ॥ जीवना ॥ धरीए० ॥ ३ ॥ नवाणुं कंचन
गेनी धणी जी, कहीए जंबुकुमार ॥ आठे कन्या
रहरी जी, लीधो संयमजार रे ॥ जीवना ॥
धरीए० ४ ॥ धनसंचय पुत्री जणे जी, परणुं वयर
कुमार ॥ वयर स्वामी मन नवि चट्यो जी, जाणी
प्रथिर संसार रे ॥ जीवना ॥ धरीए० ॥ ५ ॥ शेठ
मुदर्शनने दीए जी, अन्नया कपिला रे आल ॥
गुली सिंहासन थयुं जी, जाणे बाल गोपाल रे ॥
जीवना ॥ धरीए० ॥ ६ ॥ बंकचूल चोरी करे जी,
गठो राय जंमार ॥ राणीए घणुं ज्ञोलव्यो जी, न
वट्यो चित्त लगार रे ॥ जीवना ॥ धरीए० ॥ ७ ॥
कुलह करावे अति घणोजी, ते तो शील प्रजाव रे ॥
जीवना ॥ धरीए० ॥ ८ ॥ चंदनवाला महासती जी,
जगमां हुइ विख्यात ॥ जस हाथे वीर पारणुं जी, हुइ
असंजव वात रे ॥ जीवना ॥ धरीए० ॥ ९ ॥ साठ

सहस्र वर्ष आंखिल करी जो, चरतशु ठंडे रे प्रेम ॥
 ॥ कृपज्ञ पुत्री ते सुंदरी जी, मुक्ते पहोती खेम रे ॥
 जीवना ॥ ॥ धरीए० ॥ १० ॥ शीलवती चरथारने जी
 कमलिनी आपे सार ॥ क्यारे कुर माथे नहीं जी,
 शील तणे अनुचाव रे ॥ जीवना ॥ धरीए० ॥ ११ ॥
 चालणीए जल काढीयुं जी, सती सुनद्रा नार ॥
 चपा वार उघानीयां जी, लोक करे जयकार रे ॥
 जीवना ॥ धरीए० ॥ १२ ॥ सती मांहे सीता जली जी,
 जेहने मन श्रीराम ॥ अन्नि टली पाणी थयु जी, राख्युं
 जगमां नाम रे ॥ जीवना ॥ धरीए० ॥ १३ ॥ शीले
 हरीयुं हरणखुं जी, शीले सकट जाय ॥ शीले साप न
 आजडे जी, पावक पाणी थाय रे ॥ जीवना ॥ धरीए० ॥
 ॥१४॥ जे प्राणी स्वकायथकी जी, शील पावे गुणवत
 ॥ ब्रह्मलोके ते अवतरे जी, इम चाखे जगवंत रे ॥
 जीवना ॥ धरीए० ॥ १५ ॥ शील अखंफित पालशे
 जी, इण जुग जे नर नार ॥ हस सोम उवज्जाय नणे
 जी, तेहने जयजयकार रे ॥ जीवना ॥ धरीए० ॥ १६ ॥

॥ श्री मनकितनी नज्जाय ॥

॥ समकित नवि लह्यु रे ए तो रुढ्यो चतुर्गति

मांहे ॥ त्रस थोवरकी करुणा कीनी, जीव न एक
 विराध्यो ॥ तीन काल सामायिक करतां, शुद्ध उप-
 योग न साध्यो ॥ समकित० ॥ १ ॥ जूठ बोलवाको
 व्रत लीनो, चोरीको पण त्यागी ॥ व्यवहारादिक महा
 निपुण ज्यो, पण अंतर्दृष्टि न जागी ॥ समकित० ॥
 ॥ २ ॥ ऊर्ध्व जुजा करी उंधो लटके, तस्म लगा धूम
 गटके ॥ जटा जूट शिर मुंडे जूठो, विण श्रद्धा त्रव
 तटके ॥ समकित० ॥ ३ ॥ निज परनारी त्यागज करके
 ब्रह्मचारी व्रत लीनो ॥ स्वर्गादिक याको फल पामी,
 निज कारज नवि सिध्यो ॥ समकित० ॥ ४ ॥ बाह्य
 क्रिया सब त्याग परिग्रह, द्रव्यलिंग घर लीनो ॥
 देवचंद्र कहे आ विध तो हम, बहुत वार कर लीनो
 ॥ समकित० ॥ ५ ॥

॥ श्री रात्रिभोजननी सज्झाय ॥

॥ पूण्यसंजोगे नरत्नव लाधो, साधो आतम काज ॥
 विपया रस जाणो विस सरखो, एम चाखे जिनराज
 रे ॥ प्राणी ॥ रात्रि भोजन वारो ॥ आगम वाणी
 साची जाणी, समकित गुण सही नाणी रे ॥ प्राणी ॥
 शत्रि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अन्नदय बावीशमां रय-

णीजोजन, दोष कह्या परधान ॥ तेणे कारण राते म
 जमजो, जो हुवे हृष्टे शान रे ॥ प्राणी ॥ रात्रि ॥
 ॥ दान स्नान आयुध ने जोजन, एटलां राते न कीं
 ॥ ए करवु सूरजनी शाखे, नीतिवचन समजीजे रे
 प्राणी ॥ रात्रि ॥ ३ ॥ उत्तम पशु पंखी पण राते
 टाळे जोजन टाणो ॥ तुमे तो मानवी नाम धरावो
 किम संतोष न आणो रे ॥ प्राणी ॥ रात्रि ॥ ४ ॥
 माखी जु कीनी कोळीआवरो, जोजनमां जो आवे ।
 कोढ जलोदर वमन विकलता, एहवा रोग उपावे रे
 ॥ प्राणी ॥ रात्रि ॥ ५ ॥ ठन्नुं जव जीव हत्या करतां
 पातीक जेह उपायुं ॥ एक तलाव फोमंतां तेट्युं, दुपए
 सुगुरु वतायु रे ॥ प्राणी ॥ रात्रि ॥ ६ ॥ एकलोत्त
 जव सर फोरुया सम, एक दव देतां पाप ॥ अठलो
 त्तर जव दव दीधां जिम, एक कुवणिज संताप रे
 प्राणी ॥ रात्रि ॥ ७ ॥ एकसो चुमालीस जव ल
 कीधा, कुवणिजना जे दोष ॥ कुमुं एक कलंक दीयंत
 तेहवो पापनो पोष रे ॥ प्राणी ॥ रात्रि ॥ एकस
 एकावन जव लगे दीधां, कूमां कलंक अपार ॥ ए
 वार शील खंड्या जेवो, अनर्थनो विस्तार रे ॥ प्राण

। रात्रि० ॥ ए ॥ एकसो नवाणुं जव लगे खंड्या, शी-
गल विषय संबंध ॥ तेहवो एक रात्रिजो जनमां, कर्म
निकाचित बंध रे, प्राणी ॥ रात्रि० ॥ १० रात्रिजो जन
मां दोष घणा ठे, श्यो कहीए विस्तार ॥ केवली क-
हेतां पार न पावे, पूरव कोनी मजार रे ॥ प्राणी ॥
॥ रात्रि० ॥ ११ ॥ रात्रे नित्य चोविहार करीने, शुभ
परिणाम धरीजे ॥ मासे मासे मासखमणनो, दाज
इणे विध लीजे रे ॥ प्राणी ॥ रात्रि० ॥ १२ ॥ मुनि
वसतानी एह शिखामण, जे पावे नर नारी ॥ सुरनर
सुख विलसीने होवे, मोह तणा अधिकारी रे ॥
॥ प्राणी ॥ रात्रि० ॥ १३ ॥

॥ श्री सहजानंदीनी सज्झाय ॥

(बीजी अशरण भावना-ए देशी.)

सहजानंदी रे आतमा, सूतो कांइ निश्चित रे ॥
मोह तणा रणीया जमे, जाग जाग मतिवंत रे ॥
दुंटे जगतना जंत रे, नाखी वांक अत्यंत रे, नरका-
वास ठवंत रे, कोइ विरला उगरंत रे ॥ स० ॥ १ ॥
राग द्वेष परिणति जजी, माया कपट कराय रे ॥
काश कुसुम परे जीवनी, फोगट जन्म गमाय रे ॥

माथे जय जमराय रे, श्यो मन गर्व धराय रे,
 सहु एक मारग जाय रे, कोण जग अमर कहाय
 रे ॥ स० ॥ १ ॥ रावण सरिखा रे राजवी, नागा
 चाढ्या विण धाग रे ॥ दश मार्थां रण रफुवड्यां,
 चांच दीए शिर काग रे, देव गया सवि जाग रे,
 न रह्यो माननो ठाग रे, हरि हाथे हरिनाग रे,
 जोजो चाड्डना राग रे ॥ स० ॥ ३ ॥ केड चाढ्या
 केड चालशे, केता चालणहार रे ॥ मारग वहे तो
 रे नित्य प्रत्ये, जोतां लग्न हजार रे ॥ देश विदेश
 सधार रे, ते नर एणे संसार रे, जातां जम दरवार
 रे, न जुवे वार कुवार रे ॥ स० ॥ ४ ॥ नारायण
 पुरी छारिकां, बलती मेली निराश रे ॥ रोता रणमां
 ते एकला, नाठा देव आकाश रे ॥ किहां तरु ठाया
 आवास रे, जल जल करी गयो सास रे, बलजड
 सरोवर पास रे, सुणी पांरुव शिववास रे ॥ स०
 ॥ ५ ॥ राजी गाजीने बोलता, करता हुकम हेरान
 रे ॥ पोढ्या अग्निमां एकला, काया राख समान रे ॥
 ब्रह्मदत्त नरक प्रयाण रे, ए ऋद्धि अधिर निदान
 रे ॥ जेवुं पीपलपान रे, म धरो जूठ गुमान रे ॥
 स० ॥ ६ ॥ बाबेसर विना एक घनी, नवि सोहातुं

लगार रे ॥ ते विना जनमारो वही गयो, नहीं
 नागल समाचार रे ॥ नहीं कोइ कोइनो संसार
 , स्वारथीयो परिवार रे, माता मरुदेवी सार रे,
 होता मोक्ष मोक्षार रे ॥ स० ॥ ७ ॥ मात पिता
 त बांधवा, अधिको राग विचार रे ॥ नारी
 सारी रे चित्तमां, वंटे विषय गमार रे ॥ जुवो सूरि
 गंता जे नार रे, विष देती चरतार रे, नृप जिन-
 र्म आधार रे, सज्जन नेह निवार रे ॥ स० ॥ ८ ॥
 सी हसी देतां रे तालीठ, शय्या कुसुमनी सार रे ॥
 नर अंते माटी थया, लोक चणे घरवार रे ॥
 मता पात्र कुंजार रे, एहदुं जाणी असार रे,
 ओड्यो विषय विकार रे, धन्य तेहनो अवतार रे ॥
 स० ॥ ९ ॥ थावच्चासुत शिव वर्धा, वली एलाची कु-
 मार रे ॥ धिक् धिक् विषया रे जीवने, लइ वैराग्य
 साल रे ॥ मेली मोहजंजाल रे, घर रमे केवल
 ल रे, धन्य करकंडू चूपाल रे ॥ स० ॥ १० ॥ श्री
 पुत्रविजय सुगुरु लही, धर्मरयण धरो ठेक रे ॥
 र वचनरस शैलमी, चाखे चतुर विवेक रे, ॥ न
 मे ते नर जेक रे, धरता धर्मनी टेक रे, जवजल
 रीया अनेक रे ॥ स० ॥ ११ ॥

(१७५)

॥ अष्टम खंड ॥

॥ लावणी संग्रह तथा आरती समूह ॥

॥ आदिनाथनी लावणी ॥

॥ श्री अदिनाथ निरवाणी नमुं ऐसे ध्यानी
ज्वि जीव तरणके काज वणाइ वाणी ॥ ए आंकणी ।
तुम नाजि राय कुलधारी वडे अवतारी, खूल रह
खलकमे खूब केसरकी क्यारी ॥ तुम ममता मनक
मारी आतमा तारी, तज दीनी प्रीत विषयनक
जान कर खारी ॥ तुम करी मुक्ति पट्टरोणी जगतमें
जाणी ॥ ज्वि० ॥ १ ॥ जाण्या सुर नर सुखराशि
हुवा हे उदासी, जल गइ जवर जजाल जगतकी
फांसी ॥ तुम जगतपति अविनाशी मुक्तिके वासी,
शिवमंदिरमां सुख सेज वीठाइ खासी ॥ तुम करी स-
फल जींदगानी मेरे मन मानी ॥ ज्वि० ॥ २ ॥ वडे
ज्योतिवंत जिनराज जगतमे बाजे, तेरो दरिसण हे सु-
खदायी सुधारे काजे ॥ तेरी धून गगनमें गाजे वे सुर-
पति लाजे, गल गया गरव पाखरु कामना जाजे ॥
नाटक नाचे इंद्राणी अधिक धून आणी ॥ ज्वि० ॥

॥ ३ ॥ तेरी महिमा कही न जावे पार नहीं पावे,
गांधर्व सुरपति सब देव तेरे गुण गावे तेरे चरनुमें
द्वपटाइ सरस लय लावे, नर नार हिया के मांहे ज-
गति तेरी च्हावे ॥ तेरी तृष्णा सब विरलाणी सुगति-
कुं ठाणी ॥ ऋवि० ॥ ४ ॥ मरुदेवा कुखका जाया अ-
मर पद पायो, ठप्पन कुमरी नारी माली जस गाया ॥
दुरगतिका दुःख विरलाया सफल करी काया, जन-
शस निरंजन देख शरण तेरे आया ॥ समकितकी
सेज पीठान माली मोहे टाणी ॥ ऋवि० ॥ ५ ॥

॥ अजितनाथनी लावणी ॥

॥ श्री अजितनाथ महाराज, गरीब निवाज, जरूर
जिनवर जी ॥ सेवक शिर नामी तने उच्चारे अरजी
ए आंकणी ॥ १ ॥ कर माफी मारा वांक, रऊलीउ
वांक, अनंता जवमें ॥ आव्यो तुं ताहरे शर्ण, बला
दुःखदवमें ॥ क्रोधादिक धूत्ता चार, खरेखर खार, ल-
या मुज केडे ॥ बली पापी मारो नाथ, ठेक ठंठेडे ॥
प्रा मुजरो मुज जगवान्, करुं गुणगान, ध्यानमां धर-
नी ॥ सेवक ॥ २ ॥ में पूर्ण कर्या ठे पाप, सुणजो
प्राप, कहुं कर जोमी ॥ मुज जुंरामां जगवान्, जूल

नहीं थोमी ॥ जीवहिंसा अपरंपार, करी किरतार, ह
 वे शुं करवु ॥ जूतु बहु बोली नाथ, साचने शुं हर
 ॥ तुज खोलामां मुज शीश, जाण जगदीश, गमे त
 करजी ॥ सेवक ॥ ३ ॥ मे कर्यां बहु कुकर्म, धयं
 नहीं धर्म, पूरण हुं पापी ॥ अवलो अइ तहारी आण
 मेज उत्थापी ॥ मे मूरख निदा घणी, मुनिवर तणी
 करी हरखायो ॥ परदारा देखी लवारु, हुं ललचायो ।
 किंकर कहे केशवलाल, आणीने वहाल, दुःखने हर
 जी ॥ सेवक शिर-नामी, तने उच्चारे अरजी ॥ ४ ॥

॥ शातिनाथनी लावणी ॥

॥ सुण शांति शांति दातार, जगत आधार अचल
 जिनवरजी, अचल जिनवरजी, किंकर शिर नाम
 तने सुणावे अरजी ॥ ए आंकणी ॥ कैवलयद जि
 तुज नाम, सुणी गुणधाम, हरख धरी मनमां, हरख
 धरी मनमां, आव्यो हुं तारे शरण, जमी जववनम
 ॥ क्रोधादिक वैरी चार, दीए बहु मार, पड्या मुज
 केडे, वली अर्जित पुन्य कदंवकने फफेडे ॥ मु
 दुःखवारनो अंत, लावी जगवत, तुम सम करजी ।
 किंकर ॥ १ ॥ मुज अवगुणने जिनराज, माफ, क

आज, कहुं कर जोनी, कहुं कर जोनी, जवकूपथी
 तार कर्मने तोनी ॥ में पूरण कर्या कुकर्म, धर्यो
 नहीं धर्म, मर्त्य जव पामी, मर्त्य जव पामी, वली
 अमर तणे अवतार, थयो बहु कामी ॥ हवे तुज
 विना जिननाथ, जोरुं नहीं हाथ, हरीने हरजी,
 हरीने हरजी ॥ किंकरण ॥ २ ॥ वासव सेवित
 तगवान, करुं गुणगान, दर्श दो जिनजी, दर्श दो
 जिनजी, तुज दरिसणमां जगदीश, मुज मन
 जीनजी ॥ तुम चरणजलजनी सेव, आपजो देव,
 जगत उपगारी, जगत उपगारी, पदपंकज सेवी, तुर्त
 करुं शिवनारी ॥ मांणिक वंदे तुम पाय, विष्णु जिनराय,
 पापचय हरजी, पापचय हरजी, ॥ किंकरण ॥ ३ ॥

॥ विमलनाथनी लावणी ॥

॥ करुं में सेव जिन तेरी, अरज सुण विमलनाथ
 री ॥ टेक ॥ अवर सुर नवि गमे मुजकुं, याचनां
 रत में तुजकुं ॥ रत्नकुं साव जगत सेवे, काचको
 कोण खेवे ॥ मधुकर रहे कमल घेरी ॥ अरजण
 ? ॥ नाथ तुज आण नहीं पाली, पारकी वामा
 हाली ॥ जीव समुदाय घणा मारी, दुःखमें सहां

अति चारी ॥ करी चोगति विचमे फेरी ॥ अरजण
 ॥ २ ॥ करु अब शरण जिन तेरुं, निज मरण काप
 दुःख मेरुं ॥ अचल पद आप हस्त जोरुं, ठेकलो
 नही तुज ठोरु ॥ प्रभु क्युं करते हे देरी ॥ अरजण
 ॥ ३ ॥ जगतगुरु जिनवर जयकारी, नमे तुजकु
 सुर नर नारी ॥ जैनकी सजा गुण गावे, सुनि माणिक
 हर्ष पावे ॥ वारजो दुष्ट कर्म वैरी, अरज सुण
 विमलमाथ मेरी ॥ ४ ॥

॥ उपदेश त्रिपे लावणी ॥

- ॥ चेतन नज ले जिनराज, प्रणत पवि पाणी, (१)
 सब जूठो हे ससार, दुःखकी खाणी ॥ ए आकणी ॥
 धन रमणी नगिनी मात, जनक ने चाता, (१)
 स्वारथीउं सब परिवार, कोइ नहो चाता ॥ जेसो
 चपला ऊवकार, तेसी हे माया, (२) उठ चले
 जायगो जीव, नगी कर काया ॥ आवेगी साथ अघ
 पुन्य, दोष कमाणी, (२) सब ॥ २ ॥ तु जटक्यो
 चोगति मांहि, अनंती वार, (२) बहु पुन्योदयथी
 लीयो, मनुज अवतार ॥ अब ठोरु क्रोध ने मान,
 पापचयकारी, (२) आराधन कर जिनधर्म शर्म

दातारी ॥ जिनवरकी कर ले सेव, जाव मनआणी,
 (१) सब ॥ १ ॥ परनितंविनीशुं प्रीत, कबु नव
 हीजे, (१) अविरत जिन आगम, अमृत रसकुं
 तीजे ॥ कर सुमतिको तुं संग, कुमति निवारी, (१)
 तवजलधि तर ले, क्लिष्ट कर्म विदारी ॥ धर ले
 गणिककी शीख, चित्तमें प्राणी, (१) सब जूठो
 हे संसार, दुःखकी खाणी ॥ सब ॥ ३ ॥

॥ केसरीयाजोनी आवणी ॥

॥ सुनीयो रे वाता सदाशीवजी, मत चढ जाना
 धुलदेवा ॥ गढपति उनका बना हे मंका, मत ठेको
 तुमे उन देवा ॥ सगतारेपत चुरावत बोले, अमही
 नोकर उनहीका ॥ हिंदुपतसें हाथ जोरु कर, तीन
 जवनमे हे टिका ॥ सुनीयो रे ॥ १ ॥ सरग मरत
 पाताल सुनीये, सुर नर मुनिजन धावत हे ॥ इंद्र
 चंद्र मुनि दरशन आवे, मनकी मोजां पावत हे ॥
 सुनीयो रे ॥ २ ॥ गया राज उनहीकुं आपे, निर-
 धनीयाकुं धन देवे ॥ खाजां खीलावे सुंदर लरुका,
 सदा सुखी रहे जे प्रभु सेवे ॥ सुनीयो रे ॥ ३ ॥
 तारे जाऊ समुद्र मांहे, रोग निवारे जवजवका ॥

चूप जुजंगम हरि करी नदीयां, चोरन वंधन अ
 दवका ॥ सुनीयो रे० ॥ ४ ॥ बुं धुं धु धुं धुसा वाजे
 दसो दिशामे हे डंका ॥ जाड तातीया थुं क
 बोले, मत वतलावो गढ बका ॥ सुनीयो रे० ॥ ५ ॥
 राणाजीके उमरावजीका, मानता नहीं वे वातां ।
 थांकी कीधी थहीज पावे में नहीं आवु तुम साथां ।
 सुनीयो रे० ॥ ६ ॥ मुठ मरोडे चढे अजिमाने, जे
 जर्था हे नजरोमे ॥ रिखजदासका साहेव सच्च
 देख तमासा फजरोमे ॥ सुनीयो रे० ॥ ७ ॥

॥ वसत ॥

॥ वसंत पंचमी ने नौतम क्षेत्र, लगन लीयो निर
 धार ललना ॥ सड सोजन मली तोरण आये
 पशुडे मांड्यो पोकार ॥ वसंतर विवाह आदर्यो हं
 ॥ १ ॥ लीला पीला वांस रंगावा, चोरी चितराव
 चार ललना ॥ जावे ते देवता वेद जणे ठे, मंगल
 गावे सखीयां चार ॥ वसंत० ॥ २ ॥ आठ जवर्न
 हु नारी तमारी, श्यो रे अमारो वांक ललना ।
 जवोजवनी हुं दासी तमारी, कालो ठे कामण
 गारो ॥ वसत० ॥ ३ ॥ नेमजी हैयामां कोधे चराणा,

संसारमां नहीं सार ललना ॥ रथ वाली नेम गिर-
नारे चाट्या, रोती रहे राजुल नार ॥ वसंत० ॥ ४ ॥
राजुल चाट्यां संजम लेवा, जइ चड्यां गढ गिरनार
ललना ॥ कर जोमी गौतम पाये लागुं, साचो ठे
दीनदयाल ॥ वसंत० ॥ ५ ॥

॥ होरीओ ॥

(१)

॥ महावीर एसे जिनवंदनकुं, हरि आवत बे कर
जोमी, बे कर जोमी, [१] महावीर एसे प्रभु वंदनकुं
हरि आवत बे कर जोमी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ चौद
सहस ते हस्ती बनाए, पांचसें वार मुखोरी ॥ हरि
हरिण ॥ मुख मुखी अष्ट दंतुशल सोहे, वावकी
हां रे लावा वावकी आठ लहोरी ॥ महावीरण ॥ २ ॥
वाव्य वाव्य बिच अष्ट कमल हे, पांखकी लाख
लहोरी ॥ हरि हरिण ॥ पांखकी खांखकी नाटक रचना वंश-
ली हां रे लावा वंशली वेण ऊकोरी ॥ महावीरण ॥ ३ ॥
कमल कमल बिच इंद्रचुवन हे, आठ जद्रासन जोरी ॥
हरि हरिण ॥ बिचमें सिंहासन इंद्र बिराजे वीर लाखा
वीर नमत कर जोमी ॥ महावीरण ॥ ४ ॥ दिशारणजद्र

देखी हरि रचना, निज अजिमान तज्योरी ॥ हरि हरि ॥
 ॥ रिद्धि ठोरुके चारित्र लीनो, प्रभुके लाला प्रभुके शरणे
 रह्योरी ॥ महावीर ॥ ५ ॥ प्रभुके वचन सुणी आनंद
 पावे, वंदन मुनिपे कयोरी ॥ हरि हरि ॥-विनय धरत
 बहु जक्ति करत हे, हरि निज हारे लाला हरि निज
 स्वर्गे गयोरी ॥ महावीर ॥ ६ ॥

(१)

॥ रग मच्यो जिनद्वार रे, चालो खेलीए होरी ॥
 पासजीके दरवार रे ॥ चालो ॥ फागनके दिन
 चार रे ॥ चालो ॥ ए आंकणी ॥ कनककचोली
 केसर घोली, पूजो विविध प्रकार रे ॥ चालो ॥ १ ॥
 कृष्णागरको धूप घटत हे, परिमल वहेके अपार रे ॥
 चालो ॥ २ ॥ लाल गुलाब अवील उभावत, पासजीके
 दरवार रे ॥ चालो ॥ ३ ॥ जरी पीचकारी गुलालकी
 ठीरको, वामादेवी कुमार रे ॥ चालो ॥ ४ ॥ ताल मृद-
 ग वेण रुफ वाजे, जेरी जुगल रणकार रे ॥ चालो ॥ ५ ॥
 सब सखीयन मीली धुंवार सुनावत, गावत मगल सार
 रे ॥ चालो ॥ ६ ॥ रत्नसागर प्रभु जावना जावे, मुख
 बोले जयकार रे ॥ चालो खेलीए होरी ॥ ७ ॥

(२७४)

(३)

॥ चंद्र प्रभुजीसैं लाल रे, मोरी लागी लगनवा ॥
चंद्र० ॥ लागी लगनवा ठोकी न बूटे, जब लग
पटमें प्राण रे ॥ मोरी० ॥ १ ॥ दान शीयल तप जावना
तावे, जैनधरम प्रतिपाल रे ॥ मोरी० २ ॥ हाथ जोर
कर अरज करत हे, वंदत शैठ खुशाल रे ॥ मोरी ला-
गी लगनवा ॥ ३ ॥

(४)

॥ कीन संग खेलुं होरी रे, मेरो पीयु ब्रह्मचारी ॥
कीन० ॥ समुद्रविजय शिवादेवीको नंदन, पंच महा-
वंत धारी रे ॥ मेरो० ॥ १ ॥ आप चले गिरनारे उपर,
पाठल राजुल नारी रे ॥ मेरो० ॥ २ ॥ सेसावनकी कुंज
गलिनमें, लीनो केवल कर्म निवारी रे ॥ मेरो० ॥ ३ ॥
रुहे नेमि प्रभु नेम राजुल दोण, पाम्यां मुक्ति मोह-
नगारी रे ॥ मेरो० ॥ ४ ॥

(५)

॥ होरी खेलो रे जावक मन थिर करके, होरी
खेलो रे, सुमति सुरंग गुलाब मंगावो, अबीर लमावो
फोरी जर जरके ॥ होरी० ॥ १ ॥ ध्यान ग्यान रुफ-

(१७)

ताल बजावो गुण गावो, प्रभु हित धरके ॥ होरी ॥
॥ १ ॥ अनुभव अत्तर फुलेल मंगावो, वास दिसोदिस
महमहके ॥ होरी ॥ ३ ॥ क्रोध मान रज धूल उमा
वो, ज्यु ते राख्या सबल थरके ॥ होरी ॥ ४ ॥

(६)

॥ सैयां मेने शी कीनी चोरी, शामरेसे कहीउं मो
री, शामरेसे ॥ सब जादव मिल वसंत खेले, खेले
खेलत गिरधर गोरी ॥ हरि हरि लाला खेल ॥ नाने
गुलाल मुठी नर नरके, अवीरकी नरी हे जोरी ॥ सैयां
॥ १ ॥ ससरो हमारो समुद्र विजयजी, सासु शिवादे
वी जोरी ॥ हरि हरि ॥ पीयुजी हमारो नेम नगीनो
ठांडु केसर घन घोरी ॥ सैयां ॥ २ ॥ कहत धरमचद
नेम ने राजुल, सवी करमकु ठोरी ॥ हरि हरि ॥
करम नाश करी शिवगत साधी, आप खीलाइ
दोरी ॥ सैयां ॥ ३ ॥

॥ महुलीओ ॥

(१)

॥ प्रभु मारो जोग करम क्षीण जाणी रे, प्रभु
मारो परणयो सजम राणी रे ॥ प्रभु मारो त्रीश वरस

परवास रे, प्रभु मारो संजम देवा उद्धास रे, ॥ प्रभु
 गमे विहार हेवामां धार्यो रे, प्रभु अमने गमशे नहीं
 निरधार रे ॥ १ ॥ प्रभु तुं तो ज्ञानादिक गुणदरियो रे,
 प्रभु हुं तो निराश्रय रह्यो पकीयो रे ॥ प्रभु मारा मा-
 गो पितानो नहीं जोग रे, प्रभु मारा बंधवनो न करो
 वेयोग रे ॥ २ ॥ प्रभु महारा तुम विना घर सुनां
 की रे, प्रभु माहारा न गमे मोहोव ने मेकी रे, ॥
 प्रभु माहारा तुम आणा वहेतो उद्धास रे, प्रभु मा-
 हारा बंधव विण थयो जगदास रे ॥ ३ ॥ प्रभु मारो
 सोसठ इंडे परवरियो रे प्रभु माहारो सिद्धारथ वन
 चरीयो रे ॥ प्रभु माहारो व्रत उच्चरी एम ज्ञाखे रे,
 बंधव माहारा करशुं विहार उद्धासे रे, ॥ ४ ॥ प्रभु
 माहारो एम कही चाढ्यो तेणी वार रे, प्रभु माहारा
 थिणे आंसुनी धार रे ॥ प्रभु माहारा निज नयरी
 केम जाशुं रे, प्रभु माहारा मुज मन थयो उदास रे ॥
 ॥ प्रभु तुं तो निरागी निचिंत रे, प्रभु माहारा द-
 नथी करजा पवित्र रे ॥ प्रभु तुं तो करुणारसनो कुपो
 , प्रभु मुने एकलमो किम मूको रे ॥ ६ ॥ प्रभु मा-
 हारो मणिउद्योत पेरे दीपे रे, प्रभु माहारो असंख्य

सूरज तेज जीपे रे ॥ प्रभु माहारा वरसीदाने जस
लीधो रे, प्रभु माहारादया पाळी कारज सीधो रे ॥ ७ ॥

(१)

॥ जीरे जिनवर वचन सोहंकरु, जीरे अविचल
शासन वीर रे ॥ गुणवता गिरुआ, वाणी मीठी रे
महावीर तणी ॥ जीरे पर्पदा वार मली तिहां, जीरे
अरथ प्रकाशो गुणगंजीर रे ॥ गुणवंता गौतम, प्रश्न
पूठे रे महावीर आगळे ॥ १ ॥ जीरे निगोदस्वरूप
मुजने कहो, जीरे केम ए जीव विचार रे ॥ गु० ॥ वा०
जीरे मधुर ध्वनिए जगगुरु कहे, जीरे करवा जविव
उपकार रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ २ ॥ जीरे राज चौद लोव
जाणीए, जीरे असख्याता जोजन कोनाकोमी रे ॥ गु०
॥ वा० ॥ जीरे जोजन एक एमांलीजीए, जीरेलीजीए एव
एकनो अश रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जीरे एक निगोद
जीव अनंत ठे, जीरे पुद्गल परमाणुआ अनंत रे ॥ गु०
॥ वा० ॥ जीरे एक प्रदेशे जाणीए, जीरे प्रदेशे वर्ग
णा अनंत रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ४ ॥ जीरे असंख्य गो
ला संख्य ठे, जीरे निगोद असंख्य गोला शेष रे ॥ गु०
॥ वा० ॥ जीरे परमाणुआ प्रत्ये गुण अनंत ठे, जी

(१७७)

वरण गंध रस फरस रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ५ ॥ जीरे
लोक सकलमय इम ज्यो, जीरे कहे गौतम धन्य तुम
ज्ञान रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ जीरे एवा गुरुनी आगल गहुंअली,
जीरे फतेशिखर अमृत शिवनी श्रेणी रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ६ ॥

(३)

॥ सखी सरस्वती जगवती माता रे, कांइ प्रणमीजे
सुखशाता रे ॥ कांइ वचन सुधारस दाता, गुणवंता
सांजलो वीर वाणी रे ॥ कांइ मोक्ष तणी निशाणी
गु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कांइ चोवीशमां जिनरा-
या रे, साथे चौद सहस मुनिराया रे ॥ जेह ना सेवे
नुर नर पाया ॥ गु० ॥ सां० ॥ २ ॥ सखी चतुरंग
फोजा साथ रे, सखी आव्या श्रेणिक नरनाथ रे ॥ प्रजु
पंदीने हुआ सनाथ ॥ गु० ॥ सां० ॥ ३ ॥ बहु सखीउं
अंयुत राणी रे, आवी चेलणा गुणखाणी रे ॥ ए तो
नामंरुलमां जजाणी ॥ गु० ॥ सां ॥ ४ ॥ करे साथीउं
ओहनवेल रे, कांइ प्रजुने वधावे रंग रेल रे ॥ कांइ धो-
ना कर्मना मेल ॥ गु० ॥ सां ॥ ५ ॥ वारे पर्षदा निसुणे
खाणी रे, कांइ अमृतरस सम जाणी रे ॥ कांइ वरवा
भुक्ति पट्टराणी ॥ गु० ॥ सां० ॥ ६ ॥

(१७९)

॥ गावानां गीतो ॥

॥ सात वार ॥

॥ आदिते अरिहंत अम धेर आवा रे, मारा ज्याम
सखुणा नेम दिलमां लोवो रे ॥ १ ॥ सोमे ते शुभ
क्षणगार सजीए अंगे रे, मारा जुगजीवनी साथ रमी
ए रंगे रे, ॥ २ ॥ मंगल शुभ दिन आज मंगल चार
रे, कांइ नव जव केरो स्नेह हुं सजाहं रे ॥ ३ ॥ बुध
धेर आवा नाथ बुद्धिना वलीया रे, प्रभु एक सहस ने
आठ लक्षण जरीआ रे ॥ ४ ॥ गुरु गिरवा गुणवंत
शिवादेवीना रे, कांइ समुद्रविजय कुलचंद नेम नगीना
रे ॥ ५ ॥ शुकर सेहेसावन चालो सजनी रे, मारे समय
थयो प्रजात वीती रजनी रे ॥ ६ ॥ शनिशर संयम
खीध प्रीत वधारी रे, दोनुं पाम्या परमानंद नेम ने
नारी रे ॥ ७ ॥ मुलचद कहे एम आशा फलशे रे
जे निरमल पाले शीयल जवजल तरशे रे ॥ ८ ॥ अमे
नमीए नेमि जिणंद गढ गिरनार रे, राणी राजुल
जुवे वाट साते वार रे ॥ ९ ॥

॥ गरवी ॥

॥ चालो सखीओ मम साथ, निजघर जेइए रे ॥

वल्लोकी आदिनाथ, पावन अक्षरे ॥ १ ॥ मोहन
देवी नंद, जग जयकारी रे ॥ जसु वदन पूनमनो
इ, जाळं बलिहारी रे ॥ २ ॥ कंचनगिरि हरि जिन-
ज, जइ नवरावे रे ॥ करवाने आतम काज, शचि
नरावे रे ॥ ३ ॥ विनिता नगरीनो राय, हरखुं निर-
। रे ॥ पण ठे सत धनुषनी काय, सोवन सरखी रे ॥
४ ॥ हम दिल वसीया ए देव, रंग रसिदा रे ॥
स सुरवर सारे सेव, ठेल ठवीदा रे ॥ ५ ॥ स्वामी
वरमणीना कंथ, कामणगारा रे ॥ सुख आपो सादि
नंत, पूरण प्यारा रे ॥ ६ ॥ प्रभु पूरण पुन्य पसाय,
मे दीतुं रे, आ हरख मनमान माय, लागे मीतुं रे
७ ॥ रमऊम करी जिन गुण रास, रमीए रंगे रे ॥
गवो जिनजी आवास, सखीओ संगे रे ॥ ८ ॥ पूजो
रेहर शिरताज, केसर घोली रे ॥ अंबोफा लक्ष्म
ज, सैयर टोली रे ॥ ९ ॥

॥ गरवो ॥

॥ अनोपम आज रे ओठव ठे महावीर मंदिरे रे ॥
दिलो जोवा जइए हेते हली मली आज ॥ वाला वीर
जु जनम दिवस ठे आजनो रे ॥ अनोपम ॥ १ ॥

साखी त्रिशला कुखे अवतर्यो, महावीरनो अवतार ॥ धन्य
 धन्य दिवस ते घनी, वरत्यो जयजयकार ॥ चाल थाल चर
 चरी मोतीडे वधावती रे, ठप्पन कुमरी सजी सो शण
 गार ॥ उज्जी आरस पारसमणि चोकमां रे ॥ अनोपम
 ॥१॥ साखी जिन मनरंजन पारणुं, होरानो जलकाट ॥ पो
 ढ्या ठे मांहि मणि, पूनम मुख जणाय ॥ चाल हेते हिचोटे
 ठे कचनवरणी दोरीए रे, माता त्रिशला हरख अपा
 ॥ एवो दिवस जग्यो ठे आनंदनो रे ॥ अनोपम ॥ ३ ॥
 साखी मोती तोरण वारणे, दीसे जाकजमाल ॥ इंद्राणी
 आगे नचे, रणऊण श्ठो थाय ॥ चाल टजका करती कोयल
 मधुरा मेणा कंठनी रे, वली वपैया गावंता रुमाराग ।
 एवुं आनंद आनंद वीर पारणु रे ॥ अनोपम ॥ ४ ॥

॥ महावीरस्वामीनु हालरीधु ॥

॥ ठानो मोरा ठव, ठानो मोरा वीर ॥ पठे तमारी
 दोरी ताणुं ॥ महावीर कुंवर जुले पारणीए जुले ॥ टेव
 ॥ हीरना ठे दोर, घूमे ठे मोर ॥ कोयलनी सुर नारी
 ॥ महावीर ॥ १ ॥ इंद्राणी आवे, हालण हुलण लावे
 ॥ वीरने हेते करी हुलरावे ॥ महावीर ॥ २ ॥ सुंदर
 वेहेनी आवे, आचूपण लावे ॥ खाजां रुमां लावे, मो

तीचूर जावे ॥ वीरने हेते करी : जमाडे ॥ महावीर०

॥ ३ ॥ वीर म्होटा थाशे, निशावे जणवा जाशे ॥

एम त्रिशला माता हरखाशे ॥ महावीर० ॥ ४ ॥ नंदि-

वर्धन आवे, राणी रुमी लावे ॥ वीरने हेते करी पर-

णवे ॥ महावीर० ॥ ५ ॥ वीर म्होटा थाशे, जगमां

जावाशे ॥ एम कांतिविजय गुण गाशे ॥ महावीर० ॥ ६ ॥

॥ महावीरस्वामीनुं पारणुं ॥

॥ माता त्रिशला जुलावे पुत्र पारणे, गावे हाळो

हाळो हालरुवानां गीत ॥ सोना रूपा ने वली रत्ने

जनीयुं पारणुं, रेशम दोरी घुघरी वागे तुम तुम रीत ॥

हाळो हाळो हाळो हाळो मारा नंदने ॥ १ ॥ जिनजी

पास प्रजुथी वरस अढीसें अंतरे, होशे चोवीशमो तिर्थ-

कर जिन परिमाण ॥ केशीस्वामी मुखथी एहवी वाणी

नांजली, साची साची हुइ ते मारे अमृत वाण ॥ हाळो०

२ ॥ चौदे स्वप्ने होवे चक्री के जिनराजजी, वीत्या

मारे चक्री नद्दीं हवे चक्रीराज ॥ जिनजी पास प्रजुना

थी केशी गणधार, तेहने वचने जाण्या चोवीशमा

जिनराज ॥ मारी कुखे आव्या त्रण जुवन शिरताज,

मारी कुखे आव्या तरण तारण जिनराज ॥ हुं तो पुन्य-

पनोती इंद्राणी थइ आज ॥ हालो० ॥ ३ ॥ मुजने
 दोहखो उपन्यो वेसु गजश्रंवाकीए, सिहासन पर वेसु
 चामर ठत्र धराथ ॥ ए सहु लक्षण मुजने नंदन तारा
 तेजनां, ते दिनसंचारु ने आनद अंग न माय ॥ हालो०
 ॥ ४ ॥ करतल पगतल लक्षण एक हजार ने आठठे,
 तेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन
 जमणी जंघे लंबन सिंह विराजतो, मे तो पहेले स्वप्ने
 दीठो विशवावीश ॥ हालो० ॥ ५ ॥ नंदन नवला वंधव
 नंदिवर्धनना तमे, नंदन जोजाश्रयोना देवर ठो सुकु-
 माल, ॥ हसशे जोजाश्रयो कही लारुका दीयर माहरा,
 हसशे रमशे ने वली चुटी खणशे गाल ॥ हसशे रमशे
 ने वली ठुसादेशे गाल ॥ हालो० ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेफा
 राजाना चाणेज ठो, नंदन नवली पांचसे मामीना चाणेज
 ठो ॥ नंदन मामलीआना चाणेजा सुकुमाल, हसशे हाथे
 ठठाली कहीने नाना चाणेजा, आंखो आंजीने वली टक्कु
 करशे गाल ॥ हालो० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे
 टोपी आंगलां, रतने जमीयां फुलमो मोती कसवी कोर ॥
 नीलां पीलां ने वली रातां सरवे जातनां, पहेरावशे मामी
 मारा नंद किशोर ॥ हालो० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुख-

रुली बहु लावशे, नंदन गजवे जरशे लाकु मोतीचूर ॥
 नंदन मुखमा जोइने वेशे मामी जामणां, नंदन मामी
 कहेशे जीवो सुख जरपूर ॥ हालो० ॥ ९ ॥ नंदन नवला चे-
 मा मामानी साते सती, मारी जत्रीजी ने वेन तमारी नंद
 ॥ ते पण गुंजे जरवा लाखणसाइ लावशे, तुमने जोइ
 जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हालो० ॥ १० ॥ रमवा
 काजे लावशे लाख टकानो घुघरो, वली सूमा मेना
 पोपट ने गजराज ॥ सारस हंस कोयल तीत्तर ने वली
 मोरजी, मामी लावशे रमवा नंद तमारे काज ॥ हालो०
 ॥ ११ ॥ हृप्पन कुमरी अमरी जलकलशे नवरावीआ,
 नंदन तमने अमने केलीघरनी मांहे ॥ फुलनी वृष्टि
 कीधी योजन एकने मांरुले, बहु चिरं जीवो आशीष दीधी
 तुमने त्यांह ॥ हालो० ॥ १२ ॥ तमने मेरुगिरि पर सुर-
 प्रतिए नवरावीआ, निरखी निरखी हरखी सुकृत लाज
 क्रमाथ ॥ मुखमा उपर वारु कोटी कोटी चंद्रमा, वली
 नन पर वारु गोरी गुणसमुदाय ॥ हालो० ॥ १३ ॥ नं-
 दन नवला जणवा निशाळे पण मूकशुं, गज परे अंबा-
 नी बेसानी मोटे साज ॥ पसली जरशुं श्रीफल फोफल
 भागरवेलशुं, सुखरुली वेशुं निशाळीआने काज ॥ हालो०

(१५)

॥ १४ ॥ नंदन नंवलं मोटा थाशो ने परणावशुं , बहु
वर सरखी जोमी लाव शु राजकुमार ॥ सरखां वेवाइ
वेवाणो पधरावशु, वर बहु पोखी लेशु जोइ जोइने दे-
दार ॥ हालो ॥ १५ ॥ सासरुं पीयर मारां वेहु पख नं-
दन उजला, मारी कुखे आव्या तात पनोता नंद ॥ मा-
हारे आंगण बुढ्या अमृत दुधे मेहुला, माहारे आंग-
ण फलीया सुरतरु सुखना कंद ॥ हालो ॥ १६ ॥ ए-
णी परे गायुं माता त्रिशला सुतनु पारणुं, जे कोइ गाशे लेशे
पुत्र तणा सामाज ॥ बीलीमोरा नगरे वरण्यु वीरनुं हालरु,
जय जय मंगल होजो दीपविजय कविराज ॥ हालो ॥ १७ ॥

॥ आरतीओ ॥

(१)

॥ अप्सरा करती आरती जिन आगे, हारे जिन आगे
रे जिन आगे ॥ हारे ए तो अविचल सुखमां मागे, हारे
नानिनंदन पास ॥ अप्सरा करती आरती जिन आगे ॥
१ ॥ तायेइ नाटक नाचती पाय ठमके, हारे दोय चरणे
जांजर कमके ॥ हारे सोवन घुघरमी घमके, हारे लेती फु
दमी बाल ॥ अप्सरा ॥ १ ॥ ताल मृदंग नेवांसली रुफ वे-
णा, हारे रुमा गावंती स्वर फीणा ॥ हारे मधुर सुरासुर नय-
णां हारे जोती मुखरु नीहाल ॥ अप्सरा ॥ २ ॥ धन्य म-

(१६)

रुदेवा माताने प्रभु जाया, हारि तोरी कंचनवरणी काया
॥ हारि में तो पूरव पुन्ये पाया, हारि देख्यो तोरो देदार
॥ अप्सरा० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन परमेश्वर प्रभु प्यारो, हारि
प्रभु सेवक हुं तु तारो ॥ हारि जवोजवनां दुःखमां वा-
रो, हारि तुमे दीनदयाल ॥ अप्सरा० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी
आपणो चित्त धरजो, हारि मोरी आपदा सघली हरजो
॥ हारि मुनी माणैक सुखीओ करजो, हारि जाणी पो-
तानो बाल ॥ अप्सरा० ॥ ६ ॥

(१)

॥ जे जे आरती आदि जिणंदा, नाजिराया मरुदे-
वीको नंदा ॥ जे जे आरती० ॥ १ ॥ पहली आरती
गुजा कीजे, नरजव पामीने लाहो लीजे ॥ जे जे आर-
ती० ॥ २ ॥ दुसरी आरती दीनदयाला, धुखेव मंजन
प्रभु जग अजवाढ्या ॥ जे जे आरती० ॥ ३ ॥ तीसरी
आरती त्रिभुवन देवा, सुर नर इंद्र करे तोरी सेवा ॥
जे जे आरती० ॥ ४ ॥ चोथी आरती चउगति चूरे, म-
वांठित फल शिवसुख पूरे ॥ जे जे आरती० ॥ ५ ॥
चिमी आरती पुन्य उपाया, मूलचंद रिषज गुण गा-
या ॥ जे जे आरती० ॥ ६ ॥

॥ महावीरस्वामीनी आरती

॥ जय देव जय देव, जय सुखना स्वामी ॥ (प्रक्षु०)

तुजने वद न करीए, (१) नव नवना नामी ॥ जय देव०

॥ १ ॥ सिद्धारथना सुत, त्रिशलाना जाया (प्रक्षु०)

जसोदाना ठो कंथजी, (१) त्रिभुवन जगराया ॥ जय

देव० ॥ २ ॥ बालपणामां आप, गया रमवा काजे ॥

(प्रक्षु०) देवताए दीधो पकठायो, (१) वीवराववा का-

जे ॥ जय देव० ॥ ३ ॥ एक वारनुं रूप, लीधुं ठे नाग-

नुं (प्रक्षु०) बीजी वारनु रूप, (१) लीधु बालकनुं ॥

जय देव० ॥ ४ ॥ बालक बीना सज, पोते नथी बीता

(प्रक्षु०) देवतानुं कांइ न चाड्युं, (१) हारी जता रहेता

॥ देव० ॥ ५ ॥ एवा ठे जगवान्, महावीर तमे जाणो

॥ (प्रक्षु०) वंदे ठे सज तेने, (१) नमे राय राणो ॥

जय देव० ॥ ६ ॥

॥ शांतिनाथनी आरती ॥

॥ जय जय आरती शांति तुमारी, तोरां चरण कमल

की जाउं बलिहारी ॥ जय० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचि-

राजीको नंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ जय० ॥ २ ॥

घाडीश धनुष सोवनमय काया, मृगलंठन प्रक्षु चरण

(१९८)

सुहाया ॥ जय० ॥ ३ ॥ चक्रवर्ती प्रभु पांचमा सोहे,
सोलमा जिनवर जग सहु मोहे ॥ जय० ४ ॥ मंगल
आरती तोरी कीजे, जन्म जन्मनो लाहो लीजे ॥ जय०
॥ ५ ॥ कर जोफी सेवक गुण गावे, सो नर नारी अमर
पद पावे ॥ जय० ॥ ६ ॥

॥ मंगल दीवो ॥

॥ दीवो रे दीवो मंगलिक दीवो, आरती उतारक
बहु चिरंजीवो ॥ दीवो० ॥ १ ॥ सोहमने घर पर्व दि-
वाली, अंबर खेले अबला बाली ॥ दीवो० ॥ २ ॥ दे-
पाल ऋणे श्रेणे घेर अजुआली, जावे जगते विघ्न नि-
वारी ॥ दीवो० ॥ ३ ॥ देपाल ऋणे श्रेणे आ कलिका-
ले, आरती उतारी राजा कुमारपाले ॥ दीवो० ॥ ४ ॥
अम घर मंगलिक तम घर मंगलिक, मंगलिक चतु-
र्विध संघ घर होजो ॥ दीवो रे दीवो० ॥ ५ ॥

॥ अथ मंगल चार ॥

॥ चारो मंगल चार, आज महारे चारो मंगल चार
॥ देख्यो दरस सरस जिनजीको, शोभा सुंदर सार ॥ आ-
ज० ॥ १ ॥ ठिनुं ठिनुं ठिनुं मनमोहन चरचो, घसी

(१९९)

केशर घनसार ॥ आज० ॥ १ ॥ विविध जातिके पुष्प
मंगावो, मोघर लाल गुलाब ॥ आज० ॥ ३ ॥ धूप उखे-
वो ने करो आरती, मुख बोलो जयकार ॥ आज० ॥
४ ॥ हर्ष धरी आदीश्वर पूजो, चौमुख प्रतिमा चार
॥ आज० ॥ ५ ॥ हैये धरी जाव जावना जावो, जिम
पामो जवपार ॥ आज० ॥ ६ ॥ सकलचंद्र सेवक जिनजीको
आनंदघन उपगार ॥ आज महारे चारो मंगलचार ॥ ७ ॥



॥ नवम खंड ॥

॥ नाटकना रागनां गायनो ॥

॥ गायन १ लुं ॥

॥ नाथ केसे गजको बंध छोडायो—ए राग ॥

॥ प्रेमे प्रार्थना करीए, रिखव प्रभु प्रेमे प्रार्थना करीए ॥ टेक ॥ सरवव्यापक तुज चैतन शक्ति, वर्णन शुं तेनुं करीए शुद्ध हृदयथी जो रे आराधीए, तो नवसागर तरीए ॥ रि० ॥ १ ॥ रचना यथायोग्य आरे जगतनी, तुज दरिशनथी ठरीए ॥ अटप स्वीकारो अर्ज प्रभु तमे, काव्य कथन शुं करीए ॥ रि० ॥ २ ॥ अकल गति परापार पितु तारी, वाणीथी शुं रे विस्तरीए ॥ प्रथम पति पृथ्वीना थया तमे, महिमा तारो उर धरीए ॥ रि० ॥ ३ ॥ मरुदेवी जाया पाया श्री केवल, मूर्ति तमारीने वरीए ॥ कमलाना स्वामी कर करुणा तुं, सेवकने न विसरीए ॥ रि० ॥ ४ ॥ नाञ्जिनंद कुमार जखे तमे, जनम्या विनीता नगरीए ॥ चरणकमलनो सेवक तारो, गाय स्तवन लली लली ए ॥ रि० ॥ ५ ॥

॥ गायन २ जुं ॥

॥ वंदन करीए प्रथम प्रभुने ॥ आदिनाथ तुं सुख-

कर साहेब, तरण तारण स्वजाव ॥ दुःख हरवा, ज
 तरवा, देजो ज्ञान नाव रे ॥ वंदन० ॥ टेक ॥ मरुदेव
 को हे नंद, नाजिराय कुलचंद ॥ गुण तुज कल्पवृंद
 गावे इंद्र सूर्य चंद्र, आपे परम आनंद ॥ एक चित्तय
 ध्यान धरंतां, मोक्षसुख पावंता ॥ दुःख० ॥ १ ॥ तुंही तुं
 ही परमेश, तुंही तुंही दानेश, ॥ तुंही तुंही ज्ञानेश
 तुंही सकल तत्त्वेश, तुंही विमलाचलेश ॥ गावे मांगरो
 जैन मंरुली, संगीत साध्य करंतां ॥ दुःख० ॥ २ ॥

॥ गायन ३ जु ॥

॥ एवी रे रभा जाणी जावा केम दडए-ए राग ॥

॥ आदीश्वर स्वामी, बाल नमे शीर नामी ॥ अंतर
 जामी अविचल नामी, दरिशन तुजनां करीए ॥ तु
 स्वामीनां दरिशन करतां, सर्वे दुःखमां हरीए रे ॥ अ
 दीश्वर स्वामी, बाल नमे शीर नामी ॥ १ ॥ एक अ
 शरो अंतरजामी, आप तणो आधार ॥ कृपा दृष्टिए अ
 प नीहालो, नहीं तो नीराधार रे ॥ आदीश्वर स्वाम
 बाल नमे शीर नामी ॥ २ ॥ केशर चंदन पुष्प केतक
 जाइ जुइ तो सारी ॥ एवी रीते पूजा करतां, जव
 पीमा हारी रे ॥ आदीश्वर स्वामी, बाल नमे शी

।मी ॥ ३ ॥ कूरुकपटमां घणांज कुकृत्यो, कीर्घां में
।री ॥ अनंत चवमां रऊली रऊली, आव्यो शरण त-
।री रे ॥ आदीश्वर स्वामी, बाल नमे शीर नामी ॥

॥ जो कोइ जैनी बंधु प्रचुनी, जावे पूजा करशे ॥
न बालको उद्धासथी कहे, चवसागर तो तरशे रे
आदीश्वर स्वामी, बाल नमे शीर नामी ॥ ५ ॥

॥ गायन ४ थुं ॥

॥ नमुं पदे गिरिजापतिने—ए राग ॥

॥ नमुं पदे प्रचु सुमतीने ॥ शशी सम शोत्रे ठे मु-
सांरुं, एकज शरण तमारुं ॥ प्रेम धरी दयानिधि
गपो कुमतिने ॥ नमुं ॥ १ ॥ मेघरायना नंद, टालो
वोचव फंद, मति मारी ठे मंद, ठोजी आनंद कंद,
गोमो कर्मना बंध ॥ नृत्यकला करी जैन बालको, नमे
सेवक संगे ॥ प्रेम ॥ नमुं ॥ २ ॥

॥ गायन ५ थुं ॥

॥ श्री सोहंकरा, प्रचु पार्श्व जिनवरा ॥ जैन बाल-
गोनी, विनति सुणो जरा ॥ टेक ॥ अश्वसेन वामाजी-
गो नंदन, वणारसी वासी ॥ प्रजावती पीयु पास कुंव-
जी, आप ठो अविनाशी ॥ श्री ॥ १ ॥ कमठ कोप-

श्री नाग युगलने, उगार्या अटवी ॥ श्री नवकार सुन
ये पाया, धरणेन्द्र पदवी ॥ श्री० ॥ १ ॥ तेम प्रभु नि
ज हस्त ग्रहीने, उतारो जवपार ॥ “जैन” वाल से
कनी संगे, वंदे वारवार ॥ श्री० ॥ ३ ॥ संवत् श्रोगण
पीस्तालीश वर्षे, सुंदर श्रावण मास ॥ कृष्ण चतुर्दशी
रविवारे, उपन्यो आ उद्घास ॥ श्री० ॥ ४ ॥

॥ गायन ६ हु ॥

॥ जयके कलदर वन उन फीरके-ए राह ॥

॥ पार्श्व प्रभुजी अर्ज करुं तुं, हर्निश सेवा आपोने
जक्तवत्सल जगवंत जिनेश्वर, जवजल पार उतारोने
प्रभु तमे न तारो तो हवे कोनो ठे आधार ॥ (१
कृपादृष्टि करोने, कृपालु आ वार ॥ स्वामी हवे तो करं
सेवकनी सार (प्रभु०) पार्श्व० ॥ १ ॥ जिन जाया ठो वाम
ना तमे, अश्वसेन सुत ॥ (२) शाने माटे स्वामीजी, क
ठो हवे धूत ॥ (२) सर्वेनी मनोकामना, करो फल
जूत ॥ (जिन०) पार्श्व ॥ २ ॥

॥ गायन ७ मु ॥

॥ अहो ईश जिन तु सदा दिलदार, अनंता डु रु
जवजांधी उगार ॥ अति हितकारी सदा सुखकार, सुख

शेवपुरमां जवा मुज तार ॥ अहो ईश० ॥ १ ॥ प्रभु
वकोने तमे तारनार, अहो देव हुं तो नमुं वारंवार
चवो लख चोराशी चम्यो दुःख सार, पूरव पुन्ये
म्यो हुं तारो देदार ॥ सत्ता जैन वंदे तने क्रोम वार,
मे चक्त दोलत तरे चवपार ॥ अहो ईश० ॥ २ ॥

॥ गायन ८ मुं ॥

॥ जोवनना रंगमां बुले-ए राग ॥

॥ आ अरजी अर जिनवरजी ॥ (१) अम तारो
रीव निवाज, विरुद तुज राज ॥ सहायता करजी ॥
प्रा अरजी अर० ॥ १ ॥ चार गतिमां लाख चोराशी,
गोनि दुःखनी खाण ॥ काल अनादि चव अटवीमां,
मण कर्युं जगवान ॥ सहायता करजी ॥ आ अरजी
प्रर० ॥ २ ॥ काम क्रोध मद मोह मानथी, ठोकावो
गनाथ ॥ पामर प्राणी करुं प्रार्थना, अहो सेवकनो
गथ ॥ सहायता करजी ॥ आ अरजी अर० ॥ ३ ॥
प्रनंतबली पण अवल थयो हुं, कर्मवशे किरतार ॥ कहे
ओकरसिंह मंगल मागुं, प्रभु तुज पद आधार ॥ सहा-
ता करजी ॥ आ अरजी अर० ॥ ४ ॥

(३७५)

॥ गायन ९ म्रुं ॥

॥ कयसें पाउ में पतीआ मोहनकी-ए राग ॥

॥ सखी सामली सुरतीआं मोहननी ॥ (वे वार) ने
प्रभु मम नाथ नगीना, प्यारी सुरतीआं ॥ १ ॥

॥ साखी ॥

॥ कामणगारा कंथजी, अधवच आपी ठेह ॥ द्व
आवी पोठा गया, पशु पर धारी नेह ॥ राजीमती सख
इयाम सबुणा, आश रही जोवननी ॥ सखी० ॥ २ ॥

॥ साखी ॥

॥ शीयलवत वनमां गया, जीती कामविकार ॥ सुंद
शिवरमणी वर्या, पंच महाव्रत धार ॥ राजीमती प
प्रीत न ठोऊं, तोरु माया त्रिभुवननी ॥ सखी० ॥ ३ ॥

॥ साखी ॥

॥ सुख आनंद अनंतता, स्वसंपत सम जाव ॥ मंग
ख टोकरसिंह कहे, साधनता शुभ दाव ॥ नरत्रव साध
अवाधी थया प्रभु, वारी सुरतीआं मोहननी ॥ सखी० ॥ ४ ॥

॥ गायन १० म्रुं ॥

॥ पूनम चादनी खीली पूनम अही रे-ए राग ॥

॥ श्रीजिन वीर प्रभु परमात्मा रे, बहाला राण

प्रशोदाना कंथ ॥ रसिया वसीया सैयर अम अंतरे
रे ॥ सजनी रजनी सुंदर शी आजनी रे, शोत्रे आंगी
अनोपम ठाठ ॥ रसिया० ॥ २ ॥

॥ साखी ॥

॥ मुगट रत्न हीरे जड्या, कर्ण कुंकुल उर हार ॥
मणि दाद मोती तणां, विविधाजर्ण अपार ॥ जिननी
मुखमुद्रा पर वारुं कोटि चंद्रमा रे, जगमग ज्योत
ऊलकती दिनकरवत् उजाश ॥ सजनी० ॥ १ ॥

॥ साखी ॥

॥ मढी सुंदर बहु मानुनी, सजी सोढ शणगार ॥
कर कंचन चुकी चमक, चंद्रवदनी सुकुमाल ॥ आरस
जम्बिज रंगमंरुप रत्नीआमणा रे, हेने रमती गमतां
गाती जिन गुणगान ॥ सजनी० ॥ ३ ॥

॥ साखी ॥

॥ ऊंऊरना ऊणकारथी, फुद फरे सखी साथ ॥ द-
त्तना थइ थइ थनक करे, ताली दे सखी हाथ ॥
तौतम रचना न्यादी नर नारी टोले मढ्यां रे, जविजन
इरखे निरखी जैनधर्म जयकार ॥ सजनी० ॥ ४ ॥

॥ साखी ॥

॥ जय जयत्रिशला नंद तुं, सुर नर नामे शीश ॥

मंगल टोकरसिंह कहे, अंतरजामी ईश ॥ श्रीजिन वीर
प्रभु परमात्मा रे, वहोला राणी यशोदाना कंथ ॥ र
सिया वसीया सैयर अम अंतरे रे ॥ ५ ॥

॥ गायन ११ मु ॥

॥ विनति धरजो न्यान, सज्जन सहु-ए राग ॥

॥ सांज समे जिन वदो नविजन, सांज समे जिन
चंदो ॥ मेटत नवटु ख फदो नविजन, सांज समे जिन
चंदो ॥ प्रथम तीर्थकर श्रीआदि जिनेश्वर, समरत हो
त आनंदो ॥ न० ॥ सां० ॥ १ ॥ लेकर दीपक आगे-
ही वामं, जरत पापको फदो ॥ न० ॥ सां० ॥ २ ॥ प
आसन करी ध्यान लगावुं, खेवत धूप सुगधो ॥ न० ॥
सां० ॥ ३ ॥ रत्नजमीत करुं रे आरती, वोजत ताल
मृदंगो ॥ न० ॥ सां० ॥ ४ ॥ कहे जिनदास समऊ जीया
अपनो, बूटत पाप निकदो ॥ न० ॥ सां० ॥ ५ ॥

॥ गायन १२ मु ॥

॥ गोपीचंद लडका वादळ वरमे कचन महेलमें-ए राग ॥

॥ जिन राजा ताजा मड्लि विराजे जोयणी गाम
में ॥ टेक ॥ देश देशके जात्रु आवे, पूजा सरस रच
वे ॥ मड्लि जिनेश्वर नाम सिमरके, मनवांठित फल

शिवेजी ॥ जि० ॥ १ ॥ चातुर वरणके नर नारी मील,
मंगल गीत करावे ॥ जयजयकार पंच ध्वनि वाजे, शिर
पर ठत्र फिरावेजी ॥ जि० ॥ २ ॥ हिंसक जन हिंसा
तजी पूजे, चरणे शीश नमावे ॥ तुं ब्रह्मा तुं हरि शिव
शंकर, अवर देव नहीं जावेजी ॥ जि० ॥ ३ ॥ करुणा-
रस जर नयन कचोले, अमृत रस वरसावे ॥ वदन चंद
वकोर ज्युं निरखी, तन मन अति लज्जासावेजी ॥ जि०
॥ ४ ॥ आतमराजा त्रिभुवन ताजा, चिदानंद मन
तावे ॥ महि जिनेश्वर मनहर स्वामी, तेरा दरस
सुहावेजी ॥ जि० ॥ ५ ॥

॥ गायन १३ मुं ॥

॥ श्री श्री शांतिनाथ, जोडुं हुं वे हाथ—ए राग ॥

॥ जय जिनेश्वरा तुंज ईश्वरा, हमेशना कलेशने
नेवारकेश्वरा ॥ जय मंगल वर्ते तुज नामे, जपतां पाति-
क जाय ॥ मंगलकारी मूर्ति तारी, दीठे डुरित पलाय
॥ जय० ॥ १ ॥ आदि रूप परमेष्ठी मानुं, औंकारे
आदेय ॥ शिवपद दाता योगीने तुं, एक ध्यानथी ध्येय
॥ जय० ॥ २ ॥ सर्व कार्यमां विघन निवारे, दे शांति
श्रीकार ॥ अक्षय ज्ञान मांगरोल संगीत मंरुलीने
वेस्तार ॥ जय० ॥ ३ ॥

॥ गायन १४ मु ॥

॥ विमलाचल वासी मारा बाला, सेवकने विसारो
 नहीं ॥ जल विना मीन दुःख अति पामे, जिणद आ-
 प जाणो सही ॥ दुःख हग्नारा जविजन प्यारा, शरणे
 तु महाराज ॥ चार चोर मुज केडे पकीया, पुन्य रत्नने
 काज ॥ प्रभुजी पुन्य रत्नने काज (३) सेवकने०
 ॥ १ ॥ पापी चंफालो पकनी मुज, माल हरी
 लेनार ॥ प्रभुजी जो मुज वारे आवो, तो तुं उगरनार
 ॥ प्रभुजी तो तु उगरनार ॥ (३) सेवकने० ॥ २ ॥
 जन्म मरणनां दुःख वेढ्या बहु, तोए न आव्यो पार ॥
 ते दुःखने छूर करवा कारण, (२) आव्यो तुज दरवार
 ॥ प्रभुजी आव्यो तुज दरवार ॥ (३) सेवकने० ॥ ३ ॥
 अरजी उर धारी नेह नजर करी, सेवकनी करो सार ॥
 कृपा तणा ए सिधु तम विण, कोण उतारे पार ॥ प्रभुज
 कोण उतारे पार ॥ (३) सेवकने० ॥ ४ ॥ जवजयज
 जन नाथ निरंजन, करो कठण करमनो नाश ॥ पदप
 कज ठे प्रोण मधुकर, (२) पूरो मननी आश ॥ प्रभुज
 पूरो मननी आश ॥ (३) सेवकने० ॥ ५ ॥

॥ गायन १५ मुं ॥

॥ चलती—डांडीयारसमुं गायन ॥

॥ जुठे जुठुं जावित खरुं जाण मां रे ॥ खरुं जाण
मां रे, ॥ साचुं जाण मां रे ॥ जुठे जुठुं ॥ टेक ॥ १ ॥
जुठो जनुनी जुठी जाया, जुठी मोह जरेली माया ॥
हाच कुंपा ठे काया, ममता माण मां रे ॥ जुठे जुठुं
॥ २ ॥ गगने जाभ्यो वादल गोटो, पाणीमां प्रगळ्यो प-
पोटो ॥ खेळ बधो एम खोटो, मूरखा माण मां रे ॥
जुठे जुठुं ॥ ३ ॥ फेल करीने फोगट जटक्यो, प्रचुने
गरणे नव अटक्या ॥ जेद विना तुं जटक्यां, चारे
घाणमां रे ॥ जुठे जुठुं ॥ ४ ॥

॥ गायन १६ मुं ॥

॥ सखीओ निज निज नीतिधरम सदा संभाळीए रे—ए राग ॥
॥ सज्जनो परमात्म जिन प्रचुने पाये लागीए रे ॥
हाचो जगदीश्वर जविजननो तारणहार, तेनी निते प्रीते
वक्ति करवी जावशुं रे ॥ अपें अविचल शिवसुख प-
म धरम दातार, एवा जैन प्रचुनां दरिशन मुखशी
लागीये रे ॥ टेक ॥ १ ॥

॥ साखी ॥

॥ पाय नमो जिनरायने, आत्म कार्य सिधाय ॥

अथ दुःखसहु दूरे टले, मंगलकारी थाय ॥ जावु जिना-
खय शुद्ध वस्त्रोथी सर्वने रे, जेथी नाथ निरंजन प्र
जुना गुण गवाय ॥ एवा० ॥ २ ॥

॥ साखी ॥

॥ जम्या जवादि चक्रमां, तोयन पाम्या पार ॥ माटे
जविजन जव तरो, धरम करी आ वार ॥ जैन शास
नना सिद्धांतो साचा जाणीए रे, जेमां जक्ति जुक्ति
मुक्तनो शुज सार ॥ एवा० ॥ ३ ॥

॥ साखी ॥

॥ अमूढ्य हीरो हाथमां, ठे जिन तेज अपार ॥ माटे
श्री महावीर जजो, थाय सफल अवतार ॥ एथी उत्तम
गीत आ सज्जनोने सज्जलावीए रे, शीख सहु शुज
जाणी अंतर राखो नर नार ॥ एवा० ॥ ४ ॥

॥ गायन १७ ॥

॥ बाहाला वेगे आवो रे-ए राग ॥

॥ सिद्धाचल गावु रे, मोतीडे वधावु रे ॥ दादा,
सुणो विनति होजी ॥ प्रजु मारां जवोचवना दुःख
वार ॥ दादा० ॥ १ ॥

॥ साखी ॥

॥ प्रथम पति पृथ्वी तणा, पेला जिणंद मुण्डि ॥

योगीन्द्र श्री आदीश्वरु, मारुदेवी माता नंद ॥ हुं तो
 गिरिवरना गुण गाउं रे ॥ दादा० ॥ १ ॥ जो प्रीत पालो
 पूर्वनी, सन्मुख चालो आप ॥ पापी अधमने उद्धरो,
 प्रतिपालनी ए ठाप ॥ दयानिधि दिलमां हुं लावुं रे ॥
 दादा० ॥ २ ॥ कुरकट मटी राजा श्रयो, जे सूरजकुंडे
 चंद ॥ नगिनीजोगी उद्धर्यो, जे चंद्रशेखर नरिंद्र ॥
 हुं तो मोहथी जंग मचावुं रे ॥ दादा० ॥ ३ ॥ ए ठाम
 सिद्ध अनंतनो, ठे शाश्वतो गिरिराज ॥ सिद्धि वर्या
 पांरुव प्रमुख, ए मुक्तिमंदिरपाज ॥ प्रभु तारुं ध्यान
 लगावुं रे ॥ दादा ॥ ४ ॥ तारो प्रभु जो मुजने, तो गणुं
 जगदाधार ॥ नथी खजाने कांड खोट, तारे तारीयां नर
 नार ॥ रुकी तारी आंगीओ रचावुं रे ॥ दादा० ॥ ५ ॥
 त्रिभुवन विषे नहीं तीर्थ, बीजुं कहे वीर जिणंद ॥
 गिरिराजनां गुणगान गावे, सेवक सांकलचंद ॥ हुं तो
 आवागमन पावुं रे ॥ दादा० ॥ ६ ॥

॥ गायन-१८ मुं

॥ बोलो मारा प्रेमी पोपटजी बोल बोलो-ए राग

॥ चालो प्यारा चेतन सिद्धाचल चालो, चालो चालो
 कृषज जिन वंदो ॥ वहालो मारुदेवी माताजीनो बालो

चालो चालो पाप निकंदो ॥ प्रभु तारां दर्शनथी वदि
हारी, धारी धारी वदन जोळं धारी ॥ मूर्ति तारी शां
सुधारस क्यारी, न्यारी न्यारी अकल गति न्यारी ॥

॥ आंतरो ॥

॥ प्यारा प्रभुजी निशिदिन हुं संचारुं, ध्यान ध
गिरिराजजीनुं सारुं ॥ प्रथम जिणंद मुख पूनमचंद
॥ चालो० (१) चेतनजी तीरथपति नित्य ध्यावो, गि
रिवर जेटीने द्यो जवढ्हावो ॥ सोनंदा स्वामीनी ठव
सुखकारी ॥ धारी० (२) जैन सजा लघु सांकलचदे
रूपज जिणंद गुण गाया आनंदे ॥ प्रभुना पसायर्थ
न रहे जवफंदा ॥ चालो० (२)

॥ गायन १९ सु ॥

॥ तु तो नाम समर ले सीता मतीपति-ए राग ॥

॥ वाला वासुपूज्य जिनराज, वालने तारजो रे ॥ त्रि
भुवनस्वामी अंतरजामी, आतमरामी अविचलधामी ।
दीनबंधु दीनवत्सल दुःख निवारजो रे ॥ वाला० ॥ १ ।

॥ साखी ॥

॥ लख चोराशी योनिमां, जटक्यो वारंवार ॥ चा
५. गतिना चोकमां, वेचाणो निरधार ॥ ठेदन जेदन तान्त

तर्जन वारजो रे ॥ वाला० ॥ २ ॥ जजव्या जवमरुप
विषे, नाटक नव नव रंग ॥ थाक्यो विध विध वेष-
श्री, शो सुख हवे अचंग ॥ श्री मुखे सांकलचंदने क-
दि संचारजो रे ॥ वाला० ॥ ३ ॥

॥ गायन २० मुं ॥

॥ मनमंदिर आवो रे, कहं एक वातलडी-ए राग ॥

॥ सुणो सुव्रतस्वामीरे, अरज हुं उच्चरं ॥ जवसिंधु
उतारो रे, सदा तुज ध्यान धरं ॥

॥ साखी ॥

॥ हुं पामर तुं महा प्रजु, समरथ जगदाधार ॥ तुज
आणा नव शिर धरी, ए वांक अपार ॥ तरताने तारी रे,
शी शावाशी धरो ॥ पण कुवतो तारो रे, तारक नाम
खरो ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जवसागरमां माहरं, चढ्युं वहाण
चकमोल ॥ महा निर्यामक तुं मढ्यो, नडे न अघ
वंटोल ॥ मम सन्मुख जालो रे, सुखीयो थाउं सदा ॥
जव फेरी न फरीए रे, सांकलचंद कदा ॥ सुणो० ॥ २ ॥

गायन २१ मुं ॥

॥ मने सहाय करशे मोरारी रे-ए राग ॥

॥ जटुनाथ ठो उपगागी रे, नेम पाठा वल्लोने ॥ एक

वारी नेह निवारी, राणीने विसारी ॥ पशुमानो पोकार
 उर धारी ॥ जटुनाथ ठो ॥ १ ॥ अष्ट जवांतरनी हुं हुं
 नारी, नवमे जव नमूको कुंवारी जो ॥ न करमेलाप की-
 धो, तो प्रभु द्वेजो उद्धारी जटुनाथ ठो ॥ २ ॥

॥ गायन २२ मु ॥

॥ आवो सखी आवो, माने मोतीडे वधावो—ए राग ॥

॥ गावो जवि गावो, महावीर गुण गावो ॥ (१) वीर
 गुण गावो, महावीर गुणगावो ॥ गावो ॥ (१) चिरमल
 टाली प्रभु अग पखाली, केशर चंदन घन घसी प्रभु
 ध्यावो ॥ गावो ॥ २ ॥ आतम गध अनादिनी
 टाली, मालती मोयर शुभ पुष्प चढावो ॥ गावो
 ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारी न्नात्रपूजा करी जावना जावी शु-
 भ आंगी रचावो ॥ गावो ॥ ३ ॥ जक्ति स्तुति शास-
 नपतिनी करी, ज्ञान ध्यान एकतान लगावो ॥ गावो ॥
 ॥ ४ ॥ श्रेष्ठ श्रेष्ठ नृत्य करी कल नैवेद धरी, थाल जरी
 जरी मोतीडे वधावो ॥ गावो ॥ ५ ॥ साकलचद महा
 वीर संकली, आवागमन नमनश्री न पावो ॥ गावो ॥ ६ ॥

॥ गायन २३ मु ॥

॥ मुदर शामलिषा, नाम जपीश नित्य नाम—ए राग ॥

॥ महावीर जिन मलीया, शामनपति शणगारा ।

नाठां जवदलियां, प्रगट्या पुण्य प्रचारा ॥ महावीर जि-
न मलीया ॥ चंद्र चकोर मोर जलधारा, मधुकर मादती
निम मन मारा, निशदिन रटण करुं गुणतारा ॥ नयन
तारथ दर्शथी प्यारां, जगगुरु जगहितकारा ॥ महा-
वीर ॥ १ ॥ प्रीत वनी जल मीन सम प्यारा ॥ पटक
हो नहीं नाथजी न्यारा ॥ हृदयकमल स्थापुं सुख-
गरो, सेवक सांकलचंद्र तमारा, वीरमंजल जयकारा ॥
हावीर ॥ २ ॥

॥ गायन २४ मुं ॥

॥ कोइ दुध ल्यो दिलरंगी-ए राग ॥

॥ जिनराजने जज प्राणी, संसार अथिर जाणी ॥
जेनराजने जज प्राणी ॥

॥ साखी ॥

॥ ऋण ऋण आवरदा घटे, घटे दिवस ने रात ॥
प्राज तणुं हमणां करो, काल तणी शी वात रे ॥
जेन ॥ १ ॥ समय विपे नहीं करी शके, अंतराये प-
ताय ॥ वात पित्त कफ वेदना, कंठद्वार रुंधाय रे ॥
जेन ॥ २ ॥ नित्य मित्र काया कदि, करे न कोइनो
॥ ३ ॥ पर्वमित्र पाठा वदे. म्वजन बतावी हाथ रे ॥

जिन० ॥ ३ ॥ सत्यमित्र जुहार ते, स्हेज सखाइ धर्म ॥
 साह्य करे परजव जतां, अंते दे शिवशर्म रे ॥ जिन०
 ॥ ४ ॥ ते जिनधर्म आराधतां, रहे न जवजय फंद ॥
 जाचे जवो जव धर्मनुं, शरण सु सांकलचद रे ॥ जिन० ॥ ५ ॥

॥ गायन २५ मु ॥

॥ धीमे धीमे चालोने मारा प्राण रे—ए राग

॥ जरी सामुं जुवोने महावीर रे ॥ चार चोः
 लुंटाराज लुटी जशे, वैरी केडे थशे धर्म धीर रे ।
 जरी सामुं ॥ १ ॥

॥ साखी ॥

॥ मोह जगत जंगल विषे, त्रिचे माया जाल ।
 सपत्नीवी जग जीवने, ठार करे तत्काल ॥ अम सर
 खा पतितोनी व्हारे तमे, जगनाथ कृपालुता शरणे
 अमे ॥ नामुं शिर रे ॥ जरी० ॥ ॥

॥ साखी ॥

॥ अर्जुनमाली उद्भयो, तायो भेघ कुमार ॥ तार
 चदनवातिका, ए तारो उपकार ॥ जवसिधु उतारोने
 त्राता तमे, वीरमरुली सांकलचद नमे ॥ तार
 तीर रे ॥ जरी० ॥ ३ ॥

॥ गायन २६ मं ॥

॥ बाहाला वेगे आवो रे-ए राग ॥

॥ दादा दुःख वारो रे, जवजल तारो रे ॥
चिंतामणि पासजी होजी ॥ प्रजुजी जिज्ञा मागुं तव
रवार ॥ चिंतामणि ॥ १

॥ साखी ॥

॥ जमे चक्र कुंजारनुं, जम्यो तेभ संसार ॥ ठेदन
ददन दुःख सद्यां, कहेतां न लहुं पार ॥ प्रजुजी मारां
जवदुःख वारो रे ॥ चिंतामणि ॥ २ ॥ जीरु पकी गो-
वंदने, समर्थो जगदाधार ॥ जरा निवारी न्हवणश्री,
तर्वियो जयकार ॥ प्रजुजी मारी जीरु निवारो रे ॥
चिंतामणि ॥ ३ ॥ स्मरणं करे प्रजु ताहरुं, वंध्या प्र-
भूता थाय ॥ अंध नेत्र प्रगटे नवां, दीन घर श्री सो-
याय ॥ प्रजु मारां काज सुधारो रे ॥ चिंतामणि ॥ ४ ॥
गोर अरि जल ज्वलन ने, गय रण विषधर रोग ॥ ए
हाजय तुज ध्यानश्री, टले न रहे जवशोग ॥ दयानी-
ध दासने उद्धारो रे ॥ चिंतामणि ॥ ५ ॥ राजपुरे
जु राजतो, धिंग धणी दातार ॥ चिंतामणि चिंता
रे, जरे अखूट जंकार ॥ सेवक सांकलचंदने तारो
॥ चिंतामणि ॥ ६ ॥

(३१ए)

॥ गायन २७ मु।

॥ अहो दिलदार जरी देदार-ए राग ॥

॥ अरज जिनराज करुं एक आज, सुणो अजिनं
दन स्वामी ॥ शरण तारुं सदा सारुं नथी मसारम
मारुं ॥ पिता माता तमे त्राता, सुखद दाता परमनाम
॥ स्वजन स्वार्थी तुं नि.स्वार्थी, धरुं एक ध्यान हु तार
॥ उजय वैरी पड्या केमी, जवोदधिमां मने नाखे ।
मड्या जिनराज जवोदधि जाऊ, हाथ ग्रहीने उगारोने
॥ धरम धोरी जीवन टोरी, दया जिनराजजी दाखे ।
जजुं जावे जक्ति दावे, मने जिनराज तारोने ॥

॥ साखी ॥

॥ महा गोप महा सार्थवाह, निर्यामक जविवुंद
महा माहण करुणा करी, तारो सांकलचंद ॥ अरज
जिनराज करुं ॥

॥ गायन २८ मु ॥

॥ धन्य भाग्य पथार्या भमरा-ए राग ॥

॥ सुपार्श्वनाथ मम स्वामी, जगजनना अंतरजामं
॥ तुज पदकज सेवा पामी, महाराज गरीवनिवाज ।

॥ ३ संतिकर ॥

॥ संतिकरं संतिजिणं जगसरणं जयसिरीशदायारं
 । समरामि जत्तपालग,—निद्धाणीगरुक्कयसेवं ॥ १ ॥ उँ
 नमो विप्पोसहि,—पत्ताणं संतिसामिपायाणं ॥ झ्रँ
 वाहामंतेणं, सद्वासिवपुरिअहरणाणं ॥ २ ॥ उँसंतिन-
 पुक्कारो, खेलोसहिमाइलद्धिपत्ताणं ॥ सो झ्रँ नमो स-
 पो,—सहिपत्ताणं च देइ सिरिं ॥ ३ ॥ वाणीतिहुअण-
 सामिणि,—सिरिदेवीजक्करायगणिपिरुगा ॥ गहदिसि-
 णालसुरिंदा, सयाविरक्कंतु जिणजत्ते ॥ ४ ॥ र्कंतु मम
 धोहिणी, पन्नत्ती वज्जसिंखला य सया ॥ वज्जंकुसि च-
 र्कसरि, नरदत्ता कालि महाकाली ॥ ५ ॥ गोरी तह गं-
 णारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा ॥ अत्तुत्ता माणसिया,
 हमाणसियाउं देवीउं ॥ ६ ॥ जक्का गोमुह महजक्क,
 नेमुह जक्केस तुंबरु कुसुमो ॥ मायंगो विजयाजिय,
 नो मणुउं सुरकुमारो ॥ ७ ॥ ठम्मुह पयाल किन्नर,
 रुको गंधव्व तह य जरिकदो ॥ कूवर वरुणो जिउमी,
 मेहो पास मायंगो ॥ ८ ॥ देवीउं चक्केसरि, अजिया
 रिअारि काली महाकाली ॥ अच्चुअ संता जाला, सु-
 णारयासोय सिरिवह्वा ॥ ९ ॥ चंदा विजयंकुसि प,—न्न
 त्ति निद्धाणि अच्चुअ धरणी ॥ वइरुट्ट बुत्त गंधा,—रि

अं व पजमावई सिद्धा ॥ १० ॥ इअ तिष्ठरक्षणरय
 अत्रेवि सुरासुरी य चउहावि ॥ वंतरजोइणिपमुहा, इ
 एतु रक्क सया अम्हं ॥ ११ ॥ एवं सुदिठिसुरगण, -र
 हिउं संघस्स मतिजिणचदो ॥ मज्जवि करेउ रक्क
 मुणिसुदरसूरिथुअमहिमा ॥ १२ ॥ इअ संतिनाह र
 म्म, -दिठ्ठी रक्क सरइ तिकाल जो ॥ सब्बोवइवरहित
 स लहइ सुहसंपयं परमं ॥ १३ ॥ तवगह्वगयणदिणर
 र, -जुगवरसिरिसोमसुदरगुरूणं ॥ सुपसायलज्जगणहर,
 विज्जासिद्धिं जणइ सीसो ॥ १४ ॥

॥ ४ तिजयपहुत्त ॥

॥ तिजयपहुत्तपयासय, -अठमहापाणिहेरजुत्ताण
 समयस्सिक्कत्तठिआणं, सरेमि चक्कं जिणंदाण ॥ १ ॥
 एवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवरसमूहो,
 नासेउ सयलडुरिअं, जविआण जत्तिजुत्ताण ॥ २ ॥
 वीसा पणयाला विय, तीसा पन्नतरी जिणमरिंदा ॥
 हन्नअरक्कसाइणि, -धोरुवसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥ सित्ति
 पणतीसा विय, सठ्ठी पंचेव जिणगणोएसो ॥ वाहि
 लजलणहरिकरि, -चोरारिमहात्तय हरउ ॥ ४ ॥ पणप
 य दसेव य, पन्नठ्ठी तहय चेव चालीसा ॥ रक्कंतु

प्ररीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरहुंहः
 नरसुंसः, हरहुंहः तहय चैव सरसुंसः ॥ आलिहियना-
 गप्रं, चक्रं किर सबजं चंद्रं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणि पन्नत्ती,
 वज्रासिखला तहय वज्रअंकुसिआ ॥ चक्रेसरि नरदत्ता,
 कालि महाकालि तह गोरी ॥ ७ ॥ गंधारी महजादा,
 पाणवि वशरुद्र तहय अहत्ता ॥ माणसि महमाणसि-
 प्रा, विजादेवीजं रकंतु ॥ ८ ॥ पंचदसकम्मचूमिसु,
 अप्पन्नं सत्तरिं जिणाण सयं ॥ विविहरयणाश्वत्तो,—व-
 रोहिअं हरजं डुरिआइं ॥ ९ ॥ चउतीसअइसयजुआ,
 अठमहापाणिहेरकयसोहा ॥ तिहुयरा गयमोहा, जा-
 अवा पयत्तेणं ॥ १० ॥ ॐ वरकणयसंखविहुम,—मर-
 यघणसन्निहं विगयमोहं ॥ सत्तरिसयं जिणाणं, सवा-
 रपूइअं वंदे स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ जवणवइवाणवंतर,—
 ओइसवासी विमाणवासी अ ॥ जे केवि डुठदेवा, ते
 वे उवसमंतु मम ॥ स्वाहो ॥ १२ ॥ चंदनकप्पूरेणं,
 दाए लिहिऊण खालिअं पीअं ॥ एगंतराइगहचूअ,—
 ाइणिमुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥ इअ सत्तरिसयं जंतं,
 म्मं मंतं डुवारि पणिलिहिअं ॥ डुरिआरिविजयवंतं,
 प्तंतं निच्चमचेह ॥ १४ ॥

॥ ५ अथ नमिऊण ॥

॥ नमिऊण पणयसुरगण,—चूनामणिकिरणरंजिअं
 मुणियो ॥ चलणजुअलं महाजय,—पणासणं संथवं वुढं
 ॥ १ ॥ सनियकरचरणनहमुह,—निबुहनासा विवन्नला-
 यन्ना ॥ कुष्ठमहारोगानल,—फुलिंगनिदहसवंग्गा ॥ २ ॥
 ते तुह चलणाराहण,—सलिलंजलिसेयवुहियहाया
 (उहाहा) ॥ वणदवहा गिरिपा,—यवव पत्ता पुणो
 लहों ॥ ३ ॥ दुवायखुजिय जलनिहि, उप्परुकह्वोलची-
 सणारावे ॥ संजतजयविसतुल,—निऊामयमुक्कवावारे ॥
 ४ ॥ अविदलियजाणवत्ता, खणेण पावंति इह्ठिअं कू-
 लं ॥ पासजिणचलणजुअलं, निअं चिअ जे नमंति
 नरा ॥ ५ ॥ खरपवणुअवणदव,—जालावलिमिलियस-
 यलदुमगहणे ॥ रुप्रंतमुद्धमयवहु,—जीसणरवजीसणमि
 वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं, निवाविअसयलति-
 हुअणाजोअं ॥ जे संजरति मणुआ, न कुणड जलणो
 जयं तेसि ॥ ७ ॥ विलसंतजोगजीसण,—फुरिआरुणन-
 यणतरलजीहालं ॥ उग्गजुअगं नव जल,—य सबहं
 जीसणाथारं ॥ ८ ॥ मअंति कीरुसरिसं, डूरपरिवूह-
 विसमविसवेगा ॥ तुह नामकरफुरुसि,—अमंतगुरुआ ।

नरा लोए ॥ ए ॥ अरुवीसु त्रिल्लतकर, - पुलिंदसदूलस-
 हनीमासु ॥ तयविहुरवुन्नकायर, - उद्वूरिअपहिअस-
 णासु ॥ १० ॥ अत्रिलुत्तविहवसारा, तुह् नाह पणाम-
 मत्तवावारा ॥ ॥ ववगयविग्घा सिग्घं, पत्ता हियइहियं
 ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जविअनलनयणं, डूरवियारियमुहं
 महाकायं ॥ नहकुलिसघायविअलिअ, - गइंदकुंजहुला-
 जोअं ॥ १२ ॥ पणयससंजमपाह्वव, - नहमणिमाणिक-
 पदिअपदिमस्स ॥ तुह् वयणपहरणधरा, सीहं कुळं पि
 न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवलदंतमुसलं, दीहकरुद्धाल-
 बुद्धिउढाहं ॥ महुपिंगनयणजुअलं, ससलिलनवजलह-
 रारावं ॥ १४ ॥ जीमं महागइंदं, अच्चासन्नपि ते न वि-
 गणंति ॥ जे तुम्ह चलणजुअलं, मुणिवइ तुंगं सम-
 द्दीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि तिखखग्गा, - त्रिग्घायपवि-
 ऊलहुयकबंधे ॥ कुंतविणित्रिन्नकरिकलह, - मुक्कसिक्का-
 रपउरंमि ॥ १६ ॥ निज्जियदप्पुऊररिउ, - नरिंदनिवहा
 जरा जसं धवलं ॥ पावंति पावपसमिण, पासजिण
 तुह्पपत्तावेण ॥ १७ ॥ रोगजलजलणविसहर, - चोरारि-
 मइंदगयरणजयाइं ॥ पासजिणनामसंकि, - तणेण पस-
 मंति सवाइं ॥ १८ ॥ एवं महाजयहरं, पासजिणिंदस्स

संथवमुञ्चारं ॥ त्रिवियजणाणदयरं, कद्धाणपरंपरनिहाण
 ॥ १९ ॥ रायन्नयजरकरस्कस, -कुसुमिणदुस्सजणरिस्क
 पीणासु ॥ सजासु दोसु पथे, उवसग्गे तहय रयणीसु
 ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माण-
 तुंगस्स ॥ पासो पावं पसमेउ, सयलजुवणच्चिअचलणो
 ॥ २१ ॥ उसग्गंते कमठा, -सुरम्मि जाणार्त्तं जो न सं-
 चळिउं ॥ सुरनरकिन्नरजुवइहि, सथुउं जयउ पासजिणो
 ॥ २२ ॥ एअस्स मज्जयारे, अठारसअस्करेहि जो म-
 तो ॥ जो जाणइ सो जायइ, परमपयत्तं फुरु पास ॥
 ॥ २३ ॥ पासहं समरणं जो कुणइ, सतुठेहियएण ॥ अ-
 ष्ठत्तरसयवाहिजय, नासइ तस्स दूरेण ॥ २४ ॥ इति
 श्रीमहात्तयहरनामक पचम स्मरणं ॥ २५ ॥

॥ ६ श्रीअजितशातिस्तव ॥

॥ अजिअ जिअसवन्नयं, सति च पसंतसवगयपावं ॥
 जयगुरु सतिगुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥
 गाहा ॥ ववगयमगुलजावे, ते ह विउलतवनिम्मलस-
 हावे ॥ निरुवममहप्पजावे, थोसामि सुदिठसप्पावे ॥ २ ॥
 ॥ गाहा ॥ सव्वदुक्कप्पसंतीण, सव्वपावप्पसंतिणं ॥ सया
 अजियसंतीण, नमो अजिअसंतिण ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥

पुत्तिपवर, दित्ततेअवंद धेअ सवलाअजाविअप्पजाव
 णेअ पइस मे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायणं ॥ विमलस-
 सिकलाश्रेअसोमं, वितिमिरसूरकराश्रेअतेअं ॥ ति-
 असवइगणाश्रेअरूवं, धरणिधरप्पवराइरेअसारं ॥ १५ ॥
 कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ वळे
 अजिअं ॥ तव संजमे अ अजिअं, एस शुणामि
 जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ चुअगपरिरंगिअं ॥ सोमगुणे-
 हिं पावइ न तं, नवसरयससी ॥ तेअगुणेहिं पावइ
 न तं, नवसरयरवी ॥ रूवगुणेहिं पावइ न तं, तिअस-
 णवई ॥ सारगुणेहिं पावइ न तं, धरणिधरवई ॥ १७ ॥
 खिज्जिअयं ॥ तिअवरपवत्तयं तमरयरहियं, धीरजण-
 पुअच्चिअं चुअकलिकदुसं ॥ संतिसुहपवत्तयं तिगरण-
 यणं, संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥
 त्तिअयं ॥ वणणयसिरिरइअंजत्तिरिसिगणसंथुअं
 थेमिअं ॥ विबुहाहिवधणवइनरवइशुयमहिअच्चिअं
 णुसो ॥ अइरुग्गयसरयदिवायरसमहिअसप्पजं तवसा-
 णं ॥ गयणंगणवियरणसमुअचारणवंदिअं सिरसा ॥
 ण ॥ किसलयमात्ता ॥ असुरगरुलपरिवंदिअं, किन्न-
 णेरगणमंसिअ ॥ देवकोमिसयसंथुअं, समणसंधपरिवं-

दिश्रं ॥ १० ॥ सुमुहं ॥ अन्नयं अणहं, अरयं
 ॥ अजिय अजिअ, पयजं पणमे ॥ ११ ॥ विज्जुविल
 सिय ॥ आगया वरविमाणदिव्वकणगरहत्तुरयपहकरस
 एहि हुल्लिअं ॥ ससंजमोअरणखुज्जिअल्लुदियचलकुंमलं
 गयतिरीरुसोहंतमज्जिमाला ॥११॥ वेह्जं ॥ ज सं
 सासुरसंघा, वेरविजत्ता नत्तिसुजुत्ता ॥ आयरञ्जूसिय-सं
 जमपिअ, -सुह्जुसुविम्हिय-सव्ववलोघा ॥ उत्तमकचणर
 यणपरुविय, -जासुरञ्जूसणजासुरिअगा ॥ गायसमोणय
 नत्तिवसागय, -पजल्लिपेसियसीसपणामा ॥ १३ ॥ रयण
 माला ॥ वंदिअण थोअण तो जिण, तिगुणमेव य
 पयाहिण पणमिअण य जिणं सुरासुरा, पमुअसन्नव
 णां तो गया ॥१४॥ खित्तय ॥ तंमहामुणिमहंपि पंजल
 रागदोसन्नयमोहवज्जियदेवदाणवनरिदवंदिअं, संतिमुत्त
 ममहात्तवं नमे ॥१५॥ खित्तय ॥ अंवरंतरविअारणिआहि
 लल्लिअहंसवहुगामिणिआहि ॥ पीणसोणिथणसाळिणि
 आहिं, सकलकमल दललोअणिआहि ॥ १६ ॥ दीवय
 पीणनिरंतरथणत्तरविणमिअगायलआहिं, मणिकंच
 णपसिडिलमेहलसोहिअसोणितआहि ॥ वरखिंखिणिने
 उरसतिलयवलयविञ्जूसणिआहि, १२कर ॥ १०६
 सुंदरदसणिआहिं ॥१७॥ चित्तकरा ॥ देवसुदरीहि पाय

वंदिआहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्रमा कमा ॥ अ-
 प्पणो निरालएहिं मंरुणोद्दणप्पगारएहिं केहिं केहिंवि
 अवंगतिलयपत्तलेहनामएहिं चिद्धएहिं संगयंगयाहिं
 नत्तिसंनिविठवंदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो
 ॥ २७ ॥ नारायउ ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं
 जिअमोहं ॥ धुयसव्वकिलेसं, पयउ पणमामि ॥ २८
 ॥ नंदिअयं ॥ शुअवंदिअस्सा रिसगणदेवगणेहिं,
 तो देववहुहिं पयउ पणमिअस्सा ॥ जस्सजगुत्तम-
 सासणअस्सा, नत्तिवसागयापिंदिअयाहिं ॥ देववर-
 हरसा बहुआहिं, सुरवररइगुणपंदिअयाहिं ॥ ३०
 ॥ नासुरयं ॥ वंससदतंतितालमेलिए तिउक्कराजिरा-
 मसदमीसए कए अ ॥ सुइसमाणे अ सुऊसज्जागी-
 यपायजालघंदिआहिं ॥ वलयमेहलाकलावनेउराजि-
 रामहसदमीसए कए अ ॥ देवनट्टिआहिं हावप्तावविप्र-
 प्पगारएहिं ॥ नच्चिऊण अंगहारएहिं वंदिआ य
 जस्स ते सुविक्रमा कमा ॥ तयं तिलोयसव्वसत्तसंतिका-
 यं, पसंतसव्वपावदोसमेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं-
 ॥ ३१ ॥ नारायउ ॥ ठत्तचामरपकागजूअजवमंदिआ,
 त्तयवरमगरतुरयसिरिवत्तसुवंढणा ॥ दीवसमुहमंदरदि-

सागयसोद्विया, सन्धिवसहसीहरहचक्रवरंकिया
 पाठांतर सिरिवत्सुलंठणा ॥ ३२ ॥ ललितत्रयं ॥ सहा
 वल्लहा समप्पइहा, अदोसटुहा गुणेहिं जिहा ॥ पसा
 यसिहा तवेण पुहा, सिरीहिं इहा रिसीहिं जुहा ॥ ३३ ॥
 वाणवासिथा ॥ ते तवेण धुअसवपावया, सबलोअहि
 अमूलपावया ॥ संथुआ अजिअसंतिपायया, हुंहु म
 सिवसुहाण दायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिका ॥ एवं तव
 वल्लविउल, थुअं मए अजिअसंतिजिणजुअलं ॥ वव
 गयकम्मरयमलं, गइं गयं सासयं विउल ॥ ३५ ॥ गाहा
 ॥ तं बहुगुणप्यसायं, मुखसुहेण परमेण अवितायं
 नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसावि अ पसायं ॥ ३६
 ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अ नादिं, पावेउ अ नंदिसेणम
 जिनादि ॥ परिसावि अ सुहनादिं, मम य दिसउ संज
 नादिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासे, सबहरि
 अवस्स जणिअवो ॥ सोअवो सवेहिं, उवसग्गनिवारए
 एसो ॥ ३८ ॥ गाहा ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, र
 जउकालंपि अजिअसतिययं ॥ नहु हुंति तस्स रोग
 पुवुप्पन्ना वि नासंति ॥ ३९ ॥ गाहा ॥ जइ इवह प
 मपयं, अहवा कीत्तिं सुविउडं जुवणे ॥ ता तंजुकुद्धरं
 जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति ॥

॥ ७ भक्तामर ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रज्ञाणा,—मुद्योतकं दक्षि-
 तपापतप्तोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं
 मुगादा,—वालंबनं चवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः
 संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा,—दुद्भूतबुद्धिपटुजिःसु-
 लोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये
 कलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥ बुद्ध्या विनाऽपि
 बुधार्चितपादपीठ, स्वोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम्
 बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिंबः,—मन्यः क इवति
 नः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र
 शांककांतान्, कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्धयो ॥
 त्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को वा तरीतुमलमंबुनि-
 त्तुजाज्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भक्तिवशा-
 मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपिप्रवृत्तः ॥ प्रीत्याऽऽत्म-
 र्थमविचार्य मृगो मृगेंद्रं, नाज्येति किं निजशिशोः
 रेपालनार्थम् ॥ ५ ॥ अद्वयश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम्,
 द्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ॥ यत्कोकिलः कि-
 मधौ मधुरं विरोति, तच्चारुचूतकलिकानिकरैकहेतुः
 ६ ॥ त्वत्संस्तवेन चवसंततिसंनिबद्धं, पापं क्षणात्क्ष-

यमुपैति शरीरजाजाम् ॥ आक्रांतलोकमलिनीलमशेषमा-
 शु, सूर्याशुनिन्नमिव शार्धरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति
 नाथ तव संस्तवनं मयेद, - मारज्यते तनुधियाऽपि तव
 प्रजावात् ॥ चेतो हरिष्यति सतां नखिनीदलेषु, मुक्ता-
 फलयुतिमुपैति ननूदविंदुः ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तवनम-
 स्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथाऽपि जगतां दुरितानि हंति ॥
 दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रचैवः पद्माकरेषु जलजान्तिं
 विकाशजांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवनभ्रूपणभ्रूत नाथ्यं
 भ्रूतैर्गुणैर्भुवि भवंतमभिष्टवंतः ॥ तुदया भवति भवतो
 ननु तेन किं वा, भ्रूत्याऽऽश्रितं य इह नात्मसम करोति
 ॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषा
 मुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरथुति-
 दुग्धसिन्धोः, द्वारं जल जलनिधेरशितु क इत्नेत् ॥ ११ ॥
 यैः शांतरागरुचिन्नि. परमाणुभिस्तवं, निर्मापितस्त्रिभु-
 वनैकललामभ्रूत ॥ नावंत एव खलु तेऽप्यणव. पृथिव्या
 यत्ते समानंमपरं न हि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्र क
 ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोप-
 माप्तम् विव. कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य, यद्वास-
 भवति पांशुपलाशकदंपम् ॥ १३ ॥ ॥ संपूर्णमंकुलशशांकी

कलाकलाप,—शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति ॥ ये
 नश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकं, कस्तान्निवारयति सं-
 धरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशां-
 नान्नि,—नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कटपां-
 काकालमरुता चक्षिताचलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चक्षितं
 कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्दूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः कृत्स्नं
 गत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न जातु मरुतां
 क्षिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः
 १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टी-
 रोषि सहसा युगपज्जगन्ति ॥ नांनोधरोदरनिरुद्धमहा-
 चावः, सूर्यातिशायिमहिमाऽसि मुनींद्र लोके ॥ १७
 नित्योदयं दक्षितमोहमहांधकारं, गम्यं न राहुवनस्य
 वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मुखाब्जमनद्वपकांति,—
 यद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु
 शिनोऽहि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेन्दुदक्षितेषु तमस्सु-
 नाथ ॥ निष्पन्नशोद्विवनशाक्षिनि जीवलोकं, कार्यं
 क्यज्जलधरैर्जलचारनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि
 ज्ञोति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥
 जः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काचशकले

किरणाकुलेऽपि ॥ १० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एवा दृष्टा
 दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ कीं वीक्षितेन ज्वता
 जुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ जवांतरेऽपि
 ॥ ११ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या
 सुतं त्वद्रुपमं जननी प्रसूता ॥ सर्वा दिशो दधति ज्ञानि
 सहस्ररश्मि, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥ १२ ॥
 त्वामामनति मुनयः परमं पुमांसः,—मादित्यवर्णममल
 तमसः पुरस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलक्ष्य जयति मृत्यु
 नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पथाः ॥ १३ ॥ त्वा
 मव्ययं विजुमचित्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंत
 मनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञान
 स्वरूपममलं प्रवदति संतः ॥ १४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधा
 र्चितवृद्धिवोधात्, त्वं जकरोऽसि जुवनत्रयशंकरत्वात् ॥
 धाताऽसि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमे
 जगवन् पुरुपोत्तमोऽसि ॥ १५ ॥ तुभ्य नमस्त्रिजुवनार्ति
 हराय नाथ, तुभ्य नम द्धितितलामलचूपणाय ॥
 तुभ्यं नमस्त्रिजगत परमेश्वराय, तुभ्य नमो जि
 जवोदधिशोषणाय ॥ १६ ॥ को विस्मयोऽत्र यदि ना
 गुणैरशोषै,—स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥ १७ ॥

रूपात्तद्विविधाश्रयजातवर्गैः, स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिद-
 द्धितोऽसि ॥ २५ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मथूय, —मा-
 गतिरूपममलं चवतो नितांतम् ॥ स्पष्टोद्धसत्किरणस-
 तततमोवितानं, विवं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥ २६ ॥
 प्रहासने मणिसमूखशिखाविचित्रे, विभ्राजते तव
 पु, कनकावदातम् ॥ विवं वियद्विलसदंशुलतावितानं,
 गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २७ ॥ कुंदावदात-
 लचासरचारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतम्
 उच्चैःशांकशुचिनिर्जरवारिधार, —मुच्चैस्तटंसुरगिरेरिव
 तलकौञ्जम् ॥ २८ ॥ तत्रत्रयं तव विभ्राति शशांककां-
 , —मुच्चैः स्थितं स्थगितचानुकरप्रतापम् ॥ मुक्ताफल-
 करजालविधृच्छोभं, प्रख्यापयत्त्रिजगनः परमेश्वरम्
 ३१ ॥ उच्चैर्द्रहेमनवपंकजपुंजकांति, —पर्युद्धसन्नमयूख-
 शखाऽन्निरामौ ॥ पादौ पदानि यत्र जिनेन्द्र धत्तः,
 शानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा
 व विभ्रूतिरञ्जुजिनेन्द्र, धामोपदेशनविधौ न तथा परस्य
 यादृक्प्रजा दिनकृतः प्रहतांधकारा, तादृक्कुतो ग्रहग-
 स्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्रयोतन्मदाविलविलोकक-
 लमूल, —मत्तत्रमद्भ्रमरनादविवृकोपम् ॥ ऐरावताज-

मित्रमुद्धतमापत, दृष्ट्वा जय जवति नो जवदाश्रित
 नाम् ॥ ३४ ॥ जिन्नेजकुजगलदुज्ज्वलशोणिताक्त,—मुक्त
 फलप्रकरचूपितचूमिनागः ॥ वरुक्रम. क्रमगत हा
 णाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५
 कदपांतकालपवनोद्धतवह्निकल्प, दावानलं ज्वलित
 ज्ज्वलमुत्फुलिगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव समुखमापतं
 त्वन्नामकीर्तनजलं गमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्ष
 समदकोकिलकठनील, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमाप
 तम् आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशक,—स्त्वन्नागाग
 मनी हृदि यस्य पुस. ॥ ३७ ॥ वदगत्तुरगगजगर्जितज
 मनाद,—माजो बलं बलवतामपि चूपतीनाम् ॥ उ
 दिवाकरमयूखशिखाऽपविद्ध, त्वत्कीर्तनात्तम इवा
 जिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुताग्रजिन्नगजशोणितवारिव
 ह,—वेगावतारतरणातुरयोधजीमे ॥ युद्धे जयविजितदु
 यजेयपक्षा,—स्त्वत्पादपकजवनाश्रयिणो लज्जते ॥ ३९
 अज्ञोनिधां क्षुजितजीपणनक्रचक्र,—पाठीनपोठजयद
 दवणवारुवाग्ना ॥ रगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा,—स्त्रा
 विहाय जवत. स्मरणाद्ब्रजति ॥ ४० ॥ उद्ब्रूतजी
 णजतोदरजारचुम्भा, शोच्यां दशामुपगताश्वयुतजी

ताशाः ॥ त्वत्पादपंकजरजोऽमृतदिग्धदेहा, मर्त्यां चवंति
 मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवे-
 ष्टितांगा, गाढं बृहन्निगरुकोटिनिघृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाम-
 मंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्वयं विगतबंधज्ञया
 चवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि,—संग्राम-
 वारिधिमहोदरबंधनोढम् तस्याशु नाशमुपयातिजयं
 ज्ञियेव, यस्तावकं स्वमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तो-
 त्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धां, चक्त्या मया रुचिरव-
 र्णवचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं,
 तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इति
 चक्तामरनामकस्तोत्रं सप्तमस्मरणम् ॥ ७ ॥

॥ ८ श्री कल्याणमंदिर ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यज्ञेदि, जीताज्ञयप्रदम-
 निंदितमंघ्रिपद्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु,—पो-
 तायमानमज्जिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सु-
 गुरुर्गरिमांबुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विञ्चुर्विधातुम्
 ॥ नीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो,—स्तस्याहमेष किल
 संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सामान्यतोऽपि तव
 वर्णयितुं स्वरूप,—मस्मादृशाः कथमधीश चवन्त्यधीशाः

॥ धृष्टोऽपि कौशिकशिष्युर्द्यदिवा दिवांधो, रूप प्ररू
 यति कि किल घर्मरग्नेः ॥ ३ ॥ मोहक्षयादनुभवन्न
 नाथ मर्त्यां, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ॥ ४ ॥
 द्वापांतवांतपयस. प्रकटोऽपि यस्मा,—न्मीयेत केन जलं
 र्नेनु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अन्युद्यतोऽस्मि तव नाथ जनाशय
 ऽपि, कर्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि कि
 निजवाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधिय
 बुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवे
 वक्तु कथं चवति तेषु ममावकाश ॥ जाता तदे
 मसमीक्षितकारितेय, जटपंति वा निजगिरा न
 पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचित्यमहिमा जिन सस
 वस्ते, नामापि पाति चवतो चवतो जगति ॥ तीव्र
 तपोपहतपांथजनाग्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरस सरसं
 ऽनिद्रोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्धर्त्तिनि त्वयि विज्ञो शिथिलं
 चवंति, जतो क्षणेन निविन्ना अपि कर्मबंधा
 सद्यो जुजगममया इव मध्यन्नाग,—मन्यागते व
 शिखरिनि चदनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यत एव मनुजाः सहस्र
 जिनेन्द्र, रोद्रेरुपद्रवशतेस्त्वयि वीक्षितेऽपि ॥ गोस्वामि
 नि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे. चौरैरिवाशु पशव. प्र

लायमानैः ॥ ए ॥ त्वं तारको जिन कथं जविनां त
 एव, त्वामुद्धरन्ति हृदयेन यदुरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति
 यज्जलमेष नून,—संतर्गतस्य मरुतः स किलानुजावः
 ॥१०॥ यस्मिन् हरप्रचूनयोऽपि हृतप्रजावाः, सोऽपि त्वया
 रतिपतिः कृपितः कृणेन ॥ विध्यापिता हुतजुजः पय-
 साथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्द्धरवारुवेन ॥ ११ ॥
 स्वामिन्ननदपगरिमाणमपि प्रपन्ना—स्त्वां जंतवः कथ-
 महो हृदये दधानाः ॥ जन्मोदधिं लघु तरंत्यतिला-
 घवेन, चिंत्यो न हंत महतां यदिवा प्रजावः ॥ १२ ॥
 क्रोधस्त्वया यदि विज्ञो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा वत
 कथं किल कर्मचौराः ॥ प्लोषत्यमुत्र यदिवा शिशिरा-
 ऽपि लोके, नीलडुमाणि विपिनानि न किं हिमानी
 ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप,—मन्वेष-
 यन्ति हृदयांबुजकोशदेशे ॥ पूतस्य निर्मलरुचेर्यदिवा
 किमन्य,—दहस्य संजवि पदं ननु कणिकायाः ॥१४॥
 ध्यानाज्जिनेश जवतो जविनः कृणेन, देहं विहाय
 परमात्मदशां ब्रजन्ति ॥ तीजानलाडुपलजावमपास्य लोके,
 चामीकरत्वमचिरादिव धातुजेदाः ॥ १५ ॥ अंतः स-
 दैव जिन यस्य विज्ञाव्यसे त्वं, जव्यैः कथं तदपि ना-

शयसे शरीरम् ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि,
 यद्विग्रहं प्रशमयति महानुजावा. ॥ १६ ॥ आत्मा म-
 नीपिन्निरयं त्वदज्ञेदबुद्ध्या, ध्यातो जिनेद्र जवतीह ज-
 वत्प्रजाव ॥ पानीयमप्यमृतमित्यनुचिंत्यमानं, कि नाम
 नो विषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं
 परवादिनोऽपि, नूनं विज्ञो हरिहरादिधिया प्रपन्ना ॥
 कि काचकामद्विचिरीश सितोऽपि शखो, नो गृह्यते वि-
 विधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानु-
 नावा,—दास्तां जनो जवति ते तरुरप्यशोक ॥ अच्यु-
 जते दिनपतो समहीरुहोऽपि, कि वा वित्रोत्रमुपयाति न
 जीवलोक ॥ १९ ॥ चित्र विज्ञो कथमवाङ्मुखव्रंतमेव,
 वित्रक् पतत्यविरला सुरपुपवृष्टि ॥ त्वज्ञोचरे सुमनसां
 यद्विवा मुनीश, गहंति नूनमथ एव हि वंधनानि ॥२०॥
 स्थाने गज्जीगृहदयोदविसंजवाया., पीयूषतां तव
 गिर समुदीरयति ॥ पीत्वो यत परमसंमदसगन्नाजो,
 जव्या व्रजति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वा-
 मिन् सुहूरमवनम्य समुत्पतंतो, मन्ये वदंति शु-
 चय सुरचामरोघा. ॥ येऽस्मै नति विदधते मुनिपुग-
 वाय, ते नूनमूर्ध्वगतय खलु शुद्धजावा. ॥ २२ ॥

ध्यामं गङ्गीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न,—सिंहासनस्थमिह ज-
 यशिशिखंकिनस्त्वाम् ॥ आलोकयन्ति रभसेन नदन्त-
 र्ज्जे,—श्रामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥ १३ ॥
 जज्ञता तव शितिद्युतिमंरुत्नेन, लुप्तहृदह्वविरशोक-
 र्द्वर्धञ्चूव ॥ सान्निध्यतोऽपि यदिवा तव वीतराग, नी-
 रगततां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥ १४ ॥ जो जोः
 रिमादमवधूय जजध्वमेन,—मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रति
 पार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय, मन्ये
 दन्नजिनन्नः सुरदुन्दुजिस्ते ॥ १५ ॥ उद्योतितेषु जवता
 वनेषु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ॥
 क्ताकलापकलितोह्वसितातपत्र,—व्याजात्त्रिधा धृतत-
 र्धुवमञ्चुपेतः ॥ १६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिंसिते-
 , कांतिप्रतापयशसामिव संचयेन ॥ माणिक्यहेम-
 जतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण जगवन्नभितो विज्ञासि
 १७ ॥ दिव्यस्त्रजो जिन नमस्त्रिदशाधिपाना—मुत्सृज्य
 त्तरचितानपि मौलिवंधान् ॥ पादौ श्रयंति जवतो य-
 द्वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमंत एव ॥ १८ ॥
 वं नाथ जन्मजलधेर्विपराडूमुखोऽपि, यत्तारयस्यसुमतो
 निजपृष्ठलज्ञान् ॥ युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव,

चित्र विज्ञो यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥ विश्वे-
 श्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किं वाऽक्षरप्रकृतिरप्य-
 द्विपिस्त्वमीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं
 त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्चारसं-
 चूतनज्ञांसि रजांसि रोषा, -दुत्थापितानि कमठेन शठेन
 यानि ॥ ठायाऽपि तैस्तव न नाथ हता हताशो, प्रस्त-
 स्त्वमीक्षिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यद्गर्जाद्गूर्जित-
 घनौघमदञ्जनीमं, चश्यत्किन्मुसलमांसलघोरधारम् ॥
 दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्ने, तेनैव तस्य जिन
 दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिम-
 र्त्यमुरु, -प्रालंबचृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः ॥ भ्रेतवजः प्रति
 ज्वंतमपीरितो य, सोऽस्याऽजवत्प्रतिज्वं जवदुःखहेतुः
 ॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव जुवनाधिप ये त्रिसंध्य, -माराध-
 यति विधिवद्विधुतान्यकृत्या ॥ जक्तयोद्धसत्पुस्तकपद्म-
 लदेहदेशा, पादद्वय तव विज्ञो जुवि जन्मजाजः ॥ ३४ ॥
 अस्मिन्नपारजववारिनिधौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवण
 गोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमंत्रे,
 किं वा विपद्विपधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥ जन्मांत-
 रेऽपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया महितमीहि

तदानदहम् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराजवानां, जातो
 निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोह-
 तिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विज्ञो सकृदपि प्रविलोकितो-
 ऽसि ॥ मर्माविधो विधुरयंति हि मामनर्थाः, प्रोद्य-
 त्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि म-
 हितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतो-
 ऽसि जक्त्या ॥ जातोऽस्मि तेन जनवांधव दुःखपात्रं,
 यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति न जावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं
 नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्यपुण्यवसते
 वशिनां वरेण्य जक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय,
 दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसा-
 रशरणं शरणं शरण्य,—मासाद्यसादितरिपुप्रथितावदा-
 तम् ॥ त्वत्तादपंकजमपि प्रणिधानबंध्यो, बध्योऽस्मि
 चेद् जुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेंद्रवंद्य वि-
 दिताखिलवस्तुसार, संसारतारक विज्ञो जुवनाधिनाथ
 ॥ त्रायस्व देव करूणाहृद मां पुनीहि, सीदंतमद्य जय-
 दव्यसनांबुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति नाथ जवदंघिसरोरु-
 हाणां, जक्तेः फलं किमपि संततिसंचितायाः ॥ तन्मे
 त्वदेकशरणस्य शरण्य न्यूयाः, स्वामी त्वमेव जुवनेऽत्र

जवांतरेऽपि ॥ ४२ ॥ इह समाहितधियो विधिवज्जि-
 नेद्र, सांद्रोहसत्पुलककंचुकितांगजागा. ॥ त्वद्विवनि
 र्मलमुखांबुजवद्भ्रुवद्वा, ये संस्तवं तव विज्ञो रचयति
 जव्याः ॥ ४३ ॥ जननयनकुमुदचद्र, -प्रज्ञास्वराः स्वर्ग
 सपदो जुक्त्वा ॥ ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोह
 प्रपद्यते ॥ युग्मम् ॥ ४४ ॥ इति श्रीकल्याणमदिरना
 मक अष्टमस्मरणम् ॥ ७ ॥

॥ ९ बृहज्ज्यतिस्तव ॥

॥ जो जो जव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत्
 ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोर्हता जक्तिज्ञाजः ॥ तेषां शां
 तिर्भवतु जवतामर्हदादिप्रज्ञावा, -दारोग्यश्रीधृतिमति
 करी बलेशविध्वंसहेतु. ॥ १ ॥ गद्य ॥ जो जो जव्य
 लोका इहहि जरतैरावतविदेहमज्ञावानांसमस्ततीर्थकृता
 जन्मन्यासनप्रकंपानंतरमवधिना विज्ञाय, सौधर्माधिप
 ति. सुघोषाघंटाचालनानंतरं सकलसुरासुरैः सह स
 मागत्य, सविनयमर्हद्भ्रुवद्वा गृहीत्वा गत्वा कनका
 डिशृगे, विहितजन्माज्ञिपेक, शांतिमुद्घोषयति यथा,
 ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा, महाजनो येन गतः स
 पथा इति जव्यजनैः सह समेत्य, स्नात्रपीठे स्नात्र वि

धाय, शांतिमुद्घोषयामि तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्स-
 वानंतरमिति कृत्वा कर्णं दत्त्वा, निशम्यतां निशम्यतां
 स्वाहा, ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयंतां प्रीयंतां जगवंतो-
 ऽर्हतः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहिता-
 स्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः, ॐ ऋष-
 ष-अजित-संज्ञव-अजिनन्दन-सुमति-पद्मप्रज्ञ-सुपा-
 र्श्व-चद्रप्रज्ञसुविधि-शीतल-श्रेयांस-वासुपूज्य-विम-
 ल-अनन्त-धर्म-शांति-कुण्डु-अर-मद्वि-मुनिसुव्रत-
 नमि-नेमि-पार्श्व-वर्द्धमानातां जिनाः शांताः शांति-
 करा ज्वंतु स्वाहा ॥ ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजय-
 दुर्जिह्वकांतारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नित्यं स्वाहा ॥
 ॐ ॐ श्री धृति-मति-कीर्त्ति-कांति-बुद्धि-वदमी-
 मेधा-विद्यासाधन-प्रवेश-निवेशनेषु सुगृहीतनामानो
 जयंतु ते जिनेन्द्राः ॥ ॐ रोहिणी-प्रज्ञप्ति-वज्रशृंग-
 दा-वज्रांकुशी-अप्रतिचक्रा-पुरुषदत्ता-काली-महा-
 काली-गौरी-गांधारी-सर्वास्त्रामहाज्वाला-मानवी-वै-
 रोद्व्या-अनुष्ठा-मानसी-महामानसी षोरुश विद्यादेव्यो
 रक्षंतु वो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृति-
 चातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु तुष्टिर्भवतु

पुष्टिर्भवतु ॥ ॐ अहाश्वंद्रसूर्यागारकबुधवृहस्पतिशुः
 शनैश्वरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोमयमवरु
 कुबेरवासवादित्यस्कंदविनायकोपेताः ये चान्येऽपि अ
 मनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां प्रीयंतां, अक्षी
 काशकोष्ठागारा नरपतयश्च ज्वंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्र
 मित्र-त्रातृ-कलत्र-सुहृद्-स्वजन-संबन्धि-बंधुबर्ग
 हिता नित्यं चामोदप्रमोदकारिणः अस्मिंश्च चूमरुद्रा
 तननिवासिसाधुसाध्वीश्रावकश्राविकाणां रोगोपसर्गा
 धिदुःखदुर्निहदादोर्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु ॐ
 ष्टिपुष्टिश्चिद्वृद्धिमांगल्योत्सवा सदा प्रादुर्भूतानि
 यानि शांभ्यतु दुरितानि ॥ अत्रव. पराङ्मुखा ज्वंतु स्वा
 ॥ श्रीमते शातिनाथाय नम. शांतिविधायिने ॥ त्रैल
 क्यस्योमराधीश, मुकुटाच्यर्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शांति. इ
 तिकर. श्रीमान्, शांति दिशतु मे गुरुः ॥ शांतिरेव स
 तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ उन्मृष्टरिष्टदुष्ट-प्र
 गतिदुःखप्रदुर्निमित्तादि ॥ संपादितहितसंप, -त्राम
 हण जयति शांतेः ॥ ३ ॥ श्रीसधजगज्जानपद, रा
 धिपराजसन्निवेशानाम् ॥ गोष्ठिकपुरमुख्याणां, व्याह
 णैर्व्याहरेच्छांतिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसधस्य शांतिर्भव

श्रीपौरजनस्य शांतिर्भवतु, श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु,
 श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु, श्रीराजमन्त्रिवेशानां शां-
 तिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शांतिर्भवतु, श्रीपुरमुख्याणां
 शांतिर्भवतु, श्रीब्रह्मलोकस्य शांतिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॐ
 स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शांतिः प्र-
 तिष्ठायात्राल्नात्राद्यवसानेषु शांतिकलशं गृहीत्वा कुंकुम-
 चंदनकर्पूरागुरुधूपवासकुसुमांजलिसमेतः, मन्त्रत्रचतुष्कि-
 कायां श्रीसंघसमेतः, शुचिशुचित्रपुः पुष्पवस्त्रचंदनात्तर-
 णालंकृतः, पुष्पमालां कंठे कृत्वा, शांतिमुद्रघोषयित्वा
 शांतिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ॥ नृत्यन्ति नित्यं
 मणिपुष्पवर्ष, सृजन्ति गायन्ति च मंगलानि ॥ स्तोत्राणि
 गोत्राणि पठन्ति मंत्रान्, कट्याणन्नाजो हि जिनात्तिपेके
 ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवन्तु ऋ-
 त्गणाः ॥ दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखी भवन्तु लोकाः
 ॥ २ ॥ अहं तिष्ठयरमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनि-
 भासिनी ॥ अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं
 भवतु स्वाहा ॥ ३ ॥ उपसर्गाः ह्ययं यांति, विद्यन्ते वि-
 श्वद्वयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे

॥ ४ ॥ सर्वमंगलसांगढ्यं, सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधाः
सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

अथ सामायिक लेवानी विधि

१ प्रथम उचे आसने पुस्तक प्रमुख मूकतुं २ श्रा
वक श्राविकाए कटासणुं मुहपत्ति चरवलो लइ शुड
वस्त्रे जग्या पुंजी कटासणा उपर वेसतुं ३ मुहपत्ति नाव
हाथमां मुख पासे राखी जमणो हाथ थापनाजी सन्मुख
राखी एक नवकार गणवो पठी पचिदिअनो पाठ जणवो।

॥ अथ पचिदिअ ॥

॥ पचिदिअसवरणो तह नवविहवंजचेरगुत्तिधरो ।
चउविहकसायमुको, इअ अठारसगुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥
पचमहद्वयजुत्तो, पचविहायारपालणसमत्थो ॥ पचस
मिउं तिगुत्तो, ठत्तीसगुणो गुरु मज्ज ॥ २ ॥
(त्वारपठी खमासमण देवुं)

इहामि खमासमणो वंदिउ जावणिजाए निसीहि
याए महणण वंदामि ॥

(त्वारपठी इरियावहिनो पाठ जणवो.)

॥ अथ इरियावदि ॥

॥ इहाकारेण सदिसह जगवन् इरियावहियं परि

मामि । इहं इहामि पक्कमिउं । इरियावहियाए
राहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे वीयक्कमणे इरिय-
मणे उसाउत्तिंगपणगदगमट्टीमक्कमासंताणासंकमणे ।
मे जीवा विराहिया । एगिंदिया वेइंदिया तेइंदिया
उरिंदिया पंचिंदिया । अजिहया वत्तिआ लेसिया
वाइया संघट्टिया परिधाविया किलामिया उइविया
णारुठाणं संकामिया जीवियाउं ववरोविया तस्स
इहामि दुक्कं ॥

॥ तस्स उत्तरीनो पाठ भणवो ॥

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं पायत्तित्तकरणेणं विसोहीक-
णेणं विसट्टीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायण-
ए ठोमि काउस्सग्गं ॥

॥ अथ अन्नच्छ ऊससिएणंनो पाठ भणवो ॥

॥ अन्नत्त ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं ठीएणं
जाइएणं उहुएणं वायनिसग्गेणं नमलीए पित्तमुह्वाए
हुमेहिं अंगसंचात्तेहिं सुहुमेहिं खेत्तसंचात्तेहिं सुहु-
हिं दिट्ठिसंचात्तेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अन्नग्गो
विराहिउं हुत्ता मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं

जगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेण
मोणेणं जाणेणं अप्पाण वोसिरामि ॥

॥ त्थारवाद एक लोगस्सनो अथवा चार नवकार
नो काउस्सग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स कहेवो ॥

॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिठ्यरे जिणे
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसज
मजियंच वंदे ॥ संजवमज्जिणंदणं च सुमइ च ।
पउमप्पहं सुपास, जिण च चउप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविदि
च पुप्फदंतं, सीयलसिज्जसवासुपुज्जं च ॥ विमलमणत्त
च जिण, धम्मं संति च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंयुं अ
च मद्धिं वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिण च ॥ वंदामि रिठ
नेमिं, पासं तह वडमाण च ॥ ४ ॥ एवं मए अज्जि
थुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ॥ चउवीसंपि जि
णवरा, तिठ्ठयरो मे पसीयहु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदियम
हिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्गवोहिलार्च
समाहिवरमुत्तम दितु ॥ ६ ॥ चदेसु निम्मलयरा, आइ
धेसु अहियं पयासयरा ॥ सागरवरगंजीरा, सिद्धा सिद्धि
मम दिसंतु ॥ ॥

(पठी खमासमाण द्दृ इत्थाकारेण संदिसह
जगधन् सामायिक मुहपत्ति पन्विलेहुं ? इहुं एम कहेवुं.)

॥ पठी मुहपत्ति तथा अंगनी पन्विलेहण पचास
बोल कही मुहपत्ति पन्विलेहवी ॥

॥ मुहपत्तिना पचीश बोल ॥

॥ सूत्र अर्थ तत्त्व करी सहहुं ? . समकितमोहनी १
मिश्रमोहनी २ मिथ्यात्वमोहनी परिहरुं ४. कामराग ५
त्वेहराग ६ दृष्टिराग परिहरुं ७. सुदेव ८ सुगुरु ९ मुधर्म
आदरुं १०. कुदेव ११ कुगुरु १२ कुधर्म परिहरुं १३. ज्ञान
१४ दर्शन १५ चारित्र आदरुं १६. ज्ञानविराधना १७
दर्शनविराधना १८ चारित्रविराधना परिहरुं १९.
मनशुक्ति २० वचन शुक्ति २१ कायशुक्ति आदरुं २२.
मनदंरु २३ वचनदंरु २४ कायदंरु परिहरुं २५ ॥

॥ अंगना पचीश बोल ॥

॥ हास्य १ रति २ अरति ३ परिहरुं, मांवे हाथे
पन्विलेहवा. जय ४ शोक ५ दुगंहा ६ परिहरुं, जमणे हाथे
पन्विलेहवा. कृष्णलेश्या ७ नीललेश्या ८ कापोतलेश्या ९
परिहरुं, माथा उपर पन्विलेहवा, रस, गारव १० रुद्धि-
गारव ११ शातागारव १२ प रं, मोढे पन्विलेहवा.

मायाशब्द १३ नियाणशब्द १४ मिथ्यात्वशब्द १५
 परिहरं, ठाती आगल पन्डितेहवा क्रोध १६ मान १७
 परिहरं, पुंठे कावे खन्ने पन्डितेहवा माया १८ लोच
 १९ परिहरं, जमणे खन्ने पन्डितेहवा? पृथ्वीकाय २०
 अपकाय २१ तेजकाय २२ नी जयणा करं, कावे ढाचणे
 पन्डितेहवा वाजकाय २३ वनस्पतिकाय २४ त्रसकाय
 २५ नी रक्षा करं, जमणे ढीचणे पन्डितेहवा ते मध्ये
 साधु श्रावके बोल ५० कहेवा अने लेश्या ३ शब्द ३
 कषाय ४ ए दश सिवाय ४० बोल साध्वी तथा श्रावि-
 कोण कहेवा. मुहपत्ति पन्डितेहतां मुहपत्ति तथा अंगना
 पचास बोल उपर प्रमाणे कही पठी खमासमण दड
 इत्थाकारेण सदिसह जगवन् सामाधिक सदिसाहुं ।
 इत्थ वली खमासमण दड इत्थाकारेण सदिसह जगवन्
 सामाधिक ठाउ ? इत्थ एम कही वे हाथ जोमी एक
 नवकार गणी पठी इत्थकारि जगवन् पसाय करी सामा
 यिक दुरुक उच्चरावोजी ते वारे वन्डिल करेमि जते
 कहे वन्डिल न होय तो जाते पाठ जणवो ॥

॥ अथ करेमि भते ॥

॥ करेमि जंते सामाध्यं सावज्जां जोगं पच्चरुक्कामि

जाव नियमं पञ्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वा-
याए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स चंते पक्कि-
मामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

॥ पढी खमासमण दइ इह्वाकारेण संदिसह जगवन्
बेसणे संदिसाहुं ? इहं. वली खमासमण दइ इह्वाकारेणं
संदिसह जगवन् बेसणे ठाउं ? इहं एम कहेवु. पढी
खमासमण दइ इह्वाकारेण संदिसह जगवन् सज्जाय
संदिसाहुं ? इहं कही खमासमण दइ इह्वाकारेण संदि-
सह जगवन् सज्जाय कहं ? इहं एम कही त्रण नवकार
गणवा. पढी बे घनी धर्मध्यान करवुं

॥ सायगिक पारवानी विधि ॥

॥ १ खमासमण देवुं २ इरियावहि ३ तस्स उत्तरी
४ अन्नहज्जससिएणं कही पढी एक लोगस्सनो अथवा
चार नवकारनो काजस्सग्ग करी लोगस्स प्रगट कहेवो.
खमासमण दइ इह्वाकारेण संदिसह जगवन् मुहपत्ति
पक्खिहं ! इहं एम कही मुहपत्ति पक्खिहं खमासमण
दइ इह्वाकारेण संदिसह जगवन् सामायिक पारुं ?
यथाशक्ति. वली खमासमण दइ इह्वाकारेण संदिसह
जगवन् सामायिक पार्युं, तहत्ति कही पढी जमणो हाथ

चरवला उपर अथवा कटासणा उपर थापी एक न
कार गणी सामाश्यवयजुत्तो कहीए ॥

॥ अथ सामाश्यवयजुत्तो ॥

॥ सामाश्यवयजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसजुत्तो
ठिन्नइ असुहं कम्म, सामाश्य जत्तिआ वारा ॥ १
सामाश्यमि उ कए, सम्णो इव सावउ हवइ जम्हा
एएण कारणेण, बहुसो सामाश्य कुज्जा ॥ २ ॥ साम
यिक विधि लीधुं विधिं पार्यु विधि करतां जे कोइ अवि
हुओ होय ते सवि हु मन वचन कायाए करी मिठामि
डुकरु ॥ दश मनना, दश वचनना, वार कायाना, ए
वत्रीश दोषमां जे कोइ दोष लाग्यो होय ते सवि हु मन
वचन, कायाए करी मिठामि डुकरु ॥

॥ त्यारपठी जमणो हाथ थापना सन्मुख सवत
राखीने एक नवकार गणीए ॥

इति सामायिक विधि सपूर्ण



॥ अथ पञ्चस्काण लोवानी विधि ॥

॥ अथ नमुक्कारसहिअं ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पञ्चस्काइ, चउव्विहंपि
आहारं असणं पाणं खाइमं अन्नहणान्नोगेणं सहसा-
गारेणं वोसिरे (इति) ॥

॥ अथ नमुक्कारसहिअं मुठिसहिअं ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं मुठिसहिअं पञ्चस्काइ
उव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न-
णान्नोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहि-
त्तियागारेणं वोसिरे (इति) ॥

॥ अथ पोरिसि साढपोरिसिनुं ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साढपोरिसिं
मुठिसहिअं पञ्चस्काइ ॥ उग्गए सूरे चउव्विहंपिआहारं
असणं पाणं खाइमं सोइमं अन्नहणान्नोगेणं सहसागा-
णं पण्णकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरा-
गारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ (इति) ॥

॥ अथ पुरिमहं अवहंनुं ॥

॥ सूरे उग्गए नमुक्कारसहिअं पुरिमहं अवहं सु-

छिसहिअं पञ्चखाड ॥ सूरे उग्गए चउव्विहंपि अ
हारं असणं पाण खाडमं साडमं अन्नव्वणाजोगेण सह
सागारेणं पव्वन्नकालेण दिसामोहेण साहुव्वयणेणं मह
त्तरागारेण सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे (इति)

॥ अय पिग्ग निविग्गइनु ॥

॥ विग्गइत्तं निविग्गइत्तं पञ्चखाड अन्नव्वणाजोगेण
सहसागारेणं वेवावेवेण गिह्वसंसठेणं उक्खित्तविवेगेण
परुच्चमस्सिएण पारिष्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं स
वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे (इति) ॥

॥ अय वेआमणा तथा एकासणानु ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साडपोरिसि
सरिमह मुछिसहिअंपञ्चखाड ॥ उग्गए सूरे चउव्विहंपि
आहारं असण पाण खाडमं साडमं अन्नव्वणाजोगेण
सहसागारेण पव्वन्नकालेण दिसामोहेण साहुव्वयणेणं
महत्तरागारेण सबसमाहिवत्तियागारेण एकासण वेअ
सण पञ्चखाड तिव्वहंपि आहारं असण खाडम साड
अन्नव्वणाजोगेणं सहसागारेण सागारियागारेणं आउ
टणपसारेण गुरुअप्पुठाणेण पारिष्ठावणियागारेणं मह
त्तरागारेण सबसमाहिवत्तियागारेण पाणस्स वेवे

वा अलेवेण वा अठेण वा बहुलेवेण वा ससिहेण वा
असिहेण वा वोसिरे (इति) ॥

॥ अथ आयंविभुं ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साढपोरिसिं
ठिसहिअं पच्चस्काइ ॥ उग्गए सूरे चउविहंपि आ-
हारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नहणाजोगेणं सह-
सागारेणं पण्णकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं
महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं आयंविभुं पच्च-
स्काइ ॥ अन्नहणाजोगेणं सहसागारेणं देवादेवेणं गि-
हसंसठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिठावणियागारेणं मह-
त्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं एगासणं पच्चस्काइ
चउविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नहणाजो-
गणं सहसागारेणं सागारियागारेणं आउंटणपसारेणं गु-
अप्पुठाणेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सब-
समाहिवत्तियागारेणं पाणस्स देवेण वा अलेवेण वा अ-
ण वा बहुलेवेण वा ससिहेण वा असिहेण वा वोसिरे ॥

॥ अथ चउव्विहार उपवासनुं ॥

॥ सूरे उग्गए अप्पत्तठं पच्चस्काइ चउविहंपि आ-
हारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नहणाजोगेणं

सहसागारेणं पारिष्ठावणियागारेण महत्तरागारेणं स
 वसमाह्वित्तियागारेणं वोसिरे ॥

॥ अथ तिविहार उपवासनु ॥

॥ सूरे उग्गए अप्रत्तठं पञ्चस्काइ तिविहंपि आ
 हारं असणं खाइम साइम अन्नहणानोगेणं सह
 सागारेणं पारिष्ठावणियागारेणं महत्तरागारेण सव
 समाह्वित्तियागारेणं पाणहार पोरिसिं साढपोरिसिं मु
 ठिसहिअ धरसहिअं पञ्चस्काइ ॥ उग्गए सूरे पुरि
 मह अत्रहं पञ्चस्काइ ॥ अन्नहणानोगेणं सहसागारेण
 पन्नकालेणं दिसामोहेण साहुवयणेणं महत्तरागारेण
 सवसमाह्वित्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा
 अत्रण वा बहुलेवेण वा ससिहेण वा असिहेण वा वोसिरे।

॥ अथ चउच्छ उठभत्तादिरुनु ॥

॥ सूरे उग्गए चउठन्नत्त अप्रत्तठं पञ्चस्काइ ॥ सूं
 उग्गए ठठन्नत्त अप्रपत्तठ च्चस्काइ।सूरे उग्गए अठमन्न
 अप्रत्तठ पञ्चस्काइ ॥ पाणहार पोरिसि मुठिसहिअं पञ्च
 स्काइ अन्नहणानोगेण सहसागारेण महत्तरागारेणं स
 वसमाह्वित्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अ
 हेण वा बहुलेवेण वा ससिहेण वा असिहेण वा वोसिरे

॥ अथ गंठसहिअं आदि अभिग्रहोनुं ॥

॥ गंठसहिअं वेहसहिअं दिवसहिअं थिबुगसहिअं
मुठिसहिअं पञ्चस्काइ अन्नढणाजोगेणं सहसागारेणं
महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥

॥ अथ चौद नियम धारनारने देसावगासिकनुं ॥

॥ देसावगासिअं उवजोगं परिजोगं पञ्चस्काइ अ-
न्नढणाजोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सब-
समाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥

॥ अथ चौद नियम धारवानी गाथा ॥

॥ सचित्तद्वविगई, वाणहतंवलवठकुसुमेसु ॥
ग्राहणसयणविलेवण, वंजदिसिनाणजत्तेसु ॥

॥ सांजनां पञ्चक्खाण ॥

॥ अथ पाणहार दिवसचरिमनुं ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पञ्चस्काइ अन्नढणाजो-
गेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहि-
वत्तियागारेणं वोसिरे ॥

॥ अथ चउविहारनुं ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चस्काइ चउद्विहंपि आहारं असणं
गाणं खाईमं साईमं अन्नढणाजोगेणं सहसागारेणं मह-
त्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥

अथ त्रिविहारनु ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चरकाइ त्रिविहंपि आहारं असा
खाइम साइमं अन्नञ्जणाजोगेण सहसागारेण महत्तरा
गारेण सबसमाहिवत्तियागारेण वोसिरे ॥

॥ अथ दुविहारनु ॥

॥ दिवसचरिम पञ्चरकाइ दुविहंपि आहारं असा
खाइमं अन्नञ्जणाजोगेणं सहसागारेण महत्तरागारेण
सबसमाहिवत्तियागारेण वोसिरे ॥

॥ अथ पञ्चक्खाणना आगारनी गाथा ॥

॥ दो चेव नमुक्कारे, आगारा ठञ्चेव पोरिसिए ॥ सत्ते
व य पुरिमहे, एकासङ्गंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्तेगठाणेह
अ, अठेव य अविलंमि आगारा ॥ पचेव य जत्तठे
ठप्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २ ॥ पचचउरो अज्जिग्गहे
निवीए अठ नव आगारा ॥ अप्पोउरणे पंच चउ, ह
वति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥

॥ ह्ये छ प्रकारे पञ्चक्खाण श्रुद्ध थाय छे ते गाथा ॥

॥ फासिअं पाळिअं सोहिअं, तीरिअं किट्ठिअं आरा
हिअं ॥ ज च न आराहिअं, तस्स मिहामि पुक्कमं ॥ १ ॥



॥ एकादश स्वरु ॥

॥ श्रीशांतिनाथाय नमः ॥

॥ श्रीनेमनाथ स्वामीनो शलोको प्रारंभः ॥

॥ सिद्धि बुद्धि दाता ब्रह्मानी बेटी, बालकुंवारी
वेद्यानी पेटी ॥ हंसवाहनी जगमां विख्याता, अक्षर आ-
गेने सरसती माता ॥ १ ॥ नेमजी केरो कहेशुं शलोको,
एक मनथी सांजलजो लोको ॥ जंबुद्वीपना चरतमां
जाणुं, नगर सौरीपुर सरग समाणुं ॥ २ ॥ चहुटां चो-
राशी वारे दरवाजा, राज्य करे तिहां यदुवंशी राजा ॥
समुद्रविजयघर शिवादेवी राणी, शीयले सीता ने रूपे
इंद्राणी ॥ ३ ॥ तेह तणी जे कुखे अवतरीया, सहस
अठोत्तर लक्षणे चरीया ॥ खारो खाटो ने मीठो जे
आहार, गर्जने हेते कीधो परिहार ॥ ४ ॥ घोर घटा ने
अलधर गाजे, सजल लीलांबर पुहवी विराजे ॥ बा-
हिल दलमां वीज ऊबूके, क्षण क्षण अंतर मेह टहूके
॥ ५ ॥ पूरण नदीए आव्यां ठे पूर, पूरण पुहवी पसरथा
अंकुर ॥ श्रुतु मनोहर दापुर रहके चर्यां सरोवर ल-
हरे ते लहके ॥ ६ ॥ ठवी हरियांनी अजब ठवीली,

नीले आचरणे धरती रंगीली ॥ राग मल्हारनी कृ
 त्तलेरी, अजुआली पांचम श्रावण केरी ॥ ७ ॥ पू
 रण पसखो पावसकाल, पूरण पुहवी पसखो सुगाल
 मध्यरात ने पूरण मासे, नेमजी जनम्या राज आवासे
 ॥ ७ ॥ चौसठ इंद्र ने ठप्पन कुमारी, ओह्व करी ने गय
 निज ठारी ॥ थयो परजात रात विहाइ, दासीए जइने
 दीधी वधाइ ॥ ८ ॥ दूर ते कीधु दासी आचरण, अ
 नेक आप्यां वस्त्र आचरण ॥ सोवन थाइ मांहे रूपैया
 सवा लाख ते आप्या सोनैया ॥ १० ॥ अति आनंद
 पाम्यो नरेश, राजसजामां कीधो प्रवेश ॥ पुत्र जन्म्यार्न
 नोवत वाजी, नादे ते रहु अंवर गाजी ॥ ११ ॥ वत्रीइ
 वद्ध तिहां नाटिक थाय, घेर घेर कुकुम हाथ देवाय
 ॥ दान याचकने दीधां अठेह, जाणे के बुछा उत्तर मेह
 ॥ १२ ॥ तोरण वांध्यां घर घर वार, घर घर गाये मंगल
 चार ॥ वार दिवस लगे ओह्व कीधो, लखमी तणो त्या
 लाहोज लीधो ॥ १३ ॥ अरथ गरथना खरच्या चंमार
 नाम ते ठव्यु नेमकुमार ॥ दिन दिन वाधे चडवत्
 तो, केरुने लंके केशरी जीत्यो ॥ १४ ॥ त्रिवली देखी
 ने त्रिजुवन मोहे, गंगा जमुना ने सरसती सोहे ॥ नास

निरुपम दीपशिखा शी, नयण पंकज पत्र प्रकाशी
 ॥ १५ ॥ मुद्गथी बोले असीरस वाणी, मन मांहे हरखे
 शिवादेवी राणी ॥ वाललीलासां बुद्धिजंकार, देखीने
 मोहे सुर नर नार ॥ १६ ॥ एक दिन नेमजी वजार
 मांहे, नगरीना ख्याल जुवे उवाहे ॥ कृष्ण तणी जिहां
 आयुधशोला, तिहां कणे पोहोता दीनदयाला ॥ १७ ॥
 शंख चक्र ने धनुष उदार, कोदंरुताणीने कीधो टंकार ॥
 जलता सेवक इणी परे बोले, गोविंद विना ए चक्र
 न कोले ॥ १८ ॥ टची आंगुलीए चक्र उपाड्युं, चाक
 तणी परे जलुं जमाक्युं ॥ अर्चक उजा इणी परे
 जोखे, शंख न वाजे कृष्णजी पाखे ॥ १९ ॥ हलवेशुं
 जेइ शंख बजायो, साते पाताले सरगे सुणायो ॥ शेष स-
 नसलीया धरा तिहां धमकी, जरखे वेठी कामनी ऊबकी
 ॥ २० ॥ हवक लागी ने हार तिहां त्रुदया, कंचूक तणा बंध
 विबूदया ॥ समुद्र जलहलीया चढीयोकहोले, कायर कंपे
 ति कुंगरा कोले ॥ २१ ॥ हाथी हवक्या ने ऊबक्या
 जुंजार ॥ तेजी त्राठा ने करथा दिक्पाल ॥ पवन थं-
 न्यो ने धरती घेराइ, कृष्णजी कहे सुणो बलजद्र जाइ
 ॥ २२ ॥ कोइक नवो ते वेरी अवतरीयो, महोटो बल-

वंत महुर जरीयो ॥ नादे अनहद अवर गाजे, एहव
 ते शख केणे न वाजे ॥ १३ ॥ त्रिचुवन मांहे कोड
 सुजे, चक्री वारे इंद्र अलूजे ॥ जडुनाथने थड
 जाण, वात सुणीने थया हेगण ॥ १४ ॥ धूजे नूध
 चिते मन मांय, राजकाज ते मेढ्यां कहेवाय ॥ सुगुण
 सोजागी साहसिक शूरो, एके वाते ए नही अधूरो ।
 १५ ॥ ॥ मुजथी वलीयो महावलधारी, महांटे सोसे
 ते पड्यो मोरारी ॥ वली वली मनमां चिते वनमाली
 राज्य अमारुं लेशे उलाली ॥ १६ ॥ इणे अवसरे नेम
 कुमा, मलपता आव्या सत्ता मजार ॥ आघा आवोजी
 आदर दीधो, सत्ता सहु कोड परणाम कीधो ॥ १७ ।
 पाणी पसारी शारंगपाणि, मुहथी वोढ्या ते एहवी वा
 णी ॥ आज परखीए वल लुमारो, नेम नमावो हाथ
 अमारो ॥ १८ ॥ काची कांव जिम कणयर केरी, कमल
 तणी परे वाढ्यो कर फेरी ॥ नेमजी रह्या वाह पसारी।
 जाणे हिमोले हिचे गिरिधारी ॥ १९ ॥ विठल मनमां
 जुवे विचारी, एह कुवारो बालब्रह्मचारी ॥ इम चिंती
 ने नारी हकारी, ठांटे नेमने वांहे पसारी ॥ २० ॥ जरी
 खंमोखली केशर कुंकुमे, गोपी दीयरशु रमत रमे ॥

सत्यजामा ने रुक्मिणी राणी, कहे नेमने एहवी ते
 वाणी ॥ ३१ ॥ परणो राजुल रूपे रढीआली, नारी विना
 ते नर कहीए हावी ॥ नारीनो रस ते महोटो संसार,
 नारी ते अठे नरनो आधार ॥ ३२ ॥ पुरुषनी पासे जो
 न होय नारी, वस्तु न धीरे कोइ व्यापारी ॥ नारी ते
 छे रतननी खाण, घरणी वडे ते घरनुं मंमाण ॥ ३३ ॥
 मुसकीशुं बोले गोविंदराणी, वत्रीश सहस्स ठे वकी
 जेठाणी ॥ पाये परुबुं ते दोहेबुं जाणी, ते माटे तमे
 नाणी देराणी ॥ ३४ ॥ जेहशुं अपूरव प्रीत बंधाणी,
 आज ते हवे केम रहीए ताणी ॥ फरी उत्तर नेमे न
 कीधो, मान्यो मान्योजी सहू कोणे कीधो ॥ ३५ ॥ बोल
 होदया ने कीधी सगाइ, लीधां लग्न ने करी सजाइ ॥
 छप्पन कुल कोनी जादव मलीया, तूरने नादे समुद्र
 जलहलीयो ॥ ३६ ॥ चढी जान ने वाजित्र वाजे, जाणे
 आषाढो जलधर गाजे ॥ जुगते करीने जादव चढीया,
 अथम घाव नगारे पनीया ॥ ३७ ॥ मयगल माताने
 परवत काला, लाख बेंताली सबल सुंढालो ॥ ठाके
 अक्या ने मदे जरंता, मूके सारसी चाले मलपंता ॥
 ३८ ॥ लाख बेंतालीश तेजी पाखरीया, उपर असवार

सोहे केशरीया ॥ अढी कढी ने पचकट्याणा, पूंठे पोढ
 ने पुरुष सवाणा ॥ ३९ ॥ सम गते चाखे ने चक्र रहंता
 चचल चपल ने चरणे नाचंता ॥ साज सोनेरी सोढे
 केकोण, लाख वेतालीश वाजे निशाण ॥ ४० ॥ लाख
 वेतालीश रथ जोतरीया, कोमी अरुतालीश पाला प
 रवरीया ॥ नेजा पचरंगी पच क्रोरु जाणुं, अढी लाख
 ते दीवीधर वखाणुं ॥ ४१ ॥ सोहे राजेद्र सोल हजार
 एकसो एशी वली साथे सूहार ॥ साथे सेजवाला पंच
 लाख वारु, मांहे सुदरी वेठी देदारु ॥ ४२ ॥ शैठ से
 नापति साथे परधान, जली जातशुं चाली हवे जान
 ॥ वंडुकनी धूमे सूर ठिपायो, रजमंवरे अंवर ठाये
 ॥ ४३ ॥ धवलमंगल गाये जानरुमी, जाणे सरसतीर्न
 वीणा रणजणी ॥ वागे केशरीए वरघोडे चढीया, काने
 कुंमल हीरे ते जमीया ॥ ४४ ॥ ठत्र चामर मुकुट वि
 राजे, रूप देखीने रतिपति लाजे ॥ जान लडने जादव
 सधाव्या, उग्रसेनने तोरणे आव्या ॥ ४५ ॥ देखी रा
 जुल मनमां उद्धसे, चंदर देखी जेम समुद्र उधसे ।
 घणा दिवसनी राजुल तरसी, सजी शणगार जुड् आ
 रसी ॥ ४६ ॥ अंजन अजित आंखो अणीआली, वेण

सरली ते सापण काली, शीश फूल ने संथे सिंदूर,
 भयण राजानुं पसरयुं ठे पूर ॥ ४७ ॥ गात्रे गोरी ने
 फाल ऊबूके, मदन्नर माती ने नजर न चूके ॥ नासा
 निर्मल अधर परवाली, केडे थोमी ने घणी सुकुमाली
 ॥ ४८ ॥ न्रूषण न्रूषित सुंदर रूप, मुख पूनम चंद अ-
 नूप ॥ रुमा रूपाला कुच उत्तंग, कणसे कसीने कीधा
 ठे तंग ॥ ४९ ॥ हैये लाखीणो नवसर हार, चरणे
 कांऊर रणजणकार ॥ सजी शिणगार उन्नी जरुखे,
 निरखी नेमने मन मांहे हरखे ॥ ५० ॥ महोटा भंरु-
 यनी रचना अति रुमी, गाजे वाजित्र उठले गूमी ॥
 लुंगल जेरी ने वाजे नफेरी, जुए राजुल नेमने हेरी ॥
 ५१ ॥ गोंखे चढीने राजुल जाखे, दिवस दोहिला गया
 लुम पाखे ॥ कंत तें कांइ कामण कीधु, मन माहंरुं
 ज्जलाली लीधुं ॥ ५२ ॥ आज फरके ठे जिमणुं रे अंग,
 खही ए थारो रंगमां जंग ॥ कहे राजुल सुणो साहेली,
 खे जोदव जाये मुज मेली ॥ ५३ ॥ पशु पेखीने पायो
 वैराग, मुगतिरमणीशुं कीधो ठे रांग ॥ नेमजी पूरवनी
 श्रीत पालीजे, एम ठटकीने ठेह न दीजे ॥ ५४ ॥ मु-
 श्हातिमंदिरमां आव्रजो मलशुं, सदां सरवदां रमत रमशुं

॥ दान संवहरी जिनवरे दीधुं, नेम राजुळे संजम लीधुं
 ॥ ५५ ॥ पूरवनी प्रीत अविहल पाली, पहोता मुग
 तिमां करम प्रजाली ॥ वेगे विरहनी वेदना टाळी
 शिवमदिरमां जाजो संजाली ॥ ५६ ॥ गील पाळे उ
 च्चतुर सुजाण, नामे तेहने क्रोरु कढ्याण ॥ उदयर
 कवि इणी परे बोळे, कोड न आवे श्रीनेमनाथने तोळे
 ॥ ५७ ॥ इति श्रीनेमजीनो शलोको संपूर्ण. ॥

॥ श्रीशालिभद्रशाहनो शलोको प्रारम्भ ॥

॥ मरसती माता करीने पसाउ, पासजी केरा प्र
 णमु हुं पोउ ॥ शालिभद्रशाहनो कहु शलोको, लां
 जाणीने सांचलजो लोको ॥ १ ॥ नगर राजगृहे श्रेणिव
 राजा, मगध देशनो एक महाराजा ॥ रुमी तेहने ते
 चेलणा राणी, जगमां जेहनी कीरति जाणी ॥ २ ॥
 तेह नगरीमां दामे ठे ताजो, शेठ गौजद्र महोटो म
 लाजो ॥ जद्रा नामे ठे चार्या तेहने, जांतां शीले व
 जीते न जेहने ॥ ३ ॥ देइ मुनिवरने खीरनु दान, स
 गम गोवालो जाग्यनिधान ॥ आवी जद्रानी कुखे उ
 च्चतरीयो, जाणे मुक्ताफल ठीपे संचरिउ ॥ ४ ॥ पूर्ण मा
 प्रसव्यो ते पुत्र, सघळु गोचाव्युं घरनुं सूत्र ॥ अने

घरनां अख्याणां आवे, वारु मोतीए सहु वधावे ॥ ५ ॥
 थोके थोके तिहां नाटिक थाय, माना हैयामां हरख न
 माय ॥ पिता आपे तिहां लाख पसाय, याचक जननां
 दारिद्र जाय ॥ ६ करी उठव शालिकुमार, जनके नाम
 त्यां धरुं जयकार ॥ दिन दिन चढते वेशे ते दीपे, रूपे
 जि रतिना नाथने जीपे ॥ ७ ॥ बापे परणावो वत्रीश
 आला, आपे संयम लइ उजमाला ॥ पहातो स्वर्गमां
 पुण्य पसाये, अवधि प्रयुंजी जोतां उठाहे ॥ ८ ॥ पेखी
 पुत्रने प्रेमे जरायो, स्नेह पूर्वनो वध्यो न समायो ॥
 मोहनो बांध्यो ते भानने मेटी, पितो पठावो तेत्रीश
 धेटी ॥ ९ ॥ जोइए जेह जेह नोग सजाइ, ते तो मो-
 कले सुर ते सदाइ ॥ मेवा मीठाइ माणिक मोती, एक
 शकथी अधिक उद्योती ॥ १० ॥ नित्य नित्य नवला
 मेहे ते पूरे, हेते करीने रहे हजूरे ॥ उपे मंदिर कुंची
 धरवाले, खिलमां कस्तुरी वहे जिहां खाले ॥ ११ ॥
 भूषण निर्मादये जराये कूवो, युगति वैजवनी नवली
 जूठ ॥ नोगी शालिचद्र सरिखो नूपृष्टे, नर जोतां
 नु नावे को दृष्टे ॥ १२ ॥ ताजी ठकुराइ जाणीने तेहवे,
 शकंवलना वेपारी एहवे ॥ श्रेणिक राजाने दरबारे

आव्या, फेरो पड्यो ने कांइ न फाव्या ॥ १३ ॥ सघटे
 शहेरे ते घर घर फरीया, कवल कोणे ते हाथे न धरीय
 ॥ रत्नकवल सोले ते लीए, जडा बहुरोने वेचीने दीप
 ॥ १४ ॥ वीश लाख त्यां सोनैया वारु, दीधा गणीने
 तेहने दीदारु ॥ लड सोनैया वेपारी वलीया, मनन
 मनोरथ तेहना फलीया ॥ १५ ॥ चेलणा राणीनी चित्त
 जाणीने, तेनी व्यापारी कहे ताणीने ॥ करी सपामा
 कवल काजे, श्रेणिक राजा जरी समाजे ॥ १६ ॥ नृ
 पने व्यापारी कहे शिर नामी, शाने सपामा करो ब
 स्वामी ॥ कवल मोले ते जडाए लीधां, वेगे वीश लाख
 दीनार दीधां ॥ १७ ॥ मनमां विचाखु श्रेणिक महा
 राजे, वाणीये लीधां व्यापार काजे ॥ एम चित्तीने एव
 मगावे, खाले नाख्यो ते खवर पावे ॥ १८ ॥ वात मोहो
 लमां तेह वंचाणी, कहे राजाने चेलणा राणी ॥ इह
 तेनी ते वणिक अनूप, जोइए कहेवुं ठे तेहनुं रूप
 १९ ॥ तुरत महाराजा तेहने तेमावे, जेट लडने जड
 तिहां आवे ॥ जडा आवीने नूपने जाखे, स्वामी सा
 जलो राणीनी साखे ॥ २० ॥ घणुं सुहालो शालिकुमा
 हर्म्य थाये ए कोश हजार ॥ न लहे रात दिवस नृ

किहां उगे किहां आथमे सूर ॥ ११ ॥ निपट नाजुक
 तेह न्हानकीउं, क्यारे केहनी नजरे न पकीयो ॥
 साटे तसो लाज वधारो, प्रभुजी अमारे मंदिर प-
 पारो ॥ १२ ॥ पूरे सावित्र ठोरुनां लारु, स्वामी तेमां
 जो पारु सपारु ॥ इम सुणीने श्रेणिक गाय, प्रधान
 नाहमुं जोयुं ते ठाय ॥ १३ ॥ अन्नयकुमार तव कहे
 इम, प्रभु तुम घरे आवशे प्रेम ॥ चद्रा चूपने पाय
 सागीने, सात दिवसनी अवध सागीने ॥ १४ ॥ शीख
 जइने चद्रा सधावी, रुकी मोहोलनी रचना रचावी ॥
 परिकर लेइने नृप चंचसार, पहोता शालिचद्र शेठने
 पार ॥ १५ ॥ वेगे आगलथी चाह्या वधाउ, खरी जाखे
 खबर अगाउ ॥ जोपे जमाकी हरख उपाइ, वारु तेहने
 हीधी वधाइ ॥ १६ ॥ महोलनी रचना जोतां महाराय,
 अचरिज पामीने मनगुं अकलाय ॥ अहो अहो हुं शुं
 अमरापुर आयो, चांतिण चूटयो ने जेद न पायो ॥
 १७ ॥ जिम तिम करीने वीजी चुंड जाय, त्रीजे माखे
 जो दिग्मूढ थाय ॥ जोये उंचुं ते नयणने जोकी, जाणे
 उग्या सूरज कोकी ॥ १८ ॥ सहु साथने वेसाकी
 तिहां, चद्रा जइ चाखे पुत्र ठे जिहां ॥ श्रेणिक आह्या

ठे महोल मजारी वेगे तिहां आवो तजीने नारी ॥
 ३० ॥ गेले गुमानी कहे ते गाजी, मुजने तमे गुं पूट
 ठो माजी ॥ श्रेणिक लइने वखारे जरो, लाजे लो
 वली दीयोने वरो ॥ ३० ॥ तिहांरे माता कहे न लवे
 तुं टाणुं, सुतजी श्रेणिक नही करियाणुं ॥ मगध देशने
 मोटो ठे राय, आण एहनी लोपी न जाय ॥ ३१ ॥
 एहवुं सुणीने कुमार आलोचे, सांसे पड्यो ते मन मां
 शेचे ॥ माहरे माथे पण जो ठे महाराजा, तजशु ल
 सही जोग ए ताजा ॥ ३२ ॥ एम चितीने मुजरो
 आयो नृपने नमीने महोल सधायो ॥ जोजन करी
 श्रेणिक चूप, कोडे घरेणांनो जोइने रूप ॥ ३३ ॥ मा
 गालीने मंदिर गयो, शेठ सयमनो रागी ते थयो
 नित्ये एकेकी परिहरी नारी, प्रेमदा सासुने जइ पे
 कारी ॥ ३४ ॥ मानी महिलाना सुणी विलाप, जो
 तेणे त्यां दीधो जवाप ॥ गगे रमणीने रेख न खलीयो
 जोजो धन्नो हवे केइ परे मलीयो ॥ ३५ ॥ नाम सु
 जडा धन्ना घरे जाणुं, शालिजडनी वहिन वखाणुं ॥
 वेणी स्वामीनी समारे साही, तेणे अवसरे सांनग
 जाइ ॥ ३६ ॥ आंखे आंसुकां आव्यां ते सांसे, पड्य

वेबूटी पीउने वांसे ॥ धन्नो देग्नीने पूठे ते धीर, न-
 णे वबूटां कहो केम नीर ॥ ३७ ॥ दीसे आज तुं घणुं
 देलगीर, शालिजद्र सरखो ताहरे ठे वीर ॥ वनिता
 प्राठमां मुजने तुं वहाली, चोफेर आंसुनी धारो किम
 गली ॥ ३८ ॥ बलती बोली ते मेहेली निसासो, तुमे
 सांचलो एक तमासो ॥ आव्यो श्रेणिक तिहांथी निर-
 णारी, बंधव तजे ठे एकेकी नारी ॥ ३९ ॥ वत्रीश द-
 डाडे वत्रीशे तजशे, पठी सांधुना पंथने जजशे ॥ लोच
 करशे ते सांचरी वेण, आंखो जराणी आंसुए तेण ॥
 ४० ॥ धन्नो बोले तव साहस धीर, ताहरे शालिजद्र
 एकज वीर ॥ तेणे खरखरो ए नहीं खोटो, पण तुज
 सांधव कायर महोटो ॥ ४१ ॥ जैरव जाप तो खसती
 जी जखी, लेवी दीक्षा तो ढोल न करवी ॥ एम सुणीने
 अबला ते जंपे, स्वामी कायर ते वाणीयो कंपे ॥ ४२ ॥
 एण तुमे तो शूरा पूरा ठो, पग रखे हवे मांफोजी पाठो ॥
 कामनी तजवानो कहो ठो जो ठाठ, एक वारे तो तजो
 आठ ॥ ४३ ॥ स्वामी संयमनी वात ठे सहेली, दु-
 कर आदरतां खरी ठे दोहेली ॥ शीख देवाने सहु सज्ज
 धाय, तुमने वंडु जो त्रीयां तजोय ॥ ४४ ॥ जारे जाइनुं

ताणी ते पासुं, हलवो पारुवा कीधुं जो हांसु ॥ तं
 में आठेने मेली जलाली, वचन म कहेशो कामनी वा
 हाली ॥ ४५ ॥ पीउजी हसतां मे एहवुं ए जाख्युं, तुम्
 हेयामां गांठीने राख्युं ॥ दिल खेंचीने ठेह न दीजे, अ
 वला जातिनो अंत न लीजे ॥ ४६ ॥ तरुणी हसतां इ
 तमे तो कह्यु, पण अमे तो साचुं सद्दह्यु ॥ साची वहेन
 तुं शालिजद्र केरी, फोकट वचन म कहेशो हवे फेरि
 ॥ ४७ ॥ संजम खेवाने ते सज्जा थड, धन्ने शालिजद्र
 बोलाव्यो जड ॥ उठ आलसु हुं थयो आगे, महावीर पारु
 जड महाअंत सागे ॥ ४८ ॥ धन्ने शालिजद्र संयमधारी,
 थया विषयनी वासना वारी ॥ जद्रा पुत्रने बोलावी र
 लीयां, बहुयर लेठने मंदिर वलीयां ॥ ४९ ॥ वीर साधे
 ते देश विदेशे, विचरे वैरागी साधु सुवेपे ॥ तप करीने
 दुर्धल तने, वार वरपने अते ते वन्ने ॥ ५० ॥ आव्य
 राजगृही नयरी उद्याने, मास उपवासी वधते ते वाने
 आहारने काजे वीर आदेशे, पहोता जद्राने तेह नि
 वेजे ॥ ५१ ॥ आंगण आव्या पण उंलख्या नांही, न
 र्कण पाठा वलीने उठाही ॥ बीजी वारना पहोता
 चारे, तोपण केणे न उंलख्या नारे ॥ ५२ ॥ पाठा वली

रहे ठे वाटे, मन्नी मन्नीयारी माथे लइने मांटे ॥ दर्हीं
 गोहोरीने तेहने हाथे, मुनिवर विमासे ते मन साथे ॥
 ५३ ॥ वचन वीरनुं अलिक न थाय, जो आ जगती
 करी मंकाय ॥ महारी माताने बांऊणी जाणो, आज
 मले ठे एह उखाणो ॥ ५४ ॥ जिननी पासे जइ पूठे ते
 महवे, वीरे आगलथी बोलाव्या तेहवे ॥ सुणो शालिचद्र
 आधु तमारी, मात पूरवनी एह मन्नीयारी ॥ ५५ ॥
 वुं सांचलतां आव्यो वैराग, अणसण लेवानो
 थयो तिहां राग ॥ गिरि वैजारे गुरुने आदेशे, लइ
 अणसण पाले विशेषे ॥ ५६ ॥ आवी चद्रा तिहां
 आंसुकां जरती, विधविध जातिना विलाप करती ॥
 साथे लीधी ठे बहुयर सघली, दुःखे टली ठे तेहनी
 गली ॥ ५७ ॥ शिला उपरे देखी संधारो, नयणे वि-
 च्छटी नीरनी धारो ॥ चद्रा जाखे ठे पुत्र हुं चूंकी, हेंये
 नीने दुःखनी तुं हुंकी ॥ ५८ ॥ सुत पेटनुं पापणीए
 ही, आंगण आव्यो पण उलख्यो नहीं ॥ हा हा मु-
 ने ए पड्यो वरांसो, सारो अवतार रहेशे ए सांसो
 ५९ ॥ हा हा हाथे में आहार न दीधो, आव्यो अव-
 र अफलज कीधो ॥ चद्रा पुत्रने एवुं त्यां जाखे,

कांड विसारथा अवगुण पाखे ॥ ६० ॥ तुज विना तं
 सूना आवास, अमने थाय ठे घनी ठ मास ॥ हर्स
 बोले जो वचन विचार, अमने सही तो थाये करार ॥ ६१ ॥
 माता जाणीने जुठ जो साहमु, पुत्र तिहारे हुं संतोष
 पामु ॥ शालिजदने धन्नो वारे ठे, ए तो आपणने पाप
 जरे ठे ॥ ६२ ॥ साहमु जोशो तो अवतार करशो प
 रशो फंदमां पाठा जो फरशो ॥ दिवशुं माताने दिव
 गीर देखी, साधु धन्नानी शिख उवेखी ॥ ६३ ॥ जो
 शालिजद्रे आंख उघाकी, त्यारे रलीयात थडने मार्ग
 ॥ अंशुक वडे ते आंसुमां लहोती, वंदी बहुअरशु सं
 दिर पहोती ॥ ६४ ॥ धन्नो पाधरो मुगते गयो, ए
 अवतारी शालिजद्रे थयो ॥ पहोतो सर्वार्थसिद्ध विमाने
 सेवक स्वामीपणु नथी जे थाने ॥ ६५ ॥ संवत् सत्तर
 सित्तेरा वरपे, मागशिर शुदि तेरशे हरपे ॥ उदयर
 कहे आद्रज मांहे, एह शलोको गायो उहाहे ॥ ६६ ॥
 इति श्रीशालिजद्रे शलोको संपूर्ण. ॥

॥ अथ श्रीभरत बाहुबलनो शलोको प्रारभः ॥

॥ प्रथम प्रणमुं माता ब्रह्माणी, तूठी आपे जे ३
 विगल बाणी ॥ जरत बाहुल जाडसजोडे, कहीशुं ३

गोको मनने कोडे ॥ १ ॥ नाजी राजाने कुल नगीनी,
 अथम तीर्थकर कृपत उपनो ॥ सो पुत्र तेहना समरथ
 नाणुं, जरत वाहुवल जला वखाणुं ॥ २ ॥ आयुध-
 शालाए चक्र उपनुं, मन ते हरखीयुं जरत जूपनुं ॥
 चक्र पूजीने करी चढाइ, दीधा देरा ते जंगलमां जाइ
 ॥ ३ ॥ सैन्या लइने सबल दीवाजे, विविध जात तिहां
 एतूर वाजे ॥ चक्र अतुलबल आकाशे हाले, जरत सै-
 न्याशुं पुंठे ते चाले ॥ ४ ॥ पूरव आदिने उत्तर अंते,
 आण मनावी चक्री चलवंते ॥ साध्या षट् खंरु कमल अ-
 षार, वरष ते वोढ्यां साठ हजार ॥ ५ ॥ गंगा सिंधुने साधी
 भरिता, पढी मलेठना देश ते जीत्या ॥ सेना लेइने
 जरत सधाव्या, साधी षट् खंरु अयोध्याए आव्या ॥ ६ ॥
 गरीनां लोक सामां ते आवे, मोतीए थाल जरीने
 धावे ॥ वाजे वाजित्र जंगल जेरी, शेरीए फूलकां नाखे
 वेरी ॥ ७ ॥ याचकजन तो कीरति बोले, कोइ न
 आवे श्री जरतने तोले ॥ दिन दिन दोलत वाधे स-
 षाइ, बीजानी नहीं तेवी अधिकाइ ॥ ८ ॥ अनुक्रमे कीधो
 गरप्रवेश, चक्रनो उठव मांड्यो नरेश ॥ चक्र ते रह्युं
 आकाशे जमे, आयुधशालाए आवे नहीं किमे ॥ ९ ॥

सहु भलीने मनमां विमासे, शामाटे रहु चक्र आकाशे ।
 सुणो साहिव कहे सेनानी, जाइ तुमारो एक गुमाने ।
 ॥ १० ॥ वाहुवल नामे महावलधारी, तेह न माने आण
 तुमारी ॥ हठ मांकीने रह्यो हठीलो, ठत्रपति ठोगात्र
 ठेज ठवीलो ॥ ११ ॥ अवलो ने ए महा अजिमांनी, सेव
 कीथी ठे पहेला साधुनी ॥ अजित अतुलवल तेणे
 वलीयो, जालम जोड्यो संग्रामे कलीठ ॥ १२ ॥ अनम
 से केहनी आण न माने, प्राक्रमे पूरो प्रजाने पाले
 एहवी ते सुणी वात अद्वजुत, लेख लखीने मोरुदय
 दूत ॥ १३ ॥ दूत तेहवे जरत आदेशे, वेगे ते पोहोत
 वाहुवल देशे ॥ कागल आपीने कहे कर जोमी, वे
 तेड्या ठे चालो तेणे दोमी, ॥ १४ ॥ कागल वांचीने चञ्च
 ते क्रोध, दूत प्रत्ये कहे वचन विरोध ॥ कुण जरत ते
 ठे असने, नथी उलखता पूठुठु तमने ॥ १५ ॥ दूत क
 ठे जाइ तुमारो, जरत चक्रवर्ती साहेव हमारो ॥ आ
 धगालाए चक्रन आवे, तेणे करीने तमने बोलावे ॥ १६
 करी असवारी वेगे सधावो, तिहां आवीने शीश नमा
 ॥ नावो तो करो युद्ध सजाइ, मांहीमांहे मली समजो
 जाइ ॥ १७ ॥ जरत चक्रवर्ती पट खंन चोगी, अ

सहुना रह्यो आरोगी ॥ ते आगल शुं गजुं तमारुं, ते माटे
 कहुं मानो अमारुं ॥ १७ ॥ इम निसुणी वाहुवल
 कंफे, मुज आगे तो त्रिभुवन कंफे ॥ चढ्यो क्रोध ने
 इंतज करडे, होठ करडे ने मूठज मरडे ॥ १८ ॥ एह्वो
 ते कुण झूट्यो ठे ज्ञारी, जेह तकोवकी करे हमारी
 ॥ कहे वाहुवल चढावो रीस, करुं युद्ध पण न नामुं
 शीश ॥ १९ ॥ वेगे खीजीने झूत ते वलीयो, अनु-
 क्रमे जरतने आवी ते मलीयो ॥ जरतने जइ झूत
 ते जाखे, आण न माने कटकाइ पाखे ॥ २० ॥
 सुणी वातने मानी ते साची, चढाइ करवा जेरी ते
 धाजी ॥ हाथी घोडा ने रथ निशाण, लाख चोराशी
 जेहनुं परिमाण ॥ २१ ॥ रथ लइने शस्त्र ते जरीयां,
 धवला धोरीका धिंग जोतरीया ॥ साथे ठन्नु कोरु पोला
 परवरीया, नेजा पचरंगी दश कोरु धरीया ॥ २२ ॥ पूरा
 पांच लाख दीवी धरनार, महीयति मुगटाला बत्रीश
 हजार ॥ शेष तुरंगम कोरु अढार, साथे व्यापारी संख
 न पार ॥ २३ ॥ सवा कोरु ते साथे परधान, महोटी
 मालनुं तेर लाख मान ॥ साथे रसोइआ सहस बत्रीश,
 लइकर लइने जरत चक्रीश ॥ २४ ॥ लइकर लइने चक्रवर्ती

चढीयो, साहमो आधीने बाहुवल अकीर्ण ॥ तेना क
 टकनो पार न जाणुं, यमरूपी ते योद्धा वखाणुं ॥ २६ ॥
 निशाणे घात्रा देइ परवरीयो, सैन्य लडने साहमे
 उत्तरीओ ॥ कहे बाहुवल भरतने जइ, ताहरी ते
 शुद्ध गामाटे गइ ॥ २७ ॥ सगा जाइजुं एम न कीजे
 रिद्धि पामीने ठेह न दीजे ॥ जाते दहाडे जोने वि
 मासी, पर पोतानो न होवे सहवासी ॥ २८ ॥ अंग
 विना त मांग न वाजे, चाफुते राखी जीम न चांजे
 ॥ घर नवसें पुत्र पीवारे, सुख न लहीए जूत हियारे
 ॥ २९ ॥ ते तो अवगण्या जाइ अछाणुं, यति थय
 तजी ते आणु ॥ ताते लोकीयो तुजने विचारी, तेणे
 ते लीधु संयम जारी ॥ ३० ॥ तोहरे पापे ते नासो ने
 वृटा, घणुं अघटतु कीधु तें जूठा ॥ करतुक ताहर
 कहेतां हु लाजुं, मुज वडे तुं पट्ट खंम गांजुं ॥ ३१ ॥
 तुजने जोड नजरे जो फेरी, वार न लागे नाखतां
 ॥ फूल दको लइ कोमल हाथे, वढवुं सोहेलु चू
 साथे ॥ ३२ ॥ ए नहीं एहवा ठाकम ठोला, चाह
 चित्तथ्री जूत म जोला ॥ हाक माहं तो पर्वत फा
 लाज राखु तु वधव माटे ॥ ३३ ॥ टची आंगल

मरुने तोड़ुं, ताहरो कटक लइ समुद्रमां बोलुं ॥ पण
 राखुं बुं लाज पितानी, वात बली कहुं बालपणानी ॥
 ३४ ॥ गगने उठाव्यो गिंटुक रीते, पाठो पकतो तुं
 यो सें प्रीते ॥ चरणे जालीने फेरव्यो तुजने, पवने
 जेस फरे देउल ध्वजनी ॥ ३५ ॥ बली फेरव्यो पावक
 नसे, जिस नल राजने जूवटे जगसे ॥ बालपणाने रुमां
 मंचारी, गर्व ते करजो पठी विचारी ॥ ३६ ॥ चरत
 मंचलजे साचुं हुं चाखुं, हवे केहनी लाज न राखुं ॥
 बालपणानी रमत नाठी, हवे वांधी ठे वाकरी काठी
 ३७ एम कहीने रणवट रसीयो, धनुष लइने साहमो
 धसीयो ॥ उमव्यो धूमामो प्रगटी जाल, बाहुबले
 तेहां जाली करवाल ॥ ३७ ॥ वांधी हथियार साहमो
 आव्यो, प्रथम तुंकारे चरत बोलाव्यो ॥ कांइ ह-
 आवे सुजटनी घाटा, आपण कीजे युद्ध वे काटा ॥
 ३८ ॥ कोइ बीजानुं इहां नहीं काम, फोकट बीजानां
 मोको कां ठाम, ॥ चढीए आपणे अवधज राखी, सुर
 र कोमि कख्या तिहां साखी ॥ ४० ॥ बेहुने शरीरे
 ह्या बेहु पासा, तिहां सुर नर जोवे तमासा ॥ चरत
 बाहुबल अधिक दीवाजे, बेहुने शिर ठत्र बिराजे ॥ ४१ ॥

चरत वाहुवल सामा वे चाड, शशी रवि सरिख
 रहे थिर थाड ॥ निरखी सुर नर रहे सहु अलगा
 दृष्टियुद्धमां प्रथमज वलगा ॥ ४२ ॥ नयणांशुं नयण
 मेलीने जूए, चरतनी आंखे आंशुं ते चूए ॥ जिम चा
 दरवे जलधर धारा, जाणे के त्रटा मोतीना हारा ॥ ४३ ॥
 हायों चरत ने वाहुवल जीयो, त्रिभुवन मांहे थयो
 वदितो ॥ बोले वाहुवन बंधव प्रीते, वीजु युद्ध कीजे
 शास्त्रनी रीते ॥ ४४ ॥ तरहरि नाद चरते तिहां कीधो
 शब्द ते सघले थयो प्रसिद्धो ॥ रणनी चूमि लगे रह्यो
 ते गाजी, गयवर गहगह्या हणहणयो वाजी ॥ ४५ ॥
 गरुगरु गाजे वाहुवल वेगे, हरिनाद कीधो तिहां तेरो
 ॥ दशो दिश पूरी नादने ठडे, त्रिभुवन कपे तेहने ठं
 ॥ ४६ ॥ समुद्र जलहल कल्लोले चढीया, जाणे त्रिभु
 वन एकठा मलीया ॥ हाथी हलहलीया हयवर हण
 हणीया, नाद सुणीने सुर नर रणजणीया ॥ ४७ ॥ ची
 भुवन थयु ते जिहारे, चरत विमासे मन मांहे तिहां
 ॥ एह अतुलीवल महावल पूरो, एह समोवरु वी
 नहीं शूरो ॥ ४८ ॥ जाते दहाडे देशवटे देशे, रि
 अमारी जलाली लेशे ॥ चरतने मोढे ढली तिहां

गोले बाहुबल सांचलो जाइ ॥ ४९ ॥ जुजायुद्ध कीजे
 हवे जारी, अमे नमावुं बांह तुमारी ॥ एम सुणीने
 भरत जूनाथ, बेगे पसार्यो पोतानो हाथ ॥ ५० ॥ बाहु
 बलवंतो जुजवल बांह, षट खंरु पृथ्वी जाले उहाहे ॥
 कमल तणी परे बाहुबल वाले, तस जुज नव वढयो
 भरत जूपावे ॥ ५१ ॥ वारु हैया मांहे मत राखो बाकी,
 जियुं मुष्टियुद्ध कीजे हवे ताकी ॥ महोकम मूठी चरते
 उपाकी, बाहुबल साथे दीए पठानी ॥ ५२ ॥ मूठीने
 मारे शिथिल थयुं अंग, चरतना मनमां वाध्यो उठरंग
 बाहुबल मन साथे विचारी, मूठी उपाकी हैयामां
 मारी ॥ ५३ ॥ मूठीने मारे चरत लमथकीयो, जमरी
 गाइने जूये ते पकीउं ॥ चढी रीस ने मूठ चमचमे,
 तम दुहाणो विषधर घमधमे ॥ ५४ ॥ ठामे थइ चरते
 पाथ उपाड्यो, मारी मूठ ने जूये ते पाड्यो ॥ ढोंचण
 मगे घाड्यो धरती मांहि, जाणे आरौप्यो खीलो जग
 मांहि ॥ ५५ ॥ सुरते उठ्यो आप संचाली, चरतने
 तेसे मारयो दंरु उलाली ॥ घाड्यो धरतीमां कंठ प्र-
 ण, कायर कंपे ने परुथुं जंगाण ॥ ५६ ॥ चक्रीनुं सैन्य
 थुं ते जांखुं, चरत विमासे जाग्य ठे वांकुं ॥ बाहुबल

कटके वाजित्र वाजे, वीतशोका थइ सुजट विरा
 ॥ ५७ ॥ उठ्यो ते आप धरा धंधोली, क्रोधे ते रह्यो चक्र
 तोली ॥ चरत चक्रने आगना आपी, वाहुवल मा
 लावजे कापी ॥ ५८ ॥ वाहुवल मनमां एम विमासे
 धिग् चोलीने पठी विमासे ॥ शुं कुखे आव्यो चरत पारप
 न्यायनी रीत नाखी उथापी ॥ ॥ ५९ ॥ मूठी तोली
 रह्यो ते जेहवे, जलहल चक्र आव्यु ते तेहवे ॥ वे
 वलीयो ते वांदीने पाय, गोत्रमें चक्र न चाले क्यां
 ॥ ६० ॥ चक्रुं कलंक चिंते इम चक्री, मुजथी न्हानो पा
 महोटे ए चक्री ॥ चरत रह्या हवे हाथ खंखेरी, एहन
 मूठीनी गत अनेरी ॥ ६१ ॥ दीन हीणो चरतने जाण
 वाहुवल बोले ते एहवी वाणी ॥ चरत न मारुं जा
 सल्लणो, मानव माथु कोइ म धूणो ॥ ६२ ॥ मूठीन
 मनमां आणी आलोच मस्तके लइ कीधो ते लोच
 वाहुवल थयो ते सोध वैरागी, सुर नर पूजे पाय ते लाग
 ॥ ६३ ॥ देवदुष्टि वाजे आकाशे, फूलनी वृष्टि थइ चि
 हु पासे ॥ मनथी मेली विषय विकार, धन धन ज
 सुर नर नार ॥ ६४ ॥ कर्म खपावी केवल पामु, ल
 जाइने शीश न नामुं ॥ काउस्सग करी कर्म न

गी जइने जिनवर वंष्टुं ॥ ६५ ॥ इम धारी वनमा काउ-
 स्सग्ग रहे, वर्षाकाले ते कर्म ने दहे ॥ कुंजर चढी केवल
 क्कम लहीए, वेनने वचने बूज्यो ते हैये ॥ ६६ ॥ पग
 उपाड्यो केवल पाण्डुं, जइने जिनवर मस्तक नाम्णुं ॥
 ताइ नवाणुं एकठा मलीया, मनना मनोरथ सवला
 फलीया ॥ ६७ ॥ एक वर्ष काउस्सग्ग रह्या, वाचा
 शालीने सुगते ते गया ॥ उदयरतन कहे वचनविलास,
 हाहुवल नामे लीलविलास ॥ ६८ ॥ इति

॥ अथ श्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथनो श्लोको प्रारंभः ॥

॥ मात जुवनेश्वरी जुवनमां साची, जेहनी जगतमां
 गीरति जाची ॥ देव पदमावती धरणेंद्र रोखी, आपो
 पुत्र मति सेवक जाणी ॥ १ ॥ पाश शंखेश्वर केरो श-
 लोको, मन धरीने सांजलजो लोको ॥ देश वढीयार मांहे
 ने कट्टो, कलिकाल मांहे जालम प्रगट्यो ॥ २ ॥ जरा-
 संध ने जादव वढीया, बांधी मोरचा दल बेहु लकीयां
 । पडे सुजट ने फाजु मरमाय, कायर केतां तिहां ना-
 गीने जाय ॥ ३ ॥ राग सिंधूए सरणाइ वाजे, सुणी
 पुत्रटने शूरातन जागे ॥ थाये जुद्ध ने कोइ न थाके,
 थारे जरासंध ठल एक ताके ॥ ४ ॥ उप्पन कुल कोदि

जोदव कहीए, एक एकथी चढीयाता लहीए ॥ प्र
 आपे पण पाठा न जागे, एक सारे तो एकवीश ज
 ॥ ५ ॥ बढतां एहवो अंत न आवे, करुं कपट तो राम
 फावे ॥ एम चितीने म्हेली तिहां जरा, ढलीयु जा
 वनुं सैन्य तिहां धरा ॥ ६ ॥ जरा लागी ने जादव ति
 ढलीया नेम कृष्ण ने बलजद्र बलीया ॥ त्रण पुरुष
 जरा न लागी, कहे नेमने कृष्ण पाय लागी ॥ ७
 एहवो कोड करो उपाय, जेणे जरा ते नासीने जाय
 कहे कृष्णने नेमकुमार, करो अठम तप चोविहार
 ॥ ८ ॥ पहेलां धरणेद्र तमे उपासो, तेहने देरासरे दे
 वे पासो ॥ तेह आराधो आपशे विव, त्रशे आप
 काम अविलंब ॥ ९ ॥ मुखथी महोटी बोल न जाए
 त्रण दिवस लगे सैन्यहु राखुं ॥ जिनवरज्जक्तिनो प्रजा
 चारी, थाशे सघलो विध मंगलकारी ॥ १० ॥ इं
 सारथि मातलि नामे, मेढयो जिनवरनी जक्तिने का
 ॥ आसन मांझीने देव मोरारी, अठम करीने वे
 तिणे ठारी ॥ ११ ॥ तूठो धरणेद्र आपे श्रीपास, हरस्त
 श्रीपति अति उद्लास ॥ नमण करीने ठांटे तेणी
 उठयुं सैन्य ने थयो जयकार ॥ १२ ॥ देखी जादव

मालम जोरो, जरासंधनो ब्रूव्यो तिहां तोरो ॥ त्वारि
 इने चक्र ते सेव्युं, वंदे कृष्णने आषी ते पहेतुं ॥
 ३ ॥ पठी कृष्णना हाथमां वेतुं, जरासंधने साल तो
 तुं ॥ कृष्णे ते सेव्युं तिहां फेरी, जरासंधने नाख्यो ते
 री ॥ १४ ॥ शीश ठेद्युं ते धरणी ते ढलीज, जयजय
 वद ते सघले उठलीज ॥ देवदुंदुभि आकाशे वाजे,
 पर फूलनी वृष्टि विराजे ॥ १५ ॥ तुमे वासुदेव त्रण
 संक जोक्ता, कीधा धर्मना मारग सुगता ॥ नयर शंखेश्वर
 अस्युं उमंगे, थापी पाशनी प्रतिमा श्रीरंगे ॥ १६ ॥ शत्रु
 तीतीने सोरठ देशे, द्वारिका नगरीमां कृष्ण नरेशे ॥
 पाले राज्य ने टाली अन्याय, दायक समकितधारी कहे-
 शाय ॥ १७ ॥ पाशशंखेश्वर प्रकट मद्ध, अवनि मांहे
 एक अवल ॥ नाम ताहरुं जे मन मांहे धारे, तेहनां
 संकट छूर निवारे ॥ १८ ॥ देशी परदेशी संघ जे आवे,
 पूजा करीने जावना जावे ॥ सोना रूपानी आंगी रचावे,
 मृत्य करीने आंगी केशर चढावे ॥ १९ ॥ एक मने जे
 मने आराधे, मनमा मनोरथ सघला ते साधे ॥ तहारा
 मगतमां अवदात महोटा, खरो तुंहींज बीजा सर्व खोटा
 ॥ २० ॥ प्रतिमा सुंदर शोभे पूराणी, चंद्रप्रभुने वारे

चराणी ॥ घणे सुर नरे पूज्या तुज पाय, तेहने मुग्
 तिना दीधा पत्माय ॥ ११ ॥ उगणसाठ ने उपर श
 वरपे, वडशाख वदि ठहीने दिवसे ॥ एह शलोको ह
 रखे मे गायो, सुख पायो ने दुरगति पलायो ॥ १२ ॥
 नित्य नित्य नवली संगलमाला, दिन दिन दीजे दोल
 रसाला ॥ उदयरल कहे पास पसाये, कोनि कट्याप
 सन्मुख थाये ॥ १३ ॥ इति श्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथन
 शलोको संपूर्ण ॥

॥ जथ श्रीआदिनाथनो शलोको प्राग्भ ॥

॥ सरसती माता द्यो मुज वाणी, समरुं जिनश
 सन वरदानी वाणी ॥ नाजि राया ने मरुदेवा राणं
 कुखे उपन्या केवलनाणी ॥ १ ॥ चउदे सुपनमां रा
 विहाणी, बीजे शास्त्रे सवली वखाणी ॥ मे तो संद्वे
 कीयो ठे जाणी, हवे वर दीउं माता ब्रह्माणी ॥ २ ॥
 पूरे महीने वालक जायो, ठप्पन कुमारी मलीने गायो
 चोसठ इद्रादिक उंहुव आवे, मेरु जइने नीरे न्हवरा
 ॥ ३ ॥ बलतो मावित्रे उंहुव कीधो, नाम रूपत कु
 टीधो ॥ माता धवरावे नवरावे गावे, महोटेरा हु
 मेवा खवरावे ॥ ४ ॥ आपणे एटलानां नाम न

हेतुं विचारी ते जल जावे ॥ घेवर जलेवी लामु ला-
 णा, पेंका पतासां फलफलता फेणा ॥ ५ ॥ रुमां दहिं-
 णां देवगरां घाली, मांहे मरकी ने सेव सुंआली ॥
 णाकरनो शीरो लापशी तरधारी, मरुदेवा मातां पीरसे
 शवारी ॥ ६ ॥ माताए बालकनुं मन न लाधुं, बेटो
 साणो थोमुंशुं खाधुं ॥ ठांकी एतुं ने अलगो जइ वेठो,
 णाता मनमां संदेह पेठो ॥ ७ ॥ मीठे वचने करी भाता
 णावे, एटले आकाशे इंद्राणी आवे ॥ ऋषज रीसाणो
 णावो मनोवो, आपणे नाचुं ने गुणगीत गावो ॥ ८ ॥
 णादीशर आगल इंद्राणी आवे, नव रस नाटकनां
 णाजां बजावे ॥ अहो आरुंवर जाइ ! जाइ, धन धन
 णाकृत तेहनी कमाइ ॥ ९ ॥ नाटिके नानकीउं खुशाल
 णाधीधो, एक इंद्राणीए उठंगे लीधो ॥ बीजी मलीने वो-
 णाजलो दीधो, त्रीजी कहे ठे एम शुंकीधो ॥ १० ॥ पूठे
 णाजु केम रीसाणा आइ, शाक सघलां मोमां किम लाइ
 ११ ॥ पीरस्यां पापरु जजीआं ने चांजी, शाक बना-
 णां चतुरांइ जाकी ॥ काकनी कंकोमां कारेलां केलां,
 णाची केरी ने करमदां जेलां ॥ १२ ॥ कोलां कालिंगां
 णारपटां जेलां, बाफ्यां वत्रीशे शाक शमेलां ॥ शाक पाक

ते सघलां दीधां, आपे इंद्राणीए हाथगुं कीधां ॥ १३ ॥
 जुगलिया त्यारे कांइ न जाणे. सुरडुम पासे मागी
 आणे ॥ खावे गावे ने कांइ न कमावे, जाजुं जीवे
 सद्गतिए जावे ॥ १४ ॥ एटले आदीशर उपना जाण
 सौधर्म इंद्रे अवधे तव जाणी ॥ नात्ति राजाने आग
 जइ, जुगलिये जइ वातज कइ ॥ १५ ॥ रूपनने ज
 रोजा तुमे थापो, पाये लागीने पदवी थापो ॥ जुगलि
 या मलीया महोत्सव करवां, रूपन वेसारी गया न
 चरवा ॥ १६ ॥ एटले छे मली कामज कीधुं, ठ
 चामर ने सिंहासन दोधुं ॥ ऊगमग ज्योत ठे पीला पं
 तांवर, माला मुरकी ने द्योतक खवर ॥ १७ ॥ वन्ति
 वासीने गढ कोट कीधो, पहेलुं राज तो रूपनने दीध
 ॥ वीश प्रव लख कुअर रहीया, बलता रूपन राज
 कहीया ॥ १८ ॥ सुमंगला साथे विवाह कीधो, सुनं
 दोलो आणीने दीधो ॥ परणी पनोती युगलिये जा
 चरत ब्राह्मी ने अछाणु चाइ ॥ १९ ॥ बीजी बाहुव
 सुदरी वेटी, जिन जुगलिये ते रीत मेटी ॥ त्रेसठ पू
 लख राजमे बह्यो, पुत्रोने देश वहेंचीने लह्या ॥ २
 दान देउने संयम लीधो, बहुला देशमे विहार की

गोला जुगलिया जेद न जाणे, सोनुं रूपुं लइ
 वाने आणे ॥ २१ ॥ उनुं अन्न पाणी कोइ न
 पापे, कष्टे अंतरादिक कर्मने कापे ॥ संयमिया
 पाये फल फूल खाये, पोते गजपुरमां गोचरी जाये ॥
 २२ ॥ श्रेयांस जातिस्मरण पायो, तिण समे जेटण इह
 स लायो ॥ पहेलुं पारणुं तो प्रचुने कराव्युं, पसली
 हे इहुरस वोरव्युं ॥ २३ ॥ प्रथम प्रचु श्रेयांसने
 ठा, साढी बार क्रोर सोने या बुठा ॥ त्यांथ्री पण चाट्या
 आदेसर उठी, देशमां कहेवराव्युं श्रेयांसे उठी ॥ २४ ॥
 कशिलाने उद्याने आया, सांजली बाहुवल त्यांथ्री व-
 ळ्या ॥ प्रजाते बेटो वांदवाने जाय, जुए घणुं पण
 रेशन न थाय ॥ २५ ॥ काने अंगुली देइ तेणे साद
 धो, तुरके अद्यापि पंथज लीधो ॥ आदीसर पुरिम-
 लमें आया, कर्म खपावी केवल पाया ॥ २५ ॥ चो-
 ख बेठा ने वाजिन्न वाये, तिणे समे जरत पाट बधाये
 चक्र उपनुं नव निधि पोइ, बेटो अठाणुं द्यो दीक्षा
 ॥ २७ ॥ बाहुवल टुंके तो टेक जणाइ, संयम लीधो
 तिण सिद्धि पाइ ॥ पुत्रवियोगे मरुदेवी माता,
 ंखे परुल ने वहे अशाता ॥ २८ ॥ जरतने कहे वं-

दण हलां, एक वार देखुं तां रूपन वाड्हो ॥ कटक
 कोनी ठे जरतनी साथे, मरुदेवा माता वेठां ठे हा
 ॥ २९ ॥ पुरिमतांलने पांखतींण आठ्या, वाजा
 शब्द काने सुणाय ॥ मरुदेवा पूठे जरत राजने, वेठ
 वाजां ते वाजे किहांकने ॥ ३० ॥ तमे ऋषजनी रि
 न जाणी, ए तो हुआ ठे केवलनाणी ॥ सेवे सुर
 इंद्र इंद्राणी, वारे परषदानी मे रिद्धि जाणी ॥ ३१
 वेठक वावाने त्रण गढ थाय, रूपे सांने ने रत्ने जम
 ॥ जाली जरुखां पोल पताका, धर्म चकर फरे षट
 ॥ ३२ ॥ मणिमय तोरण अति घणु दीपे, कल्पवृक्ष
 सुवर्णने जीपे ॥ आठ पुष्करिणी ईति निवारे, प
 लागे ठे परषदा वारे ॥ ३३ ॥ कांटा उंधा ने क
 रचाय, वणी सांजलतां विखवाद जाय ॥ इम सांज
 मरुदेवा माता, आंख परुलने पामे ठे शाता ॥ ३४
 मोहनी मूकीने मन पाठो लीधो, केवल पामीने सि
 वास लीधो ॥ जरत आदेसर आगल जाय, रिद्धि देखुं
 रलियात थाय ॥ ३५ ॥ प्रजुने पूठे वनितानो वासी,
 रिद्धि एणी परे रहेशे के जाशे ॥ वलता तीर्थ
 त्रेवीश थाशे, चोवीशमा ते मरीचि थाशे ॥ ३६

म सरखा चक्रवर्ती वार, वासु प्रतिवासुदेव अक्षर
 नव बलचद्रने त्रेसठ हुआ, वीजे शास्त्रे संबंध
 जुआ ॥ ३७ ॥ ५द्वी त्रेसठ ने शरीर साठ, माता
 पन ने जीव उगणसाठ ॥ वाप एकावन सहु कोइ जा-
 , मूरख मन मांहे संदेह आणे ॥ ३८ ॥ मरीचि प्र-
 खनो संबंध कह्यो, चक्री सांजली हेरान श्रयो ॥ वाप
 टाने वंदण जाय, अहंकारे नीच गोत्र वंधाय ॥ ३९ ॥
 ंदी पूजीने चरत जाय, संघ काढ्यानो उठरंग थाय
 शेत्रुंजा केरो संघ चलाउं, धर्म रुपजनो बहुलो ह-
 ं ॥ ४० ॥ ताणी तंबूने तैयार कीधा, मुहूर्त जोइने
 लाणा दीधा ॥ ठए खंममां फेरी सहाराइ, शेत्रुंजे यात्रा
 ावो रे जाइ ! ॥ ४१ ॥ देशी परदेशी अति घणा म-
 िया, स्वामी सघला ए संघमां जलीया ॥ पुत्र पोतरा
 म सवाई पांचसेनी नित्य आवे वधाइ ॥ ४२ ॥ लाख
 ाराशी घोमा ने हाथी, राजा बत्रीश हजारंजुं साथी ॥
 ाइउं आमंवर अधिक दीवाजे, वाजित्र निर्घोष सर-
 ाइ वाजे ॥ ४३ ॥ आप ऐरावण असवार ठाजे, मेघा-
 ार ठत्र बिराजे ॥ लाख चोराशी रथ जोतरीया, पायक
 ा क्रोर परवरीया ॥ ४४ ॥ पालीताणे ते संघपति

आवे, गिरि देखीने मन सुख पावे ॥ सोना रूपाने प
 लडे वधावे, कुंगर देखीने जावना जावे ॥ ४५ ॥ (ल
 हणी रूपा ने सोनाने नाणे, करतो पहोतो संघ पाल
 ताणे) ॥ संघ सघबोही चढोठ शेत्रुजे, पहेलां राय
 तणां पगलांने पूजे ॥ चक्री जोशने हुकम दीधो, पगल
 पागथी ए प्रासाद कीधो ॥ ४६ ॥ रूपानी रांग ने सोना
 पाया, मणिमय देवल नवां निपायां ॥ धवलां रतनम
 विव जरावे, प्रतिष्ठा पुरुरीकने करावे ॥ ४७ ॥ प्रति
 प्रवासण प्रवेश कीधो, खजीनो खरचीने बहु जश ली
 ॥ पुंरुरीकने पूठे जरत राजा, शेत्रुंजा उपर तीरथ जाव
 ॥ ४८ ॥ नाम कहो ने विधि वतावो, प्रदक्षिणा दइ
 संघ साथे आवो ॥ सूरजकुंमने स्नानज कीजे, चृंगर
 चीम कुंडे जरीजे ॥ ४९ ॥ चेलणां तलाइए विसा
 लीजे आदीशर पोले उंचा चढीजे ॥ मरुदेवा टुक मां
 आवीजे, चोखा खाणथी वे चार लीजे ॥ ५० ॥ उंच
 अद्रुतने पाये लागीजे, मोक्षवारीने पोले पेसीजे
 केशर घसीने पूजा करीजे, सुकृतफल एम जश ली
 ॥ ५१ ॥ सुर नर विद्याधर चक्रवर्ती राणी, प्रतिमाने
 पूजे उलट आणी ॥ अर्चे चर्चे ने गुणगीत गाय, खेदे

खलीने खुशियाल थाय ॥ ५२ ॥ इणी विधि जात्रा करी
 र आवो, चक्री मनमां आनंद पावो ॥ पालीनी पा-
 वती पोरत्रारु चावो, नामो नगो ने गाम हिमावो ॥ ५३ ॥
 कित शांतिविमले चरित्र दीधो, पठी श्रीपूज्ये पन्यास
 दीधो ॥ धर्मना उद्यम बहुला त्यां थाय, पाप कर्म ते दूर
 लाय ५४ ॥ तपगठनायक श्रीविजयप्रत्त सूरि, गिरुठ
 ठनायक, पुण्याइ पूरी ॥ कहे विनीत विमल कर
 मोनी, ए जणतां आवे संपत्ति कोनी ॥ ५५ ॥

॥ श्रीशेत्रंजयनो शलोको ॥

॥ सरसती माता हुं तुज पाय लागुं, कहेवा शलोको
 वरदान मागुं ॥ जेहवां शास्त्रमां सुणीयां परिमाण,
 तेवां सिद्धिगिरिनां करुं वखाण ॥ १ ॥ प्रथम जिनवर
 मुंरुकीक आगे, निसुणी जविजन श्रुतपट जागे ॥ नहीं
 कोइ इण युग शेत्रंजा तोले, अनंत जिनवर एणी पेरे
 बोले ॥ २ ॥ ग्रहगण मांहे वरुो जिम चंद, पर्वत मांहे
 तिम एह गिरींद ॥ सुर नर दानव मढ्या ठे कोरु, ॥
 तेवा करे ठे वे कर जोरु ॥ ३ ॥ जरत सगरे उद्धार
 कीधा, साधु अनंता एणे गिरि सिद्धा ॥ देश देशना
 मंघ बहु आवे, माणक मोतीमां लेइने वधावे ॥ ४ ॥

आरज देशमां श्रावक सार, दर्शन करीने सफल अव
 तार ॥ काग कुकनो नावे अवतार, केतो एणे मुखे क
 विस्तार ॥ ५ ॥ सदा ए गिरि शाश्वतो सार, एना गुणने
 कोइ न लाजे पार ॥ एणी पेरे निसुणी श्री गुरुवाणी
 श्रावक हरख्या ठे जलट आणी ॥ ६ ॥ देशमां सोहे
 श्रीकहू देश, सदा परिगल लक्ष्मी निवेश ॥ दक्षिण
 दिशि ए समुद्रतीर, नदीउं बहुली ने खलके ठे नी
 ॥ ७ ॥ तेह देशमां कोनाय गाम, जाणीए अजिन
 स्वर्गनुं धाम ॥ देहरां उपासरा दीसे ठे चंग, करे
 श्रावक नित्य बहु रंग ॥ ८ ॥ न्याति सोहे उंशवाल
 मानसमां जेम उंपे मराल ॥ शाह रायमल कुल अधिव
 मरुण, उपनो करमसी शाह पचाण ॥ ९ ॥ माणव
 पुजो वे दीसे वरुवीर, देशल पेठो ठे साहस धीर ॥
 मालसी पांचो ते दीसे गुणखाण, खेतशी करमसी कीध
 परिआण ॥ १० ॥ एहवा श्रावक दीपता दह, पद
 मांहे जेम गुजल पद ॥ मेली कंकोतरी मूरत लीधो
 तिलक संघपतिनो पचाणने कीधो ॥ ११ ॥ संघ चाढ्यो
 ने कारज सिद्धो, प्रथम मेलाण मुदरे जड दीधो ॥
 उत अनोपम मलीयो ठे साथ, साह्य हुआ श्री

नाथ ॥ १२ ॥ बेसी जिहाजे नवीनपुर आया, देहरां
 देखीने आनंद पाया ॥ देव जुवन ते रमणिक स्थान,
 णीए अजिनव नलिन विमान ॥ १३ ॥ रायसी वरु-
 ण कीधा प्रोसाद, उंचा करे ठे गगनश्री वाद ॥ वा-
 न्न जिनालां देहरां सोहे, देव दानव किन्नर मोहे
 १४ ॥ पेसतां वामांगे चौमुख दीपे, तेजे करीने दिण-
 र दीपे ॥ सहसफणो ने श्रीशांतिनाथ, मूल गमारे
 त्रेजुवननाथ ॥ १५ ॥ चाढ्यो संघ हवे सोठ देश,
 च रतन जिहां कीधो निवेश ॥ तीरथ तटिनी तोय
 मुदारा, तांबुल रिद्धि अतिही विस्तारा ॥ १६ ॥ ऊरु
 पीरुना गुडज गहके, जाइ जुइने परिमल महके ॥ दा-
 णेम कदली ने वृद्ध सहकार, वनस्पति शोभे ठे चार
 अठार ॥ १७ ॥ रैवतगिरिने सहु शिर नामी, जिहां वेठा
 नेमनाथ स्वामी ॥ कर्म खपावी केवलपद पाया, रा-
 मुल नेमजी मुक्ति सधोया ॥ १८ ॥ तिहांथी संघ हवे
 आनंद पामी, आव्या जिहां ठे श्रीशेत्रुंजा स्वामी ॥
 गेरि देखीने हरख बहु पाया, सोना रूपाने फूलडे व-
 पाया ॥ १९ ॥ धन धन दहाको ते आजनो दीसे, सहु
 हरख्या ठे विश्वावीशे ॥ आवी उतरीया पादद्विस स्थान,

ठाकोर जनरुजी दीए बहु मान ॥ १० ॥ पा
 ताणु नगर ते अत्यंत दीपे, तेजे करीने अलकाने उ
 ॥ चहुटां चोडटां दीसे अपार, द्रव्य तणो कोइ ल
 नहीं पार ॥ ११ ॥ वरण अठार वसे सदाइ, ए
 दोहग नहीं कदाइ ॥ किहांकणे व्यपारी रूपैया वट
 किहां तो जवहरी जवेर वटावे ॥ १२ ॥ दोशी मोठ
 कदोइ सार, एहवी शोन्ने ठे रुमी वजार ॥ गढ गढ
 दिर पहोल प्राकार, लांबो पहोलो जाण विस्तार ॥ १३ ॥
 यात्रा करवाने श्रीसंघ चनीया, पहेलो सेलर वाव्ये
 मलीया ॥ पाणीमां दीसे ठे अति तरंग, निर्मल
 वहे घणु गग ॥ १४ ॥ देवचूमिका आश्रम कीधो, र
 तिहांकणे विसामो लीधो ॥ गीत गान ने करता
 नोद, पगलां देखीने उपनो मोद ॥ १५ ॥ शास्त्रि कु
 निर्मल नीर, जेह दीठार्थी उपनी धीर ॥ जल पीधा
 विकसे ठे नाण, अज्ञान नासीने आवे ठे ज्ञान ॥ १६ ॥
 हनो हिंगलाज कुमार कुंभ, जवजल तारण दीसे त
 ॥ जेना जलसंगे कर्म खपावे, मोक्षपुरीए वहेलो प
 चावे ॥ १७ ॥ सुखण कुरु शाह सुखणे कीधो, धन र
 चोने लाहोज लीधो ॥ पासे रमणिक कुंभो आराम,

नवने रमवानो ठाम ॥ २७ ॥ आगे चालतां राम पोल
 आवी, वाघण पोल ते सघलाने चावी ॥ स्वर्गद्वारनो वांधव
 से, जोतां संघनो ह्येयो हीसे ॥ २८ ॥ पासे वेठा ठे
 मुख यक्ष, सेवा करे ठे जेहनी दक्ष ॥ संघ सान्निध्य
 श्वरी देवी, सदा तीरथ रखवाल करेवी ॥ ३० ॥
 नायक श्रीकृष्ण जिणंद, तेजे जलहल कोमी दि-
 ॥ वंश इद्राग मरुदेवा नंद, नाजि राया कुल
 मचंद ॥ ३१ ॥ पद्मासने वेठा प्रभु योगध्यान, धनु-
 यांचसे सोवनवान ॥ सत्तरजेदी तिहां पूजा जणावी,
 वना श्रीसंघे जली परे जावी ॥ ३२ ॥ स्नात्रमहोत्सव
 ति बहु रंग, जेर जुंगल वाजे मृदंग ॥ नोवत निशान
 जेर साद, रणजण रणके घंटना नाद ॥ ३३ ॥ अगर्
 हुना महक्रे ठे धूप, ठाजे ठकुराड् त्रिभुवन रूप ॥
 जामंजल अति तेज ठाजे, देवाधिदेव ते एहवा
 ठाजे ॥ ३४ ॥ नाटक नृत्य सदा उठरंगे, जावना जावी
 जेने अजंगे ॥ एणी परे प्रभुजीनां दरिसण कीधां,
 जे खरचीने बहु जश लीधा ॥ ३५ ॥ सूर्य कुंठ ते
 जे ठे सूर्य, तिण मांहे वीची ते उठे जरपूर ॥ कीधे
 जे वाधे घणु नूर, कर्म थाय ठे सवि चक्रचूर ॥ ३६ ॥

सहस्रकूट ते नयणे निरखी, थै थैकार करे देव हर
 ॥ सारे प्रभुनी अहर्निश सेव पूजा जक्ति करे नित्य
 ॥ ३७ ॥ प्रथम गणधर श्रीपुंररीक, पश्चिम श्रीगौ
 नर्ही अलीक ॥ पगलां तेहना दीठे धन्य धन्य, गण
 जेठ्या चौदसे ने वावन्न ॥ ३७ ॥ प्रजाते उठी जो :
 मज लीजे, वंठित कारज तो सवि सीजे ॥ त्रण :
 जिहां कीधो निवास, एहवा गौतमजी पूरजो अ
 ॥ ३८ ॥ रायण तरु तले आदि जिणद, पगलां पू
 देखी जविद्वंद ॥ जेहना पूजनथी सवि सिद्धि था
 कर्म खपावीने मोक्ष सधाय ॥ ४० ॥ पासे रमणि
 अष्टापद देहरो, वावन जिनालो गोत्रे शिर सेहरो
 रावण समकित तिहांकणे पाम्यो, ग्रंथि जेदीने मिथ्या
 वाम्यो ॥ ४१ ॥ प्राची वाम्य दिशि पश्चिम उत्तर, दं
 चार अष्ट दश तीर्थकर ॥ प्रभुने पूठीने देहरां कराव
 जरत चक्रीश्वरे विव जराव्यां ॥ ४२ ॥ अद्भुत देख
 अचरज थावे, दरिशन करीने सहु सुख पावे ॥ ध
 वन्य प्रभुनो मोटो ठे गात्र, एहवा जिनजीनी करी
 जात्र ॥ ४३ ॥ कुंरु खोमीयार सदा जल जरीयो,
 दीए ठे अजिनत्र दरीउ ॥ मीन काठव जलचर

हने सेवे ठे सर्वदा हंस ॥ ४४ ॥ द्रव्य खरच्यां ठे जे-
 मां लक्ष, प्रासाद रचिया ठे दीठा प्रत्यक्ष ॥ एहमां
 श्री कांश् खलखंच, तेहमां थाप्या ठे पांशव पंच
 ४५ ॥ चउमुख शिवा सोमजीए कराव्यो, जेणे युगा-
 ण नाम रचायो ॥ उठी प्रजाते दरिसण कोजे, मुक्ति
 णीने वेगे वरीजे ॥ ४६ ॥ हुंके वेठां ठे मरुदेवा माना,
 नां दरिसणथी होय सुख शाता ॥ कर्म त्रोकीने
 मद्धिसोपान, चकी पाम्या ठे मुक्ति निदान ॥ ४७ ॥
 करती चोफेर देहेरा केडे, देतां प्रदक्षिणा कर्मने
 डे ॥ देइ प्रदक्षिणा बाहेर आया, सर्वे संघना कार्य
 रथां ॥ ४८ ॥ वाणी सुणीने चक्रीए जराव्यां, मणिमय
 चसे धनुष्यनी काया ॥ गुफा पश्चिम दिशिए ठे
 वहां, त्रिंब मणिमय चंकार्यां तिहां ॥ ४९ ॥ देवता
 हनी सेवाए आवे, पूजा करीने जावना जावे ॥ देव
 रावे प्रजुने अंगोल, नमण आवे ते उलखा जोल
 ५० ॥ चंदन तलावकी शीतल ठाया, जिणमां लोटे
 य सुकोमल काया ॥ अशुभ नामनां कर्म खपावे,
 हांथी सहु संघ सिद्धवरु आवे ॥ ५१ ॥ नदी शेत्रुंजी
 आवाने जाय, स्नान करीने पावन थाय ॥ तीर्थजू-

मिको स्वहृज जाणी, प्राची वाहनी नदीय वखाण
 ॥ ५२ ॥ तीर्थयात्रादि धर्मनी करणी, ॥ जत्रजल पाथो
 पार उतरणी ॥ अनुक्रमे पामे ते गुण तणी श्रेणी, मुक्ति
 मंदिरनी जे ठे निसरणी ॥ ५३ ॥ संघपतिए धर्म
 कार्य कीधां, जाट जोजकने बहु दान दीधां ॥ धन
 श्रावक दया प्रतिपाल, संघपति कंठे ठवी वरमाल ॥ ५४
 देहरां देहरीनुं पार न जाणुं, जिनपदिमा त्यां केत
 वखाणुं ॥ एणी परे सुजश निशान वजाइ, आव्या गिर
 नारे हर्ष वधाइ ॥ ५५ ॥ जादव वश शिवादेवी नद
 बाल ब्रह्मचारी नेम जिणंद ॥ तेहनी यात्रा कीधी व
 जाव, जइने प्रणम्या साता अंवाय ॥ ५६ ॥ मृगरा
 देखी गज दूर पलाय, शंखध्वनि सुणी पन्नग जाय
 तेम गिरिसेवनथी पातक बूट, अष्ट कर्मनां वधन त्रू
 ॥ ५७ ॥ ठहरी पालीने यात्रा जे करशे, मुक्तिरमणी
 लीला ते वरशे ॥ नाण दरिसण चरणने पावे. मो
 सतक वहेलो खपावे ॥ ५८ ॥ संवत अठार चोत्री
 वरपे, यात्रा कीधी ठे मनने हरखे ॥ सुदि पूनम चैत्र
 मास, सदा गोमीचो पूरजो आश ॥ ५९ ॥ संघ सर्वे ति
 हरपे घर आवे, शीग लापसी करीने जिमावे ॥ ६०

साध्वीने दीए ठे दान, गोरमी गाये ठे बहु गीत गाने
 ॥ ६० ॥ कवि संघपतिने देइ आशीप, अविचल तुम तणी
 होजो जगीश ॥ नहीं कोइ जेनमां इण गिरि तोले, मुनि
 इवचंद्र इणी परे बोले ॥ ६१ ॥ इति श्रीशत्रुंजय-
 गेरि वर्णननो शलोको ॥

॥ श्रीशीतल जिन स्तवन ॥

(राग—भरथरीनो)

॥ श्रीशीतल जिन जगपति, अरज कमं एक आज्ञ
 जी ॥ दास गणी दिलमां धरी, महेर करी महारा-
 जजी ॥ श्रीशीतल ॥ १ ॥ नरकादिक गति विषे, ज-
 क्यो वार अनंतजी ॥ दुःख घणां में त्यां सह्यां, कहेतां
 आवे अंतजी ॥ श्रीशीतल ॥ २ ॥ लाख चोराशी यो-
 जेमां, वली दुःख सह्यां अपारजी ॥ मुज मुखथी हुं शुं
 हुं, जाणो ठो किरतारजी ॥ श्रीशीतल ॥ ३ ॥ देव
 थ्या दिलमां धरी, तारो गणी जिन दासजी ॥ आष
 धरणनी सेवना, अरपी पूरो आशजी ॥ श्रीशीतल ॥
 ४ ॥ सबला रिपुठ आठ जे, ते नवला तें कीधर्जी ॥
 अमेतशिखर गिरि उपरे, अविचल शिवसुख लीधजी ॥
 श्रीशीतल ॥ ५ ॥ नेक नजर करी साहिबा, दीजे

शिवसुख राजजी ॥ कहे खीहसिंह करपा करी पूरो
वठित काजजी ॥ श्रीशीतलप ॥ ६ ॥

॥ श्रीपद्मप्रभु जिन स्तवन ॥

(तीरथनी आशातना नमि, करीए-ए देशी)

॥ पद्म जिणेसर प्रणमीए, जवि चावे हारे जवि
चावे रे जवि चावे ॥ हारे दुःख सघलां दूरे जावे, हारे
धरतां जिनध्यान ॥ पद्म ॥ १ ॥ श्रीधर चूप तणे कुढे
प्रभु आयां, हारे मोता सुशीलाना जाया ॥ हारे सोहे
रक्त वरण शुभ काया, हारे पाय कमलखंडन ॥ पद्म
॥ २ ॥ अंतरयामी माहरा प्रभु प्यारा, हारे विनति
जगदाधारा ॥ हारे तारो जवोदधि तारणहारा, हारे
जाणी पोतानां वाल ॥ पद्म ॥ ३ ॥ चोत्रीश अतिशय
आपने प्रभु ठाजे, हारे वलो पांत्रीश वाणी गाजे ।
हारे जशनो रिको जग वाजे, हारे महिमानो नही पा
॥ पद्म ॥ ४ ॥ प्रेमे अंतर अरगजा हुं चक्रावुं, हारे वल
चावे पूजा रचावुं ॥ हारे नित नवनवी आंगी पहेरावुं
हारे गाठं तुज गुणतान ॥ पद्म ॥ ५ ॥ कर जोर
खीहसिंह कहे शिर नामी, हारे मुज कष्ट हरो जग
स्वामी ॥ हारे आपो शिवपद मुज दुःख वामी,
जाणी निजे दांस ॥ पद्म ॥ ६ ॥

॥ सिद्धाचलनुं वर्णन ॥

॥ भेख रे उत्तरो राजा भग्थरो ॥

॥ सिद्धाचल गिरि जेटीए, पूरव पुण्य पसायजी ॥

तव जवना जय मेटीए, आतम शुद्धज थायजी ॥

सिद्धा० ॥ १ ॥ चौद क्षेत्रमां ए समो, वीजो तीरथ न

होयजी ॥ वीर जिणंद प्रकाशीउं, शासवतो गिरि सो-

राजी ॥ सिद्धा० ॥ २ ॥ तीर्थकर सवि आवीआ, नेम

वेना त्रेवीशजी ॥ उत्तम चूमिने फरसवा, आणो म-

रमां जगीशजी ॥ सिद्धा० ॥ ३ ॥ अनंत मुनिवर यहां

कने, सिद्धा काल अनंतजी ॥ अनागत काळे वली, अ-

नंता सीजशे नितजी ॥ सिद्धा० ॥ ४ ॥ आदेश्वर अल-

श्वरु, मूलनायक देवजी ॥ वार नवाणुं पूरव प्रजु, सम-

सुरथा नित्यमेवजी ॥ सिद्धा० ॥ ५ ॥ नवाणुं यात्रा क-

रीए, विधि अनुपम ज्ञावजी ॥ कर्म निकाचित उप-

गामे, होवे शांत स्वज्ञावजी ॥ सिद्धा० ॥ ६ ॥ सुरासुर

वली किन्नरा, विद्याधर नर देवजी ॥ समकित निर-

मल कारणे, करतां अहोनिश सेवजी ॥ सिद्धा० ॥ ७ ॥

अन्य दिवस धन्य ते घरी, दर्शन होवे गिरिराजजी ॥

विचंद्र जिनवर नमी, सोरे आतम काजजी ॥ सिद्धा० ॥ ८ ॥

॥ शान्ति सन्ध्या ए-देशी ॥

॥ गिरिवर दरिसण विरला पावे, पूरव संचित व
 खपावे ॥ गिरि० ॥ ऋषज्ञ जिनेश्वरपूजा रचावे, नवे न
 नामे गिरिगुण गावे ॥ गिरि० ॥ १ ॥ ए आंकणी
 सहस्रकमल ने मुक्तिनिलय गिरि, सिद्धाचल गतवृ
 कहावे ॥ गिरि० ॥ ढक कदंबने कोरिनिवासो, लोहि
 तालध्वज सुर गावे ॥ गिरि० ॥ २ ॥ ढंकादिक पंच वृ
 सजीवन, सुर नर मुनि मली नाम थपावे ॥ गिरि०
 रयणभ्राण जनी वूटी गुफाळ, रसकूपिका गुरु झ
 वतावे ॥ गिरि० ॥ ३ ॥ पण पुण्यवंता प्राणी पावे, पुण
 कारण प्रभुपूजा रचावे ॥ गिरि० ॥ दज्ञ कोटि श्रावक
 जमाडे, जैन तीर्थयात्रा करी आवे ॥ गिरि० ॥ ४
 तेथी एक मुनि दान दीयता, लाज घणो सिद्धाच
 थावे ॥ गिरि० ॥ चंद्रेशेखर निज जगिनीजोगी, ते प
 ए गिरि मोढे जावे ॥ गिरि० ॥ ५ ॥ चार हत्यारा न
 परदारा, देव गुरुद्रव्य चोरी खावे ॥ गिरि० ॥ चेः
 कार्तिकी पूनम यात्रा, तप जप ध्यानथी पाप जला
 ॥ गिरि० ॥ ६ ॥ ऋषज्ञसेन जिन आदे असरया, तीर्थ
 कर मुक्तिसुख पावे ॥ गिरि० ॥ शिववहू वरवा मंरु
 ए गिरि, श्रीगूजवीर वचनरस गावे ॥ गिरि० ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ वीर कुंवरनी वातडी केने कहीए ॥ ए देशी ॥

॥ तीरथनी आशातना नवि करीए ॥ नवि करीए

नवि करीए, धूप ध्यानघटा अनुसरीए, तरीए संसार

तीरथ ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ आशातना करतां थका

नहाणी ॥ चूरुयां न मले अन्न पाणी, काया वली रोगे

तराणी, आ जवमां एम ॥ ती ॥ २ ॥ परजव परमाधा-

नीने, वश परुशे ॥ वैतरणी नदीमां जलशे, अग्निने कुंडे

जलशे, नहीं शरणुं कोइ ॥ ती ॥ ३ ॥ पूरव नवाणुं नाथ-

नी, इहां आव्या ॥ साधु केइ मोक्ष सधाव्या, श्रावक

ण सिद्धि सुहाव्या, जपतां गिरिनाम ॥ ती ॥ ४ ॥

प्रष्टोत्तरशतकूट ए, गिरिठामे ॥ सौंदर्य यशोधर नामे,

शीतमंरुण कामुक कामे, वली सहजानंद ॥ ती ॥ ५ ॥

अहेंद्रध्वज सरवारथ, सिद्ध कहीए ॥ प्रियंकर नाम ए

कहीए, गिरि शीतल ठांये रहीए, नित्य करीए ध्यान

ती ॥ ६ ॥ पूजा नवाणुं प्रकारनी, एम कीजे ॥

परजवनो लाहो लीजे, वली दान सुपात्रे दीजे, चढते

रिणाम ॥ ती ॥ ७ ॥ सेवन फल संसारमां, करे

नीला ॥ रमणी धन सुंदर बाला, शुजवीर विनोद

शाला, भंगल शिवमाल ॥ ती ॥ ८ ॥

॥ अथ श्रीनेमिनाथजीनो नवरसो प्रारंभः ॥

॥ ढाल पहेली ॥ गरवानी देशीमां ॥ समुद्रविजय
कुलचंद्रलो ॥ शामलियाजी ॥ शिवादेवी मात मलार
वर पातलीयाजी ॥ एक दिन रमवा नीसरधा ॥ शा०
आव्या आयुधशाला मांहे ॥ व० ॥ १ ॥ सारंग धनु
चढात्रीयुं ॥ शा० ॥ तेणे हृदया आकाशे उद्र ॥ व०
चक्र उपांनीने फेरव्यु ॥ शा० ॥ गदा लीधी कर मां
॥ व० ॥ २ ॥ नेमे शख वजानीयो ॥ शा० ॥ तेणे मोदय
महीना मेर ॥ व० ॥ शेंपनाग तिहां सलसदया ॥ शा
॥ खलचलीया सायर सर्व ॥ व० ॥ ३ ॥ गिरिवर टुं
त्रूटी पड्यां ॥ शा० ॥ थरहर कपे लोक ॥ व० ॥ को
वैरी उपरनो ॥ शा० ॥ इम करता कृष्ण विचार ॥ व०
॥ ४ ॥ आव्या तिहां उतावला ॥ शा० ॥ जिहां
नेम कुमार ॥ व० ॥ रूपचद रंगे मदया ॥ शा०
ताहारं वल जोवानी खंत ॥ व० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ बीजी कृष्णे कर लंवावीयो ॥ हसी व
लोजी ॥ तुमे वोलो नेम कुमार ॥ अतर खोलोजी
कमलनाल परे वालीयो ॥ हसी० ॥ कृष्ण नवि लाग
वार ॥ अंतर० ॥ १ ॥ नेमे कर लंवावीयो ॥ हसी०
कृष्णे नवि वाढ्यो जाय ॥ अतर० ॥ हाले कृष्ण हिच

या ॥ हसी ० ॥ तिहां हरि सन जंखो आय ॥ अं ० ॥ १ ॥
 री जो परणात्रीए ॥ ह ० ॥ तो बल उठेरुं आय ॥ अं ०
 ह्म विचारी कृष्णजी ॥ ह ० ॥ निज अंतेउर सम-
 य ॥ अं ० ॥ ३ ॥ विवाह नेम मनाववा ॥ ह ० ॥
 ज्ञ थाउं सघली नार ॥ अं ० ॥ रूपचंद्र रंगे मढ्या ॥
 ॥ ताहारुं अतुली बल अरिहंत ॥ ४ ॥
 ॥ ढाल त्रीजी ॥ राजाजी ने रुक्मिणी ॥ मोरा गिर-
 री ॥ सत्यनामा जांबुवती नार ॥ मुकुट पर हुं वारी
 चंद्रावती शणगारीए ॥ मोरा ० ॥ गोपी मली चत्रीश
 ॥ मुकुट ० ॥ १ ॥ विवाह मानो नेमजी ॥ देवर
 ॥ मने करवाना बहु कोरु ॥ ए गुण तोराजी ॥
 ॥ विनानुं आंगणुं ॥ देवर ० ॥ जेम अलूणुं धान ॥
 गुण ० ॥ २ ॥ नारी जो घरमां वसे ॥ देवर ० ॥ तो
 परोणो मान ॥ ए गुण ० ॥ नारी विना नर हाली
 ॥ देवर ० ॥ बली वांढा कहेशे लोक ॥ ए गुण ० ॥ ३ ॥
 ॥ अरवाद न कीजीए ॥ देवर ० ॥ तमे म करो ताणा-
 ॥ ए गुण ० ॥ रूपचंद्र रंगे मढ्या ॥ देवर ० ॥ हवे
 ॥ आपे नेम ॥ ए ० ॥ ४ ॥
 ॥ ढाल चोथी ॥ नेम कहे तमे सांजलो ॥ मोरी

ज्ञात्रीजी ॥ किस्यो काम विकार ॥ मे गत पामी जी
 नारीमोहे जे पड्या ॥ मोरीं ते रनवनीया गति चा
 ॥ में ० ॥ १ ॥ रावण सरिखो रोलव्यो ॥ मोहीं ॥
 लड गयो सीता नार ॥ मे ० ॥ नारी विपनी कूपली
 मोरीं ॥ मायानी मोहनवेल ॥ में ॥ २ ॥ तप्यन
 कोनी जादव मिदया ॥ मोरीं ॥ इम कहे ते
 वारोवार ॥ में ॥ रूपचंद्र रंगे मदया ॥ मोरीं ॥ नेम
 नही परणे निरवार ॥ मे ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ अचला बोझ न बोलीए ॥ वर
 राजाजी ॥ तमे पाणो नेम कुमार ॥ म करो दवाजार्ज
 ॥ एकवीश तीर्थकर थया ॥ वर ॥ ते तो सर्वे परणय
 नार ॥ म करो ॥ १ ॥ नारी खाण रतन तणी ॥ वर ॥
 तेनु मृदय केणे नवि थाय ॥ म करो ॥ नारी मांहेर्थ
 नर नीपना ॥ वर ॥ तुम सरिखा श्रीजगवान् ॥ म
 करो ॥ २ ॥ नेम न बोले मुख थकी ॥ वर ॥ मांरु
 विवानु मंगाण ॥ म करो ॥ उग्रसेन घर वेटकी ॥ वर
 ॥ ते नामे राजुल नार ॥ म करो ॥ ३ ॥ लीधुं लगन
 उतावहुं ॥ वर ॥ आप्यां लीलां श्रीफल हाथ ॥ म
 करो ॥ जमण लारु लापसी ॥ वर ॥ वली सेवड्ये

॥ म करो ॥ ४ ॥ आठी जलेवी पातली ॥ वर ॥
 ॥ मांहे घेवरनो जाग ॥ म करो ॥ खारी पूरी ने
 ॥ थरां ॥ वर ॥ वली खाजां ने मगदल ॥ म करो
 ॥ लाखणसाइ रेशमी ॥ वर ॥ मांहे मोतीचूरनो
 ॥ म करो ॥ कूर रांध्यो कमोदनो ॥ वर ॥ मांहे
 ॥ चूरनी दाल ॥ सबल दीवाजाजी ॥ ६ ॥ खारेक खजूर
 ॥ टोपरां ॥ वर ॥ वली चारोली ने द्राख ॥ सबल ॥
 ॥ वंग सोपारी एलची ॥ वर ॥ वली पाननां बीसां चार
 ॥ सबल ॥ ७ ॥ सज्जन कुडुंब संतोषीयां ॥ वर ॥
 ॥ कीधी पेरामणी सार ॥ सबल ॥ जान लेश यादव
 ॥ वर ॥ वली पाखरीया केकाण ॥ सबल
 ॥ हाथी रथ जाणगारीया ॥ वर ॥ वली केश-
 ॥ असवार ॥ सबल ॥ जोवाने आवीया ॥
 ॥ इंद्राणी गावे गीत ॥ सबल ॥ तोरण आव्या
 ॥ जी ॥ वर ॥ तेने निरखे राजुल नार ॥ सबल ॥ रूप-
 ॥ रंगे मढ्या ॥ वर ॥ जोवा सरखी जान ॥ सबल ॥ १० ॥
 ॥ ढाल ठठी ॥ सखी कहे वर शामलो ॥ ए दीसे-
 ॥ ते निरखे राजुल नार ॥ हड्डुं हीसेजी ॥ वर ॥
 ॥ हाथीया ॥ ए दी ॥ वली कालौ मेघ मळ

हृदयुं ॥ २ ॥ काली अंजन आंखनी ॥ ए दीसेजं
 तेनु मूल केणे नवि थाय ॥ हृदयुं ॥ काली कस्त
 कही ए दीसेजी ॥ काला कृष्णागरु केश ॥ हृदयुं ॥
 रूपचद रंगे मढ्या ॥ ए दीसेजी ॥ सखी शामल
 चरतार ॥ हृदयुं ॥ ३ ॥

॥ डाल सातर्मा ॥ पशुअ पोकोर सुणी करी ॥ ॥
 लीधीजी ॥ विचारे श्रीवीतराग ॥ तेणे दया कीधीजी
 जो परणुं तो पशु मरे ॥ शुं ॥ मृकी अनुकंपा ज
 तेणे ॥ १ ॥ डम जाणी रथ वालीयो ॥ शुं ॥ फेरव
 दीनदयाल ॥ तेणे ॥ पशुवधन सर्व तोकीयां ॥ शुं
 ते सर्व गयां वन मांहे ॥ तेणे ॥ २ ॥ रूपचद
 मढ्या ॥ शुं ॥ प्रभु दीधु वरसीदान ॥ तेणे ॥ ३ ॥

॥ डाल आठमी ॥ राजीमती धरणी ढट्यां ॥ सं
 ब्रह्मालाजी ॥ अविगुण विण दीनानाथ ॥ हाथ
 जाह्योजी ॥ आंगण आवी पाटा वढ्या ॥ मोरा
 कत्रिय कुलमां लगावी लाज ॥ हाथ ॥ १ ॥ तमे
 तणी करुणा करी ॥ मोरा ॥ तमने माणसनी न
 म्हेर ॥ हाथ ॥ आठ नव थया एरुगां ॥ मोरा
 कीधा तुमहुं रंगरोज ॥ हाथ ॥ २ ॥ नवमे जवे

मजी ॥ मोरा० ॥ मुजने कां मेली जाउं ॥ हाथ० ॥
 श्री आशा अंबर जेवनी ॥ मोरा० ॥ तमे केम उपांनी
 त ॥ हाथ० ॥ ३ ॥ में कूकां कजंक चढाणीयां ॥ मोरा० ॥
 ख्यां अणदीठां आल ॥ हाथ० ॥ में पंग्वी घाट्यां
 जरे ॥ मोरा० ॥ वढी जलसां नाखी जाल ॥ हाथ०
 ४ ॥ में साधुने संतापीया ॥ मोरा० ॥ में माय
 ठोड्यां वाल ॥ हाथ० ॥ में कीनी दर उघानीयां ॥
 रा० ॥ वढी सरमना बोड्या बोल ॥ हाथ० ॥ ५ ॥
 णगळ पाणी में जरथां ॥ मोरा० ॥ में गुरुने दीधी
 ल ॥ हाथ० ॥ में कठिण करम कीधां हशे ॥
 रा० ॥ ते आवी लागं पाप ॥ हाथ० ॥ ६ ॥ इम
 तां राजुल आवीयां ॥ मोरा० ॥ श्रीनेमीश्वरनी पास
 हाथ० ॥ रूपचंद्र रंगे सदया ॥ मोरा० ॥ राजुल
 यो संयमजार ॥ हाथ० ॥ ७ ॥
 ॥ ढाल नवमी ॥ श्रीनेम राजीमती एकठां ॥ साहे-
 णीयां ॥ जइ चढीयां श्रीगिरनार ॥ जिनगुण वेवनीयां
 पुंठेशी राजुल रीजावीयां ॥ सो० ॥ संयम वती
 कुमार ॥ जिन० ॥ १ ॥ आज्ञा लेइ राजुल एकली

॥ सा० ॥ गिरनार उपर गुफा मांहे ॥ जिन० ॥ वा
 जातां वर्षा थयो ॥ सा० ॥ चीजाणां राजुलनां चं
 ॥ जिन० ॥ २ ॥ गुफा मांहे जई सूकव्यां ॥ सा०
 दागुं ते काचु नीर ॥ जिन० ॥ अति सुकुमाल सोह
 मणुं ॥ सा० राणी राजीमतीनुं गरीर ॥ जिन० ॥ रहने
 तपस्या करे ॥ सा० ॥ देखी राजीमती निचोवे चीर
 जिन० ॥ ३ ॥ प्रगट थइ ते बोलीयो ॥ सा० ॥ चा
 म करो मन उदोस ॥ जिन० ॥ ४ ॥ नेम गयो तो ज
 थयुं ॥ सा० ॥ आपणे करणुं जोगविलास ॥ जिन०
 उत्तम कुदनो उपनो ॥ सा० ॥ तु बोल विचारी बो
 ॥ जिन० ॥ ५ ॥ सयम रत्नने हारीया ॥ सा० ॥ व
 कीधी व्रतनी घात ॥ जिन० ॥ रहनेमि तव बोलीर
 ॥ सा० ॥ माता राजीमती उगार ॥ जि० ॥ ६ ॥ नेम
 शर कने मोकव्या ॥ सा० ॥ फरी लीधो संयमजार
 जिन० ॥ नेम राजुल केवल लइ ॥ सा० ॥ पहोतां मु
 मजार ॥ जिन० ॥ ७ ॥ पीयु पहेलां मुगते गयां ॥ सा०
 राजीमती तेणी वार ॥ जिन० ॥ रूपचंद रंगे मढ्या
 सा० ॥ प्रभु उत्तारो जवपार ॥ जिन० ॥ ८ ॥ इति ॥

सार शिक्षा संग्रह.

- “ सज्जन मुख अमृत लबे,
दुर्जन विपनी खाण. ”
- “ नारी चित्त देखना, विकार वेदना:
जीनंद चंद देखनां, शांति पावनां. ”
- “ जननी जणजे जक्त कां, कां दातां कां शूर,
नहि तो रहेजे वांजणी, मत गुमावे नूर. ”
- “ ज्ञान विना व्यवहारको, कहा बनावन नाच,
रत्न कहो को काचको, अंत काच सो कोच. ”
- “ रवि दूजो तीजो नयन, अंतर जावी प्रकाश,
करो धंध सब परिहरी, एक विवेक अज्यास. ”
- “ कामासार चंदन रसे, सिचो चित्त पवित्त,
दया बेल मंरुप तळे, रहो लहो सुख मित्त. ”
- “ मौनं सर्वार्थ साधनं ” सबसे बनी चुप.
- “ बानादपि हितं ग्राह्यं. ” एक बाळकथी पण
हीत वचन ग्रहण करवुं.
- “ जन मनरंजन धर्मको, जूल न एक बदाम. ”
- “ दुःखमें सबको प्रभु जजे, सुखमें जजे न कोय,

जो सुखमे प्रचुक्कु नजे, तो दुःख कहाँसे होय.

११ “ उन्नम जनोनी प्राणांते पण प्रकृति-विकृति न
थाय ' यतः “ न प्राणांते प्रकृति विकृति
जायते चोत्तमानाम्. ”

१२ “ सवेग रंग तरंग जीवे, मार्ग शुद्ध कहे बुधा,
तेहनी सेवा कीजीये, जेम पीजीए समता सुधा

१३ “ हीणा तणो जे सग न त्यजे, तेहनो गुण नवि र
जयु जलधि जळमां नळयुं गंगा नीर बुणपणुं लहे

१४ “ बुरा बुरा सब कहे, बुरा न दीसे कोय,
जो घट शोधुं आपणो, तो मुजसे बुरा न कोय

१५ “ खानो खोदे, सो पटे ”

१६ “ कोडनी पण निदा करता ना, निदा करा तो
आपणीज करजो ”

१७ “ सर्व कोडनुं नबुज इच्छो, कदापि कोडनु
पण वुं इच्छता ना

१८ ‘ अवगुण पर जे गुण करे, ते विरला जग जोय

१९ “ कोडने मार्मिक, कटु, के विजत्स चापण क
नहि, अपमान समान कोड दुःख नथी. ”

- “ कोइ काम सहसा करता ना. ”
- “ दग्गो कोइलो सगो नहि. ”
- “ क्रोधी तथा कटुजाषीने चंमाल समान लेखो. ”
- “ धर्मे जय अने पापे ह्य. ”
- “ पर द्रव्य हरण समान एके पाप नथी. ”
- “ शील चूषण जेवुं बीजुं एके चूषण नथी. ”
- “ संतोष समान सुख नथी. ”
- “ वसु विना नर पशु. ”
- “ न्याय, निति, सत्य, प्रमाणिकपणुं ए प्राणीना उदयना हेतु ठे. ”
- “ दीर्घ द्रष्टि (दीर्घ दर्शीत्व—अगमचेतीपणुं) आवतां दुःखोने रोकवानुं साधन ठे. ”
- “ कुशीलता ए प्रगट दुःखनुं, अने सुशीलता ए सुखनुं चूळ ठे. ”
- “ विवेक विकल प्राणी पशुनी गणत्रीमां गणाय ठे. ”
- “ लोचनो कांइ थोन्न नथी. ”
- “ इह्या आकाशनी माफक अनंत ठे. ”
- “ तृष्णा जेवी एके मोटी व्याधि नथी. ”
- “ रात्रि चोजनमां महा पाप ठे. ”



ज्ञानना वे वोल.

सवाल

जवाव.

- १ जगतमा आदरवा योग्य शु ? सुगुरुनु वचन.
२ शीघ्र करवा योग्य शु ? कर्मनो निग्रह.
३ मोक्षतरुनु बीज शु ? क्रिया सहित सम्यक् ज्ञान.
४ सदा त्यागवा योग्य शु ? अकार्य काम
५ सदा पवित्र कोण ? जेनु अतःकरण पा
रहित होय ते.
६ सदा यौवनवती कोण ? तृष्णा
७ शुरवीर कोण ? स्त्रीना कटाक्षथी जे वि
नही ते.
८ महत्त्वतानु मूल शु ? कोइनी पासे प्रार्थना
करवी ते.
९ सदा जाग्रत कोण ? प्रिवेकी.
१० आ दुनियामा नरक जेवु दुःख शु ? परतत्रता.
११ अस्थिर प्रस्तु शु ? यौवन, लक्ष्मी अने आयु.
१२ आ जगतमा अति गहन शु. स्त्रीचरित्र (अने तेथी
वधारे पुरुषचरित्र.)
१३ चद्रमाना किरण समान श्वेत
कीर्तिने धारण करनार कोण ? सुमुनि अने सज्जन.

जेने चोर ले नहीं तेवो
खजानो शुं !

जीवने सदा अनर्थे करनार कोण ?

अंध कोण ?

बधिर कोण ?

मुगो कोण

शल्यनी पेठे सदा दुःख देनार शुं ?

अविश्वासना पात्र कोण ?

सदा ध्यानमां राखवा योग्य शुं ?

सदा पूजनिक कोण ?

आ दिवानी दुनिया कोणे जीती ?

अधमथी पण अधम कोण ?

चिंतामणिनी पेठे दुर्लभ शुं ?

आ उपर बत्तावेल जानना वे बोलो वांची जेओ खजाना
नाखी मूकशे तेओने तो कांड फळ थनार नथी. जेओ
अथवा वे बोलने स्मृतिमां राखी ते प्रमाणे प्रतिदिन वर्तसे
ते अवर्णनीय लाभ थशे.

विद्या, मन्य अने शीलव्रत.

आर्त अने रौद्र ध्यान.

कामी अने रागी.

जे हिनकागी वचन न
सांभळते.

जे अवसर आव्हे प्रिय
वचन न वाली शकते.

छासुं करेळुं कुकर्म.

युवती अने अमज्जन.

संसारनी असारता.

वीतराग देव, मुसधु अने
सुधर्म.

जेणे निःस्पृहता धारण
करी तेणे.

अंगीकार करेळुं व्रत जेणे
जाणीने खंडयुं ते.

आत्म गुणने प्रगट कर-
नार सम्यक्त रत्न.

